अंक - 102-103
दिसम्बर/2023

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

आनन्द सन्धिदूत पर विशेष

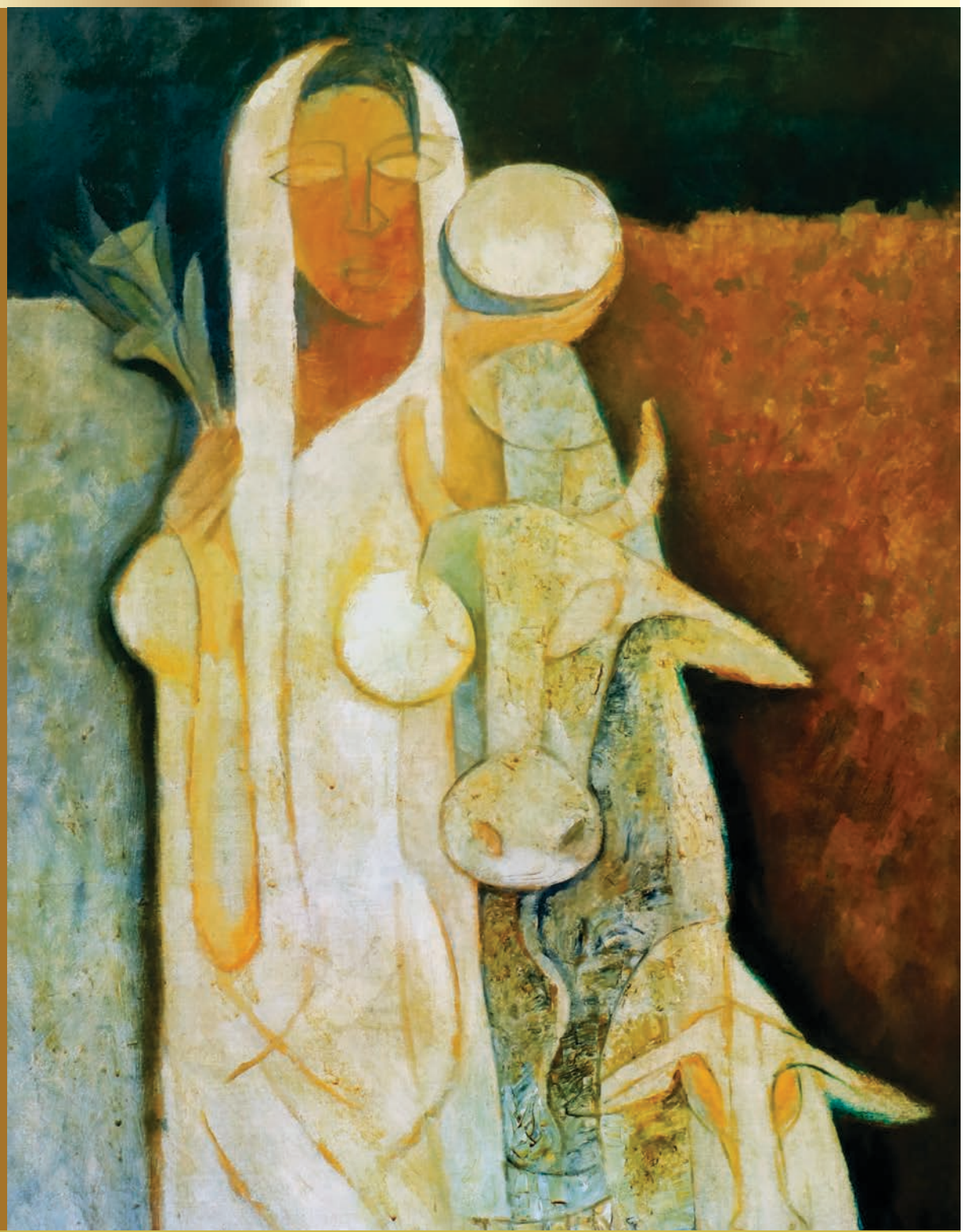

आनन्द सन्धिदूत के रचना–संसार का अलावे कुल्हि स्थायी स्तम्भ–डा0 रामदेव शुक्ल आदि के कहानी, आलोचना के साथ सौरभ पाण्डेय, मनोज भावुक, कमलेश राय, दिनेश पाण्डेय, शशि प्रेमदेव आदि के कविता, डा0 प्रकाश उदय के संस्मरण, डा0 शारदा पाण्डेय के निबन्ध

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी, नीतू सुरेन्दर सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

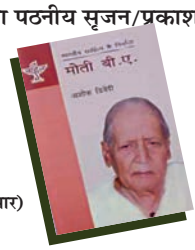

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

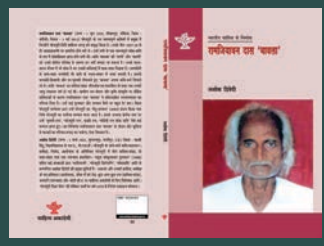

रामजियावन दास 'बावला'
अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना
(पृष्ठ संख्या-404)
डॉ0 अशोक द्विवेदी
मूल्य-500/-
विजया बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

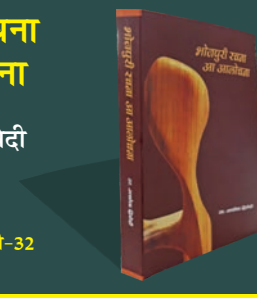

किताब मिलल....

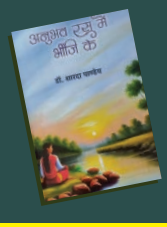

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंकः 102-103 (संयुक्तांक) **दिसम्बर 2023**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण–चित्र
सोमनाथ होर (शहचर-1960)

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

संपादन-कार्यालयः-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392, 91–8373955162

सहयोगः

एह अंक के–100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- देस, समाज आ सन्धिदूत / 3–4

सम्मति –
- पृष्ठ–5

सामयिकी –
- लोक–रचना आ साहित्यिक संसार / सौरभ पाण्डेय / 43–46

आनन्द सन्धिदूत के रचना–संसार–
- कविता / 6–13 एवं कलर पुष्ठ–61–62
- निबन्ध / आलेख / संस्मरण / आलोचना / 18–40
- गहमर : एगो बोधिवृक्ष / 18–27
- "मिर्जापुर" के चिरइया तकान / 28–32
- बड़े बाबू / 33–35
- भोजपुरी गजल के भावुक रंग / 38–40

रचनालोचन आ संस्मरण–
- आनन्द संधिदूत के गीत–संसार / डा0 अशोक द्विवेदी / 14–17
- आनंद संधिदूत सर ! / मनोज भावुक / 36–37
- आनन्द के "अग्नि संभव" / डा0 अशोक द्विवेदी / 41–42
- कुछ 'अ' कुछ 'आ' / डा0 प्रकाश उदय / 105–108

निबन्ध –
- 'पतिनी पति ले, पितु गोद में सोई' / डा0 शारदा पाण्डेय / 47–50

कविता खण्ड –
- गुरविन्द्र सिंह / 46
- दिनेश पाण्डेय / 52–54
- कनक किशोर / 85
- चंद्रेश्वर / 87–89
- मनोज भावुक / 90
- राकेश कुमार पाण्डेय / 92
- सौरभ पाण्डेय / 51
- अशोक कुमार तिवारी / 54, 90
- शशि प्रेमदेव / 86–87
- हीरालाल 'हीरा' / 89
- सुभाष पाण्डेय 'संगीत' / 91
- डा0 कमलेश राय / कवर–3

बतकूचन –
- अरामी हिन्दू / डा0 ओमप्रकाश सिंह / 93
- साहित्य, समोसा आ शेयर / 94

कहानी–
- चम्पा परधान / डा0 रामदेव शुक्ल / 63–77
- कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो / डा0 कमलाकर त्रिपाठी / 78–81
- मन के अंकगणित / मीनाधर पाठक / 82–85

रचनालोचना / समीक्षा –
- सहज साँच अनुभूति करावत 'धरती–राग' / डा0 रामदेव शुक्ल / 95–99
- 'इमरीतिया काकी' / तैयब हुसैन पीड़ित / 100–102
  गहन–गम्हीर लोक–संपृक्ति के कविताई 'सुनगुन' / डा0 अशोक द्विवेदी / 103–104

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 55 / 60

देस, समाज आ सन्धिदूत...

''पहिले में आ आजु में एगो मूलभूत अन्तर ई आइल बा कि अतीत में,अत्याचार के नायक होत रहे । पृथ्वी पर संत्रास - शोषन के वातावरण लउके त, ई मालूम रहल करे कि एकर करवइया के बा ? कर्त्ता का मालूम रहला के कारन के नष्ट कइल आसान होत रहे!

आजु उल्टा बा। आज पीड़ा बा, कुण्ठा बा , उत्पीड़न बा , असंख्य बुराई बा । दिल के दौरा पड़त बा , मानव मछरी नियर उलट जात बा । दाँत पीसत-पीसत मुँह टेढ़ हो गइल, बाकिर एह मानसिक तनाव के ऊर्जा स्रोत कहाँ बा? मालूम नइखे! आज पृथ्वी पर विद्यमान शासन- व्यवस्था बड़ी तेजी से बदल रहल बा । ईहो हो सकेला कि काल्ह सउँसे संसार एक आदमी का मुट्ठी में आ जाय आ ईहो सम्भव बा कि एक- एक गाँव में एक -एक गो राष्ट्रपति बइठ जासु !

भारत में त जातिए राष्ट्र होखे वाली लागति बा ! हरेक जाति में राष्ट्रपति पैदा हो गइल बाड़न! खाली भूमि के बँटवारा आ अधिकार के स्थापना भर विलम्ब बा । हो सकेला मानवता विज्ञान से तंग आके , ओहके नष्ट कइ दे आ फिर लाठी -गोजी का समय में लवटि जाय!''

आनन्द सन्धिदूत (1992 , पहिल काव्य संग्रह 'एक कड़ी गीत के' के भूमिका में)

आजु राष्ट्र आ ओकरा चेतना के लेके जइसन राजनीतिक वातावरण बनल या बनावल जा रहल बा , ओके लेके सोचल -बिचारल , साहित्य लिखे -पढ़े आ ओपर आलोचन-विमर्श करे वाला रचनात्मक (बुधिगर -संवेदनशील,सुधी-सहृदय) लोगन के जिमवारी बा । कवि अपना समय सन्दर्भ का साथे - साथ भविष्य देखेला आ आपन रचनात्मक जिमवारी समझि के , ऊ समाज के सचेतो करेला । एह दिसाईं , आनन्द सन्धिदूत खलिसा भोजपुरिए के ना, अउरियो भाषा - समाज लाएक बिचार , आजु से चार दशक पहिले ,1992 में प्रगट कर चुकल बाड़न ।

राजनीति , अपना स्वारथ आ सत्ता - लिप्सा में कवन आ कइसन अधातम ना करवावे ! ऊ आपुस में झगरा करवावेले, जातीय उन्माद पैदा करेले ,मरवावे - मुआवे तक के साजिश रचेले , ओकरा खातिर राष्ट्र भा देस ले ऊपर ओकर आपन सत्ता , आपन वर्चस्व महत्व राखेला। पुत्र -पुत्री,भाई - भतीजा आ रिश्तेदार से ऊपर चढ़ि के जातीय गोलबन्दी के गुणा -गणित करत ऊ समाज के आपुसी मिल्लत आ मानवी नेह - नाता के छिन्न-भिन्न करे में तनिको ना हिचकिचाय !

आजु देश में अइसने स्थिति बनावल जा रहल बा ! बड़की सत्ता पावे भा कब्जियावे वाला ध्येय के पूर्ति खातिर, राष्ट्र आ राष्ट्र हित चिन्ता के बलि चढ़ाइ के , कहल गइल उक्ति -- 'सर्वजन सुखाय-सर्वजन हिताय' वाला सगरो मान- मूल्य बदलल जा रहल बा । फेरु एक बेर अन्ध- सपन - लासा का जातीय गोलियाँव वाला उन्मादी पाँसा फेंकल जा रहल बा । उपराँ अपना कथन में, आनन्द सन्धिदूत एही 'लाठी - गोजी' का समय का ओरि इशारा कइले बाड़े !

भोजपुरिया लोक आ ओकर मन 'परहित' के धरम वाला हवे, 'परपीड़न' के अधम करम मानत ई लोक अपना संसार में च्यूँटी - चिरई सबकर चिन्ता करेला ! कम्मे सही , ढेर लोग अबहियों बाड़े ,जे ऊर्जा के दाता सुरुज नरायन के विनय भाव से जल ढारेले , गांछ -बिरिछ, जलसोत ,नदी, पहाड़ हरेक दाता का आगा माथे नवाइ के कृतज्ञ भाव परगट करेले । त का एह लोक के मूल सोभावे बदलि जाई? सरब हित का बजाय,खाली आपन हित सोचाई!उपभोगवादी कथित पच्छिमी प्रगतिशीलताध्आधुनिकता में , एह लोकसंबेदन का लतर के झउँसि दिहल जाई ? एकर माने ई होई कि भौतिक पद , सुख-सुबिधा भोगे वाला, बिघटन के बीया बोवे वाला एह राजनीतिक नेतवन के जीत हो जाई !! अधिकार आ भूँइं पर कब्जा खातिर सब आपुसे में कटि-मरि के स्वाहा हो जाई ?

उत्सव-संस्कृति आ स्वस्थ जीवन-परम्परा वाला एह लोक के बनाव - बिनाव के तूरे आ छिया-बिया करे वाला, खुदे बहि -बिला जइहें स' , हम त ईहे मनाइब! सिरजन करे वाला के जय आ बिधंस के बीया बोवे वालन के पराजय होखे ! सुधी, सहृदय, संबेदन से भरल गुनी -ग्यानी , साहित्य -कला- कर्मी लोग त अरथवान भाव - सन्तुलन आ सुघराई के संयोजन करेला --- पृथिवी का हर रूप - कुरूप , अरूप पर सोचे -बिचारेला , ओकर चित्र उरेहेला । रचनाधरमी खातिर संसार में ,जेतना फूल पतई जरूरी बा , ओतने काँट - कूस। मीठ-तीत फल का साथ- साथ, प्रकृति भाँगो - धतूर पैदा कइले बिया! प्रकृति का एह भाव-मुद्रा आ सन्तुलन में रचनात्मकता छिपल बा !

पृथिवी आ प्रकृति के भावलोक में जनमे - जिये वाला हर जीव के विशेषता आ महत्व बा ! सबके मिलाइये के सम्पूर्णता बनेले ! कवि -लेखक के दृष्टि भेद-भाव वाली ना होखे के चाहीं। स्वतंत्र चेता ऋषि , सन्त आ कवि सुभावे से संबेदनशील आ लोकधर्मी होला ---जड़ता , अज्ञान, अन्याय, शोषन आ अमानवीय सत्ता - व्यवस्था के आलोचक आ विरोधी होला ! ऊ कवनो खूँटा से बन्हाय! आनन्द के कवि कवनो 'वाद' पन्थ आ 'खेमा' से बन्हाइल ना रहे!

एही से उनका कविता आ लेखन में लोकधर्मी आस्था, विश्वास, जीवन-संस्कृति का साथ साथ जड़ता, नकारात्मकता, अन्याय आ शोसन का खिलाफ बेबाक प्रतिरोधी स्वर बा ! एह अंक में दिहल गइल उनका रचना - संसार के झाँकी आप सभके अपना भाव-लोक में उतरे खातिर न्योतत बा !

डॉ0 अशोक द्विवेदी

सरधांजलि

आनन्द सन्धिदूत (आनन्द कुमार श्रीवास्तव)

जन्म - 27 अक्टूबर 1949 , अवसान - 27 मई 2023
गाँव - गहमर जिला - गाजीपुर (उ० प्र०)
बाद में स्थायी निवास आ कर्म-क्षेत्र -- मिर्जापुर (उ० प्र०)
माता - श्रीमती सुदामा देवी, पिता - गहमर निवासी स्व०प्रसिद्ध नारायण लाल कलकत्ता में मुख्य लाइब्रेरियन पद पर नौकरी करत रहलन ! साहित्यिक रुझान आ संस्कार उनुका से मिलल ! पढ़ाई लिखाई का बाद, आनन्द के नोकरी बैंकिंग सेवा वाला रहे , जवन उनुका भावुक मन वाला साहित्यिक रुझान का बिपरीत रहे, बाकि नोकरी जीवन निबाह के जरूरत रहे! ऊ इलाहाबाद बैंक मिर्जापुर में सेवा करत सन् 2011 में रिटायर भइलन ! मिर्जापुर में ,वासलीगंज में उनकर निजी आवास रहल, जहाँ सन् 2023 में उनकर देहावसान हो गइल ।

प्रकाशित साहित्य ---

कृति -- एक कड़ी गीत के , शक्ति गीत (लघु पुस्तिका) , बजरंग निहोरा (लघु पुस्तिका) , सतमेझरा (निबन्ध, कहानी, संस्मरण के संकलन।
अनुवाद -- रोशनी के द्वीप , सन्देशरासक, कुरल कवितावली
सम्पादन -- त्रिविधा (मिर्जापुर के रचनाकारों का संकलन) , भोजपुरी के अस्मिता चिन्तन, श्रीकृष्ण सुधा
अन्य -- भोजपुरी के मुख्य पत्र-पत्रिकन (उरेह , सम्मेलन पत्रिका, पाती , समकालीन भोज०साहित्य आदि में बहुत रचना प्रकाशित!

पुरस्कार सम्मान---

रामनगीना राय पुरस्कार (अ० भाठभो० सा० सम्मेलन) ''पाती'' अक्षर सम्मान (बलिया), विद्याश्री न्यास वाराणसी से ''लोक कवि'' सम्मान, उ०प्र० हिन्दी संस्थान से भिखारी ठाकुर सर्जना पुरस्कार

सम्मति...

आनन्द सन्धिदूत भोजपुरी के समसामयिक गीत-लेखन के एगो महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के नाम ह॓। मानवीय संवेदना से लबालब, इनका गीतन में जिनिगी
के सुख-दुख आ राग-विराग के विभिन्न भाव-मुद्रा, जवना जीयत-जागत आ चलत-फिरत तस्वीरन में उरेहल गइल बा, ऊ बहुते मर्मस्पर्शी बा !हाव से भरल एह तस्वीरन में साँस लेत जिनिगी के गतिमयता आ उसाँस भरल जिनिगी के ऊष्मा बा । गहन अनुभूतियन में मातल इनका रचनन में ,रह रह के भक् से बरे वाला लुत्ती जइसन उक्तियन अँजोर इनका कवि -प्रतिभा के उजियार कइले बा ।
आनन्द सन्धिदूत के रचना संसार आ रचना -शैली इनकर आपन बा। इनका
शब्दन का प्रयोग में , अर्थवत्ता में , उक्तियन में, छन्दन में, गीतन का लय विधान में कुछ अइसन बा,जवन इनका के, अपना सहधर्मा लोगन से अलग करत बा !

पाण्डेय कपिल
अध्यक्ष , भोजपुरी संस्थान ,०८ फरवरी १९९२

'एक कड़ी गीत के' काव्य संग्रह मैंने पढ़ा और मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि इसका लय-विधान और उक्ति -विधान ठेठ भोजपुरी है और इसीलिए
इसमें सहज सोंधापन और ऊष्मा है ।

डा० विद्यानिवास मिश्र

आनन्द सन्धिदूत कवि-प्रतिभा से संपन्न, निपुन रचनाधर्मी रहलन। उनका लेखन में संबेदनशीलता, रचनाशील भावप्रवणता त रहबे कइल, ओमें एगो पोढ़ चिन्तन-दृष्टियो समाहित रहे । एकर उदाहरन आ प्रमाण उनका निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र आ आलोचनात्मक लेखन में मिलेला। ऊ अपना गाँव गहमर (गाजीपुर) पर लिखसु , चाहे जनपद -मिर्जापुर पर इतिहास, परम्परा आ परिवेश का उरेह में गजब के कथा-सरसता आ ताजगी मिली । उनका लेखन में लोक के जीयत -जागत -उँघात संसार बा । एकरा साथे-साथ संस्कृति आ परम्परा के संस्कार वाली बौद्धिक चेतना। अपना समय-सन्दर्भ आ भाषा - समाज पर पकड़ राखे वाला एह मनीषी कवि के आपन मन- मिजाज आ कहन- शैली बा , जेवन उनके अपना समय के कवि - लेखकन से अलग आ
विशिष्ट बना देले बा !

डा० अशोक द्विवेदी
सम्पादक 'पाती'

आनन्द सन्धिदूत के कुछ कविता

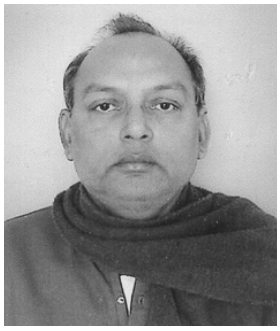

(एक)

टाँय-टाँय रातभर कइलन स कउआ
भोरे संगीतकार भइलन स कउआ ।

श्रोता में ठाढ़ रहे निर्धन अस कोयल
ज्ञान-कला लूट-लूट खइलन स कउआ ।

उज्जर ना भइलन स पदवी-प्रतिष्ठा से
कूद-कूद केतनो नहइलन स कउआ ।

मोर के शिकार भइल सुग्गा के जेल भइल
हर खाली डाढ़ पर भरइलन स कउआ ।

अनठेवल दम्भ भरल अइसन अनगँवलस
कउए का जाति में हेरइलन स कउआ

(दू)

जागे के आजादी ना ओंघाये क आजादी बा
एक घोंट घींच पटुआये के आजादी बा ।

जबरा के जदी इहाँ लूटे के आजादी बा
अबरो के एहिजा लुटाये के आजादी बा ।

भर दाँते मीसी अस चापलूसी पोत के
सीटे-सीटे झूठहीं चिहाये के आजादी बा।

चिँउटी चोरावे वाला भलहीं धरात बा
हाथी के डिठार लील जाये के आजादी बा

गाँधी-सुकरात केहू सँउसे किनाला ना
काम भर काट के बिकाये के आजादी बा ।

नेहरु-पटेल-गांधी तार-तार सपना
रातभर देख बँउड़ाये के आजादी बा ।

जहवाँ बिकास होय बाहरी हुकुम पर
ओह देसे लागेला कहाये के आजादी बा ।

महँगी-बेकारी टभकत रहो केतनो
गाइ-गाइ सोहर, बिआये के आजादी बा ।

मारेला कुचाल चाल लँगड़ी चलत के
लोकपथ कहि के जुड़ाये के आजादी बा ।

❑ ('पाती' कविता विशेषांक-१ से)

गांव

ढहऽता सवाल पर सवाल इहे गाँव हऽ
खींच मारे रोउंओं क खाल इहे गाँव हऽ ।

अइसे तऽ भदउवों में मूस बिन रकटे
छुंछहँड़ कोठिला ठसक बस ठकचे/झुठहीं
फुलौले दूनों गाल इहे गाँव हऽ ।

का होई कइ के परापतो के दुगुना
खात खानी धरे उतपादके के ठेहुना/ज्ञान भइल
लतरी क दाल इहे गाँव हऽ ।

कइ जीव-जतिया लुपुत होतिया बुला
मछरी का फेर में भगत भइल बकुला/शेर ओढ़े
बकरी क खाल इहे गाँव हऽ ।

सिरिफल का
पतई पर कनइल क फूल

धूप-दीप अच्छत नैवेद्य अउर माला
भूखल परदोस, जासु सीता शिवाला!

फोरत मिसिरी रोरी/पूरत मनौती
हरदी का गांछ नियर/हरियर लगनौती
लचकि लपकि हाथ छुवे/घन्टा झन्नाला!

अरघा पर निहुरल तन/कुन्दन कसौटी
देखेली पारबती/खोलत इंगुरौटी
नई बान ना सम्हरे आँचर उधियाला !

कहत कहत अपना के/आँचर के हीना
कहि गइली -भाई बा/नोकरी बिन दीना
लाज बरे, कुछऊ के कुछऊ कहाला!

सगरो अँजोर बरे/इत्तर छितराइल
मन्दिर मे चलत-फिरत/देवकुसुम आइल
सिरिफल का पतई पर कनइल मुसुकाला!
भूखल परदोस जासु सीता शिवाला !

केहू नाहीं आवे ई
मेहनवाँ बा हो बाबूजी!

तोहरा कन्यादान के बहनवाँ बा हो बाबूजी
केहू नाहीं आवे ई मेहनवाँ बा हो बाबूजी ।

होखत कइसन कइसन दो तऽ मनवाँ बा हो बाबूजी
काटे दउरे काहें दो भवनवाँ बा हो बाबूजी ।

कहेलें ऊ, लिखे के एकाध गाड़ी पुअरा
गोरुअन के एहिजा ना लेहनवाँ बा हो बाबूजी!

माई के सलाह लेके बेचिहऽ जजाति के
असवों सुखार क लछनवाँ बा हो बाबूजी।

एहिजा त जरऽतिया कोइना क दियरी
कवना भावे गाँवें किरसनवाँ बा हो बाबूजी।

अइलीं तऽ बहुते दरद रहे तोहरा
लिखिहऽ कि कइसन ठेहुनवाँ बा हो बाबूजी।

घरवा क हालचाल लिखिहऽ जरूर से
चिठिये का जोह में परनवाँ बा हो बाबूजी ।

कवना देसे कउँधे

करिया सरीरिया सुखाइ भइली पोखरी
फाटि गइली कनई ओराइ गइली मछरी!

जिउ भइले अल्हरू सिंघड़वा के बीया
जेठवा में बिरथ भइल कुल कीया
लोग फेंको कतनो पिरीत भर दउरी !

लागेला सुखात नयन पउदरिया
बड़ी बउराह बा पिरितिया के पिरिया
तबो गावे अदरा प्रथम दिन कजरी !

जलवे विरह मोर जलवे के किरिया
जिहीं हम जल देव तोहरे फिकिरिया
कवना देसे कउँधे करेजवा में बिजुरी !

शब्द -अरथ = पोखरी छोट तालाब। कनई→कीचड़ । ओराइ→समाप्त/खतम। बिरथ→व्यर्थ । कीया→किया हुआ/ कइल-धइल । भरि दउरी→उरी भर पिरीत/ खूब ढेर प्रेम। पउदरिया→जल भरल गहिर आ चौड़ी नाली/जहाँ देर ले जल बटुराइल रहे। पिरिया→पीर, पीड़ा। अदराझ→आर्द्रा (अषाढ़ वाली)

लहर थिराय.....

दुनिया सोचले माथ पिराला/
तोहके सोचले लहर थिराय!

का होई बतिया के एतना/एक इसारा बाटे ढेर
सुननिहार के धड़कन जिउ में/कोसन दूर सुनाला टेर
जन जन कइले हँसी हमारी/
तोहसे कहले कहल कहाय !

मन पापी कहवाँ ना दउरे/अलँगे-अलँग संस टूटे
तवन,अन्त में जवन मिलल ऊ/अन्त समय तक जिन छूटे
अगली बगली जलन समाले
अन्दर देखले आँख जुड़ाय !

हुकुम मिले के मिलब, मगर/मिलला-जुलला से का होई
झक्कड़ में मकरा के पथ/मन्तर सियला से का होई
रउरा आँगन सीत चटाई
मन मिलि गइले पलक ओंहाय!

शब्दार्थ= माथ पिराला→कपार दुखाला/सिरदर्द। थिराय→स्थिर भइल/शान्ति मिलना। अलंगे अलँग/शरीर के हर भाग/पोरे -पोर। अगली बगली→अगल-बगल, आसपास। झक्कड़ में मकरा के पथ/झाड़ झंखाड़ में मकड़ा के जाला वाला रास्ता।

तनि सोचिह...

ई चनन बन गँउआँ सरप लटके
केहू काटे केहू फूँके केहू फन पटके !

लोग केतना जरत बा चनन जुड़ छाँह
सुख! सुविधा का उपरा बदन फदके!

जदी लेना हो सीतलता सरप बन लऽ
इहाँ अदिमी त मर जाई मार खट के !

जहाँ केहू नाहीं आवे उहाँ एतने बहुत
केहू आवे तऽ कलस भर बीख लेइ के !

हम केकरा से पँइचा उधार रखतीं
इहाँ सब के चुहनियाँ में मूस भटके !

हमे रहे दऽ चलत के चिल्हक जात बा
ठोकराह किसमतिया के नस छटके !

ई नयनवें खेलवले सँवस नाहीं बा
तनि सोचिहऽ सरीरिया से दूर हट के !

('पाती से')

शब्दार्थ- जुड़ छाँह→शीतल छाया फदके→तड़पाया है,
बीख→विष, जहर। चिल्हक→चटक जाना, टीसना ।
सवँस→फुर्सत

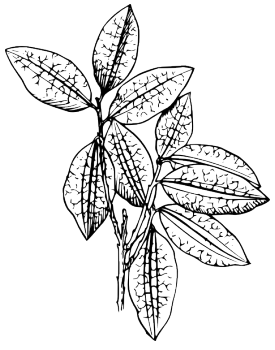

हमरो एगो शेर

हरफे - हरफे काजर - टीका अंग - अंग नोक्ता दीहीं
हमरो एगो शेर समय का पहिया पर लिखवा दीहीं

हम का लिखीं वसीयत हमरा आवक-जावक हइए ना
बा खाली बदनामी ओके गंगा में सेरवा दीहीं

चाहीं इहे पसर भर भोजन सूतत बेर पहरभर ठौर
एतनो नाहीं मिली त आगे चाहे जवन सजा दीहीं

पढ़ला पर सत्ता के कहनी दुनियाँ समझ में आइल ना
ओह कहनी में अपनो कहनी हीरा अस जड़वा दीही

रोवत - हसँत अतीत देखि के चक्कर आइल गिर पड़लीं
हमरो आँखी कोल्हू - पशु के दृष्टि - बन्द चढ़वा दीहीं

घृणारेत पर माथ पटक के लवटे लहर मोहब्बत के
एह पटवन में दुइयो पतई कवनो तरे उगा दीहीं

नजर कबूतर के सन्देशा जिन बइठल दउरावल जाव
एह पुतरी पर धइ तरहत्थी उमगल नदी दबा दीहीं

गम पर डाल हँसी के परदा जी लिहला में इज्जत बा
हमरा बाद उदासे केहू, कइ के जतन हँसा दीहीं

भले टमाटर - बैगन नाहीं हम मकोहि का थान नियर
जामत देखि कबारीं बाकिर पकला पर बिनवा दीहीं

(पचीस बरिस पाछा ले चलत बानी ,जब हम आनन्द सन्धिदूत से
देश के भूत भगावे वाला 'ओझाई' कविता सुनले रहलीं!
एह ओझाई के सुनि के राउरो रोआँ फरफरा जाई
आ जीउ गनगना उठी !!)

ओझाई

जै जैकार मनाईं/गान्ही महराज के गोहराईं
जवाहिर के बोलाईं/मौलाना आजाद क कसम खाईं
कि दोहाई भगवान बुद्ध के/राजा अशोक के
कि जेकरा परताप के बाजे दुनिया में डंका
धजा फहराले जेकरा कीरति के
फिरल दोहाई साबरमती के/पवनार के
सदाकत आश्रम के !
कि नाँव लेत रोआँ फरफराय/जीव गनगनाय
कि राजिन्दर परसाद, सरदार पटेल
ऊलल-भूलल/छूटल -छटकल नेता पुरनिया के
देश-दुनिया के !
कि जेकर खाईं/ओकर जै-जैकार मनाईं
जै हो गीता -कुरान- पुरान/दोहाई बारम्बार
गुरू की जै । जै मोहम्मद अली
तोर द दुसमन के नली
कि तोहरा परताप से/ऊ गोता लगाईं
कि समुन्दर सोख जाईं
कि हिमालय हींग का माफिक उड़ाईं
कि पुरुबे रक्षपाल करें सियारदास बैलिस्टर
पछिमे लाला लजपतराय
उतरे मदन मोहन मालबी/मोतीलाल नेहरू
दखिने राजगोपालाचारी
कि नाँव लेत बकार न आवे/काठ मार जाय
कि फिरल दोहाई सरोजनी नायडू,कमला नेहरू
कस्तूरबा माई के
कि तहरा परताप से बिजय पाईं/मुँहें चन्नन लागे
लाज रहे/चढ़ बइठीं दुसमन के कपार पर
मँहगाई के झोंटा कबारीं
बेरोजगारी के लहँगा में आगि लगाईं
गरीबी के नटई दबाईं/करेजा पर चढ़ि बइठीं फेरू पूछीं -
बोल, हीत क कि नात कऽ

छूटे का सम्हेरा... (बिछोह के बेरा)

गोरुओ गोड़वा रोकेला बछरुओ गोड़वा रोकेला
कइसे जाईं जात खानी गोड़वो गोड़वा रोकेला ।

गेंदा आ गुलाब गोड़ रोकेला तऽ रोकेला
गाँवे गइले गाँव के धतुरवो गोड़वा रोकेला ।

अबहीं त काल्हे अइली गवना में सुन्दरी
घासे धइल सामने पहुरवो गोड़वा रोकेला ।

केस बले रोकेला, पलक बले रोकेला
बरफो गोड़वा रोकेला अँगरवो गोड़वा रोकेला ।

दाँतकाटी चिट्टीपाती केतना सामान बा
छूटे का सम्हेरा नइहरवो गोड़वा रोकेला ।

कुल क कि खूँट क/अमेरिका क कि रूस कऽ
पूरुब क कि पच्छिम क/बोल
कहाँ क हई? बामति हई कि चुरइल
सी०आइ०ए० क करामात हई कि
के०जी०बी० क पाप हई! दोहाई बिनोबा बाबा के
बोल, भू-दान से मनबी/कि सरबोदय से मनबी
कि अन्तोदय से मनबी
कि जै समाजवाद के अखाड़ा
बाजे गलबजउअल क नगाड़ा
कि लगाईं बैकवर्ड के तड़ातड़ चटकना
चलाईं समग्र क्रान्ति के सिउँठा
दोहाई हिरिया-जिरिया
ट्वेन्टी पाइन्ट प्रोगराम के!

लौंग खड़ा हो गइल!
भिलाई क लवर लागत बा
तारापुर के बिजलीघर जागत बा/थुम्बा क राकेट
नाचे लागल
सुभास बाबू आँख का सामने खड़ा बाड़न/कहत बाड़न
कि घरे क बामति हऽकुमति बिमति हऽ
चउदह सौ बरिस से तंग कइले बा/दस बरिस अउर
तंग करी। परिवार नियोजन माँगऽतिया !

अरे, रउरा के हईं? दुपट्टा धइले/पगरी बन्हले
दोहाई सरकार के ,आइल हईं त नाँव बताईं
सेवक चिन्हलस ना !
ओ-ओ-हो , रउरा हईं लोकमान तिलक
गोपाल कृष्न गोखले,महर्सी अरविन्द !
ए दोहाई लक्षिमी बाई,कुँवर सिंह,तातिया टोपे के
कि रउरा सभ के सेवक भुलाइल नइखे
सेवा में दसों नोंह जोड़ले खड़ा बा ,
रउरा नाँव पर परैमरी इस्कूल खोलब
चन्दा सौसइटी बनाइब/अनाथालय चलाइब
नाँव उजागिर करब! चउरा बान्हबि,इस्टैचू लगाइब

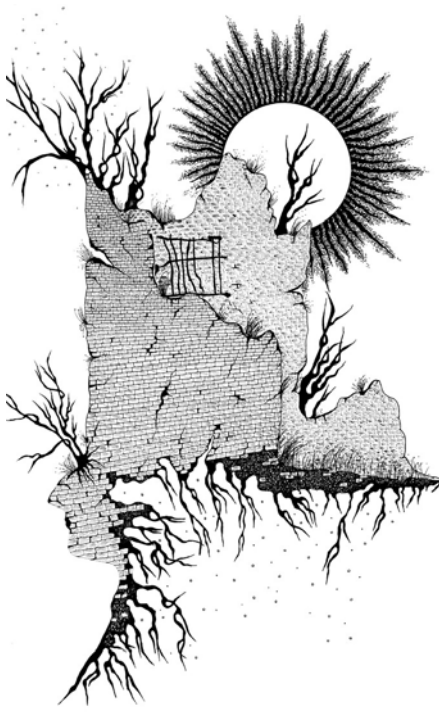

बरम्ह नियर पूजब
कि जेकर चून ओकर पून
हे बाबा रइछा करऽ!
छार होय जर के महँगाई , बेरोजगारी, गरीबी
कि जो तोर मुक्ती बनाइब/राष्ट्र संघ में सेरवाइब
न्यूयारक में बइठाइब
छू-ऊ-ऊ-उ !!

हू-ऊ-ऊ-उ ! हइ लऽ
ओबरा के भसम खिया दीहऽ
एक अँजुरी मथुरा -बरौनी के रिफाइन पिया दीहऽ !
नीक भइला प, भाखड़ा -नंगल में नहवा के
पाँच गो बिश्व बैंक का इन्स्पेक्टरन के
घरे भोजन करा दीहऽ !
रामजी चहिहन त
पूरा मुलुक के राम मिल जाई!! ■■

काव्य-कथा

दीयर कथा

एही दीयर में बा
हमरो खेत क एगो छोटी-मुटी टुकड़ी
जवन हम देखले नहखीं

ओही खेत के गोजई-चना
जब हमरा आँगन में गिरे
त, हमार माई ओइसहीं खुश हो जाय
जइसे कवनो लइका
खेलवना पाके अगरा जाय
हमनियो का अनाज का राशि पर
गाल रगड़-रगड़ के लोटीं जा
अँजुरी में भर के अनाज
हुर-हुर हुर-हुर अनजवे पर गिराईं जा
बाप-विहीन आँगन में बाप के बिरह
एही अनजवे से खेल के भुलवाईं जा

स्वतंत्रता का बाद
लाला के खेत
समाज का दया आ करुणा से हरियर
बोवनिहार निठाली बतावसु
फलाना दू हाथ बढ़ के जोत लिहलन
भा, घोड़रज लहेंद दिहलस
भा, गंगा माई बोवल खेत पर ओलर परली
चाहे समय का पहिले पछुआ का बहि गइले
मोसल्लम गोजई पइया हो गइल....

हमार माई निठाली का सूचना पर
आधा पलक नीचे गिरवले
धरती मइया के ताकत चुप हो जाय
जइसे भारत माता
देश के झण्डा आधा झुका के
पटुआ गइल होखसु
थउस के मौन-शान्त हो गइल होखसु !

हम देखले नइखीं
लेकिन एही दीयर में बा
हमरो खेत के एगो छोटी मुटी टुकड़ी
जवन चकबंदी में दस बिसवा का बजाय
आठे बिसवा के बिगहा भइला का बाद
कई मन अनाज कम देबे लागलि
लेकिन एह बेर हमार माई उदास ना भइल
कहलसि, अब कवन चिन्ता बा
हमार बच्चा नोकरी ध लिहलन

ओही खेत के एगो हिस्सा
जब कई जुग खातिर गंगा में डूब गइल
त सरकार नोटिस भेजलसि, पुछलसि
कि बतावऽ
रखबऽ कि छोड़बऽ
छोड़बऽ त लगान ना लागी

हमार माई कहलसि
बेमार सँवाग घर से निकालल ना जाय
बालू-पानी में डूब गइल जमीन छोड़ल ना जाय
जा सरकार से कहि आवऽ
हम मालगुजारी देब
जमनियां तहसील में
बयान लिखावत, घोषणा-पत्र भरत
हमके अइसन लागल
जइसे अब तक ई खेत
हमार गार्जियन रहल हऽ
अब हम एकर गार्जियन बानीं

लेकिन झूठ
सरासर झूठ
चालीस साल बाद उहे जमीन

अब पानी में से झाँकतिया
हिंगुआना-पहलेज से लथरतिया
बोरोधान से हरियराइल बिया
आ, एही हरियारी में बा
हमरो खेत के एगो छोटी मुटी टुकड़ी
जवन हम देखले नइखीं
जवना का पाछा दू लाठी खइले नइखीं
चार गारी सहले नइखीं
हमके लागऽता
जइसे अगल-बगल के हरेक गाँव-मौजा
हमरा पर हँसता
आ हँसि-हँसि के कहऽता
एही दीयर में बा
एही के खेत के एगो छोटी-मुटी टुकड़ी
जवन ई देखले नइखे!

पृथबी बड़ी सवदगर राम

जिउ भर प्यार बहुत बा, खाली पइतीं प्यार पसर भर राम
उरबर पर त बोइबे करितीं, बोइतीं जाइ बजर पर राम ।

जहवाँ के तहवाँ बा चन्दा अन्दर भइल लहर ए राम
ओहिजे गिरल जहाँ ले कूदल मुँह का भरे समुन्दर राम ।

तकलीं झकलीं अपना जिउ में कबहीं लमहर मोका पाइ
कुटुम-घराना कोठरी-खमिहाँ कुल्हिए पवलीं जरजर राम ।

अनकस बरल न काटत खानी एतनी बड़ी उमिर ए राम
इन्तजार के समय न हमसे काटत बने पहर भर राम ।

खाली झलक लउकले तड़पे प्रान, त जिउ छरिया जाला
न। निहरइबऽ आवऽ तोहके तिकवल करीं नजर भर राम ।

खटमिठ नरक-सरग एहिजे, त सरग सरहले का होई
जे चाहे ऊ जाय सरग में, पृथबी बड़ी सवदगर राम ।

ओराइ गइली रात!

कुछ कहलीं न सुनलीं
ओराइ गइली रात !
पुतरी बिछवलीं पलक ओठँघवलीं
ओराइ गइली रात !

सरधा बइर प्रेम झँझर पिअवलीं
तकिया ओठंगि आस बिरवा खिअवलीं
अबहीं भगति रसबेनिये डोलवलीं
ओराइ गइली रात !

धीरे-धीरे कुटुकि-कुटुकि लाज फेंकलीं
अँगुरी लपेट खूँट अँचरा के हँसलीं
दियरी जरत मुँह तनिकी स देखलीं
ओराइ गइली रात !

अँगुरी पकड़ पोर एक पटकवलीं
अबहीं बलम पाँव एक ही दबवलीं
लागल करेजा रोम कुसुमे खेलवलीं
ओराइ गइली रात !

आनन्द संधिदूत के गीत–संसार

(संन्दर्भ – "एक कड़ी गीत के" (आनन्द संधिदूत) 1992, भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना–1)

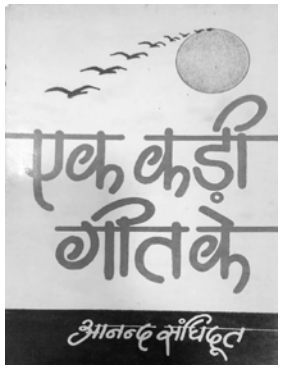

अशोक द्विवेदी

आनन्द 'संधिदूत' के शिकायत बा कि "गीत नापे के ठोस आधार ओह वर्ग का पासे नइखे जे गीत लेखन भा समीक्षा कार्य में लागल बा।'' दरसल काव्य–संसार के नाप जोखे अउर चीजन मतिन मीटर; सेर, किलो ग्राम से ना होखे। अधिका से अधिका कवनो सहृदय आ समझदार अदिमी ओह 'अद्वितीय संसार' में पइठि के ओकरा कारीगरी आ संवेदनात्मक गहराई आ फइलाव के निहार सकेला आ लवटि के अपना भाषा में ओकर बखान क सकेला। आचार्य सम्मट के इयाद बरबस आवऽता–

'अपारेकाव्य–संसारे कविरेकः प्रजापतिः यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।' रूचलानुसार संसार सिरजे वाला कवि क काव्य–सृष्टि 'नियतिकृत नियम सहिता' ना होके नियति के नियमन से अलग, 'अनन्य परतंत्र' (दोसरा के अधीन ना रहे वाला) मानव के आनंद उत्कर्ष खातिर, सुरुचिपूर्ण आ मनोहारी होले। कवि के ई संसार आ ओकर उपराजल चीज जइसन लउकेले आ रुचेले, ओइसने अपना संसार में ऊ सिरजन करेला। ब्रह्मा आ सृष्टि से सुन्दर आ अलग ओकरा काव्य–संसार के कवनो पैमाना से सही–सही नापलो न जा सके। गीत कविता क एगो कलात्मक, भावपूर्ण आ सांकेतिक रूप (फार्म) हऽ जवना में लय, गेयता आ संगीतात्मकता का साथे अदंरूनी संगति (पॉजिटिव यूनिटी) जरूरी होला। आजु के बदलत परिवेश में गीतकार अपना संवेदनात्मक उठान आ गुनगुनहट में अगर साँच अनुभूतियन के सार्थक ढंग से उरेहे खातिर नया जमीन, नया रूप के तलाश करऽता त कवनो बेजाँय नइखे। पुरान शास्त्रीय छंद विधान ओकरा कथ्य के .....उक्ति वक्रता भाव–सघनता आ रचनात्मक साचे के वाजिब ढंग से उजागर ना क सके। भाषा के सृजनात्मक इस्तेमाल कवि के रचना के मूल्य बढ़ावेला। पुरान सौंदर्याभिरुचि आ सौंदर्यदृष्टि के आदी लोग, नया दृष्टि सौंदर्य–चेतना से भड़की त भड़कल करो संधिदूत ओह गिनल चुनल गीतकारन में बाड़न जवन लोक –प्रचलित छंदन के इज्जत देके, शास्त्रीय रचना–विधान के साँचा तूरे के प्रयास कइले बाडऩ । साथ–साथ ऊ लोक राग आ लय से लगावो रखले बाडऩ ।

संधिदूत के एक कड़ी 'ना दिमाग में दिल बलकी दिलवे में रहे दिमाग' उनका गीत–संसार "एक कड़ी गीत के" में घुसे क कुंजी ह। एही कुंजी के लेके हम ओम्मे घुसे के कोशिश करऽ तानी। सिरजन के तन्मयता आ पढ़ल़ा का तन्मयता में बहुत कम दूरी होला। ज्ञानात्मक संवेदना आ संवेदनात्मक ज्ञान के फर्क करही के परी। बे डूबल आ बे तन्मयता के एह गीत–संसार क सुघराई ना लउकी।

आ ईहो रचना के सुघराई आ विन्यास के खिंचाव (आकर्षण) पर निर्भर करेला कि ऊ कतना खींचऽतिया आ डुबावऽ तिया। संधिदूत लेखा कवनो समझदार पारखी आ कवि–कर्म का प्रति ईमानदार गीतकार के, अनुभूति के गहराई आ संवेदनात्मक संदर्भ के पकड़ला बिना ओकरा गीत के मर्म ना बुझाई। संधिदूत का गीतन में मानवता क प्रेम, जिनिगी के जिनगी बनावे क सोच–फिकिर, आशा–निराशा, चिन्तन, संघर्ष क क्रियाशीलता या विसंगतियन पर सार्थक व्यंग्य बा।

सुघराई चाहे भाव के हो भा रूप के, विचार के हो भा कथ्य के, सहृदय ओकरा अंदरूनी आ बाहरी दूनो रूपन पर रीझेला। आज के सजग गीतकार अपना सुघराई आ बोध के दू रूपन के उकेरेला– भाव में आ कथन (अभिव्यक्ति) में अभिव्यक्ति के औजार भाषा ह। ओकरा भाषिक रचाव में गुँथाइल संवेदना आ अनुभूति के ओकरा सहज सोभाव में ना पकड़ला पर भूल हो जाई। सधिदूत पुरान सौंदर्य–अभिरुचि से हट के लिखले बाड़न, गीत के लक्ष्य बा कि ऊ जेतना गेंदा–गुलाब के रक्षा करसु ओतने धतूरो के हिफाजत देसु। कवनो प्रकार के जीवन पृथ्वी पर विलुप्त ना होखे। सब पर्याप्त मात्रा में लहलहात रहे हमरा गीत–के गेय वस्तु इहे बा।" ई दृष्टि महाप्राण निराला का ओह दृष्टि से मेल खाता, जवना से ऊ गुलाब आ कुकुरमत्ता के देखले बाडऩ । संधिदूत का गीतन में रोमैण्टिक भावोच्छवास ना होके साँच–सहज अनुभवन के जियत–जागत चित्र बाड़न स। ईहे चित्र (बिम्ब) उनका गीतात्मक सहजानुभूति के जान बाडऩ स आ कलात्मक सुघराई के प्रान।

'एक कड़ी गीत के' मानुस जिनिगी के अंदरूनी आ बाहरी साक्षात्कार के गीत–संग्रह बा। कई गीतन में संधिदूत अपना भीतर उतरे, अपने के देखे आ 'देखल' के उरेहे के कोशिश कइले बाडऩ। स्वामी दक्षिणामूर्ति आ शारदा सन्यासी के संगत आ थोर –बहुत प्रभाव का नतीजन ई कोशिश अवरु अर्थवान हो गइल बा। आत्म अन्वेषण आ साक्षात्कार का एह क्षणन में लोक संदर्भन के अलौकिक रूपो लउकि जाता। कबीर के रहस–भेद आ प्रेम–संसार के झलक ठावाँ–ठईं मिल जाता–बाकि उलटबाँसी नइखे होत। बिरोधाभास के बीच संसार के नश्वरता उभारि के, कवि काव्य–रूढ़ियन के नया अर्थ देबे के कोशिश कइले बा।

जवना परतिया में दुबिया ना जमली
उड़ली असढ़वो में धूल
समय बनावे तहाँ निरमल तलवा
उगेला कँवलवा के फूल ।

कवि के 'मानसर' भा 'निरमल तलवा' में कँवल के फूल (पूर्ण सौंदर्य) खोजे खातिर भीतर का–अगम तहखाना में उतरे के परत बा।

भइया नजर गड़लि असमनवाँ में हम चितईं अगम तहखनवाँ में ।

तहखाना में उतर गइला पर भित्तर क स्याह–सफेद लउके लागऽता आ अन्हार छँटला पर आपन बौनापन आ निरीहता उजागर होखे लागऽता। सरीर का 'टुटही बखरी' से अउँसल प्रेम बहरियाये लागऽ ता–एहू के कहे क उनकर लूर ढंग–निराला बा–

लागे हमरो ले नीक कहीं तार–रेंगनी ।
एगो कोनवाँ बखरिया का सूप–बढ़नी
जे पोंछात रोज हाथ से अँगनवाँ में ।

▪▪▪▪▪▪▪

रोआँ रोआँ अंग–अंग सगरी टटोरलीं
जलवे में जल बिनु छछने परनवाँ ।

प्रतीक आ मान पारम्परिक बाड़न स–कबीरी अंदाज में संधिदूत धरती के बिछावन आ आकास के ओढ़न बना ले तोड़न, फेरु खोज नया सिरा से जारी हो जाता आ नश्वरता उजागर होखे लागऽ ता–

सवख– सिंगरवा कोइलवा के लुतिया ।
लहँगा चुनर चोली चोटी चुटपुटिया
लागत व्यर्थ, उतार फेंकत
हम पागल भइलीं ना ।

आज के आदमी असहाय आ उपास जिनिगी के मनःस्थिति, पीड़ा अ आह से आहत अनाम 'बालम' का आर्त आत्मनिवेदन करत कवि फिकिरमंद आ दुखी बा–

निकसे न पावे नाहीं कतहीं दुअरिया
छछनि रोवे मनवे में मनवा के देवता ।

▪▪▪▪▪▪▪

चिन्तवा फिकिरिया के चिन्तन बनवली।
जिनिगी रिन्हत दुख बिनलीं बेंसवलीं
खाय केहू अउरो घुसल बखरी ।

अन्त में कूल्हि सुख–दुख, चिन्ता–फिकिर सँउपि के आहीं अंतर्मन का अरूप रूपवान के बारे में सोचला पर उनका मन के लहर थिराता– एही से कवि दुनियाँ का लउके वाला विद्रूप के देखला का बजाय अपना भीतरो के बार–बार जतन करत लउकत बा।

दुनियाँ सोचले माथ पिराला ।
तोहक सोचले लहर थिराय....
अगली बगली जलन समाले ।
अंदर देखले आँखि जुड़ाय ।

अपना कई गो गीतन में संधिदूत वर्तमान व्यवस्था, समाज आ ओम्मे सामान्य जन के छछनत–तड़पत–जूझत–बिलात जिनिगी के असली मार्मिक रूप उभारे के प्रयास कइले बाड़न। एह गीतन में नोकरिहा के दर्द, मजूर आ किसान के समूचा परिवेश के सांकेतिक बाकि पुरहर अभिव्यक्ति मिलल का–लोक भाषा का जियतार अर्थ–गम्हिराई का साथ–

हाथ–गोड़ नोकरिया में धइ
तन रेकसा में जाय
आम अस झोरल बदन लागे
मोर मन बन्हकी जनाय

▪▪▪▪▪▪▪

अतना उघार कि चिन्हार खोरी–खोरी ।
जाईं हम कहवाँ छिपाय चोरी–चोरी

▪▪▪▪▪▪▪

मुट्ठी भर बीया के हो गइल तबाही ।
आसा के खेती में लागलि बा लाही
आँखी से आँसू ना गिरल करे ठार ।

▪▪▪▪▪▪▪

अपने जहाँ–जहाँ गोहरवलीं
ओहिजा एक गोड़ पर धवलीं
मुवलीं लाते तर कचरइलीं ।
राउर जै जैकार मनवलीं
पर हम परिचय ना बन पाईं ।

कठोर वास्तविकता का नाँव पर कोमल भाव के उपेक्षा आधुनिक प्रयोगवादी कविताई के फैशन बन गइल बा। संधिदूत का कविता में ई बात नइूखे। ऊ आज के तमाम विकृतियन आ कडुवाहट में कोमल आ मधुर के उभारे के कोशिश कइले बाडऩ ।

उनका गीतन में क्रांतिधर्मी लफ्फाजी नइखे, कारुणिक स्थिति आ पीड़ा के मार्मिक अभिव्यक्ति बा। अनास्था के ज्वार के रोके खातिर ऊ सचेष्ट बाडऩ आ जीवन मूल्यन खातिर चिन्तित। एही से उनका गीतन के भावात्मक–सघनता तरल बा आ काव्य भाषा आर्द्र। जन–जीवन के असहाय स्थिति, ऊहापोह आ व्यथा के अतना सहज उरेह उनका गीतन में बा कि मन अनासो बेचैन हो उठऽता। उदाहरण में उनका किसान के बेटी अपना मेहनत से खेत के सजावत आ सँवार तिया– 'बइठे बइठान' बढ़ जा तिया आ सयान होके अपना पूरा गँवई–परिवेश के दर्द अपना में समेट ले तिया–

कहीं भीजे जौ गेहूँ कोठिला के धनवाँ
कहीं भीजे झाँपी झोरा ओढ़ना बिछौनवाँ
अँगना में भींजेला पथार के दउरिया।

▪▪▪▪▪▪▪

दरे–दरे बेल–बूटा दरे–दरे बिलुकी
अँधी कोठरिया में झोरा बिनाला ।

▪▪▪▪▪▪▪

तोहरा कन्यादान के बहनवा बा हो बाबू जी ।
केहू नाहीं आवे ई मेहनवा बा हो बाबू जी ।
एहिजा त जरऽ तिया कोइना के दियरी
कवना भावे गाँवे किरसनवा बा हो बाबू जी

▪▪▪▪▪▪▪

फँड़वा में ढूँढ़ा ढूंढ़ी फुफुती में कचरी
जवरा के धइले, होई कपरा पर गठरी
अवते होई माई जो/कमइले होई बखरी

संवेदना के अइसन भींजल छुवन अपना जीयत बिम्ब का साथ एह गीतन में बा कि संदर्भ–चित्रन के मार्मिक रूप सामने आवते मन बेचैन हो उठऽता। गाँव के प्रति लगाव के अइसन मार्मिक कथन दुर्लभ बा, जवना में कवि गाँव से बिछोह के पीर–पसावत बा–

गोरुवो गोड़वा रोकेला, बछरुवो गोडव़ा रोकेला । कइसे जाईं जात खानी गोड़वो गोड़वा रोकेला । गाँव गइले गाँव के धतुरवो गोड़वा रोकेला ।

सामान्य कथन से अलग हटि के कहल कवित्व आ वाग्विदग्धता के विशिष्ट बनावेला। संधिदूत का गीतन में कथन के एगो विशिष्ट अदांज आ लोकज 'टोन' बा। सहज सोभाव का अनुरूप, संदर्भ–चित्रन आ प्रतीकन से लैस, नया उपमा से उजागर होत, उक्तियन का

वक्रता से चमकत उनका भाषा के निठाह आ धारदार रूप के देखि के साफ समझ में आवऽता कि कवि क भाषा पर बहुत गहिर पकड़ बा–

कहाँ जइब ऽ एकारी अन्हारी बारी घेरे ले
उल्टा पल्ला फेरेले बदरिया रहिया रोके ले ।

▪▪▪▪▪▪

घर में ना केहू खाली घरवे पड़ल बा ।
फटली न धरती तबहियों गड़ल बा
ऊँच–ऊँच खोरि भइली, नीच भइली बखरी ।

बदलाव के संदर्भन के अतना सजीव अभिव्यक्ति संधिदूत के भाषिक रचाव में छिपल सृजनात्मकता के उजागर करऽता। उनका भाषा में एगो नया दीप्ति बा जवन उनका भाव–संवेदना के दीपित क देता। उक्ति वक्रता एह भाषा के धार बा–

नई बान ना सम्हरे/आँचर उधियाला

▪▪▪▪▪▪

लाज बरे कुछऊ के कुछऊ कहाला

▪▪▪▪▪▪

सिरफल का पतई पर कनइल मुस्काला ।

▪▪▪▪▪▪

टुटला बटाम अस कोट के इजतिया
रोसनी छोड़त आवे सुधि के बरतिया ।

▪▪▪▪▪▪

डुबलो सवाद के इयाद परे तितिया ।

भाषा के वाजिब इस्तेमाल में कुच्छे जगह बा– कुछ गीतन में जहाँ संधिदूत ढील परल बाडऩ ; ना त नया उपमा, नया चित्र, नया प्रयोग के परोसे (प्रस्तुतीकरण) में ऊ विशिष्ट बाड़न। गीत के रचाव आ ओकरा रूप–विन्यास पर उनकर कारीगरी सराहे जोग बा–

देवता घुमत बा उघार खोरी–खोरी
गोड़ तर फाटेला दरार चारुओरी ।

▪▪▪▪▪▪

अतना गड़ेलू बात अँतरा समाइ के
ठोरवन खोजेला पखेरू छितराइ के ।

▪▪▪▪▪▪

करिया सरिरिया/सुखाई भइली पोखरी
फाटि गइली कनई/ओराइ गइली मछरी ।

गिहिथिन आ कलावन्त मेहरारू जइसे नया–नया रूप में, नया–नया तरीका से घर संसार के सँवारे सजावेले; संधिदूत अपना गीत–संसार के भाव प्रवण, संवदे नात्मक क्षणन के सांस्कृतिक आ सृजनात्मक धरातल पर उरेहत बाडऩ । छंद–विधान, लय, गीत, संगीतात्मकता आ कलात्मक साकेंतिकता का लिहाज से उनका गीतन के ई संग्रह बहुमूल्य बा। संधिदूत, लोकधुन–सोहर, कजरी आ बियाह आदि गीतन का 'फार्म' में बहुत असरदार आ मार्मिक भाव–अभिव्यंजना कइले बाड़न। एकर उदाहरण संकलन के गीत सं0 25, 52, 68, 69, 75, 77, 79 आदि में देखल जा सकेला। लोक–धुनन आ लोक–तर्ज पर त एह संग्रह में उनकर कुछ गजल बहुते जोर दार, मार्मिक आ असरदार बन गइल बाड़ी स।

संधिदूत का कविताई पर संक्षेप में कहल बहुत कठिन बा। कोशिश कइल जाव त इहे कहाई कि ऊ रचना–विधान का दिसाईं सजग, उक्तियन में माहिर, कारीगरी में दक्ष, संवेद ना आ अनुभूतियन से भींजल गीतकार बाड़न। जीयत–जागत गृहस्थ मानव के हास–विलास, नेह–छोह , सुख–दुख, चिन्ता–फिकिर, बेचैनी आ सोच–संघर्ष के नया चितेरा आ ओकरा आत्म–अवलोकन के गायक बाड़न। उनका गीतन में करुणा के जल–धारा बा, 'अँजुरी भर असरा' आ 'अरघा भर आँसू' बा, सगुनवती दूब आ अँकुरल हरदी का सँगे अच्छत सहित लहरत धान बा। सभ्यता के बदलाव में फैशन उनका के चिउँटी काटऽता– शहर में रहत गँवई हिरोह बा, आ अपना परिवेश से सहज लगाव बा। ऊ कहीं किसान का बेटी से ज्ञान–संस्कृति के खेती करावऽ ताड़न, कहीं आधुनिक सीता से परदोष भुखवावत बाडऩ । हर जगह उनकर आधुनिक दृष्टि बा– 'ऐक्शन'(क्रिया) के सही पकड़, संदर्भन के सार्थक उरेह बा आ बाटे अभिव्यक्ति के नया तेवर आ ठेठ अंदाज। 'एक कड़ी गीत के' भोजपुरी गीत–विधा का क्षेत्र में, अनुपम गीत–संग्रह बा।

▪▪▪▪▪▪

गहमरः एगो बोधिवृक्ष

आनन्द सन्धिदूत

केहू–केहू कहेला कि गहमर एतना बड़हन गाँव एशिया में ना मिली। केहू–केहू एके खारिज करत वक्तव्य सुधारेला आ कहेला, "दै मर्दवा एशिया का ह? एतना बड़ गाँव वर्ल्ड में ना मिली, वर्ल्ड में! ई सुन के बड़ गाँव में रहला के आनंद ओइसहीं महसूस होखे लागेला जइसे एक फूँक गाँजा के सुरूर सुर–सुर–सुर–सुर सँउसे अलंग में उतरल चलल जात हो! मसल कहल ह कि बड़ गाँव के बनिहार आ छोट गाँव के जमींदार बराबर होला। हमनी का बड़ गाँव के बनिहार हईं जा।

गहमर में जनमला के कुछ स्वाभिमान के सुरसुरी त होइबे करी। अब एशिया में चाहे वर्ल्ड में गहमर गाँव का जोड़ के हैवीवेट मिलो भा जिन मिलो बाकिर एतना त तय बा कि यू0पी0– बिहार में एतना सघन पसरल ग्राम नामधारी सामुदायिक संरचना अउर कवनो नइखे। गहमर के माने भइल कि गंगा–कर्मनाशा का दोआबा में लगभग ऊन्तालिस वर्ग मील में फइलल एगो अइसन भूखण्ड जवना के गाँव का अलाववे अउर कवनो सम्बोधन नइखे। एही भूखण्ड में गंगा किनारे लगभग डेढ़ किलोमीटर उत्तर–दक्खिन आ दू किलोमीटर पूरूब–पच्छिम में फइलल लगभग एकलाल के ठसाठस ठकचल जनसंख्या के नाँव ह गहमर खास। गनीमत भइल कि पिछला सत्तर बरिस में एह बस्ती में से अनगिनत परिवारन के स्खलन भइल आ लोग शहरि में बसल चलल जाता नाहीं त आज जनसंख्या तीन गुना ढेर होइत। ग्रामपिण्ड में से भरभराइ के जनसंख्या झरला का बादो अगर डेरा–डण्डा छावनी–एक्सटेंशन चाहे गहमर में समाइल मौजा–पुरवा सिकन्दरपुर, निजामपुर, बबुरहनी, बँगरा, मड़करा बाँगर–बाँड, फकीरपुर, भटपुरवा, भटपुरवा देहली, खुदरा–गदाईपुर, हथउरी पचउरी, पटखौलिया के अउरो–अउरो जनसंख्या जोड़ लिहल जाय त जनसंख्या के फीगर डेढ़ लाख के लांघ जाई! एह लिस्ट में ओह गाँवन के नाम नइखे जहाँ के अदिमी जिला से बाहर भइला पर अपना गाँव के नाम गहमरे बता देला। एकरा अलावे अगल–बगल के बड़बस्ती, मोटर बस के आखिरी पड़ाव बाराकलां के आ ब्लॉक बन गइले भदौरा के आपन पहचान मिल गइल नाहीं त कुत्तुपुर, मगरखाहीं, भतौरा, शायर मनिया, बकइनिया आ सेवराई तक ई कुल गहमरे कहात रहे। एहिजा के अदिमी अबहियों कहेलन कि सँकराडीह हमनी के मूल स्थान ह जहाँ से हर गाँव में अदिमी छितराइल बा। सँकराडीह गहमरे के एगो मौजा ह। कर्मनाशा का पार बिहार के पुरनका जिला आरा शाहाबादो (अब बक्सर) में पड़े वाला कई गो गाँव जइसे सोनपा, डेहरी के अदिमी दूर देश गइला पर सुविधा खातिर आपन पता–ठेकान में पहिले गहमरे लिखावत रहलन काहें कि गहमर उनका खातिर हर तरह से नगीची बा।

गहमर एगो अइसन गाँव ह जहाँ पोस्ट ऑफिस के आपन इमारत बा। सिनेमा हॉल बा। भारी भरकम अस्पताल बा। दू–दू गो डिग्री कॉलेज बा। दू–दू गो

डिग्री कॉलेज बा। तिनतल्ला इमारत वाली राजकीय कन्या इन्टर कॉलेज बा। यूनियन बैंक के दू–दू गो ब्रांच बा। एहिजा सवा सौ साल से ढेर पुरान रेलवे स्टेशन आ पटना–मुगलसराय (अब पी.डी.डी.यू.) मेन लाइन पर कई फर्लांग लमहर प्लेटफारम बा। अभी हाल तक आधा दर्जन डांकमुंशी लोग बीसन लाख रूपिया मनिआडर बाँटत रहे। अब रूपिया बैंक का नेफ्ट आ आर.टी.जी.एस. से आवत बा। एहिजा के प्राकृतिको परिदृश्य मनोहरे बा। गहमर में छव तरह के खेत के माटी बा। जवना में हर तरह के फसल आनो बीआ डाल दिहले पैदा हो जाले। खेत–सिवान का बीच–बीच में आम–महुआ के सघन बगइचा बा जवना में जेकरा सवख बा ऊ अउरो तरह के फल–फूल लगवले बा। एकरा अलावे गहमर लँगड़ा आम का उत्पादन छवर (प्रोडक्शन बेल्ट) में आवेला एह से जे फलोद्यान में पूँजी लगावे जोग बा ऊ कलमी आम के आधुनिको बगइचा लगवले बा। गाँव का दखिने कर्मनाषा का थाला में अबहियों जंगल के एगो छोट रूप विद्यमान बा जवना के मनिहरबन कहल जाला। ओहिजा लोग बनसप्ती माई के गोड़ लागे भूलन बाबा के दरसन करे आ बरसात का सीजन में खेखसा कँइत बन परवर आ गूलर तोरे आवेलन। गंगा के उत्तर आरी के थाला बाँड़ कहाला। एहिजा सरपत के जंगल रहे जवना में अनेक तरह के वन्यजीव रहलन। रहल त कबो बाघो होइहन काहें कि गंगा के एगो घाट के गाँव अबहियो बघनरवा बा। बनसुअरा हरिना आ हारिल–तितिर त अभी हाल तक रहलन। अब ई आहारजीव खतम हो गइल बाड़न। बांचल बा त खाली घोड़रज नीलगाय। अब देखे के बा कि ई वनपशु बाचत बा कि डायनासोर मतिन कथा शेष होता। गाँव से सियार के बोली खतम हो गइल रहल ह। सुने में आवऽता कि सरकार कई ट्रक सियार ले आ के खेत में छोड़लऽसीय। पता ना कवना वजह से एक बेर सियार पकड़ल गइल आ अब बाहर से ले आके छोड़ल जाता। जवन होखे वर्तमान सियार का बोली में ऊ सरीलापन नइखे जवन एह क्षेत्र का आदिवासी सियारन का बोली में रहे। पता ना कवना देश के बोली बोलत बाड़न स आज के सियार।

गहमर में कई गो विशेष खासियत बा। एहिजा के दस–बीस हजार आदिमी हमेशा फउज में सेवा करेलन। एहिजा फउज के पेन्सनों लेबे बाला दस–बीस सइ बूढ़ हमेशा तारीख गिनत रहेलन । गहमर में दू गो बैंक के तीन गो शाखा बाड़ी सं। रोज सइ–दुइ सइ पिन्सिनिहन के निपटावल जाला त महीना भर में पेंशन के काम ओरियाला। गहमर में एहरारू मेहरारू अंगूठा चिपोर मिल जाय त मिल जाय नाहीं त गाँव में आपन नाँव लिखे भर सब पढ़ले बा आ ऊहो अँगरेजी में। फउज का नौकरी के ई प्रभाव हउए । एहिजा के इन्टर कॉलेज सत्तर – पचहत्तर साल से ढेर पुरान बा। एहिजा के मिडिल स्कूल डेढ़ सौ साल से ढेर उमिर के बा। गहमर में अँगरेजो रहत रहलन सा उहन के नीलगोदाम के अवशेष अबहियों बा। किलोमीटर भर लंबा गंगा जी से लेके नीलगोदाम तक पानी के अवशेष बा। गोपाल राम गहमरी के तोप से उड़ावल कोठी के भग्नावशेष अभी हाल तक रहल ह। गहमरी जी से उनकर कोठी क्रांतिकारी राजाराम सिंह खरीदले रहलन। सन् 1942 का आन्दोलन में जब ऊ बागी भइलन त उनकर दमन करे एंग्लो–अमेरिकन फौज के एगो टुकड़ी आइल रहे, जवन राजाराम सिंह का हरेक अड्डा के तोप से उड़वले रहे। ओही में गहमरी जी के कोठी, जेकर नांव जासूस काटेज रहे उहो झउसा गइल। एकरा अलावे एहिजा डील–डाबर में दबल पुरातत्व के सामग्री बा। अनेकन खूबसूरत पक्का मकान बा। अदिमिन में लूगा–फाटा टॉप–जिन्स, सवख – सिंगार के संचेतना बा। लेकिन गोड़ का नीचे जांघ का भर हाँच–चहिला से भरल गली–खोर आ छवरियो बाड़ी स। एह में हँकला पर अदिमी त छोड़ीं बैल तक अनकसालन स । गहमर का गली खोर में अब सुधार होता बाकिर एहिजा जनसंख्या के बहुमत नगरपालिका पसन्द ना करे। ऊ ग्राम पंचायते में खुश बा।

अइसन नइखे कि नगरपालिका के स्थापना ना भइल, स्थापना भइल । नगरपालिका कई साल तक सक्रियो रहलि। लेकिन एही में अफवाह उड़ गइल कि नगरपालिका रही त जीवन के स्वतंत्रता समाप्त हो जाई । गोरू – बछरू पर टैक्स लाग जाई। फेर का पूछे के! सबका अनकस बरे लागल। फौजी गाँव कड़बच–कड़बच किड़िक के खड़ा हो गइल। गहमर रेल स्टेशन पर गाड़ी रोक दिहल गइली स। हजार अदिमी मोंछ अँइठि के आ सीना तान के चिग्घाड़ल–नगरपालिका भंग करो। तनातनी जब ढेर बढ़ गइल त प्रशासन आ गइल। गोली चल गइल ! जे मोंछ अँइठि के सीना तनले रहे ऊ त

फउज में भागे–पराये सिखले रहे एह से बरकि गइल। एकाध गो भोला–भाला सीधा अदिमो का खून में डूब के कारतूस जुड़इलन स। बाद में मोकदिमा चलल, मामिला हाईकोर्ट तक गइल। जज आपन लिलार सिंकोर के कलम के माथा से ठोरिअवलस आ पुछलस कि ष्आखिर ई कइसन गाँव ह जेकरा उन्नति आ विकास सोहात नइखे। सब उन्नति खातिर लड़ेला ई लोग अवनति का पक्ष मे लड़ रहल बा। का इहन लो का गली के सफाई रोशनी के इन्तजाम आ गाँव के सुनियोजल विकास नीक नइखे लागत?"

वकील, जज का कान किहें मूँड़ी ले गइल, साइं के आवाज भइल आ समझा दिहलस कि "हजूर, कुछ जानवर अइसन होलन जिनका कनई – काँदो में अन्हारा घोघिया के घुलटल नीक लागेला ।" जज स्वीकृति में मूड़ी हिलवलस आ जान जाईं कि नगरपालिका भंग होके ग्राम सभा वापस मिल गइल। अदालत का भरल इजलास में गाँव का प्रगतिशील आ सही सोचेवालन के पानी उतर गइल। खाली गहमरे ना यूपी–बिहार का पूरा जवार में जवना गाँव में फौजी रिटायर ढेर बाड़न ओहिजा एही तरह के अन्धा कानून लागू बा। उटपटांग भाषा आ जोर जबरदस्ती के माहौल बना के हरेक गाँव में ई लोग भारत – पाकिस्तान के मोर्चा खड़ा कइले बा । एलोग का पैदा कइल समस्या पर अब बड़े–बड़े समाजशास्त्री लोग सोचत बा। जरूरत एह बात के बा कि फौजी के रिटायरी से पहिले एह लोग के पूरा तालीम देके वापस लौटावल जाय कि गाँव में कइसे रहे के चाहीं । गाँव का मनोमालिन्य आ तनाव में इहन लोग के 'योगदानश मजिगर बा।

एक बेर गाँव का कनई में रंगाइल जब घरे पहुँचलीं त फउज के रिटायर नाऊ रंगलाल हमरा गाल पर पानी दरकच्चत पुछलन कि, "आ ए मन्सी जी जन्मभूमि जननी च! सुनले बानी?' एक बेर त हम आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत के इसलोक मन परलीं फेर मन करूए कि अपना देहिं में चपकल कनई के छींटा गंगा नहइले रंगलाल का देहिं में रगर के छोड़ाईं आ कहीं कि, "लऽ ए रंगलाल भइया एह गाँव के अस्मिता तुहईं सम्हारअ, हम त विरह में जिये के चाहअतानी। अइसन कहलो जाला कि दूर–दूर रहले प्रेम बढ़ेला। अब त गाँव में हमार ठरो–ठेकान नइखे। बे गोसिया–मुआर के जमीन जे चाहल हराइ बढ़ा के दूबर – पातर कइल। सरकारो एह जमीन के फालतू मान के बीचे से नहर निकाल के सोगहग पिण्ड के रोती– छीती कइ दिहलसि । जेकरा लौना घटल ऊ पेंड़ के डहंग काट लिहल । अब ढहल घर का ओर देख के जेकरा छोह लागेला ऊ कहेला कि "अरे ललवा त बिला गइलन सा ष बेतन भोगी मजदूर एक जगह बिलाला त दूसरा जगह बस जाला। जहाँ ईंटा के भट्ठा लागेला ओहिजा नइखीं देखले, केतना मड़ई पड़ जाली स लेकिन गंगा दशहरा के चिमनी बुतात कहीं कि मड़हा उजाड़! लेकिन सुधि ना जाले । लवटि लवटि के मन दउरेला ... अरे हेइजे फलनवा हमार कितबिया छिनले रहे । हेइजे हमके मारे के धिरवलस, हेइजे फलनिया हमके देख के मुँह बिजका के मुस्किआइलि । हई घरवा जवन गिरल बा एही में हम पैदा भइलीं। कहे के मतलब कि भूमि – ठौर का सुधि – ग्रह के अनवरत परिक्रमास्थल हो गइल बा हमार माथा – बह्माण्ड । का ई रंगलाल का समझ में आई? एक बेर इहे रंगलाल हमरा बारात के नेतृत्व करत इलाहाबाद गइलन आ अपना व्यस्त कार्यक्रम में मौका निकाल के संगम नहाये गइलन आ नाव पर बइठ के प्रवचन कइलन त तीरवाह के मलाह आ पंडा बाह – बाह कइलन स कि जवना बारात के नाऊ एतना विद्वान बा ओह बारात के पंडित कइसन होई? पंडित जी के कथा ई रहे कि एक बेर शहरि के एगो मेहरारू गाँवे आइल आ पंडित जी का पास जाके पुछलसि कि, "आ, ए पंडित जी षष्टी कब पड़ी?" पंडित जी एक मिनिट सोचलन फेर बड़ा रोआइन मुँह बना के कहलन कि, 'आ, ए जजमान जब रउए षष्टी कहब तब हम का छठि कहीं ?' पत्रा लुंड़ियावत पंडित जी कहलन कि "हई लेही पतरवा रउरे रख लीं!"

लेकिन अब जमाना बदल गइल अब पंडियो जी का घर के बेटी– पतोह बी.ए., एम.ए. करत बाड़ी स लेकिन पुरूष प्रधान समाज में मानसिकता के बदलाव अभी नइखे भइल ! गाँव छोड़ के शहर में बसल एगो विवशता बा। जब हमरा अइसन छोट आदिमी एह विवशता पर एतना सोचत बा त का सोचत होइहें बड़े–बड़े महान आदिमी गाँव छोड़ के देश आ विदेश का विभिन्न शहर में बस के। हर गाँव नियर गहमरो में प्रतिभा – पराह भइल बा। पहिले भारत में गाँवहीं आ शहरइतिन जनसंख्या में अस्सी आ बीस के परता बइठे अब गाँव के जनसंख्या शहर का जनसंख्या से कम हो गइल बा। गाँव में बिजली–पानी का साथ हर सुख–सुविधा आ गइल बा तवनो पर गाँव मजबूरन

छोड़े के परत बा। शायद एकर कारन जीविका में वर्चस्व के लड़ाई बा । जे प्रभावशाली नइखे सीधा सज्जन आ शान्तिप्रिय बा ओकरा खातिर गाँव में कवनो जीविका के साधन नइखे।

आखिर केतना तीव्र विरह के ज्वाला लेके अदिमी गाँव छोड़त होई । गहमर में रहि के आ लगभग सवा दू सइ उपन्यास आ कथा साहित्य लिख के आ बीस बरिस तक जासूस पत्रिका के सम्पादन कइ के गोपाल राम गहमरी का सामने अइसन कवन विवशता आइलि कि गहमर के आपन कोठी बेच के बनारस का बेनियाबाग में मकान खरीद के रहे सुरूम कइलन त मतवाला अखबार में आचार्य शिवपूजन सहाय होली का सम्हेरा चिटुकी लेत लिखलन –

गहमर के गोपाल राम जी
हिन्दी के जासूस
करत बिलास बिलास भवन में
तजि के छप्पर फूस
भला यह बानप्रस्थी है !

गहमर गोपाल राम गहमरी के छप्पर – फूस ना रहे। आलीशान डुप्लेक्स कोठी रहे। ओह में चारू ओर बगइचा, हाता, मीठ पानी के कुँआ रहे। कोठी का एक–एक ईंट पर 'जासूस काटेज' छाप के पकावल रहे, गोपाल राम गहमरी नाक में बोलस–नक्का रहलन। ऊ कहस कि, "एहिजा के एक मुट्ठी धूर कहीं धइ दिहल जाय त ओहिजा बनलो काम बिगड़ जाई । इहे बात कलकत्ता पुलिस के जमादार मंगलधारी कहस । एकबेर गाँव के कुछ अदिमी उनसे मिले कलकत्ता गइल ओह लोग के जमादार साहब खूब स्वागत कहलन। चलत के अतिथि लोग मंगलधारी के प्रशंसा करत कहल कि" बाह रे बचवा तोहार बाप तोहके ढोलक बजा के भीख माँग के पढ़वलस आज तोहके एह पोजिशन में देख के बड़ा खुशी होता।" मेहमान लोग का एह वक्तव्य से मंगलधारी के इज्जत लाल बजार थाना का परिसर में सिपाही पुलिस का सामने लुटा गइल। ओकरा बाद जमादार साहब गहमर के अदिमी देखस त कोसन दूर भागस।

पता ना कवना अमनख में गोपालराम गहमरी आपन कोठी बेच के बनारस गइलन। बेचला का बादो चर्चा में आइलि। सन् 1942 के आन्दोलनकारी राजाराम सिंह गहमर के जासूस काटेज खरीदले रहलन। राजाराम सिंह के दमन करत अंगरेजी–अमेरिकन फौज उनका हरेक अड्डा पर तोप दगलसि त गहमरियो कोठी तोप के घाव खाके लखनऊ का रेजीडेन्सी नियर करिया–भभीछ खड़ा हो गइल। जासूस काटेज के ई दुर्दशा गोपालराम का जीवने काल में हो गइल। जवना अंगरेजी राज का समर्थन में गोपालराम गहमरी एक पाई मूल्य के परचा छपा के प्रथम विश्वयुद्ध का सम्हेरा फौज में भरती होखे के प्रचार करत लिखले रहलन कि

पढ़ाया लिखाया
गुनाया सिखाया
जिन्होंने जगत को
नया कर दिखाया
तो हम भी कभी
काम आयेंगे ब्रिटिश के रण में।

जवना अंगरेजी फौज का समर्थन में गहमरी जी कविता लिखलन उहे ब्रिटिश फौज जासूस काटेज के बदसूरत कई देले रहे। अदिमी का कहेला आ का हो जाला, कइसन – कइसन आह लेके अदिमी गाँव से निकल के पूरा देश आ देशो का बाहर पूरी दुनिया में छितराइल बा। टूअर – टापर गुमसुम नियर ऊ अदिमी उगल त गहमर में बाकिर सेमर का बीआ अस रूई के डैना हिलाव उड़ि–उड़ि के अनुकूल वातावरण के तलाश करत पूरा संसार धाँग आइल। गहमर छोड़ला का बादो एहिजा आवे के होला। एगो कहावत कहल जाला अड़हर जइबऽ बड़हर जइबऽ

मांग मुड़ावे गहमर अइबऽ

गहमर में जामल लइका होखसु भा लइकी जब उनकर बिआह होला आ सन्तान पैदा होले त ओकर बार उतारे खातिर गहमर कमइछा माई का धाम पर जरूर आवे के होला। हाथ में कमइछा माई खातिर झूल–फूल सेनुर–बतासा आ नरियर लिहले धाम का दुआरी पर मेहरारू गावत मिलिहें – देबी खोलीं ना केवड़िया

बड़ी देर से खड़ी
पान लेके खड़ी
फूल लेके खड़ी
देबी खोलीं ना केवड़िया
बड़ी देर से खड़ी...

अब गहमर के कमइछा माई विन्ध्याचल के विन्ध्यवासिनी माई आ मैहर के शारदा माई के एगो बृहद

त्रिकोण यात्रा बा । जेकरा सँवहर बा ऊ एक साथ तीनो धाम के दरसन करत बा। गाजीपुर जिला मुख्यालय से कामाख्याधाम महज बीस–पचीस किलोमीटर दूर बा। गहमर आ करहिया नजदीक के रेलवे स्टेशन बा जवन पटना–मुगलसराय मेन लाइन पर बा।

आधुनिक गहमर सन् 1526 ई. का बाद बसल। खानवा का लड़ाई में जब राणा सांगा का सेना में धोखा से भाग– पराह मचल त सिकरवार नरेश धाम सिंह जूदेव अपना पुरोहित गंगेश्वर उपाध्याय आ दीवान बीरनाथ ठाकुर (कायस्थ) का साथ अपना पैतृक स्थान का ओर चल पड़लन । धामसिंह फतेहपुर जिला का फतूहाबाद के निवासी रहलन। जबकी बीरनाथ ठाकुर फतहपुर जिला का कड़े मानिकपुर के रहवइया रहलन। सम्भवतः इहन लोग के पीछा मुगल सेनापति मीर वाकी करत रहे। एह से अपना पैतृक स्थान ना जाके ई लोग मीर वाकी के चकमा देत मय बाल बच्चा, सेना – फौज आ माता कामाख्या का प्रतिमा का साथ गंगा–कर्मनाशा का बीहड़ जंगल में घुस गइल। ई जंगल पच्छिम में चकिया–चन्दौली से लेके पूरब में आरा (अरण्य) तक फइलल रहे। जंगली जानवर आ मनिहर साँप से भरल एह जंगल में जगह–जगह चेरो आ खरवार जाति के गाँव पुरवा रहे। चेरो खरवार आदि भू स्वामी का ऊपर एगो मुसलमान प्रशासक कुतलुब खाँ (जनश्रुति के नाँव) रहे जवन आधुनिक सेवराई गाँव(अब तहसील) मैं माटी के गढ़ी बना के रहत रहे । धाम सिंह के लड़ाई चेरो राजा शंकर (या शंशाक) आ मुस्लिम प्रशासक कुतलुब खाँ से भइल एह युद्ध में शंकर चेरो आ कुतलुब खाँ दुनो मारल गइलन आ एह जवार पर धाम सिंह सिकरवार के कब्जा हो गइल। लेकिन ओह घनघोर जंगल में खाये के कुछ ना रहे। भोजन का रूप में बर–पीपर पर गोदा आ गाय के दूध रहे जवना के खाके सब गुजारा करत रहे। अब न त धामसिंह राजा रहि गइल रहलन न गंगेश्वर उपाध्याय पुरोहित न बीरनाथ ठाकुर, दीवान धामसिंह का संगे मित्रता रहे जवना के ई लोग निभावत रहल अन्यथा ब्राह्मण आ कायस्थ मुस्लिमों युग में मुस्लिम शासकन का साथ रहि के आराम के जीवन जी सकत रहे आ उच्च पद पा सकत रहे।

कहल जाला कि कमइछा माई सपना देखवली कि जहाँ नीम का पेड़ पर बाघ दहाड़त मिले ओहिजे हमार स्थापना होखो । ई अजगुत जहाँ वर्तमान में मन्दिर बा ओहिजे लउकल । अइसन लागत बा कि आधुनिक कामाख्या धाम पहिले कवनो चेरो सामन्त के कोट या गढ़ी रहे जवना का पराजित होके भगला का बाद ओही ढूह पर कमइछा माई के स्थापना भइल। ओह जमाना में पराजित गढ़ी या किला में रहे के प्रथा ना रहे एह से या त गढ़ी–कोट के ध्वंस कइ दिहल जाय या खुदे बीरान पड़ल – पड़ल जब धूर–माटी से ढका जाय त ओपर खेती होखे लागे भा पेड़– रूख जाम जाय। गहमर में अइसन कई गो डीह रहल ह जवना का नीचे घर–मकान आबादी के निशान रहे। अइसन एगो प्रमुख स्थान सँकराडीह या सकरहट रहल ह जवना का नीचे घर–मकान आबादी के निशान रहे। सँकरहट का बारे में कई गो धारणा बा। कई जगह ई चर्चा कि सिकरवार सबसे पहिले सिकरहट में बसलन आ ओहिजे से फइल के कई गाँवों में घर बनवलन। लेकिन कुछ लोग सिकरहट के शंकर चेरो के राजधानी बतावेलन जवन सही प्रतीत होता । धामसिंह से हारला का बाद शंकर चेरो के सेना सोनभद्र–पलामू का ओर भाग गइल आ सकरहट उजड़ के धूर माटी से ढँकात–ढँकात खेत बगइचा बन गइल। ओह बस्ती पर बनल खेत के कुछ हिस्सा कामाख्या धाम का नाँवे लिखा गइल आ बाकी भाग अउर अदिमी जोत लिहल। अभी हाल तक सकरहट का खेतन में साही का मानि नियर छेद हो जाय जवना में मुँह डाल के देखला पर चूनाकली कइल पक्का कमरा लउके, मोट पल्ला के शीशों के लकड़ी के भारी–भारी केंवाड़ी लउके । ओहिजा का खेतन में चानी – सोना मोहर–असरफी आ रूपिया मिलल बा हमरा बाबा के दू चेरूई कोइला मिलल जवन हो सकेला कोंहड़उरी अदउरी रहल होई जवन समय का साथे कोइला नियर करिया हो गइल हो । निठाली अहिर के एक ठिल्ली गोजई मिलल जवन इतिहास के मार झेलत– झेलत पत्थल हो गइल रहे। सन् 1970.71 में जब एही डीह पर नहर के खोनाई भइल त ओमे कई गो पत्थल के मुरती मिलली स एगो चौकोर प्रस्तर पर चौबीस अवतार नियर आकृ ति उकेरल रहे। एगो तीन मुँह के सुन्दर केश विन्यास वाली देवी के खण्डित प्रतिमा ओही डीह पर बान्हल लाची फुआ का चउरा पर बहुत दिन तक धइल रहल। पता ना लाची फुआ के का परिचय बा। बाद में एह क्षेत्र से सट के गंगा नदी बहे सुरूम कइली। कहल जाला कि एगो साधु रहलन जवन बहुत बूढ़ हो गइल रहलन। एक दिन सांझ के बरसात का मौसम में अपना

एगो चेला के साधू पीये खातिर गंगाजल ले आवे के भेजलन। ओहचरी गंगा नदी उनका कुटिया से एक–डेढ़ किलोमीटर दूर बहत रहली। जहाँ आज गंगाजी बाड़ी ओहिजा एगो बरसाती नाला रहे। साधू के चेलवा डेढ़ किलोमीटर दूर जाके गंगाजल ले आवे में असकतिया गइल आ बरसाती नाला से पानी लेके ध गइल। सवाद में फरक मिलल त साधू का आरू आ गइल आ चिचिआ के गंगा जी के गोहरवलन, "आउ रे गंगिया" आ गंगा माई रातों–रात पत्थर अइसन कठोर धरती आ पहाड़ अइसन झंघाट पेड़ ढाहत कोड़त साधू का कुटिया तक आ गइली । आश्चर्य ई बा कि पिछला डेढ़ सौ साल में सैकड़न बिगहा जमीन गंगा का कटान से एक किनारे से दुसरा किनारे चल गइल बाकिर साधू के माटी के बेदी वाली समाधि अबहियों जस के तस बा। गंगा नदी का कोप से संकरहट मौजा के तीन चौथाई जमीन कट के बह गइल। कगार पर ईंट के जोड़ल खूबसूरत मेखला लउके पता ना ऊ कुँआ रहे कि अनाज राखे के कोठिला । अबहियों आठ–दस बिगहा डीह बाचल बा पता ना ओह में का दबल बा। गहमर में अइसन कई गो डीह बा । कमइछो माई का टीला का बारे में कहल जाला कि एह में चहबच्चा बा । गंगा का किनारे बिचली खूंटी पंचमुखी घाट अइसने डीह रहे। कहल जाला कि चेरो जाति का पास तामा के बीजक रहे जवना में धन गड़ला के नक्शा रहे । चेरो जनजाति के लोग बहुत दिन तक आके रात में टीला के कोड़त खनत रहलन स। अब कई गो टीला गंगा में कटि के बह गइल। चेरो एगो स्वाभिमानी जाति रहे। ऊ पराजय का बाद गहमर में रूक के परजा – पवनी ना बनलि। लेकिन एह जाति के स्मृति कई सदी बीत गइला का बादो चेरूई आ चेरूआ अइसन माटी का बर्तन का रूप में मौजूद बा ।

जंगल काट के खेत बनावत आ बस्ती बसावत में बुढ़वा महादेव के शिवलिंग मिलल। ओहिजे एगो जंगली बिलार के मूस खेदत रहे। ओहिजा मौजूद लोग कहल कि अब एह से बड़इन अजगुत ना मिली आ एही जगह पर गहमर के स्थापना भइल। स्थापना का समय एह गाँव के नाँव गहवर रहे। जंगल का हरियाली में मड़ई वाला गाँव के अउरी नाँव होइयो का सकत रहे। गाँव में बिजयी सेना के सिपाही – सरदार त बसबे कइलन पराजित राजा के परजो–पवनी लोग बसल एकरा अलावे बाहर से आके बड़े–बड़े सेठो महाजन लोग बसे लागल। देखते–देखते गहमर विशाल से विशालतम हो गइल। लेकिन खुद गहवर का ना पता चलल कि कब अंगरेजी में लिखल डब्लू एम पढ़ा गइल आ गहवर गहमर हो गइल।

पता ना कइसे राजा धामसिंह के बंशज लोग तीन जाति में बँट गइल –सिकरवार राजपूत, सिकरवार भूमिहार आ सिकरवार पठान। राजपूत लोग कहेला कि धामसिंह राजपूत रहलन। भूमिहार लोग उनके भूमिहार ब्राह्मण– मिसिर बतावेला। लेकिन सिकरवार शब्द पर मतभेद नइखे । धामसिंह के जेठ लोग सैन्यूमल के बंशज अगर अपना के सिकरवार राजपूत कहेलन त धामसिंह के दूसराका लइका पूरनमल के बंशज अपना के सिकरवार भूमिहार बतावेलन। ई दूनो दल आपन उदगम स्थल संकराडीह के मानेला। धर्मान्तरण का बाद जे मुसलमान बनल उहो अपना के सिकरवार पठान बतावेलन। ई लोग आपस में कमइछो माई के बाँट लिहल । सैन्यूमल के कमइछा माई अगर गहमर में बाड़ी त पूरनमल के देवी चन्द्रघन्टा का नाँव से रेवतीपुर में। ई लोग लड़ाइयों में श्रेय के दावा करेला। परतोख में कुतलुब खाँ के किला के जमीन अब सैन्यूमल पार्क कहात बा त पूरनमल के वंशज लोग के कहनाम बा कि कुतलुब पूरनमल का लाठी प्रहार से मुअल रहे।

कार्नवालिस का राज में जब भूमि के नियोजन भइल त चउरासी गाँव राजपूतन के छप्पन गाँव भूमिहारन के आ चउदह गाँव पठानन का वर्चस्व के रहे। एह में चउदह के पहाड़ा बा। चउदह चउक छप्पन आ चउदह छका चउरासी। पता ना एकर का मरम बा। गहमर के राजस्व कुछ दिन डुमरांवो रियासत का खजाना में जमा भइल। लेकिन डलहौसी का शासन काल में गाजीपुर जिला के दूनो तहसील– जमानिया आ यूसुफपुर मुहमदाबाद डुमराँव से वापस लेके पश्चिमोत्तर प्रान्त में आ गइल। एह से गहमर के विकास भइल। शिक्षालय के स्थापना, रेलवे फौज आ डाकघर के नौकरी आ रेलवे स्टेशन बन गइले जीविका खातिर दूर–दूर तक जाये के सुविधा डलहौसी के देन रहे।

कार्नवालिस भूमि सुधार करत आधा गाजीपुर जिला तक आइल रहे कि तबले मर गइल। गहमर में ऊ बीस पट्टी कटले रहे जवना में दू पट्टी चोरावल ह, एकर पता ना का अरथ बा। हरेक पट्टी केहू के नांव से बा। जइसे– पट्टी गोबिन राय। अइसन चर्चा ह कि जब गहमर के चउधुर अवधूत राव (अद्भुत राय) रहलन ओह घरी एगो मुस्लिम सैनिक टुकड़ी

लगान वसूलत आइल रहे। अवधूत राव द्वारा लगान देवे से इन्कार कइला पर उनके नाना प्रकार के यातना दिहल गइल लेकिन यातना का सामने चट्टान नियर खड़ा रहले आ अपना वचन से टस से मस ना भइलें मुस्लिम सरदार, अवधूतराव का अहिन्सात्मक टकराव का सामने पराजित होके जाये लागल। संजोग से ओके राह में एगो करकटहा(डोम) मिलल। मुस्लिम सरदार ओही से दू पइसा लेके गहमर का लगान के पट्टा ओ करकटहा का नांवे लिख दिहलस द्य एह तरह से गहमर बहुत दिन तक हँसी मजाक में करकरहा के गाँव भइल रहल। एक बेर गहमर चारणो–भांट के गाँव कहाइल । डुमराव राज में जाये से पहिले गहमर बनारस रियासत में रहे लेकिन लगान ना मिलला पर काशी नरेश गहमर के पट्टा महना का एगो भांट का नावे लिख दिहलन, लेकिन केहू लगान ना पावल।

जनदेवी कामाख्या का प्रतिमा के भुजुरी – भुजुरी तोड़ल गहमर के प्रमुख घटना में से एक ह गहमर के लगान के पट्टा जब करकटहा के लिख के मुगल सरदार आगे बढ़ल त बगइचा में एगो कानू पतई बहारत मिलल । मुगल सरदार जब कानू से अवधूतराव का जिद्द का बारे में पुछलस त सरलमन के कानू कमइछा माई का ओर हाथ उठा के कहलस कि बस इनहीं के कृपा बा। फेर का रहे। मुगल अपना सैनिक टुकड़ी के प्रतिमा ध्वंस करे के आदेश दिहलस द्य कहल जाला कि ऊ टिलवो खोन के धन निकाले चाहत रहे लेकिन एगो चमत्कार भइल। मूर्ति के तोड़त के आ टीला के खोनत के अनगिनत काला भौंरा निकललन स कि मुगल सैनिकन के भागे के पड़ल । प्रतिमा त खण्डित हो गइल बाकिर अभी आजुओं गांव में जवन कनिया सुग्घर आवेले ओकर सुघराई के तुलना ओही खण्डित प्रतिमा से कइल जाले आ लोग कहेला कि कनिया कमइछा माई अस सुघर बा। ओह खण्डित प्रतिमा के सुन्दरता अद्भुत बा। अब नवकी प्रतिमा का साथ पुरनकियो प्रतिमा के पूजा होला । लागत बा धर्मान्तरण के काम ओही समय भइल। बाहर से मुस्लिम अफसर भेजे का बजाय मुगल स्थानीय स्तर पर धर्मान्तरण करा के काम चला लिहलन स ।

जइसे–जइसे इतिहास आगे बढ़ल रेल, डाक, फौज के महीना–तनखाहि आधुनिक सुख–सुविधा लउकत गइल। मध्यकालीन मानसिकता के धार कम होत गइल। चौरासी, छप्पन आ चउदह गाँव के पहाड़ा छितरा के आपन एकता खो बइठल। अब एकर ढेर भाग पुराना आरा जिला शाहाबाद में जाके बिहार कहाता आ कम भाग गाजीपुर में रहि के यू.पी. । अब चउरासी के बटोर लउरा–लाठी में नाहीं खाली भोजन भात में होता । उहो कवनो – कवनो धन से टांठ घर में। बाकी सब त नयी–नयी समस्या में अझुराइल बा – नक्सल समस्या, बेरोजगारी समस्या, अखबारी समस्या, जात–पात हिन्दु–मुस्लिम, मंडल – कमण्डल, चोर–चुडुक्का आ अकेलापन के एहसास।

अब एके गाँव में कईगो गाँव लउकत बा। जहाँ सलसन्त परिवार बा ओहिजा शान्ति बा। धर्म आ नीति के चर्चा बा। जहाँ गरीबी बा ओहिजा धर्म के चर्चा कहाँ नीक लागी । अइसन घर में माई–बहिन आ आवह– आवह होता। कट्टा–बन्दूक निकलत बा। ओहिजा असन्तोष के कोहराम बा। अभाव के कलह बा। रोज सांझ के गली का कोनचा चिरइन का हल्ला नियर अनेक सुर मिल के मिले सुर मेरा– – तुम्हारा होता आ समवेत सुर में सुनाई पड़अता कि तोर देखल बा त तोर देखल बा। जो–जो पीढ़ा धइ के ऊँच भइल बाड़ी ।

गारियो–गलौंज में कैडर बा रैंक बा । जवना रैंक के जे बा ओही रैंक खातिर निर्धारल गारी जब दिआई त ऊ बुरा ना मानी नाहीं त जवने मुंह में आइल तवने बक दिहले ऊ बरिसन दुश्मन बनल रही । जे ई सत्संग नइखे कइले ऊ अगर गारी दी त समाज विद्रुप आ तनाव ग्रस्त हो जाई । जे एके नइखे समझत ऊ अगर सुनी त हमेशा खातिर कोंहा जाई । अवधूत भगवान राम अपना गाँव के पाठशाला कहत रहलन हम अपना गाँव के इनवरसीटी मानीला। भले पोस्ट ग्रैजुएशन नइखीं कइले लेकिन गहमर इनवरसीटी के इनरोलमेन्ट त बड़ले बा। गहमर से अँउजाइल आदिमी कहेलन कि एह गाँव के नाँव सवेरे–सवेरे ले लिहले दाना ना मिले। कहाँ से मिली? जब एको दाना छोड़ल जाई तब न मिली। एहिजा का जीवन दर्शन में शत्रु के अधूरा ना पूर्ण संस्कार कइल जाला। कहल कवि बाल मुकुन्द सिंह के –

खपड़ा नरिया माटी ढेला
पत्थर से लड़ी त कइ घरी अड़ी!

गहमर जबर ह। गहमर जटिल ह। एहिजा बहुत सम्हार के चले के पड़ेला ।

कवि भोलानाथ गहमरी का नजरि में
काँट–कूस से भरलि डगरिया

धरीं बचा के पाँव रे
माटी उपरा छान्ही छप्पर
उहे हमरो गाँव रे।

गहमरे टरले ना टरे । ई जिद्दी गांव ह। कई सदी तक अशिक्षा – अज्ञान का गहन अन्धकार में जी लिहलस लेकिन समझौता ना कइलस । कवनो जमाना में अइसन संघर्ष भइल होई जवना में ई कहावत बनल कि– नवली नवे न गहमर टरे, बीच करहियाँ धरहर करे। बाकिर संघर्षो में मोहब्बत बा। अपना जमीन खातिर संघर्षो में अनुराग बा। कहल कवि मिथिलेश गहमरी के कि दर्द वाले हैं पीर वाले हैं

अपने तेवर जमीन वाले हैं
हम तो नफरत की आग क्या जाने
हम तो गंगा के तीर वाले है

करहिया के कवि प्रिन्सिपल वंशराज सिंह का एगो कविता का अनुसार कमइछा माई का मन्दिर में पहिले के दरसन करी एही बात के लेके गहमर आ नवली में संघर्ष भइल रहे–

हरदम से ई होड़ लगल बा ना फरिआइल के सरहन बा के जीतल आ के हारल बा के पहिले जा दरसन करे नवली नवे न गहमर टरे बीच करहिया धरहर करे ।

पुराना जमाना में गाँव से गाँव के लड़ाई सीवान खातिर होखे। मामला आगे बढ़े त अदालत–इजलास खातिर धन के जरूरत पड़े। जे धन दे ज्ञान दे ओकर सम्मान होखे। कुन्दन कोइरी अइसने अवसर पर जब आर्थिक सहयोग दिहलन त उनके बड़–बढुआ का दुआर पर खटिया पर बइठे के सम्मान मिलल। समाज सेवा क मूल्य त मिलबे करेला । जरूरत सेवा में निःस्वार्थ भइला के बा।

अब अइसन बात नइखे। लोग काम कम करत बा आ विज्ञापन ढेर। लोग सार्वजनिक स्थान बहारत कम बा आ हाथ में खरहर लेके फोटो ढेर खिंचावत बा।

अब काम नइखे होत बाकिर साइन बोर्ड लाग जाता। विकास का नाम पर लूट मचल बा। समाज खात–पात बेमार पड़ जाता

का होई कई के परापतो के दुगुना
खात खानी धरे उत्पादके के ठेंहुना
ज्ञान भइल लतरी के दाल इहें गाँव ह!

अइसन परापत से गांधी मना कइले रहलन शहिन्द स्वराज्यश लिख के । लेकिन के मानअता। सँउसे देश का संगे गहमरो के आचरण विछिलाइल बा। चरित्र गिरल बा। विचार लोटिआइल बा। उद्देश्य खाली ध नअर्जन भइल बा। हाय धन हाय धन से गहमरो के सामाजिक सौन्दर्य विधुनाइल बा । पहिले शान्तिप्रिय परिवारों का पास रोजगार रहे। अब सब छिना जात बा । पहिले एकाध गो राँड़–बेवा एकाध गो अकलोल – बकलोल जी लेत रहलन अब भाई भतीजा आ पितिआउत के, के कहो आपन सगा बाप आत्महत्या करे के तइयार बा । सून सान देख के भोकरि–भोकरि के रोवत बा। सास–ननद गंगा में बूड़–धँस मुअत बाड़ी। बेटी–पतोह का पेट का पाछा नया–नया सामाजिक अनुबन्ध समझे के पड़त बा। जइसे – जइसे जनसंख्या बढ़ति जात बा ओइसे–ओइसे सामाजिक मरजाद ठकच के भरल रहिला – बूट का कोठिला नियर जगह–जगह चिटक जात बा। सँउसे देश नियर गहमरो में चोर सन्त के बोली बोल रहल बा – जइसे पाव भर छान के जै सिरी राम!

मछरी का फेर में भगत भइल बकुला
शेर ओढ़े बकरी के खाल
इहे गाँव ह।

अशोक द्विवेदी के कहनी पोसुआ के किरदार गहमरो में मिलिहें। एहिजा मुसहर चोरी का जुर्म में डोरिआवल जाला । इहन लोग पर लाखन रूपिया चोरी कइला के मोकदिमा दर्ज होला । लेकिन मुसहर का खाना तलाशी में मड़ई से बरामद होला एक भर गांजा आ एगो नीसध सबरी आ गाँव – महाल में माँग के पावल टुकरी–खाँड़ रोटी । मुसहर चोरी के माल ना पावे ऊ चोरी के मजूरी पावेला । ऊ चोर मजूर ह। मजूरी में पचीस–पचास रूपिया आ बोनस में जेल गइला पर जमानत । एहिजा कहावत ह कि –

चउधरी रहलन गाजीपुर
लुटवा लिहलन उधरनपुर।

एहिजा जीवन जीये खातिर जेतना कलाबाजी के जरूरत होला ओकर खमोपेंच बड़ा जटिल बा। एकर तुलना कलकत्ता का जटिल जीवन प्रणाली से कवनो कवि कइले बा–

कलकत्ता ह कल पर
गहमर ह पेंच पर ।

प्रकाश उदय के कहनी तिसरा कुल्ला जनाला गहमर

में बइठ के लिखल हउए। एहिजो बाभन–ठाकुर में मतभेद हो जाला त हनुमान – चउतरा का मैदान में फरिया लेबे के नेवता घूमेला । ओहिजा दूनो दल अपना–अपना अस्त्र–शस्त्र का साथ जूमेला । इहन लोग में कुछ देर त शब्द बाण चलेला ओही में जमींदार लोग कहेला कि पाँव लागीं बाबा आ बाबाजी लोग कहेला जय हो जजमान । एक नींव पर खड़ा दू गो देवाल केतना लड़ी।

गहमर में रहि के केहू के बिजनेस – व्यापार ना चमकल। राजनीति ना चमकलि। यहाँ तक कि ज्ञान – कला आ साधुता तक में लाही लाग गइल। एहिजा बनिया लोग का खाली उधार ना लक्स साबुन सूता से आधा काट के बेचे के पड़ेला आ आधा साबुन गणेश जी लछिमी जी सदा सहाय का सहारे दुकान में पड़ल रह जाला। एहिजा कपड़ा का दोकान पर धोती पीयर रंग में रंगला का बादो लौटा दिहल जाले । एहिजा रेलवे के टिकट न बिकाला न संग्रह होला एह से रेलवे स्टेशन के विकास ठप बा। एहिजा ट्रेन में मूँगफली बेचे वाला गरीब घर के लइका प्लेटफार्म पर ना उतरअस काहें कि माल लुटा जाये के डर बा । एहिजा बड़े–बड़े मौनी बाबा चिड़चिड़ा के गारी बके लागेलन । एहिजा अरहर का खेत में बलात्कार का बाद ढाठी दिया जाले लेकिन ओहदिन अखबार में छपेला कि बिजली का आँख मिचौली में जनता परेशान । केतना सुनाई एहिजा बड़े – बड़े राजनीतिज्ञ के राजनीति धराशायी हो जाये जब कवनो चुडुक्का इहे जालेह कहि के मुँह पीछे कइ के हँसि देला।

गहमर के बानरी सेना सन् 1857 आ 1942 में आपन कमाल देखवले बा। सन् 1857 में वीरवर मैगर सिंह गुरदेल से मार के अंगरेजी सेना के भगा देले रहलन। बाद में उनके कालापानी के सजा भइल। गाजीपुर का आदि गजेटियर में उनके टेरर ऑफ डिस्ट्रिक्ट (जिले का आतंक) लिखल बा। दयाशंकर उपाध्याय आ प्रसिद्ध नारायण वर्मा का लिखल पुस्तिका में मैगर सिंह के जीवनकथा विस्तार से छपल बा।

क्रांतिकारियन का इतिहास के लेखक आ खुद क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त सन् 1942 ई. का स्वतंत्रता संग्राम में शामिल गहमर का कई गो सेनानियन के गाँव गिनवले बाड़ना आजादी का बाद अनगिनत योद्ध ा स्वतंत्रता सेनानी के पेन्सन आ ताम्रपत्र पावल। एह भीड़ में बलराम साहु नियर सेनानी भी रहलन जे गहमर में कांगरेस के संस्थापक रहलन। सत्ता में आके कांगरेस भ्रष्ट हो गइल तबो उनकर कांगरेस से मोहभंग ना भइल। सन् सरसठ का चुनाव में देखले बानी एगो बाँस का फराठा में तिरंगा लटकवले हकासल – पियासल बलराम साहु जब चुनाव प्रचार का बाद घरे लवटसु त जनाय कि ईसा मसीह आपन सलीब अपने कान्ही पर धइले दउरल चलल आवत होखसु । एह दल में तिलेश्वर सिंह, मोसाफिर राम शर्मा आ जदुपति तिवारी कई गो निष्ठावान कार्यकर्ता रहलन।

गहमर में महात्मा गांधी के लटकन घड़ी चोरी हो गइल रहे किदों कहीं गिर गइल रहे। खादी के साड़ी पहिन के एकर चर्चा बहुत दिन तक रहल । केहू कहे फलनिया लेले बा। फलनिया कहे कि चिलनिया लेले बा । सहदेव बो बढ़इन का जब महात्मा गांधी के लटकन घड़ी मन परे त अपना आँख के गटा अउर फइला के कहसु कि "ओ हो हो रे! क्या लटकन घड़ी थी । 'जब ऊ डाइरेक्ट इन डाइरेक्ट में बत्तिआवसु त खड़ी बोली बोले लगासु। हमरा माई से कहसु कि, "जानत हऊ ललाइन, अंगरेज सरकार बोला कि देखो गन्नी मराज, तुम तो बिदेसी सामान जार–फूँक देते हो फिर भी हम तुमको एक लटकन घड़ी देता है इससे तुम टैम देखना।" ओही लटकन घड़ी के चोरा के गहमर गाँव महात्मा गांधी का स्वदेशी दर्शन पर आपन जजमेन्ट देले रहे ।

गहमर में श्रेय के लड़ाई जोर पकड़ले बा एह से सामाजिक सौन्दर्य बिधुना गइल बा। एकरा अलावे दबल आ दबावनिहार के प्रतिरोध हीन कुण्ठा बा। एहिजा भय आ शंका के वातावरण बा। एहिजा सबसे ढेर कष्ट सहनशील आ शन्ति प्रिय मध्यम वर्ग के बा। साँच पूछीं त एहिजा एक तरफा जनान्तरण के रोग बा। काहें कि गहमर के लोग त गाँव छोड़ के गइल बाकिर बाहर के अदिमी गहमर में आके ना बसल। अगर हार के हार मद्रासी, पंजाबी, बंगाली, मराठा मारवाड़ी आके इहाँ बसल रहितन त गाँव खिल उठित।

गहमर में नवजागरण ले आवे में विश्वनाथ सिंह गहमरी आ विश्वनाथ सिंह सूबेदार आदि नेता लोग रहे। बाद में एह समूह में अनेकन शिक्षा विद प्रशासनिक अधिकारी आ समाज सेवकन के नाम जुड़ल । इहन लोग में प्रसिद्ध नारायण वर्मा(लेखक

– रंगकर्मी), चन्द्रदीप सिंह मास्टर (रंगकर्मी), लाल बहादुर सिंह मास्टर(लेखक – रंगकर्मी), अंगद सिंह (समाज सेवी), बालमुकुन्द सिंह (शिक्षक नेता – पत्रकार), शिवपूजन लाल (शिक्षाविद), वासुदेव लाल (अंगरेजी लेखक), भोलानाथ गहमरी, दामोदर सिंह नन्दा जी गहमरी के नाँव उल्लेख नउक बा। जेकरा से गहमर के गौरव मिलल ओह में पंडित शीतल उपाध्याय के नाम प्रथम बा। ऊ कालाकांकर में अंगरेजी अखबार 'हिन्दुस्थान' के सम्पादक रहलन। कहल जाला कि महामना मदन मोहन मालवीय उनकर अधीनस्थ रहलन। शीतल उपाध्याय के मकान शीतल भवन अभी आजुओ एगो महल्ला के पहचान बा। दुसरका विद्वान जेकरा पर गहमर के गर्व भइल ऊ संस्कृत के जगत व्यापी विद्वान आ जानल मानल आर्यसमाजी पंडित पद्मश्री डॉ. कपिल देव द्विवेदी जी रहलीं। एही तरह मान्धाता सिंह माध्यमिक शिक्षक सघ के प्रदेश स्तरीय शिक्षक नेता बहुत दिन तक रहलीं।

सक्रिय पीढ़ी में सिने अभिनेता अंजन श्रीवास्तव देश दुनिया में बहुत नाम कमइले बाड़न। अपना अभिनय कला का मौलिकता के बीच अनगिनत हिन्दी, गुजराती, बंगला, अंगरेजी फिल्म आ टी.वी. सीरियल बाड़न स जवना का प्रस्तुति में अंजन जान डाल देले बाड़न । भोजपुरियो फिल्म में उनकर उपस्थिति उल्लेखनउक बा। वर्तमान पीढ़ी में अइसन अनेक मनस्वी जन बाड़न जे साहित्य कला में लाग के गाँव के सांस्कृतिआउत परिदृश्य उजियार कइले बा अइसन लोगन में दामोदर सिंह, कर्नल रंजित उपाध्याय, ललन सिंह गहमरी आ साहित्यकारन में नन्दा जी गहमरी, मिथिलेश गहमरी, फजीहत गहमरी विष्णुदत्त विलीन आ प्रदीप पुष्कल के नाम प्रमुख बा । साहित्यिक आयोजन द्वारा जागरूकता लावे वालन में अखण्ड गहमरी के योगदान प्रशंसनउक बा।

अपना प्रतिभा आ पद का द्वारा जे प्रसिद्ध भइल ओमे डॉ. गोरखनाथ चौबे, डॉ. तुलसी नारायण सिंह, भरत सिंह, योगेश्वर सिंह, रामरूप सिंह, मृत्युंजय प्रसाद श्रीवास्तव, गोपाल सिहं, राजकुमार सिंह के नाँव हमेशा याद करे लायक बा।

गहमर में हाथी के पोसल पक्का मकान के बनावल आ ऊँख के खेती ना सहत रहे। बाकी अब कुल सहत बा। हाथी के स्थान त स्वचालित वाहन ले लेले बा। रहल पक्का मकान आ ऊँख के खेती के बात त अब गाँव में एक–एक से सुग्घर आर्नामेन्टल मकान बनत बाड़न स आ लाठी अइसन नीसध आ चिभलापर गरहगर रस देने वाली ऊँख पैदा होत बाड़ी स।

सतत हि बानी सहात नइखे त प्रियजन के विछोह ! पता ना कहाँ आलोपित हो गइल माई, बाबू, बड़की माई, बड़का बाबू, जगरनाथ बो भउजी, इनरदेव उपधिया, अनत बरई, बनइला साहू, सामसुन्दर भाँट, जोखू साहु...। गिने लागीं त रात ओरा जाई बाकिर नाँव ना ओराई। अब गाँव में पहिले के आनन्द कम से कम हमके नइखे मिलत। पुरान अदिमी अब बाड़न ना आ नया से सम्पर्क नइखे हो पावत। पहिले विश्वनाथ सिंह सूबेदार, चन्द्रदीप मास्टर आ शीतल सिंह सबेरहीं लाउडस्पीकर बान्ह के देश–दुनिया के खबर गाँव के सुनावल करसु। केतना इयाद करीं। लाली का माई के ठण्डा तेल, गुद्दी के माठा, घरभरन के रेक्सा, रामदास बो दादी के झगड़ा, ठाकुर हलवाई के इमिरती कुल्हिये मन परत बा। अभी हाले में जबरदस्त धोखा दे दिहलन उमेश तिवारी। हमके चिट्ठी लिखलन कि कमइछा माई का धाम पर आयोजित कवि सम्मेलन में जरूर आवे के बा आ अपने गायब । एह आवारा नामधारी का निधन पर पूरा गाँव रो दिहल । पता ना केतना सब्जेक्ट देके केतना केतना छन्द हमसे जबरी लिखवलन उमेश तिवारी ।

जइसे आसमान में पलटा मार के हार के हार तरई मुअत–जियत रहेली स ओइसहीं मृतलोकवो में कबड्डिये होता। कब केकर नम्बर आई आ कबड्डी–कबड्डी कहि के चल जाई, पता ना । गहमर में गायिका रामदेई भइली । ओह जमाना में माइक ना रहे बाकिर जब महफिल में ठुमका मार के ठुमरी गावसु त बूढ़ बतावेलन कि गंगा ओह पार तक सुनायी दे –

एही ठँइया झुलनी हेराइ गइल दइया रे

हम मिरजापुर में बइठल बानी बाकिर लागत बा हमरा आत्मा के झुलनी गहमर में हेरा गइल बा। किदों एही झुलनी के जोहत मरे का सम्हेरा बसुदेव भइया पटना के आपन आलीसान कोठी छोड़ के गहमर का खपरइला में आ गइल रहलन।

जवना घर में अदिमी मुए आवऽता ओही घर में कई अदिमी पैदो होखत बा। गहमर फरअता निझाता, निझाता, फरअता। हमनी का फर– फूल चिरई हईं जा आ गहमर एगो विशाल बोधिवृक्ष ! ■■

"मिर्जापुर" के चिरइया तकान (बिहंगम दृष्टि)

आनन्द सन्धिदूत

कवनो ऊँच स्थान पर खड़ा होके अगर मिर्जापुर नगर पर बिहंगम दृष्टि डालल जाय त बड़ा नीक लागी । अब त मानव जंगल खड़ा हो रहल बा जेहरे देखीं ओहरे भवने भवन खड़ा लउकत बा । बाकिर कुछ समय पहिले तक, जब आबादी गाँव का कवादा में रहे आ शहर पर जनसंख्या के दबाव कम रहे ओह घरी मिर्जापुर के सुषमा देखे लायक रहे । ई तबके बात ह जब पहाड़ी लघुसरिता आज अइसन मइल होके सरदो ना भइल रहली स आ उहनी के मिठास मधु अइसन सुगन्धित आ मिश्री अइसन मिलनसार रहे । आज से पचीस–तीस साल पहिले जब हमनी का मिर्जापुर का लगले लंका का पहाड़ी पर से नगर के भूमि तिकईं जा त एहिजा के भूमि के बनावट लहरदार लउके। कारन कि कैमूर पर्वत से ठीक नीचे का तलहटी में मिर्जापुर आ बिन्ध्याचल के जेंउआँ नगर(ट्विन सिटी) बसल बा । पहाड़ का नीचे के जमीन कुछ दूर तक उतार–चढ़ाव वाली लहरदार होले जवन प्राकृतिक पुरस्कार का रूप में एहू नगर के मिलल बा । ई उतार–चढ़ाव पीच रोड आ सघन बस्ती हो गइला का बादो महसूस होला । रिक्सा पर बइठला का बादो कतहीं त एतना चढ़ाई बा कि रिक्सावाला हाँफ जाला आ कतहीं एतना ढलान कि पैडिल लात से दबवले, फन से भाग जाय। कहीं ऊँच कहीं एक दम खाल ।

मिर्जापुर नगर के माटी, खनिज तत्व आ जलगुण का बारे में सरकारी प्रकाशन का पुस्तिकन में बहुत कुछ मिली । जे ढेर कुछ जाने चाहत होखे ओकरा जिला में आयोजित सभा–सोसायटी, सेमीनार, वर्कशॉप आ कमीशन–कमेटी से उपजल अभिलेख के अध्ययन करे के चाहीं । बाकिर बतौर आम जनता एहिजा का पानी में खनिज तत्व बेसी बा एह से पानी भारी बा आ लोहातत्व के बाहुल्य बा । पुराना जमाना में अगरिया जनजाति के कारीगर एहिजा माटी के कूट छान के लोहा बनावतो रहलन जवना से घरेलू उपयोग के औजार टांगी, गँड़ासी, छनौटा, कलछुल, चाकू वगैरह बने बाकिर भारी लौह उद्योग का आगे ई कुटीर उद्योग मंहगा पड़ले कारन थउस गइल। अब बस ओकर अवशेष बाकी बा । शहर का बगले में एगो लोहंदी ग्राम बा जवना का लगले एगो पहाड़ी नदी बा। सम्भव बा पुराना जमाना में ओह नदी के नाँव लौह नदी रहल होखे जवन बिगड़ के लोहंदी हो गइल होखे। नदी के किनारे माटी के बड़े–बड़े मकान जमींदोज बाड़न स आ कहीं–कहीं माटी खोनला के निशानो बा। एहिजा के माटियो करइल दरदराह बा एह से लागत बा वर्तमान बाशिन्दन के अइला का बाद एहिजा के मूल निवासी असुविधा के अनकस महसूस करत स्थान त्याग दूर सोनभद्र– पलामू का ओर बँहड़ि गइल होखस। सोनभद्र जिला का दुद्धी वगैरह में लोहा के घरेलू औजार बनावे वाला अबहियों आपन काम करत बाड़न ।

मिर्जापुर नगर के निर्माण अइसन लागत बा कि ईस्ट इंडिया कम्पनी का छावनी का रूप में भइल। हो सकेला पच्छिम में शिवपुर – विन्ध्याचल से लेके पूरब में कलेक्टर साहब का बंगला तक गंगा नदी का किनारे–किनारे छोट मोट बस्ती रहल होखे। विन्ध्याचल का मेला में विन्ध्य महातिम पोथी में एह क्षेत्र का अनेकन कूप–तड़ाग–कुण्ड शिवाला के जिक्र आवेला जवन दस किलोमीटर से कम नइखे। वर्तमान जेउआं नगर मिर्जापुर– विन्ध्याचल एही दस किलोमीटर का भीतर बा। कहे वाला त इहाँ तक कहेलन कि एह नगर के नांव गिरजापुर रहे। कुछ लोग एकर नांव मीरजापुर लिखेलन। उहन लोग का अनुसार मीरजा माने समुद्र के पुत्री लक्ष्मी से एह नगर के नाम पड़ला मिर्जापुर के समाजसेवी आ साहित्यकार स्व. सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी' मिर्जापुर का स्थान पर मीरजापुर का पक्ष में जनमत जुटावे खातिर बहुत प्रयासरत रहलन। एह घरी मिर्जापुर तीन तरह से लिखल जाता आ तीनो सही बा मिर्जापुर, मिरजापुर आ मीरजापुर। नाँव के वैज्ञानिक सर्वेक्षण यदि कइल जाव त उर्दू में मिर्जापुर के मिरजापुर लिखल जाला काहें कि ओह लिपि में संयुक्ताक्षर लिखे के नियम नइखे एही के हिन्दी में सार्थक अरथ देत मीरजापुर लिख दिहल गइल । अंगरेजी में खाली एक तरह से(डर्प्।च्न्त्) मिर्जापुर लिखल जाला जबकी हिन्दी में मिर्जापुर, मिरजापुर आ मीरजापुर तीन तरह से। ई तीनों प्रचलन में बा। तीनो नांव ऑल इंडिया पास बा। आप पिनकोड (231001) लिखीं भा जिन लिखीं एह तीनों में से कवनो एगो वर्णविवृत्ति लिख देहीं चिट्ठी दन से पहुँच जाई ।

साँच पूछीं त मिर्जापुर– विन्ध्याचल का बीच में कन्तित पुरान बस्ती बा। एके कन्तित परगना भी कहल जाला। अभी आजुओ बिजयपुर का राजा के कन्तित नरेश कहल जाला। कन्तित के ऐतिहासिक महत्व बा। पृथ्वीराज चौहान का जमाना में जब एह क्षेत्र में आल्हा ऊदल के सक्रियता रहे ओह घरी कन्तित में एगो बहुत पोढ़ माटी के किला रहे। कहल जाला कि ऊ किला चाभी पर टिकल रहे। ओह किला के किलेदार आ एह क्षेत्र के गवर्नर दानव राय रहे। दानव राय कन्नौज के राजा जयचन्द के रिश्तेदार रहे। ऊ वीर त रहे बाकिर कामुक स्वभाव के भइला का नाते जनता में आपन लोकप्रियता खो चुकल रहे। ओके आजुओ लोग दानवराय ना कहि दानवरइया कहेला। ओसे जनता त्रस्त रहे। एही से जब मुहम्मद गोरी के प्रशासक (निजामी) इस्माइल शाह चिश्ती कन्तित पर हमला कइलन त जनता दानव राय के साथ ना देके मुसलमान इस्माइल शाह के साथ दिहलसि आ उनकर हर तरह से मदद कइलसि। खुद दानव राय के भतीजा मुर्तजा (हिन्दू नाम नइखे मालूम) जवन दानव राय का किला का मुख्य द्वार के अफसर रहे ऊ गुप्त रूप से इस्लाम कबूल कइके दानव राय का खिलाफ इस्माइल शाह से मिल गइल रहे। मुर्तजा बरसात का मौसम में आधीरात के किला के फाटक खोल के मुसलमान सेना के किला में लिहलस। लोक कथा में किला के चाभी पर टिकला के कथा आवेला । असल में ऊ स्वर्ण कुंजी के इस्तेमाल के कथा ह। दानव राय का भतीजा मुर्तजा के घूस में भारी मात्रा में धन आ पद के लालच दिहल गइल रहे। ओह लड़ाई में सब मारल गइल। इस्माइल शाह, दानव राय, मुर्तजा सब युद्ध में खेत रहल। विजयी भइला का नाते इस्माइल शाह चिश्ती के उर्स लागे लागल आ कन्तित शरीफ कहाये लागल। ओह लड़ाई के सबसे दुखद पक्ष ई रहे कि दानव राय के नव विवाहिता पुत्री कज्जला के पति भी वीरगति के प्राप्त भइलन। कहल जाला कि सावन–भादों का घनघोर वर्षा काल में जब कज्जला विरह मे रोवलि त कजली राग के जनम भइल। कजली जहाँ–जहाँ गहरवार राजपूतन के प्रभाव रहे वहाँ–वहाँ पनकलि। कजली के लोग माता विन्ध्यवासिनी का जन्म दिन से जोड़ेला लेकिन कजली सीधा–सीधा प्रेम आ विरह के गीत ह आ एकर सम्बन्ध दानवराय का पुत्री कज्जला से बा। हो सकेला कि जहिया कज्जल विधवा भइल होखे ओह दिन विन्ध्यवासिनी के जनम दिन रहल हो आ एह कारन से ई तिहवार से जुड़ गइल हो । कालान्तर में जब कजली के दंगल आ जवाब– सवाल के प्रथा चलल त कजली में प्रेम विरह का अलावे अउरो विषय के समावेश भइल। हिन्दू का अलावे मुसलमान कजली गायक भी मंच पर अइलन। एह से कजली के व्यापक प्रचार भइल आ मनोहरलाल रस्तोगी दिलदार का लिखे के पड़ल कि कजरी कड़ा कांगड़ा कालपी कासमीर लौं ।

आठ–नौ सौ बरिस बीत गइला का बादो माटी का किला के आजुओ बा। अभी बावन घाट के बावली बा जेके अब नागकुण्ड कहल जाता। लेकिन लागत

बा कि बावन भगवान के मन्दिर जवन अब ओझला नदी का पूरबी किनारा पर बा पहिले बावन घाट का बावली का पास रहल आ मुस्लिम आक्रमण में मन्दिर नष्ट भइले भा असुविधाजनक हो गइले मन्दिर के हटा लिहल गइल । बावन घाट का बावली का बारे में कहल जाला कि ओह में पहिले बर्तन तैरत रहे। यात्री बर्तन निकाल के बनावसु–खासु आ माँज धोके फेर बावली में तैरा देसु। कहल जाला कि किला का ढूह पर एगो पत्थल के हाथी रहल ओके उद्योगपति बिड़ला जी रेणुकूट ले जाके स्थापित कइले बाड़न।

कैमूर पर्वत का चारू ओर का तलहटी में युद्ध में पराजित लोगन के बढ़िया पनाहगाह रहल ह। रामचरित मानस में पराजित कपटी राजा के वर्णन बा जवन अपना तंत्र–मंत्र का जोर से राजा भानु प्रताप से बदला लेत बा। कहल जाला कि छोटानागपुर के संथाल मोहनजोदड़ो संस्कृति से जुड़ल हउअन स । विन्ध्यक्षेत्र के विन्द, मलाह, मुसहर, धरिकार आ केवट अपना के विन्ध्य क्षत्रिय कहेला लोग। मुस्लिमो काल में बघेल, चन्देल, गहरवार, बुन्देला हार के हार आके रीवा सीधी मिर्जापुर आ प्रयाग–बांदा में बसि गइलन। कजली में बुन्देला पुरूष का सुन्दरता के वर्णन बा। तब बुनेलवा लटका बड़ा मशहूर रहल। मिर्जापुर में बुन्देलखण्डी एगो मुहल्लो बा। हो सकेला कज्जला के साथ बुन्देला के पारिवारिक सम्बन्ध होखे आ दानव राय के दामाद बुन्देला रहल हो । क्षत्रिय वंशावली में बुन्देला के गहरवार ठाकुरन का निकट के बतावल बा।

एहिजा के बस्ती चाहे जेतना पुरान होखे लेकिन मिर्जापुर के वर्तमान स्वरूप ईस्ट इंडिया कम्पनी के देन हउए । ई नगर कम्पनी का छावनी का रूप में गंगा नदी से कलकत्ता तक होखे वाला जल परिवहन का सिलसिला में परिवहन स्टेशन का रूप में विकसित भइल। कारन ई रहे कि दक्खिनी बिहार (अब झारखण्ड) आ मध्य प्रदेश – छत्तीसगढ़ राज्य के सम्पूर्ण बन सम्पदा ओह जमाना में बैल पर लाद के मिर्जापुर नगर का सुन्दर घाट पर आइल करे आ एहिजे से नाव पर बोझ के कलकत्ता रवाना हो जाय। तब हार के हार हजार–पाँच सौ का कतार में बैल के लदुआ काफिला चले। जवन अदिमी आगे चले ओके नयकवा कहल जाय। ऊ गीत के एक लाइन टीपे त पीछे से सब दोहरावे। बाद में इहे गीत नयकवा नांव से मशहूर भइल। अब एकर लोप हो चुकल बा। ओह जमाना में बैल के लदान तेली लोग करत रहे एह से नयकवा का संगे तेली लोग के सांस्कृतिआउत सम्बन्ध बा।

सुन्दरघाट के नाँव हो सकेला सुन्दरी वेश्या का नाँव पर हो। सुन्दरी वेश्या अपना जमाना में बड़ा नामी रहे ओकर मोहब्बत एगो नागर बाभन से रहे। नागर कम्पनी बहादुर का नजरि में अराजक रहे। एक दिन पुलिस ओके पकड़ि के कालापानी के सजा देवे खातिर कलकत्ता ले जाये लागलि । तब गंगा का किनारे भरल भादो में दरियाव के देख–देख के बिलखत सुन्दरी वेश्या गवले रहे –

हरि–हरि नागर नइया जाले
कालापानी ए हरी ।

कुछ अदिमी कहेलन कि नागर के नाव सुन्दरघाट से ना, नारघाट से रहे। मिर्जापुर में चौबेघाट गैबीघाट, नारघाट, नरायनघाट, संकठाघाट, पक्काघाट बाबाघाट, बदलीघाट, ओलियरघाट, बरियाघाट, कचहरीघाट आ कम्पनीघाट पत्थल के कलात्मक ढंग से बनल देखे लायक स्थान बाड़न सा एह में पक्काघाट अइसन उच्च कोटि के वास्तुकला के उदाहरण त गंगा किनारे पूरा उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल में कहीं लउकत नइखे। लेकिन आज का जातिवादी हँउहार में पक्काघाट के बारादरी, सीढ़ी, बारजा, जाली कुल्हिये ढहि रहल बा, केहू देखे वाला नइखे।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहुत निर्माण करवले रहे। ओकर बनावल मोर्चाघर आजुओ बा। कहल जाला कि स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुँअर सिंह से अंगरेजन के एक झड़प मोर्चेघर पर भइल रहे। कुँअर सिंह के फतेह हासिल भइल रहे तब से एह मुहल्ला के नांव फतहाँ पड़ गइल। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्यालय में एह घरी सिटी कोतवाली रहलि ह। सन् 1842 का बनल एह इमारत का ढहनउक भइला पर ओके तोड़ के अभी हाल में नई इमारत बनल ह। सुन्दरघाट पर कम्पनी के गोदाम रहे जहाँ अब खटाल बा। एहिजा कम्पनी द्वारा गाड़ल एगो चौकोर पत्थर के खम्भा अभी हाल तक रहल ह जवना पर हिन्दी उर्दू आ अंगरेजी में गंगा के फेरी रेट उत्कीर्ण रहे। ओहघरी सुन्दर घाट से जवन सड़क सुदूर दक्खिन के जाय ओकर नांव ग्रेट डकन रोड रहे अब ई वाराणसी से मिर्जापुर होत कन्याकुमारी तक जाये वाली सड़क रीवा–जबलपुर रोड या राष्ट्रीय राजमार्ग न. 7 कहातिया। ई रोड पहिले सीमेन्ट के ढालल रहे अब जहाँ तहाँ पिच आ

जहाँ तहाँ सीमेन्ट के बनलि बा। जब ई सड़क ग्रेट डकन रोड रहे तब मिर्जापुर शहर का भीतर एकरा किनारे ईस्ट इंडिया कम्पनी के दफ्तर आ गोदाम, जिला जेल आ जिला अस्पताल वगैरह बनल रहे। जेल त अबहियों बा। अस्पताल हट के कुछ दूर पर मंडल अस्पताल हो गइल बा। पुराना अस्पताल का छोड़ल जमीन पर अब कई गो दुकान खुल गइल बाड़ी स। पक्की सराय एगो कुँआ का जगत पर पत्थर के नक्काशी देखे लायक बा। कुछ लोग के कहनाम ह कि ई कुँआ के सजावटी भाग ना ह बलुक ई घण्टाघर के चौथी आ अन्तिम मंजिल ह जवन घंटाघर टावर पर ना चढ़ावल जा सकल त पक्की सराय कुआँ का जगत पर रख दिहल गइल। मिर्जापुर में पत्थर के नक्काशी बहुत मिलेला कारन कि पुराना जमाना में पत्थल सस्ता रहे आ मजूरियो कम रहे एही कारन वास्तुकला खूब फूलल–फरल। पिछलो सदी में पत्थल पर बेलबूटा काढ़े में विसेसर मिस्त्री के कवनो जवाब ना रहे। उनकर बनावल भारत में बेजोड़ मिर्जापुर के टाउन हाल आ घण्टाघर बा आ ओकरा सामने गिरजाघर बा आ ओसे लगले एक कुआँ बा जवना का सीढ़ी पर पत्थल का रेलिंग पर बड़ा सुग्घर बेलबूटा गढ़ल रहल जवन अब टूट रहल बा। शहर में अइसन केतने मकान आ कुआँ बाड़न स जवना का निर्माण में बिसेसर मिस्त्री आ उनके अइसन केतने गुमनाम कारीगर के कला छिंटाइल बा । इहन लोग का कला के प्रस्तर पट अब गिट्टी में कुँचात बा। अबहियों समय बा एकर पुरातात्विक संरक्षण करे खातिर ।

एह नगर के बर्तमान रूप देबे में तेली, कलवार आ ओमर बनियन के योगदान बा। ओकरा बाद मुसलमान, कायथ आ बाभन वर्ग के नांव आई। स्वतंत्रता का बाद जातीय समीकरण में परिवर्तन का बाद अब स्थिति बदल गइल बा। व्यवसाय एहिजा कबो परम्परागत रूप धारण ना कइ पवलस। अंगरेजी राज में चपड़ा के दलाली जबरदस्त रहे । फेर बीड़ी पत्ता के ठीकेदारी चमकलि । करीब पचास बरिस तक मिर्जापुर पीतल– कांसा के विश्वप्रसिद्ध बाजार रहल। अब गलइचा आ ऊनी दरी के हस्तकला बा । बाकिर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रभाव में बंधुआ मजदूर आ बाल शोषण का नाँव पर गलइचा उद्योग के जबरदस्त धक्का लागल बा। एह में बैंकन के अरबन – खरबन डॉलर के पूंजी निवेश भइल बा जवना में आधा से ढेर मारा पड़ गइल बा।

मिर्जापुर में रेलवइयो के इतिहास रोचके बा। जब एहिजा रेल आइल ओह घरी मिर्जापुर का पुतलीघर में कपड़ा के मिल रहे । ओह मिल के तइयार माल बड़ी लाइन से जाये खातिर मिल का भीतर तक मिर्जापुर रेलवे स्टेशन से रेल लाइन बिछावल रहे जवन अब उखड़ गइल बा बाकिर ओकर निशान बाकी बा। छोटी लाइन उत्तर में माधोसिंह स्टेशन से रहे जहाँ से चील्ह तक एगो लाइन आइल रहे। चील्ह से गंगा फनावे खातिर एगो विशेष नाव रहे जवना पर माल के डिब्बा लाद के एह पार पुतलीघर आवे। एगो इंजन माल का वैगन के खींच के घाट से मिल में ले जाय। लदान का बाद एही तरह इंजन माल का बैगन के गंगा किनारे नाव तक पहुँचा दे आ ओह पार गइला पर एगो दूसर इंजन ओके चील्ह स्टेशन तक ले जाय।

मिर्जापुर के भाषा (जवन पश्चिमी भोजपुरी ह आ एकर निर्माण भोजपुरी अवधी, बुन्देली का मिश्रण से भइल बा) के सुनला पर लागेला कि कवनो जमाना में ई क्षेत्र संस्कृत भाषा के बड़हन गढ़ रहे आ संस्कृत भाषा का विकास में एकर महत्वपूर्ण योगदान रहे। एहिजा विन्ध्यपल्लव ऋषि के जिकिर सुने में आवेला। वर्तमान छानबे परगना का इलाका में दक्ष के यज्ञ भइल रहे। तारकापुर में तारक असुर के कार्तिकेय जी बध कइले रहलन। एह तरह से पौराणिक अनेकन कथा के मिथक भूमि मिर्जापुर के कहल जा सकेला ।

पराजित जातियन खातिर मिर्जापुर अभयारण्य रहे। एहिजा निडर होके मेहरारू भीतर–बाहर निकल – पइठ सकत रहली स। एहिजा दुआर दुआर पर झुलहा खेले के नीम के पेड़ लागल रहे। कजरी खेलत के मेहरारू एह प्राकृतिक सुरक्षा के स्मरण करत रहली स

धनि एठियन के ठँइया रे गोंइया
धनि एठियन तिहवार लोय
तोहरी सरनि मइया खेलों कजरिया
बरवे न बाँके हमार लोय।

कजली में हिन्दु–मुसलमान दूनों के योगदान बा। अगर मुसलमान कलाकार हक्का शाह बफ्फत, जहाँगीर आ अक्खड़ अइसन कवि–शायर कजली के कवित्त–सवइया का संगे कउआली आ शेर का प्रयोग से आकर्षक बनवलन त हरिलाल स्वामी का शिष्य

परम्परा के कवि पं. शिवदास मालवीय, मुंशी दाता प्रसाद 'इन्दु', मनोहरलाल रस्तोगी दिलदार, पं. बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन आ वर्तमान युग में मन्नीलाल, किशनलाल, अमृतलाल, मन्नी–मटरू, मंगर, दुक्खी भगत आ महिला कलाकारन में उर्मिला श्रीवास्तव, अजीता श्रीवास्तव, मैना देवी, उषा देवी का राग रागिनी में कजली के उल्लेखनउक योगदान बा। हरिलाल स्वामी सम्भवतः ओनइसवीं सदी में मिर्जापुर आइल रहलन ऊ लावनी का अवतरण में प्रवीण रहलन।

शिक्षा आ साहित्य का माने में अंगरेजी राज्य एह नगर के स्वर्ण काल रहे। ओह जमाना में मिर्जापुर में छपल हिन्दी के पाठ्यपुस्तक पूरा युक्त प्रान्त में चलत रहे। एह नगर में महादेव सेठ मतवाला के 'मतवाला अखबार' आ श्रीनाथ धवन के 'खिचरी समाचार' चर्चित रहे। मतवाला अखबार में त मुंशी नवजादिक लाल, शिवपूजन सहाय, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आ पाण्डेय शर्मा 'उग्र' जइसन साहित्यकार नौकरी करत रहे। कहल जाला कि महादेव सेठ मतवाला से जब सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के सम्पर्क भइल त निराला जी ई शर्त रखलन कि सेठ जी (मतवाला) जवन खइहें उहे खिअइहें। सेठ जी एह शर्त के स्वीकार कइ लिहलन। सांझ के जब एक पाव अंगूर लेके ऊ कलेवा करे बइठलन त निरालो जी के ऊ बोलवलन। निराला जी देख के हँसलन आ सेठ जी से कहलन कि नाहीं हम दुसरा के आहार छीन के ना खाइब हमरो के पाव भर मँगवावा। गऊ घाट पर निराला के कोठरी अभी हाल तक रहलि ह जवना में ऊ साहित्य साधना करत रहलन।

वर्तमान में त साहित्य में कवनो चर्चित नाम नइखे। अलबत्ते नवगीत में गुलाब सिंह के योगदान चर्चित बा। दूसर चर्चित नाम गणेश गम्भीर आ शुभम श्रीवास्तव ओम के बा। भवदेव पांडेय भारतेन्दु युगीन साहित्य के विश्वसनीय समीक्षक रहलन । उनके उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के साहित्य भूषण सम्मान मिलल रहे। कवि–लेखक प्रताप विद्यालंकार, कथाकार रमाकान्त श्रीवास्तव, भोजपुरी कवि चन्द्रशेखर मिश्र, उर्दू के शायर हुरमत्तुल इकराम का साहित्यिक योगदान के चर्चा होला । मंच का अउर कवियन में अनवर मिर्जापुरी, बनारसी लाल पंकज, किशनलाल 'गुप्त, प्रमोद कुमार सुमन आ भोलानाथ कुशवाहा, केदारनाथ, सविता, अरविन्द अवस्थी, खुर्शीद भारती के साधना उल्लेखनउक बा ।

मिर्जापुर में वर्तमान स्थिति ई बा कि अउरी जगह नियर एहिजो जनसंख्या का दबाव से मन दोचित भइल बा लेकिन सरकार माने के तइयार नइखे । अभी आजुओ नगर के आबादी दू लाख से कम बतावल जाले जबकी ई संख्या सात–आठ लाख से कम नइखे । अइसहीं मिर्जापुर जिला के जनसंख्या सोलह लाख सन्तावन हजार बतावल गइल बा, जवना में खाली ओनसठ गो आदिवासी बाड़न। ई पढ़ के हँसी आवत बा। सोनभद्र जिला अलग भइला का बाद जनजाति के संख्या सही सही जाने के जरूरत बा।

एहिजा चहल–पहल हमेशा रहेला। नगर में मेला के अनेक ठेकाना बा । मई–जून के कुछ सप्ताह छोड़ के साल के शायदे कवनो सप्ताह होई जवना में मेला ना लागत हो। कबो पतंग उड़ावे के मेला, कबो गड़बड़ा भवानी के मेला, कबो ऊँख चीभे के मेला, कबो लिट्टी–भंटा के मेला, कबो कजरहवा आ लोंहदी के मेला, मेला से ई नगर हमेशा मनसायन रहेला। एहिजा अनेक सूफी सन्त आ सिपाही–निजामी का मजार पर उर्स भी लागेला एह में सबसे मशहूर कन्तित में दानव राय का किला का ढूह पर स्थापित ख्वाजा इस्माइल शाह चिश्ती निजामी के मजार बा जहाँ तीन दिन तक बड़ा भारी मेला लागेला । एही मेला का कारन अब कन्तित के कन्तित शरीफ कहल जाला।

एहिजा के जमीन माटी ललछहूँ बा। एह से कृषि गोटगर नइखे । मुर्गीपालन खातिर ई क्षेत्र बेकार घोषित हो चुकल बा। अब पानी आ बिजली के सुविधा बढ़ले कृषि उत्पादन बढ़त बा। अब पहिले अइसन बात नइखे कि एगो लोटा लेके उठऽ आ ओमे सैकड़न गो गाय दूह लऽ। एहिजा के दूध दही आ दुग्ध उत्पाद पूर्वान्चल में मशहूर बा।

('समकालीन भोजपुरी साहित्य' से)

■■

बड़े बाबू आ उनकर आतिशी शीशा

आनन्द सन्धिदूत

जून के आखिरी सप्ताह चलत रहे। मानसून के तकाहट लागल रहें। गरमी का मारे का मनुष्य का अउरो जीव–जन्तु सबकर बुरा हाल रहे। अइसने तपत मृगदाह में हम बैंक ज्वाइन कइले रहलीं । ई बात सन् 1972 के हउए। तब बैंकन में स्टाफ के संख्या आज से जादा होत रहे। शाखा में प्रबन्धक आ सहायक प्रबन्धक का अलावे दू गो बड़े बाबू आठ दस गो असिस्टेन्ट या क्लर्क, तीन गो खंजाची आ दस–बारह गो अधीनस्थ कर्मचारी के स्टाफ ओह बैंक का शाखा में रहे जवना में हम ज्वाइन कइले रहलीं। ओह शाखा के टोटल डिपाजिट अस्सी लाख रहे आ एडवान्स चालिस–पचास लाख एह फीगर से शाखा स्केल टू के हो गइल रहे बाकिर प्रधान कार्यालय से एपर निर्णय अभी ना आइल रहे। बैंक के साप्ताहिक बैलेन्सशीट बाबू विश्वम्भर प्रसाद बनावसु। हमार डिउटी रोजनामचा (डेबुक) लिखे के रहे। हम डेबुक लिख के आ मिला के बड़े बाबू विश्वम्भर प्रसाद के देहीं त ऊ साप्ताहिक बैलेन्सशीट मिलावसु। बड़े बाबू विश्वभर प्रसाद रिटायरमेन्ट का नजदीक रहलन आ कलर ब्लाइन्ड हो गइल रहलन। उनका लाल सियाही ना लउके। स्टाफ के रवइया उनका साथ सहयोग के रहे। सबकर कोशिश इहे होखे कि उनका सीट पर कवनो वाउचर भा स्टेटमेन्ट लाल सियाही के न जाय। एक जाति के भइला का नाते स्वभाविक रूप से बड़े बाबू से हमार निकटता बढ़ गइल रहे। सबसे बड़ बाति ई रहे कि परिवार का खियाल से ऊ एगो प्रतिष्ठित परिवार के रहलन। रिश्ता में ऊ अमर शहीद आ महान पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी के साढू रहलन। उनकर चेहरा–मोहरा ओह घरी के राष्ट्रपति वी.वी. गिरी से मिलत रहे। कामकाज आ लोक व्यवहार में ऊ माहिर रहलन। इहे कुल कारन रहे कि बैंक में उनकर बड़ी इज्जत रहे। आँखि का कमजोर हो गइले कई बेर ऊ चाहसु कि स्वेच्छा वाला रिटायरमेन्ट ले लेहीं बाकिर प्रबन्धक का आदेश से उनका सीट पर कम से कम काम भेजल जाय आ जवन जादा काम रहे ओके स्टाफ के अउर लोग निपटा दे। बड़े बाबू का सीट पर एगो टुटही घण्टी रहे। जब आफिस के बिजली चल जाय त ऊ ओही घण्टी के बजा के गावसु कि मिर्जापुर के बिजली छिनार देखो। अगर बैंकिंग हाल में महिला ग्राहक रहअस त उनके खोद के बतावल जाय कि बड़े बाबू मत गावऽ, महिला बाड़ी स।

साँझ के बड़े बाबू जब डेरा पर जाये लागसु त चौराहा पार करावे के जिम्मेदारी हमार रहे। हम उनके आपन कन्धा धरा के चौराहा पार करा दिहल करीं। एक दिन हम चौराहा पार करावत रहलीं त ऊ एगो मेहरारू के देख के कहलन कि, "हई देखऽ, लाल–पीयर पहिर के झमकावत बिया।" उनसे करीब आधा फर्लांग दूर ऊ मेहरारू खड़ा रहे ओही के देख के ई कमेन्ट ऊ पास कइले रहलन।

हमके ए कमेन्ट से बड़ा खुनुस बरल। हम कहलीं कि "बड़ेबाबू तोहके सामने के ट्रक नइखे लउकत आ फर्लांग भर दूर खाड़ मेहरारू आ ओकर लाल–पीयर लुग्गा लउक जाता। अब छोड़ऽ हमार कान्ह त, अपना बल पर चलऽ। "बड़े बाबू लगलन चिरउरी करे कि, " नाहीं रे हम गिर जाइब।" बड़े बाबू से जुड़ल अइसन प्रसंग बहुत बाड़न स । मिर्जापुर से पहिले ऊ बैंक का कई शाखा में काम कइ चुकल रहलन आ अपना चुलबुलापन से ऊ हर जगह से हटावल रहलन। एक बेर उनकर पोस्टिंग बैंक का मसूरी शाखा में भइल। ओह जमाना में मसूरी शाखा में बड़े–बड़े राजा–महाराजा आ अंगरेज अफसरन के खाता रहे। बैंक के मैनेजरों अंगरेजे रहे। एक दिन का भइल कि कपूरथला स्टेट के रानी बैंक में अइली उनका एगो एफ.डी. बनवावे के रहे। बड़े बाबू बड़ा शालीनता से उनकर काम कइ दिहलन बाकिर जब एफ. डी. देबे के समय आइल त ऊ रानी का हाथ में पकड़ावे का बजाय टेबुल पर धइ दिहलन। रानी अपना दूनो हाथ के नाखून बढ़वले रहली एह से टेबुल पर धइल कागज उठावे में असमर्थ रहली। ऊ अँगुरी से टेबुल पर धइल कागज खबर–खबर करसु बाकिर काहें के उठे । ऊ बड़ा असहाय होके कातर आँख से बड़े बाबू का ओर ताकसु बाकिर बड़े बाबू अन्दरे अन्दर मजा लेत आनी ओर ताके लागसु । अबतक के ई शिष्टाचार रहे कि रानी से सम्बन्धल कागज आ रूपिया रानी का हाथ में थमा दिहल जाय बाकिर बड़े बाबू रानी के नाखून खातिर सीख देबे चाहत रहलन। चैम्बर में बइठल अंगरेज मैनेजर बड़े बाबू के हर हरकत देखत रहे। ऊ जमादार के भेज के रानी के एफ.डी. सुपुर्द करवलस आ हेड आफिस फोन मिला के बड़े बाबू के ट्रान्सफर मसूरी से पटना करा दिहलस। ट्रान्सफर त भइल बाकिर बड़े बाबू रानी के शिक्षा देबे में सफल रहलन। अगिला बेर जब रानी बैंक में अइली त आपन नाखून कटवा चुकल रहली।

पटनों में बड़े बाबू लाइफ के खूब इन्जवाय कइलन आ जिनगी के एकजाई मजा लिहलन। ऊ दिन भर त बैंक में काम करसु आ रात के जवन गाड़ी पटना रेलवे यार्ड में खड़ी रहल करे ओहीं में सूत रहल करसु । जबले नींद ना आवे तवले खातिर रेलवे बुक स्टाल से कवनो किताब मंगले रहल करसु ओहीं के पढ़त सूत जासु । एह स्टाइल में ऊ कई महीना नोकरी कइलन। ओह जमाना में छुट्टी कम मिले। बड़े बाबू के मेहरारू इलाहाबाद में रहली, उनसे मिलला बड़े बाबू के कई महीना भइल रहे ओह जमाना में पटनो ब्रांच के मैनेजर अंगरेजे रहे ऊ छुट्टी के नउँए लेत चिढ़ जाय। बड़े बाबुओं के ई उमेद ना रहे जि छुट्टी मिली बाकिर हिम्मत बान्ह के छुट्टी के निहोरा तीन–चार लाइन अंगरेजी में रटलन आ चैम्बर में जाके अंगरेज मैनेजर के सुना दिहलन। ऊ तीन–चार लाइन छुट्टी के मार्मिक अपील रहे। लेकिन मैनेजर पर कवनो असर ना भइल। ऊ झार–फार के कहि दिहलस कि "इट्स नाट पासिबुल।" ओह घरी बड़े बाबू निराश होके सोचत साहेब का टेबुल पर धइल कागज काटे वाली छूरी से खेलत उनके ताकत रहलन। अंगरेजवा जब देखलस कि बड़े बाबू का हाथ में छूरी बा त ऊ एकदम से डर गइल आ अपना निर्णय पर यू टर्न लेत, अपना पहिले के कहनाम के बदलत बड़े बाबू के एक सप्ताह के छुट्टी दे दिहलस। लेकिन एह घटना का बाद छुट्टी से लवटला का बाद बड़े बाबू के एक बेर फेर बदली भइल आ ऊ पटना से चल के कलकत्ता का मेन ब्रांच में पोस्टिंग पवलन।

ओह घरी दूसरा विश्वयुद्ध के जमाना रहे। जापानी सेना कलकत्ता पर बम बरसावत रहे। शहर में किराया के सुरक्षिआइल कमरा मिलल बड़ा मुश्किल रहे। संयोग से इलाहाबाद बैंक के कलकत्ता ब्रांच के मैनेजर बड़ा नेक दिल इन्सान रहे। ऊ बड़े बाबू के आ बड़े बाबू का साथे ज्वाइन कइले एगो अउरो स्टाफ के कलकत्ता ब्रांच का बैंकिंग हाल में सूते के इजाजत दे दिहलस। ई लोग जवना टेबुल पर दिन भर काम कइल ओहीं टेबुल पर बिछौना बिछा के सुत रहल। बैंक के जमादार रात के पूरा आफिस के बिजुली बत्ती बन्द कइ के अपना डेरा पर चल गइल। आधीरात के जब ए लोग का पेशाब लागल त अन्हारा में देवाल टकटोरत कबो स्ट्रांग रूम मिले कबो स्टेशनरी रूम मिले लेकिन असली जरूरत न पेशाबखाना मिलल न बिजली के स्विचबोर्ड। अचानक ए लोग के गोड़ टेबुल का नीचे रखल सुराही से टकराइल । ई लोग ओही सुराही में काया जल त्याग के शान्त भइल। ई सुराही एगो बंगाली दादा के रहे। बैंक के फर्राश जब सवेरे साफ–सफाई कइ के सुराही भरे चलल त ऊ लबालब भरल मिला फर्राश भरल सुराही के टेबुल का नीचे सरका के आपन अउर काम में लाग गइल।

दस–इगारह बजे जब बंगाली दादा का पियास लागल त गिलास में पानी लेके एक घोट पियलन। दादा का एकर सवाद कइसन दो लागल। ऊ गिलास नीचे धइके कहलन कि आज पानी नीक नइखे लागत। बड़े बाबू बंगाली दादा के उत्साह बढ़ावत कहलन कि पी जाईं, पी जाईं आज कलकत्ता में हबड़ा के वाटर कनेक्शन जुड़ गइल बा हाबड़ा में पानी खारा मिलेला। बंगाली दादा ओहीं दिन से आपन सुराही फेंक के टंकी पर जाके पानी पीये लगलन।

एह घटना का बाद बड़े बाबू के एक बेर फेर बदली भइल आ ऊ इटावा ब्रांच में ज्वाइन कइलन। ओह जमाना में इटावा ब्रांच में चालू खाता के दूगो अगल–बगल काउन्टर रहे। एह दूनो काउन्टर पर बाबू त दूगो बइठसु बाकिर स्टेशनरी के सामान स्टैम्प पैड, पिन कुशन वगैरह एके रहे जवन दूनो बाबू लोग के आपस में साझा करे के पड़े। बड़े बाबू के जवन काउन्टर पार्टनर रहे ओकर आदत रहे कि काम करत के स्टैम्प पैड, पिन कुशन वगैरह अपना ओर खींच लेव आ बड़े बाबू के बार–बार ओसे मांगे के पड़े। बड़े बाबू कई दिन ओकर हरकत देखलन जब आजिज आ गइलन त ओके शिक्षा देबे के सोचलन। एक दिन ऊ बाबू जब अपना प्राकृतिक आवश्यकता बस सीट छोड़ के उठल त बड़े बाबू स्टैम्प पैड खोल के ओकरा कुर्सी पर रख दिहलन। ऊ बाबू लघुशंका का बाद हड़बड़ी में आइल कुर्सी के आसन बिना देखले हाली देनी बइठ गइल जाहिर बा एह घटना का बाद एक बेर फेर होखे के रहे बड़े बाबू के ट्रान्सफर आ अबकी बार मिर्जापुर ब्रांच में भइल।

तब तक बैंक राष्ट्रीयकरण का नजदीक पहुँच गइल रहलन स। बड़े बाबू के बैंक इलाहोबाद बैंक के राष्ट्रीयकरण भइल। सीनियर भइला का नाते ओह घरी बड़े बाबू विशेष सहायक का पद पर रहलन। राष्ट्रीयकरण का बाद बैंक का सबसे बड़ अफसर (कस्टोडियन) नान जप्पा साहब के बनावल गइल ऊ मशहूर फौजी अफसर कमाण्डर इन चीफ फिल्ड मार्शल करियप्पा साहब के भाई रहलन। एक दिन अचानक ऊ मिर्जापुर ब्रांच में अइलन आ पूरा स्टाफ से हाथ मिलावत सबसे परिचय प्राप्त कइलन । ननजप्पा परिचय प्राप्त करत बड़े बाबू का पास भी गइलन। ऊ बड़े बाबू के प्रशस्त ललाट भव्य काया, कपड़ा–लत्ता से सुघड़ आ काम में माहिर देख के पुछलन कि "बड़े बाबू आप हर तरह से फिट बानी तवनो पर अफसर काहें ना बनली।" बड़े बाबू बड़ा विनम्र आ गम्भीर आवाज में जवाब दिहलन। "साहब एकर कारन बा।" ननजप्पा आगे बात–विस्तार का आशा में तकलन। बड़े बाबू निडर दार्शनिक अन्दाज में कहलन कि "साहब हम रउरा अइसन अफसरन के कबो तेल ना लगवलीं एही से हमार ट्रान्सफर त भइल बाकिर प्रमोशन ना भइल।" ननजप्पा आगे बढ़ गइल।

बड़े बाबू के सर्विस अबे रहे बाकिर राष्ट्रीयकरण का बाद आइल सरकारी तिकड़म बाजी उनके पसन्द ना आइल आ एह डर से कि कहीं गलत जगह दसखत से धोखाधड़ी में फँस न जाई ऊ स्वेच्छया सेवानिवृत्ति ले लिहलन। रिटायरमेन्ट का बाद हमसे उनकर भेंट ना हो पावल । इलाहाबाद में उनकर मकान महान कवयित्री महादेवी वर्मा का अशोक नगर वाला मकान का बगल में रहल। हमरा उमेद बा कि बड़े बाबू अब ना होइहें आ अगर होइ । त सौ बरिस से ऊपरे के होइहें। एक बेर बड़े बाबू हमरो के शिक्षा देले रहलन। भइल ई कि आफिस में बड़ा मूड में ऊ बइठल रहलन। बातचीत का बीच ऊ कहलन कि "एह आफिस में कुछ लोग के लिखल हम पढ़ ना पाईं।" केहू पूछल कि केकर–केकर लिखल तू पढ़ ना पावऽ त ऊ कहलन कि बलजिउआ आ सोमनिया के लिखल हम बिल्कुल ना पढ़ पाईं। हम बड़ा खुश भइलीं कि ऊ हमार नाँव ना लिहलन। एही उत्सुकता में उनकर प्रंशासा प्राप्त करे खातिर हम पुछलीं कि "बड़े बाबू हमार लिखल ?" बड़े बाबू घृणा आ नाराजगी से ताकत हमके कहलन कि, "ससुर तोहरा पाछा त हम आतिशी शीशा खरीद लेले बानी।" ■■

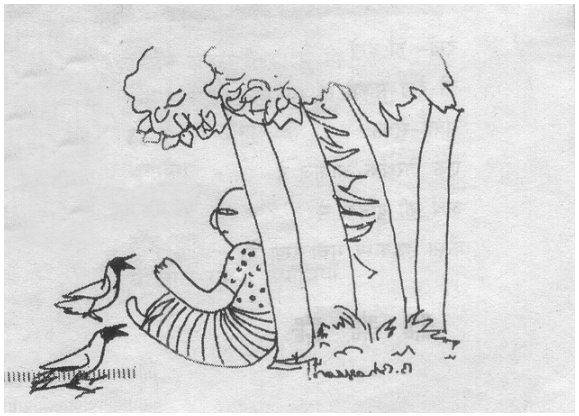

आनंद संधिदूत सर !

मनोज भावुक

हमनी किहाँ कहाँ केहू मूएला। बस देहिये के क्षय होला। जुड़ाव त बनले रहेला। तबे नू पितृपक्ष में भोजन दियाला। शादी–बियाह में पीतर नेवतल जाला। ...रउरो कहीं आसे–पास बानी। देखीं हम रउरा के फेसबुक प टैग करत बानी। ...असहूँ रउरा दूर नइखीं जा सकत। शायर–कवि–लेखक कबो दूर जाला कहाँ ?

हमरा आँखि का सोझा रउरे किताब 'एक कड़ी गीत के ' के समीक्षा पड़ल बा। डॉ. अशोक द्विवेदी जी के लिखल समीक्षा ह। ओह दिन बतवले त रहनी रउरा से कि भोजपुरी जंक्शन के समीक्षा विशेषांक, भाग–3 के श्रीगणेश रउरे किताब से भइल बा। फेर रउरा डॉ. अशोक द्विवेदी जी के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के योगदान पर बड़ी देर ले बात कइनी। फेर कुछ भोजपुरी गीत सुनवनी। फेर बांग्ला गीत। दुनिया भर के अनसंग हीरोज पर बात कइले रहीं। ई तय भइल रहे कि हम रेनुकूट आएम त एक दिन खातिर मिरजोपुर... रउरा आश्रम, रउरा कुटिया में आएम। राउर वीडियो इंटरव्यू होई आ रउरा जिनगी के अनमोल अनुभव के रिकॉर्ड करब हम।

जब रउरा के ई लेख (समीक्षा) एक बेर देखे खातिर भेजले रहीं त केतना आसिरबाद देले रहनी रउरा। कहनी, 'मनोज जी रउरा कम उम्र में भोजपुरी के बहुत देले बानी आ दे रहल बानी। साधक के जिनगी में बाधा आवेला बाकिर रउरा मिसाल कायम करब।' ...अतने ना रउरा हमरा ऊपर, हमरा रचना के ऊपर लिखतो रही। रउरा व्हाट्सएप मैसेज भेजनी कि आधा लिखा गइल बा, आधा बाकी बा।
जिनगी में कबो कुछुओ पूरा ना होला। पूरा शब्द एग्जिस्टे ना करे। रउरा झटका देके चल गइनी।
हमहूँ बूझ गइल बानी कि जिनगी एगो झटका ह।

आज राउर बहुत इयाद आवत बा। भेंट त एके बार भइल बा। पटना में आचार्य पांडेय कपिल जी के घर पर। रउरा कवनों किताब के लोकार्पण रहे। भोजपुरी में हम नया–नया लिखल–पढ़ल शुरुए कइले रहीं। रउरा मिर्जापुर रहेनी, ई जान के आत्मीयता अउरो बढ़ गइल रहे। हमार बाबूजी मजदूर नेता रामदेव सिंह मिर्जापुर में फेमस रहीं त उहाँ के बारे में रउरा खूब बतियवले रहीं। फेर जगदीश पंथी जी, डॉ अर्जुन दास केसरी जी के बारे में बात भइल। रेनूकूट अधिवेशन के बात चलल। रउरा हमरा से कुछ कवितो सुनले रहनी। बुझला, माई वाली कविता। सम्मेलन पत्रिका में सबसे पहिले उहे छपल रहे।

रउरा हमरा किताब ' तस्वीर जिंदगी के ' पर दू–दू बेर लिखनी। अफसोस की एको बेर ना छपल। आज ले दूनू लिफाफा खोजत बानी। एतना बार ठौर–ठिकाना आ डेरा बदलल कि पता ना का–का कहाँ–कहाँ हेराइल, दबाइल बा। शील्ड–सामान आ किताब बोरा में बान्ह के धइल बा। किराया के छोटी–मुकी मकान में केतना ढोईं आ का–का ढोईं। बाकिर कहीं ना कहीं राउर लिखलका त मिलबे करी।

एने 2020 से रउरा से बातचीत कुछ बेसिए बढ़ गइल रहल ह। भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के हर अंक पर एक बेर बातचीत होइए जाए। हम भोजपुरी जंक्शन (हम भोजपुरिआ) के पहिलके अंक ''महात्मा गाँधी विशेषांक'' में रउरा किताब 'अग्निसंभव' के समीक्षा छपले रहीं। एह किताब पर जवन सम्मान मिलल, ओकर चर्चा रहे। कुँवर सिंह विशेषांक में राउर लेख आ कोरोना विशेषांक में राउर कहानी के अलावा बहुत छापे के सुख मिलल हमरा।

राउर किताब 'कुरल कवितावली' हम पहिले पढ़ चुकल रहनी। ई किताब तमिल सन्त तिरुवल्लुवर के अमर रचना 'तिरुकुरल' के भोजपुरी अनुवाद ह। 'एक कड़ी गीत के' बहुत सारा गीत हमरा जुबान पर बा।

पटना प्रवास के दौरान ई दुनों किताब हमरा के आचार्य पांडेय कपिल जी देले रहीं। राउर अउर कई गो रचना हरदम हमरा जुबान पर रहल।

रात भर टांय–टांय कइलन स कउआ
भोरे संगीतकार भइलन स कउआ
श्रोता में ठाढ़ रहे निर्धन अस कोयल
ज्ञान कला लूट–लूट खइलन स कउआ
उज्जर ना भइलन स पदवी–प्रतिष्ठा से
कूद–कूद कतनों नहइलन स कउआ

• • • •

तोहरा कन्यादान के बहनवा बा हो बाबूजी
केहू नाहीं आवे ई मेहनवा बा हो बाबूजी
एही जा त जरेतिया कोइना के दियरी
कवना भावे गाँवें किरसनवा बा हो बाबूजी

संधिदूत सर, रउरा चल गइनी। अब त जवन बा ऊ सब जुबाने पर भा स्मृति में रही। अब रउरा से बतियावे के सुख कहाँ मिली ? के रउरा जइसन मन आ मान बढ़ाई। के रउरा जइसन अनोखा उदाहरण दे देके मन के हलुक करी आ प्रोत्साहित करी। जेतना राउर साहित्य में पइठ रहे, ओतने अध्यात्म में। आपन बनावल महल छोड़ के संत लेखां अलगा कुटिया में रउरा रहबो करीं। किताबन के बीच जागीं–सुतीं। रउरा से केतना–केतना बात होखे। केतना–केतना कुछ रउरा कहे के चाहीं। कबो–कबो लागे कि रउरा में बहुत आग भरल बा। ओकर तपिस हमरा तक पहुँचे। कबो–कबो बुझाय जे रउरा छलक जाएम। कबो–कबो भावुक होके परिवार के हाल–समाचार पूछे लागीं। परलोक सिधारे के दसे–बारह दिन पहिले त रउरा अपना बेटा आशुतोष श्रीवास्तव के नंबर देले रहीं। ऊ बंगलोर में आईटी फील्ड में बाड़न। हमरा अपना बेटा के करियर के लेके कुछ सलाह लेवे के रहे। बात भइल।

तब हमरा का मालूम रहे कि आशुतोष जी से अगिला बातचीत रउरा खातिर शोक संदेश आ श्रद्धांजलि देवे खातिर होई।

रउरा जइसन दिव्य आत्मा के भावभीनी श्रद्धांजलि !

❑ मनोज कुमार सिंह, फ्लैट - 3017, टावर-17, महागुन माइवुड्स, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, गोतमबुद्ध नगर (उ०प्र०) 201306, 8291633629

भोजपुरी गजल के भावुक रंग

आनन्द सन्धिदूत

(किताब– 'तस्वीर जिन्दगी' के, कवि– मनोज भावुक, प्रकाशक– भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना–24, प्रकाशन वर्ष– संस्करण प्रथम, 2004, मूल्यरू 60 रु)

भारत का तमाम जवारी भाषा नियर भोजपुरियो गजल अभी भतिये बतिया बा। भतिया में प्रदर्शन ना कइल जाला ऊ बिरवाई में लुका के राखल जाले। भतिया माने विकास के साधना काल! साधना समय में नजर पड़ गइले भा चर्चा हो गइले, नीक परिणाम ना निकले। भोजपुरी गजल अबहीं अइसन नइखे कि एक बेर पढ़ऽ आ हजार बेर मन पड़े। ए काव्यलता के लहलहाये में अभी समय लागी।

लेकिन एही भतिया फूल में कुछ सम्भावना एतना जीवन्त होली स कि मन अगरा जाला आ अपना आँख में अपनहीं सात कूँड़ा के बालू डाल आ तर्जनी अंगुरी के अपनत्ववाद अपना ओर मोड़त कुछ न कुछ कहहीं के पड़ जाला। अइसने गजल के साठ गो नौ बहार फसल हमके उदीयमान गजलनिगार कवि मनोज भावुक के गुलदस्ता नियर पुस्तक तस्वीर जिन्दगी के ' में मिलल जवना के जायका, जवना के नशा आ जवना के खुमार बरिसन महसूस कइला का बाद अन्त में मन के उद्‌गार कलम का फन्दा पर चढ़ल बा।

कवि भावुक का कला सम्भावना के तयशुदा भविष्य उनका चक्रमण आ सम्पर्क में बा। लगभग तीस–पैतिस साल में ई नवछेटिहा इंजीनियर अब तक तीन–तीन गो महाद्वीप धाँग चुकल बा! अपना एह अविराम यात्रा में लाखन अदिमिन से सम्पर्क साधत, चेहरा पहिचानत, दिल आ दिमाग में व्यक्तित्व के बूझत–समझत काव्य–साधना कई रहल बा। कवि भावुक अगर युगाण्डा लन्दन तक जाके नोकरी कइलन त अपना सम्पर्क अभियान में अनेकन राजनेता, समाजसेवी, कलाकार, चिन्तक, पत्रकार, व्यवसायी, सत्ता दलाल, आमजनता आ मालिक–नौकर कहे के मतलब नीक–जबून, सबसे मिल चुकल बाड़न। एह लिस्ट में ओहू सम्पर्क के नांव छूटे के ना चाहीं जेसे निकटता में गर के हार तक कोसन दूर करत महसूस होले आ जेकरा स्वर के लालित्य हरसिंगार नियर हर–हर शेर आ गजल बन जाला। शेर–गजल में सौन्दर्य आ प्रेम दूगो आवश्यक तत्व ह। कवि के ई अभियान अभी आजुओ जारी बा। अब ई भविष्य का आशा के बात बा कि एतना विस्तार में रूप, रंग आ रस तजबीजत ई उदीयमान कवि एगो नयी भाषा में केतना परिपक्व रस निष्पत्ति करी।

कविता का फोटोग्राफी में स्थूल के फोटो त खिंचइबे करेला आत्मा तक के तस्वीर उरेहा जाले। आत्मा के तस्वीर खींचल आ खुद फोटो कैमरा का भीतरी देवाल के फोटो खींचल बराबर ह। एकर मतलब ई भइल कि कवि खुद अपना आत्मा के तस्वीर सबसे पहिले कागज पर उतारत बा! एह सर्जना में अनेकन गो आत्मस्वीकृति आ कबूलनामा खातिर साहस जुटावे के पड़ेला। हमके लागत बा तस्वीर जिन्दगी

के ' एह जोखिम के उठवले बा आ काव्य का जटिल साधना के कइले बा!

महाकवि हरिऔध अपना काव्य पुस्तक तस्वीर जिन्दगी के ' का भूमिका में लिखले हउअन कि काव्य, करुणा से पैदा होला। प्रमाण में ऊ फारसी आ संस्कृत के उदाहरण देले हउअन। संस्कृत के पहिला श्लोक एगो चिरई का मौत से पैदा भइल! अइसहीं फारसी में भी पहिला शेर तब पैदा भइल जब एगो भाई अपना सगे भाई के जान से मार दिहलस आ एकर सूचना जब बाप के मिलल आ बाप का रुदन के करुण शब्द जब आपस में मिल के फारसी के पहिला शेर बनल। करुणा के रस अभाव, अन्याय आ आहत भाव से पैदा होला। कवि भावुक का गजलन में अन्याय अभाव आ आहत भाव के अभिव्यक्ति जगहे जगह बा। एह अभिव्यक्ति में कवि कहीं दर्शक त कहीं सहज संलिप्त नियर खड़ा बा ।

जिन्दगी के भइल रहे बीमा
होत बा लाश के हिसाब, ए दोस्त

••••

संवेदना के लाश प कुर्सी के गोड़ बा
मालूम ना, ई लोग का कइसे सहात बा

••••

आज ऊ लँगड़ो दरोगा हो गइल
देख लीं, सरकार जादू घूस के

••••

एह कदर आज बेरोजगारी भइल
आदमी आदमी के सवारी भइल

••••

दुख के दरियाव से बनल बदरी
आँख का राह से झरल बाटे

••••

परिचय हमार पूछ रहल बा घरे के लोग
अइसन हमार हाय रे, औकात हो गइल

सबसे ढेर अरदुआइ वाली कविता संघर्षशील जाति लिखेली स! तुर्क, अरब, ईरान, पंजाब, मराठा नियर भोजपुरियो एगो संघर्षशील जाति ह। एही से विश्व का बेहतरीन कविता में भोजपुरियो कविता के आपन इज्जतदार स्थान बा। गजल का संघर्ष पर चर्चा करे का पहिले 'जाति' संघर्ष पर चर्चा जरूरी बा। संघर्ष का बाद दुगो स्थिति आवेले या त विजय आवेले या पराजय आवेले। विजय मिलेले त दरबार के राजनेति नधिया जाले आ हनुमान अइसन निष्ठावान सरदार का छाती फार के देखावत गुजर–बसर करे के होला आ स्वयं अवतारपुरुष राम, सामने का चापलूसी आ पीठ पीछे का निन्दा से विरक्त, ठाढ़े सरयू नदी में जल समाधि ले लेलन! पराजय त पराजय ह। जब आवेले त यार का कूचा में दू गज जमीन के आस लगौले बड़े–बड़े बादशाह अपना उपेक्षा, अनादर आ अभाव से बतिआवेलन। कहे के मतलब कि दर्द सगरो बा! दिन होखे भा रात, विजय होखे भा पराजय, हर्ष होखे भा विषाद, पतझर होखे भा बहार..दर्द के प्रवेश कहीं प्रतिबन्ध ाल नइखे। दर्द के सम्बन्ध करेजा से बा। करेजा के हालत ई बा कि ओके प्रकृति सात परत बक्सा (चेस्ट) का भीतर बान्ह के भेजेले तबो ऊ चोट खइला बिना ना रहे। एही चोट के स्मृति कविता के वृत्ति ह। कविता जेतने छोट होई ऊ ओतने गहिरा आहत होई। अगर कविता दू लाइन के बा दोहा शेर श्लोक या दू डंड़ियवा कहावत त समझीं अउर पावरफूल बा ! एही दू लाइन पर अभिव्यक्ति के ट्रेन धड़ाधड़ पास हो जाले। अगर ढेर लाइन बा त अझुराये डिरेल होखे के खतरा बा। भावुक का दू लाइन पर आहत अभिव्यक्ति के गुजरत देखीं–

बचपन के हमरा याद के दरपन कहाँ गइल
माई रे, अपना घर के ऊ आँगन कहाँ गइल

••••

बरिसत रहे जे आँख से हमरा बदे कबो
आखिर ऊ इन्तजार के सावन कहाँ गइल

••••

घर के कीमत का हवे, ऊहे बताई
जे रहत फुटपाथ पर लँगटे–उघारे

सनातन काल से कवि के काव्यधर्म विपत्ति आ उलझन में सान्त्वना के सृजन रहल ह। उर्दू गजल त मानसिक उपचार में दवाई नियर काम करेले। अब भोजपुरियो के शेर एह दवा का समानांतर धइल जा सकत बा।

ना रहित झाँझर मड़इया फूस के घर में आइत घाम कइसे पूस के

महान अदिमी त अभिनन्दल होला, पूजल होला लेकिन एगो महान आदमी के महान बनावे में केतना–केतना आम आदमी के बलि चढ़ गइल। ई

बलिदान बहुत कम अदिमी सोचेलन। कवि भावुक बरगद का पेड़ का माध्यम से एह बलिदान के स्मरण करत बाड़न–

जे भी बा, बाटे बनल बरगद इहाँ
पास के सब पेड़ के रस चूस के

साहित्य में जीवन का नश्वर प्रकृति के दरसावत निसफिकिर होखे के एक से एक सन्देश बा लेकिन आज का भाषा में आज के बात कहत नीचे लिखल कवितो में सम्प्रेषण के कम करेन्ट नइखे।

दरिया के बीच बइठ के कागज के नाव में
का–का करत बा आदमी अपना बचाव में

समर्थ कवि अगर घिसलो–पिटल विषय कस के खराद देला त ऊ नया नियर लागेला। साहित्य में अइसने एगो विषय ह– मन ! आज तक ई पता ना चलल कि मन के निवास या मन्दिर–महल कहां बा। मन के काम मस्तिष्क भा ह्रदय से अलग बा। कई बेर त लागेला कि मस्तिष्क आ ह्रदय के औलाद मन ह जवन कण्ठ में बइठल आँख से ताकत आ ओठ से बोलत रहेला। मन उत्पाती होला, एही से कबे मुइयो जाला फेर तुरन्त जी उठेला ! अपना ए मन से तस्वीर जिन्दगी के ' गजलिहारो परेशान बा आ कई जगह मन के चर्चा करत बा–

जमीर चीख के सौ बार रोके–टोकेला
तबो त मन ई बेहया गुनाह कर जाला

••••

जाने का–का दो मन में फुटत बा रहत
जब से चर्चा बा राउर चलावल गइल

एगो समय रहे जब गाँव आ शहर का जनसंख्या में जमीन–आसमान के अन्तर रहे। शहर अगर तीन आना रहे, गांव तेरह आना रहे। आज जनात बा गाँव रहिये ना जाई। एह भय के भावुक एगो खूबसूरत शेर में कहले बाड़न–

शहर कहीं ना बने गाँव अपनो ए 'भावुक'
अँजोर देख के मड़ई बहुत डेराइल बा

एहिजा अँजोर अन्डरलाइन करे लायक बा। साहित्य में अँजोर ज्ञान, विज्ञान आ हर्ष के प्रतीक होला। लेकिन जवन अँजोर मड़ई देखत बा ऊ त हहास बन्हले दनवा दइत्तर का मुंह का लुकार नियर बा! ई बिजुली आ विकास के बिनाश वाला ह जवन सभ्यता आ संस्कृति के जंगल का आग नियर लील रहलि बा। हम समझत हुई कि भावुक के खाली एगो शेर उनके स्थापित क देबे में समर्थ बा।

जइसे नारी के सौन्दर्य स्तनहीन ना हो सके ओइसहीं शायरी के चर्चा चली त ओमे प्रेम सौन्दर्य जरूर, जोहल जाई। 'तस्वीर जिन्दगी के' में जीवन के राग–रंग पुरुआ हवा अस सर्र से आवत बा ऊमस में लुलुआव बरावत चल जाता। जीवन का वर्तमान कैरियर युग में चुलबुला युवा कवि मन विक्टोरियन युग का कवि नियर नीरस आ गम्भीर भइल जात बा ई चिन्ता के बात बा। हालांकि भावुक का कविता में एकाध गो मर्यादल शेर के कमी नइखे। सौन्दर्य के स्मृति देखीं।

कइसे भुला सकीं कबो ऊ मद भरल अदा
जवना निगाहे–नूर प 'भावुक' लुटा गइल

••••

हमरा हर कोशिका में समाइल बा जे
काश! हमरा के आपन बनावे कबो

उक्ति वैचित्य गजल के गजलियत देले, ई गजल के गहना ह! भावुको का शायरी में एकर कमी नइखे।

हमरा सँगे अजीब करामात हो गइल
सूरज खड़ा बा सामने आ रात हो गइल

••••

घाम बदनाम बा भले 'भावुक'
पाँव तऽ छाँव मे जरल बाटे

भावुक के कुछ अउरो शेर बाड़न स जवन हमके बहुत पसन्द बा।

आदमी के स्वप्न के खेल कुछ अजीब बा
जी गइल त जिन्दगी, मर गइल त ख्वाब हऽ

जिनिगी के जख्म, पीर, जमाना के घात बा
हमरा गजल में आज के दुनिया के बात बा

दिल परिन्दा ह, लइका ह, भगवान ह
जवना आँगन में चाही ऊ जइबे करी

अन्त में एह संकलन में अगर प्रेम के चुलबुलाहट बा, चिन्तन के गहराई बा, विषाद के रात बा आ हर्ष के सबेरा बा त कहीं कहीं सुन्दर प्रार्थना आ लयदार नातिया क अन्दाजो बा। हम एक बेर फेर एह संकलन के प्रशंसापूर्ण स्वागत करत बानी आ रचयिता मनोज भावुक के बधाई देत बानी। ■■

आनन्द के "अग्नि संभव "

(सन्दर्भ - "अग्नि संभव "-आनन्द सन्धिदूत, मूल्य- 395, प्रथम संस्करण- 2018 लोकायत प्रकाशन, लंका, वाराणसी, पृ० सं०, 278)

डा० अशोक द्विवेदी

भोजपुरी में प्रबन्ध काव्य के सिरजन एगो समृद्ध परम्परा बा । श्री रामबचन शास्त्री 'अंजोर' (कालजयी कुँवर सिंह), श्री विमलानन्द सरस्वती (बउधायन), अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (कोशिकायन, सेवकायन) चन्द्रशेखर मिश्र (कुँवर सिंह), अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष' (प्रेमायन) आदि कवि लोगन का भाव–बोध, कल्पनाशीलता, विचार–संपन्नता आ समरथ अभिव्यक्ति – कौशल का जरिये बढ़ल ई पोढ़ परम्परा, काव्य–भाषा आ शिल्प का दिसाईं शब्द–शक्ति के विस्तार, गहिराई आ भाव– गंभीरता पवले बिया । आज का समय – सन्दर्भ में, जबकि कविता अपना काया– कलेवर के समेटि के 'हाइकू' ले चलि आइल बिया प्रबन्ध–काव्य लिखल श्रमसाध्य आ दुरुह काम हो गइल बा । एकरा पाछा एगो कारन इहो बा कि गहिराई आ विस्तार में डूबि– पँवरि के पढ़े वाला लोगन के अकाल होत जाता। एगो लमहर अन्तराल का बाद आनन्द सन्धिदूत जइसन सफल– समरथ कवि के 'अग्नि संभव' देखल अपना आप में सुखद बा। ई कवि का एकान्त–साधना आ कवि–कर्म का दिसाईं सतत् क्रियाशीलता के प्रमान बा।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के भोजपुरिया नायक वीर कुँअर सिंह का बाद – स्वतन्त्रता, न्याय आ समानता खातिर युग प्रवर्तक राष्ट्रीय नायक का रूप में महात्मा गाँधी जइसन अप्रतिम चरित्र पर प्रबन्ध काव्य ? महाकाव्य खातिर चुनल आ उनका वैयक्तिक वैशिष्ट्य सहित उनका विचारधारा के प्रभावपूर्ण ढंग से सिरजन कइल, आनन्द सन्धिदूते जइसन रचनात्मक निष्ठा से संपन्न कवि का वश के बात रहल। स्वतन्त्रता, मानवता आ सामाजिक न्याय के पक्षधर, बिना तोप–तलवार, बिना हथियार लड़े वाला महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा आ सत्याग्रहं वाला लमहर संघर्ष के प्रासंगिकता आजो देश–दुनिया सकारत बा। लोक मानस पर आपन अमिट छाप छोड़े वाला लोकप्रिय गाँधी जी के शिक्षा, आत्मसंघर्ष, संमाजिक हस्तक्षेप आ शोषन – अन्याय का खिलाफ प्रेरक नेतृत्व वाला व्यक्ति के , अपना भाषा भोजपुरी में पुनरुज्जीवित कइल कवि आनन्द का रचनाशील– धैर्य वाला निष्ठा के प्रमान बा–

आनन्द सन्धिदूत अपना वक्तव्य में लिखले बाड़न

" काव्य के जवन कथा बा , ऊ सबकर जानल – सुनल बा आ हम जीवन – कथा से ढेर , उनका विचार के गावे क कोशिश कइले बानी – " उनका प्रबन्ध काव्य के 'अग्नि संभव' दरसअल गाँधी जी का विचारन के वाहक बा आ उनका चिता – अग्नि से निकलल बा। इ 'अगिन पक्षी गाँधी – विचार – दर्शन के आजुओ संसार में फइला रहल बा ।

''पक्षी अग्नि संभव घूमत चिचियात लड़ाकू रुक जा ! असर पड़ो जिन पड़ो मगर ई पक्षी काम करत बा। जगब्यापी आतंकवाद के घूम–घूम बरिजत बा। ई पक्षी भारत का भी मन्दिर मस्जिद पर बइठे...''

क्रोध अग्नि पर, छल पर, बल पर हठ पर, जिद पर बइठे.... ...असर पड़त बा लड़त – लड़त दुनिया जतने थाकति बा ओतने अग्नि संभव पक्षी का ओर बढ़त ताकति बा !"

दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजन के भेदभावपूर्ण, शासन अन्याय आ दमनकारी नीति का खिलाफ प्रतिरोध के सूत्रपात भइल आ स्वदेश लवटि के उन्हनी का अनीति, आ छल–कपट भरल शासन से मुक्ति खातिर गाँधी सत्याग्रह आन्दोलन के अहिंसक जननायक का रूप में प्रतिष्ठित भइले । उनका बिचारन आ व्यवहार के लोकप्रियता के मूल आधार उनकर अहिंसक प्रतिरोध शक्ति रहे – जवन सत्य पर टिकल रहे। सन्धिदूत जी एही क बखान कइले बाड़े ।

आनन्द सन्धिदूत अपना समर्पित रचनाशीलता आ विशिष्ट कविताई का कारन अलग पहिचान राखे वाला कवि रहल बाड़न। बरिस 1992 में "पाती" के पुनर्प्रकाशन शुरू भइला पर ऊ एह पत्रिका से जुड़ले आ अन्त ले जुड़ल रहले। ओधरी उनकर एगो गीत संग्रह 'एक कड़ी गीत के' छपल रहे। ओके पढ़ि के हमरा लागल कि उनका भीतर काव्य–विवेक आ कविताई के एगो अलग सर्जनात्मक स्तर बा द्य भाषा– शिल्प के रचाव–बन्हाव, गति आ लोक लय के मौलिक उद्भावना करे में ऊ सफल बाड़न । अपना गीति–रचना में ऊ ओतने कहे क कोसिस कइले बाड़न, जेतना क जरूरत बा। उनका कवि में सांकेतिक कथन के सूझबूझ बा । 'एक कड़ी गीत के "पढ़ला का बाद हम ओह संग्रह का गीत विधार आ विषय–वस्तु (कन्टेन्ट) पर लिखे से अपना के रोकि ना पवले रहली। 'एक कड़ी गीत के' में कई कड़ी अइसे गुँथाइलब्त जइसे मोतियन के लर होखे। लोक– बिम्ब में भोजपुरी जीवन के हाव – भाव प्रतिबिम्बित हो जाय हास – हुलास, चाह–चिन्ता आ प्रेम सब सुभाविक रूप से सोझा प्रगट हो जाय। आधुनिक समय– सन्दर्भ में जीवन का विसंगतियन आ विद्रूप के चीन्हत–चिन्हावत कवि बदलावो के रेघरियावे के। कोसिस करत लडकल। छन्द –विधान में लय आ गति का साथ अरथवान नयापन हमके बहुत नीक लागल।

कवि कविता बनावेला, त कवितवो कवि के बनावेले।" मोहिं न मोरे कबित्त बनावत "। सरल–सहज, अन्तर्मुखी आनन्द में संवेदन आ भावप्रवणता बहुत गहिर रहे। उनका एकान्त में, चिन्तन–मनन आत्मालोचन के कुछ खास पड़ाव एही सब का कारन बा , बाकिर एह एकांत मे लोक से जुड़ाव आ लगाव कम नइखे भइल । एही से ऊ कबो खुल के भगवती – स्तुति करत उनकर महिमा गावत लउकलन त कबो "कुरल कवितावली" सहेजत मिर्जापुर – बनारस – गाजीपुर के सनधिदूत बन के लउकलन । सिरजनधर्मी लोगन में– अपना देशकाल आ भाषा का साथ एगो अलग विशिष्ट रचनात्मक व्यक्तित्व निर्मित कइले आनन्द सन्धिदूत।

हरेक आदमी के जीए के आपन तौर–तरीका आ रुझान होला । जरूरी नइखे कि सभ बन्हल–बन्हावल राह पर चलो। कुछ लोग अलग राह बनावेला भा राह पर अपना ढंग से चलेला । दीन–दुनिया के अपना निजी दीठि, अनुभव, प्रतीति से परतियावे–जाने के कोसिस करेला । आनन्द के आपन अन्तर्यात्रा बा, आपन अर्जित अनुभव आ नजरिया बा। लिखे – बोले के आपन शैली , मान्यता , शब्द – सामरथ आ लूर – सहूर बा।

'अग्नि – संभव' प्रबन्ध काव्य में कवि के प्रतिभा, अध्ययन बोध, ज्ञान के अपना निजी खासियत का साथ प्रकाशन आ उद्भावन भइल बा । समय–सन्दर्भ आ देशकाल के बरनन – बखान में लोकतन्त्र आ राजनीति के रूप–बिरूप, विसंगति – विडम्बना पर वक्तव्य देबे में उनकर कवि नइखे चूकत । कवि भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन, आ सुराज का लड़ाई के विविध सन्दर्भन में, मानवता आ समाजिक सुधार–परिष्कार आ व्यावहारिक अन्तर्विरोधनो पर चर्चा कइले बा । विविध परस्पर विरोधी विचारन में सामंजस्य बइठावे वाला गाँधी– के व्यक्तित्व आ जीवन–दर्शनो के रेधरियावत आनन्द सन्धिदूत वैचारिक अग्नि–पक्षी के व्यापक आ वृहत्तर आकाश में उड़त देखवले बाड़न । आज का एह महत्वाकांक्षी प्रतिद्वंदिता विघटन आ घात–प्रतिघात का समय में, आपुसी – भेदभाव– अनीति आ अन्याय नया नया रूप ले रहल बा, गाँधी–दर्शन अउर प्रासंगिक होत लउकत बा।

एह लेहाज से आनन्द – सन्धिदूत के ई भोजपुरी ग्रन्थ 'अग्निसंभव' बहुत उपयोगी बा । ई पढ़े वालन के महात्मा गाँधी का संघर्ष–यात्रा आ जीवन–दर्शन का अनगिन मूल्यवान पहलुअन के परिचय कराई। ■■

लोक-रचना आ साहित्यिक संसार

सौरभ पाण्डेय

परब–तेवहार के समै सुरू हो चुकल बा। सङहीं लोकतंत्र के परबओ नगिचाइले बा। अगिला महीना में पाँच सूबा में विधानसभा के चुनाव बा। देस राजनीतिक रूप से आपन रङ बदल रहल बा। अब ई देखे के बा जे सरकार चलावे खातिर जनता का कवनो नवका पार्टी के कमान देतिया। आकि, अपना–अपना सूबा में जवन पार्टी सरकार चला रहल बिया ओही के एक हाली फेरु से काम करे के हुकुम मीलऽता। ई सभ काम ओरियाते लोकसभा के चुनाव, माने देस के संसद, के लेके सउँसे देस में सरगर्मी निकहा तेज हो जाई।

लोक कवनो समाज के बड़हन सरूप ह। ई लोक कवनो जवार के कुछ लोगन के कवनो समाज ना होखे। लोक में कौ गो समाज जुटाइल रहेला। आ हर जवार–समाज के आपन–आपन अलगे बेवहार होला। समाज के आपन–आपन बिचार–बुधी, ओकर लकम–परंपरा ओह समाज के कूल्हि लोगन के समहुत भाव ह। आ सभ समाज के समहुत बिचार–बुधी से कवनो लोक बनेला। कवनो अमदी के भाव ओकर आपन समाज से भा त मिलल चल सकेला, भा फरिका बनल रह सकेला। बाकिर लोक के बेवहार ओजुगा के चलल आवत समहुत परंपरा में ओरियाइल भावदसा के कारन तय होला। लोक समाज मूल रूप से अपना मनइयन के सुख–दुख, दरद, हुलास–पीड़ा के भाव बखान करे में परंपरा के डेंरार घींचत जाला। एही से कवनो समाज के भाव उदबोधन बेक्तीगत भावन के समहुत उदबोधन होला, जेहमें लोक आ समाज अपना भाव सभ के एकवटल देखेला। ईहे भाव–बोध हर तरी के परोजन प कौ किसिम के सरस गीतन के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चलत जाला। सही कहल जाव, त ईहे आदमी के बिकासगाथा में काव्य के सरूप आ काव्य–सरूप में ओकर गठन के लगातार सांस्कारिक होत गइला के फल ह। जइसे–जइसे लोगन के समाज में भावना आ बेवहार के गठन होत चलल जाला, ओह समाज के आ ओही लगले समहुत लोक के गठन होत जाला। एही आंतरिक भावबोध के परिनाम सभ तरी के सांस्कारिक भा श्रम–गीत हवन स। गीत के भा खिस्सा–काथा के विन्यास आ विधा–विधान भा सभ अवयव बाद के बिकास हवन स। जवन आगा चल के भरतमुनी के नाट्यशास्त्र के आधार प सोधात गइलन स। आगा सभ भाव दसा अलगा–अलगा इकाई के रूप में विकसित होत चल गइल। चाहे ऊ कवनो परोजन, समै भा आयोजन के गीत काँहें नत होखो।

दरअसल, गीत भा कवनो सरस भाव–उद्गार के जरूरत गावे भा सुनेवाला के भाव के संवेदित कइल होला। गीत भा भाव–उदगार के माध्यम से गावेवाला भा सुनेवाला आपन सुख, दुख, दरद, हुलास, पीड़ा, टूटन, आह–वाह, मने जे हर तरह के मनोभाव के बोल में बतावल जा सकेला। ई कवनो समाज के मनई के मनोविज्ञान के

साधे के बहुत बड़ साधन ह। अइसन गीत कवनो एगो अमदी भा 'गीतकार' के लिखल ना होखे। अपना देस के समाज रचनाकार के महत्ता के जगहा आपन समाज के उत्थान के सर्वोपरि मानत रहल बा। एही कारने जतने वाङ्गमय भा शास्त्र बाड़न स, उन्हनीं के रचयिता के नाँव प कवनो एक अदमी ना गिनासु। एक वर्ग ईहो मानेला जे ब्यास मुनी कवनो मनई के नाँव ना रहे। ई एगो पद रहे। मने ढेर जाने ब्यास मुनी भइले भा कहाइल बाड़े। ओह में से कृस्न–द्वैपायन एगो ब्यास भइल रहले।

लोक आ परम्परा के लेके बनल आ गावल जात गीतन प सोचल आ जानल जाव त मालूम चली, जे लोक–साहित्य आ भाषा–साहित्य एक–दोसरा के समानान्तर चले वाला इकाई हई स। जे लोक के ह, ऊ भाषा के नाधे ला। आ जवन भाषा के ह, ऊ लोक के साधेला। बाकिर दूनो के घालमेल कइल संभव ना होखे। त सवाल उठी, जे जवन लोक–गीत होलन स, ऊ कइसे बेवहार में आवे लगले स? आ साहित्य के रचना भा गीत से इन्हनीं में बहुत कुछ अंतर काहें होला? लोक–परम्परा आ लोक–गीत एक पीढ़ी के ईजाद ना होलन स। ई कूल्हि बहता पानी हवन स। एहसे ओह में ढेर कुछ जुड़त–छूटत रहेला। बाकिर उन्हनीं मूल स्वर एक्के बनल रहेला। ओहमें कवनो फेर–बदल ना मीली। बिधा–बिधान जवन साहित्य के मांग आ जरूरत होला, ऊ बाद के बिकास होला। कहे के माने, जे सुर आ स्वर पहिले आवेला, जवन गीतन के उत्पत्ती के मूल ह। आगा उन्हनियें के आधार प कवनो रचना के बिधा–बिधान बनेला, जवना से ओह बोली के साहित्य रचना सभ प अनुसासन कसेला। लोक–गीत भा लोक में प्रचलित भइल खिस्सा–गाथा साहित्य के अंकुस ना मानऽ स। कवनो भासा भा बोली के अकादमिक साहित्य ओह भासा आ बोली के ब्याकरन आ बिधा–बिधान बनावेला। जबकि लोकगीत ओह लोक–समाज के मानवीय भाव के नैसर्गिक उद्गार हवन स। ओकनी के शब्द आ भाव–व्याख्या लोक–मानस के दमित इच्छा के बिस्फोट ह। एह बिस्फोट आ उद्दात संप्रेषणीयता के बान्हल साहित्य के अनुसासन आ बेवहार ना साध सके।

त सवाल बा, जे साहित्यिक रचना ह का ? भा, कविता का ह? गीत का ह? मूलतः कविता के काम ह पाठकन भा सुनेवालन के भाव आ संवेदना के झकझोरल। उद्वेलित कइल। माने, जे जवना शब्द–बेवहार से मनई के संवेदना प प्रभाव पड़े, ऊ शब्द–बेवहार कविता ह। एक हाली देखल जाव त ईहे कमवा गीतओ करेला। एकर जवाब कविता के विन्यास प निर्भर करेला। गीत अपना सरस आवृती से मनई के भावदसा के सोहरावेला, दुलरावेला, खँघालेला। जबकि कविता मनई के भावदसा के छुअत झनझना देले, झकझोर देले। एहीसे कहाला, जे अनुभव के ऊँच दसा प भइल कवनो उद्गार कविता कहाले। बाकिर, ओह ऊँचाई प पहुँचे के पहिले कवनो रचनाकार के शब्द–साधना के गँभीराह तप से गुजरे के परेला। एहीसे कविता में शब्दन के बहुत महत्ता बा। जबकि गीत का नाँवें बहिराइल उद्गार में शब्द ना, बलुक भाव आ हिरदै के उद्गार के प्रधानता होला। भाव–भावना आ पूर्ती के शब्द से गीतन के बहाव आवेला। गीत में आकसरहाँ कथानक के आभास मीली। लोक गीतन में अक्सरहाँ सवाल आ ओही आवृती में जवाब के बनल साँचा के प्रयोग लउकेला। भा, संवाद के साँचा मीली। बियाह–बिदाई, परब–तेवहार आदी के कूल्हि गीत सवाल–जवाब भा संवाद के साँचा में बनल बाड़े स। होरी, जोगीरा, कबीरा, निर्गुन कुछऊ उठावल जाव, गीतन के साँचा ईहे मिली। सही कहाव, त कविता के एकदम–से आपन.सुर आ स्वर गीत ह। गीत जवन आरोह–अवरोह में चलेला, ऊ भावदसा के मथहीं के काम ना करे, बलुक शब्दन के कमी आ बिधा–बिधानन के कमी के ओटत चलेला। सही कहल जाव, त लोकगीत के पाछा बिधा–बिधान के बतिये कइल बेजायँ कहाई। काहें जे, गीत आ कविता दूनो के उद्देस आ जिम्मेवारी में भारी फरक होला। गीतओ के एकही रूप नइखे। गीतन के चार प्रकार बतावल गइल बाद्य एक, गाँव–घर के गीत, माने, लोकगीत। जेकर आम रूप से चर्चा भइल बा। दू, अरण्यगीत, माने आदिवासी गीत। तीन, ऊहगीत, माने, बिचारप्रधान गीत। साहित्यिक गीत सभ एही तरी के गीतन में आवेले स। चार, ऊहागीत, माने, राग–रागिनी आ संगीत के बोल पारे खातिर गीत, जवना के सुर–ताल में आ बाजा भा वाद्यजंत्र सङे गावल जाला। भ्रम के कारन, साहित्यिक गीतन के, जवना के ऊह गीत बतावल गइल बा, लोकगीत लेखा लिखल जा रहल बा। अइसन अतुकांत काम खलिहा भोजपुरिये में नइखे होत, बलुक ई हर ओह भासा में होता जवन प्रभाव आ बेवहार में त बा, बाकिर सिद्धांत के तौर प साहित्य में अकादमिक तौर प गहिराहे जगह नइखे पवले। एक कारन त ई बडुए। दोसर, अइसन ढेर भासा वाचिक परम्परा के भासा हई स। भोजपुरियो वाचिक परम्परा

के भासा ह। ळिखेवाला जमात के लोग–बाग जे मेहनत आ अभ्यास से बाँचे के कवनो ना कवनो उपाय उत्जोग करत रहेला, वाचिकता के बेजायँ फाएदा उठा रहल बा। कारन बा, जे अइसना भासा के अनुसासित पढ़ाई होतहूँ होखे बाकिर गठित अध्यापन, सिखाई नइखे होत। इसारा बिधान के अनुसार पढ़ाई के बात बा। गीत के मर्म आ कविता के विन्यास प आजु शिक्षा के छेत्र में आध्यापन के क्रम में चर्चा भइल जरूरी बा। बाकिर लिखे वालन में ढेर लोग मन के भाव के शब्द में कसहूँ उकेरत लिख देवे के चलन बना देले बा। आजु कतना लोग बाड़े जिनकर गीत भा कविता के बिधान प नीमन पकड़ बा? ई ओह लोगन खातिर कहाता जे लिखे के पहिले कवनो तैयारी जरूरी ना बूझसु। आ, तवना प बेहया अस ईहो बोलत रहत बा, जे भाव के उकीरल रचना–कर्म ह, भाव के तर्क, शब्द आ गनित में झोंकल ना। अइसनन के कहे के मानल जाव, त बिधा आ काव्य–अनुसासन प समै लगावल समै आ मेहनत दूनो जियान कइल कहाई। बताईं, जब ऊह गीत के परंपरा ना रही, त अइसना से कवन भासा के साहित्यिक समृद्धी होई? आजु भोजपुरी में पद्य रचना–कर्म के लेके ई एगो बड़हन समस्या बा।

मन के भाव आ आपन अनुभव के आधार प शब्द के बनावट, शिल्प के बुनावट, ओही के अनुसार बिसैबस्तु आ संवेदना के सतह प उद्गार भइल त ऊ कविता मन के छूए लागेले, आ दीर्घजीवी हो जाली स। बाकिर अइसना शब्द–उद्गार में पांडित्य–प्रदर्शन के एगो अइसन भाव होला, जवना के लिखे वाला बतावे भा कहे ना, बाकिर, ई जना जाला। चूँकी लोकगीत कवनो बेक्ती बिसेस से जुड़ल ना होख स। ऊ अकसरहाँ आमजन के आपन भाव–उद्गार हो जालन स। एहीसे एकनी के शिल्प आ बुनावट में इचिको पांडित्य ना लउके। लउकियो ना सके। पढ़ल–लिखल लोगन के जमात के बिधासम्मत भाव–उद्गारन के समानान्तर स्वच्छंद आ प्राकृतिक रूप से बहे वाला उद्गार हर काल में चलत रहल बा। जब पंडितन के काव्य–भासा बुनावट आ बनावट में लोक–भासा में ढेर आगा निकल जाले, आ जन–मानस प ओकर प्रभाव ना के बराबर रहि जाला, त ऊहे शिष्ट समुदाय लोकभासा के सहारा लेत आपन काव्य में एगो नया परम्परा सुरु करे लागेला। ई बात हमेसा से चलत रहल बा। एकर माने ई भइल जे लोकभासा में जवन उपलब्ध बा, ऊहे मूल ह। भासा–साहित्य लोक–साहित्ये से राह पावेले। त जानल जरूरी बा, जे भासा–साहित्य के फेरु जरूरते का रहि गइल? पांडित्यपूर्ण भासा कबहूँ लोकभासा ना होले। एहसे बिधा–बिधान प गहनता बढ़े लागे त लोकभाव से ऊ दूर होखे लागेले। बिधान प ध्यान आ नजर ढेर बनल रहेला, जेहसे आमजन के ढेर सारोकार ना भइल करे। जेहसे जन–मानस अइसना भाव–उदगार से दूर होखे लागेला। तब भासा–साहित्य अपना के लोक से जोड़े में लोक–साहित्य से अवयव आ विन्यास लेत अपना में बदलाव कइल सुरू क देले। हर काल में एगो अइसन समै आइल बा जब भाव–उद्गार में भाव कम आ उद्गार ढेर लउके लागेला। कथ्य आ तथ्य प्रभावी ना होके विन्यास के बुनावट प कसरत होखे लागेला। हम अइसने समै के बात क रहल बानीं। बाकिर भोजपुरी के अबहीं ऊ काल नइखे आइल। छंद के विधान ना मानल, बिध ाान के अनुसासन ना मानल रचना–कर्म के निकृष्ट के श्रेणी में ळे जाला। जेकरा खातिर हर समय छंद बिधान में निषेध अहल बा।

एही लगले एगो अउरी जमात तैयार बनल बा, जवन रचनाकार आ बेवसायी गोल के घालमेल ह। जवन रचनाकार के मुखौटा में बेपार करे के आग्रही ह। ई जमात प्रकाशन–बेवस्था के सुरू होते तैयार हो गइल रहे। बाकिर आजु ई जमात उपट के सोझा आ गइल बा। धमक से बेवहार क रहल बा। रचनाकारन के आपन–आपन गोल बना रहल बा। ओही लगले सम्मान, पुरस्कार, आ छपास के बजार बना रहल बा। रचनाकार इन्हनीं के फेंकल जाल में बाझते नइखन, बलुक एही धूर्तई के साहित्य के मैदान के कायदा बूझे लागल बाड़न। कतना रचनाकार बाड़े, जिनका आपन किताब के बिक्री के लेके जनकारी आ आँकड़ा सही–सही मालूम होला? जब ई मालूमे ना होई त रायल्टी के का पता चली। एही से रचनाकारन के प्रकाशक छापिये के उपकृत क रहल बाड़े। तवना प छापते नइखन, रचनाकारे से छपाई के दमओ ले रहल बाडे। छपास के ललक अइसन फफाइल रहऽता, आकि रचनाकार किताब के छप जाये के उत्साह में बाँसुरीवाला के मूस बनल जात बाड़े। रचना के बुनावट, बिधान आ प्रभाव से बेसी रचना के छपा जाये के ललक उनका मन में फफात रहेला। एही फफाई के सोर प्रकाशक थम्हले बाड़े। हानी साहित्य के हो रहल बा। हम अइसन–अइसन प्रकाशक देख रहल बानीं, जे बिधा–बिधान, भासा–ब्याकरन छोड़ीं, प्रूफ तक में लापरवाही क रहल बाड़े। किताब छप के आ गइल।

ओकर बिमोचन प जबरदस्त धन खर्च भ गइल। कुछ बोलनिहार लोगन के मंचासीन क दियाइल। साहित्य के मैदान तनिका अउरी बहारन जमा क दियाइल। को बड़ छोट कहत अपराधू। ना केहू बोलेवाला बा, ना केहू टोकेवाला बा। जे केहू बोलतो टोकत बा त ओकरा सूनेवाला, ओकरा प धेयान देबेवाला केहू नइखे। लिक्खाड़ आ प्रकाशक तैयार बाड़े, बाहबाही के बजार बनल बा।

ऊपर से एगो अउरी समस्या मुँह उठवले बढ़ल जा रहल बिया। ऊ ई, जे कवनो बिभाग से अवकाश प्राप्त अधिकारियन के साहित्य–प्रेम। जवन ई प्रेम पठन–पाठन भर ले बनल रहित त ऊ सोआगतओ जोग बा। बाकिर अइसन अधिकारी लोग चट दे लेखक के तौर प सोझा आवे लागत बा लोग। आतने ले ना, बेपारी प्रकाशक बड़ले बा। आइसना लोगन के किताब प किताब छाप–छाप के निहाल कइले जाता। छपाई, बिमोचन, सम्मान के गुमान भाव बन्हले साहित्य–तप करेवालन के भक्क कइले बा। रचना आ रचनाकर्म, कविता,गीत आदी पर सुरू भइल चर्चा जवना बजार के धँवक से लसराइल जाता, ऊ आजु के साहित्यिक छेत्र के सच्चाई ह। ईहे एह समय में लकम बनल बा। समस्या के समाधान के उत्जोग तब होखी, जब समस्या के गुमान होखी। कवनो समस्या जब परिपाटी अस बेवहार में आ जाले, त ओकरा खातिर केहू समाधान ना खोजे।

,,,,,,,,,,,,,,,

एम–2/ए–17, पी०डी०ए० कॉलोनी, नैनी,
प्रयागराज–211008ए सम्पर्क – 9919889911

दू गो कविता

☑ गुरविन्द्र सिंह

(एक) हमरे दोष

हमरे बा दोष हम कइसे सकारीं !

स्वारथ के देव रहे पइसा - रुपइया
कहहीं के नात रहे , नेह रहे भइया
गइलीं बिलाइ हम शहरे का आरी !

अइलीं शहर त लवटनी न गँउवाँ
अब त भुलाइ गइल गँउवों के नँउवाँ
लोग कहे इहवाँ पुरुबिहा-बिहारी !

मुअनी भा जियनी के साथी - सँघतिया
अनगँउवाँ लोग बनल भाई आ गोतिया
भइल इहे लोग अब बाप - महतारी !
हमरे बा दोष हम कइसे सकारीं !!

(दू) चकोहि फँसल देसवा

वादे - प्रतिवाद पर बिवाद बढ़ल भइया
निकहा चकोहि फँसल देसवा क नइया !

जाति पाँत रहे, फिरू क्षेत्र के लड़ाई
भाषा का नउँवाँ पर होखे चढ़ाई
खइलस समाजे, समाज क खेवइया ।

कुरुसी आ पद खातिर लागल झमेला
सेकुलर - खनदानी क अलगे बा खेला
दूध के मलाई कूल्हि खइलस बिलइया ।

नकली किसान भइल असली पर भारी
खेतिहर - मजूर प' दलाल - बैपारी
माँगे आजादी अब नया पढ़वइया !

बइठि पँचतारा पिलान बने सगरी
गँउवाँ क लोग मरे गँउवें का कगरी
बिगड़ल समाज अब राम रखवइया!

सोचि- सोचि कुफुते में जीवन नसाई
गाइ बनल जइसन, बा ओइसन कसाई
अइहें न तारे अब किसुन - कन्हइया!!

'पतिनी पति ले, पितु गोद में सोई'

डा0 शारदा पाण्डेय

संबंधन के जइसन रसबन्दी भारतीय संस्कृति आ सामाजिक संस्कार – व्यवहार में बा ओइसन उन्मुक्त मर्यादित आचार संहिता कतों अवरू देखे में कदाचिते लउकी । ई संबंधन के प्रयोग कबो आत्मीयता, वात्सल्य, सहज सौख्य आ श्रद्धावरेण्य भाव के अभिव्यक्त करेला तऽ कबो व्यंग्य प्राविपरीत भावन के विरेचन के साधनो बनि जाला। कुल्ही दृष्टि से एकर महिमा, प्रयोग आ संयोग बड़ा चमत्कारिक होखेला । भारतीय दर्शन आ भक्ति के शक्ति संबंध – भाव रश्मि में लपेटल बा। एही से एमे सम्पूर्ण विश्व के जीव मात्र के संगे मानवीय परिदृश्य में 'कौटुम्बिक' भाव समाहित हो गइल बा, 'वसुधैव कुटुम्बकम' सही के शाब्दिक व्यञ्जना हऽ । ई संबंध– 'जीवे' मात्र के संदर्भ में नइखे सृष्टि कर्त्ता, विश्वनियंता, परब्रह्म परमात्मा के त्रिगुणात्मक रूप कल्पना के सँगहूँ बन्हाइल बा । एही से अध्यात्म के दार्शनिक चिन्तन के संगे भक्ति के रसात्मक संबंध जुड़ि जाला । ब्रहम के निराकार कल्पना में माता–पिता, भाई, गुरु, पति आ एकरा साथे अवरू कुल्ही सामाजिक संबंध आ भाव संव्यूहित होके भक्ति बन जाला । 'पितु मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो' कहि के भगवानो के कतहूँ से भागे आ बिलग होखे के गँव नइखे मिलत। 'हरि जननी मैं बालक तोरा

काहें ना अवगुन बकासहु मोरा ?' कहि के प्रश्न करे के अधिकारो ई भक्त अपनहीं ले लेता, काहें कि ओकरा सोझा आर्ष– अभिलेख बा 'पुत्र कुपुत्रो जायते, माता कुमाता न भवति ।' सखा बनाइ के बराबरी के भी व्यवहार के अधिकार ओकरा लगे सुरक्षित बा 'खेलन में को काको गोसईंया' । ओमे ना कतो दोष बा ना अपना के हीन समझे आ समझे देबे के भाव बा; हाँ संबोधन जरूरे बा 'हे माधव हे सखेति ! जेमे आपन उपस्थिति होखे के प्रगाढ़ आत्मीयता आ अभिन्नता के लयता भी बा। एह भक्त के भीतर के संजीविनी भगवाने के दीहल बा कि

"हम न मरैं मरिहें संसारा ।
हमकूँ मिला जियावन हारा ।
हरि मरिहें तो हमहूँ मरिहें,
हरि न मरै हम काहे कूँ मरिहें ।।"

ई आत्मविश्वास अवरु कहाँ एह रूप में, कवनो अवरू साहित्य, धर्म, पंथ में भेंटाई ? अवरु जगह पर तऽ अधिकतर हाथ जोड़ि के, पसारि के खाली याचना के भाव अनेक रूप में व्यक्त लउकता।

हमरा संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, दर्शन के आदर्श परिणति परमात्मा के विभुता' में बा, जे जीव मात्र में प्रकृति के कण–कण में, अणु–अणु में प्रकाश, वायु, वैश्वानर के प्रत्येक किरण में समाहित बा, ऊ सर्व समर्थ बा 'मूकं करोति वाचालम्' आ 'कर बिनु कर्म करे विधि नाना' के प्रमाण निरवयव के स्थिति में रहलो पर समय–समय पर सिद्ध होत

रहेला। बाकिर भक्त के एह से ऊ संतोष सुख आ आनन्द आत्म तृष्टि नइखे जवन 'सौभाग्य' के ओह रूप से मिलेला जहाँ ऊ अगाध अमृत रति में डूब जाला कि 'मैं रनिरासी जो निधि पाई' परिणति होला 'ले सूती अपना पीव पियारा' में; एह भिन्न अभिन्नता के पावन स्वरूप वारि–वीचि, शब्दार्थ के एकात्मकता के पर्याय बनि जाला । तबे ई बोध जागेला कि 'तुम असीम मैं सीमा का भ्रम/ काया–छाया में रहस्यमय/ तुम मुझ में प्रिय फिर परिचय क्या !'

कतना सायुज्य सारूप्यता बा कि तहरा खातिर – हमरो स्थिति अनिवार्य बा, काहे कि रेखा के बिना चित्र के स्थिति कइसे सम्भव बा–स्वर के बिना गीत कइसे गवाई –'चित्रित तू मैं हूँ रेखाक्रम !

मधुर राग तू मैं स्वर सरगम।' कतना एह भिन्न अभिन्नता के रूपात्मकता के बारे में कहीं! हमनी क दर्शन आ शक्ति असीम–अनन्त क्षितिज के विस्तार में ओत–प्रोत बा। तनी अवरू आगा चलब तब पाइब कि संबंध चेतना जब अउरू पृथुलता पावेले त विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जाले; काहें कि हमार संस्कृति आ संस्कार मर्यादा में पालित बा, मर्यादा भंग कतो से समादृत नइखे। एह स्थिति में जब कहल जाता कि –

"पतिनी पति ले पितु गोद में सोई" त मन–मस्तिष्क दूनो झनझना जाता । का सनातन धर्म आ संस्कृति में ई कतो से कबहूँ सम्भव बा ? अवरु समाज–धर्म में तऽ प्रायः पारिवारिक संबंधन के शुचिता शपथ ना बने, ऊ अग्नि के साक्षी में ना जीये, ऊ ग्रहण आ त्याग के परिभाषा ना जाने ऊ सात– जन्म के बंधन के सूत्र ना हऽ। हमरा कीहें व्यक्ति वस्तु भाव से ना ग्रहण कइल जाला, ना जीअल जाला कि तीन बेर कहि द 'तलाक' आ अलगा हो जा, भा पिता, पुत्र, मामा, चाचा केहू के भोग्या बने के खातिर कानून के अंगभूत होइ के बाधित होखे के परो तऽ ई कइसे कहा– गइल कि "पतिनी पति ले पितु गोद में सोई।" का अइसन छोट लइका से बिआह भइल कि पत्नी के महतारी बनि के पति के पालन करे के परल ? कहाला कि आतंकवादी आक्रमणकारियन के भय से कऽतो – कऽतो अइसन भइल, काहें कि ऊ लइकियन आ नारियन के अपहरण करि लेत रहलनस भा लूट लेत रहलन स, बलात्कारी रहलन स। आजुओ ई स्थिति देश, में लउकिये जाता। एगो मैथिल गीत में 'पिया' के 'बालिक' भइला के कथन बा–

'पिया मोरा बालिक हम तरुजी गे
कवना तपे चुकलों जे भइलों जननी गे ।।"

स्त्री के विषय जीवन के ई पीड़ा दुस्सह रहल होई। भोजपुरियो के एगो लोकगीत में एकर संकेत बा कि पिता के घर के ऐश्वर्य में पलाइल बेटी के ससुरो में कवनो प्रकार के भौतिक सुख–सम्पदा अभाव नइ बाकिर समले बड़ दुःख बा 'बालक रउरे दयाद जी। ई बेमेल बिआह काहें? एकरा पृष्ठभूमि में का बा। बाबा (पिता) के उत्तर बा कि हम तऽ भलीभाँति देखि के बिआह कइले रहनी 'कॅकरी के बतिया बेटी देखत सोहावन, ना जानो तींत तऽ कि मीठ जी' माने शारीरिक दृष्टि से कवनो कमी ना रहल बाकिर –मानसि परिपक्वता के हमरा ज्ञान ना भइल । अइसन बिआह एह प्रगतिशील समय में भी सुना जाता। कबो धोखा बिना सच्चाई बतवले लइका वाला फँसा ले तारन आ सनातनी बालिका के निर्वाह करो के विवशता हो जाता। परिवार के बदनामी से बचावे खातिर अपना के मिथ्या कलंक से सुरक्षित राखे खातिर, 'अलग–अलग वैतरणी' के पटनहिया भउजी अपना पति कल्पू के नपुंसकता के दर्द जीवन भर सहली । नारी के सामाजिक स्वच्छंदता या उन्मुक्तता ओह श्रेणी के नइखे मिलल जाइसे पुरुष के मिलल बा । एह सच्चाई के आजुओ अस्वीकार ना कइल जा सके । महाकवि तुलसी तऽ उद्घोष कई दिहले कि –

"महावृष्टि चली फूटि किआरी ।
जिमि सुतंत्र होइ बिगरै नारी ।।"

एकर एक एक शब्द कील नियर करेजा में गड़ि जाता बाकिर एकर दोसरो पक्ष जब सोझा आवता कि–

"का न करै अबला प्रबल का न समुद्र समाय ।
काहि न पावक जरि सके केहि जग काल न खाय।।"

तऽ पश्चिम बंगाल में ममता के ताण्डव देखि के, 'खेला होबे' वाला नाटक देखि के मन के विद्रोह अपने में कातर भाव से सिमट जाता। प्रत्यक्षं किम् प्रमाणम् ? इन्दिरा गाँधी संविधान में बिना संसद में पारित कइले 'सेक्युलर' शब्द के आगि रोपि दिहली, उनुकर पतोह 'वक्फ' के नाँव पर कवनो प्रापर्टी पर मुस्लिम अधिकार के मान्यता दे दिहलस, दलित के नाँव पर नोयडा आ लखनऊ में मायावती हाथियन के सज्जा से पार्क सजा दिहली। प्रगतिशील लइकी अइसन प्रेमियन के सँगे 'लिवइन' में रहि के पचास पैंतीस टुकड़न में कटाइ के जिनिगी से हाथ धो लिहली । तब का सोचीं कि बिना विचारल संस्कारहीन वासनात्मक स्वतंत्रता परिवार, समाज, धर्म, देश आ सभले अधिका नारी के जीवन पर

भारी पड़ि गइल बा । मन भँवर में परल बा । चिंतन थिरात नइखें । काहें 'पतिनी पति ले पितु गोद में सोई ?' कवन आशंका, कवन विवशता ओकरा के बाध्य कइले बा ? का पिता पुत्री के सुखी वैवाहिक जीवन के प्रति सशंक बा, एसे 'घर जमाई' बना के पुत्री के भविष्य आ अपना धनादि के सुरक्षित राखे चाहता । अइसन कतना विचार मस्तिष्क में प्रश्नन के मेला लगा दिहलन । खोजला पर एह वाक्य के सम्पूर्ति मिलल–

'सिंधु सुता जग की जननी, जग के पति विष्णु न दूसर कोई
मातु–पिता कर ब्याह भयो, यह वेद पुराण से साबित होई !!
ते सब चन्द्र को मामा कहें, अरु चन्द्र कहें हरि को बहनोई ।
बादल सागर सयन कियो, पतिनी पति ले पितु गोद में सोई !!

मन के चिन्ता – चिंतन रोमान्च में बदल गइल । भारतीय नारी के त्याग, निष्ठा, समर्पण के देखि के हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो गइल । सम्बन्ध के दृढ़ता एही 'समर्पण लो सेवा का सार' आ भाविक आर्जव पर टिकल बा। सागर मंथन से आविर्भूत चउदह रत्नन में नारी रत्न लक्ष्मी निकलली । ऊ सम्पूर्ण विश्व के असीम सुख के साधन जुटावे वाली, समृद्धि के कांति से जगमगावे वाली, जे आनन्द से परिप्लावित करे वाली अक्षय शक्ति हऽ, जे कर्मशील पुरुष सिंहे के सहधर्मिणी बनि सकेलें । सागर मंथन में कच्छप रूप में सहयोग करे वाला विष्णु के प्रकट सुवेशित मधुर मुस्कान वाला मेघवर्णी स्वरूप अइसन मन के बन्हलस कि सागर अपना पुत्री पद्मा लक्ष्मी के सृष्टि के भर्त्ता विष्णु के सादर समर्पित कर दिहलन । कौस्तुभ मणि जे दिव्य प्रकाश आ ऐश्वर्य के साधक रहल ऊहो दहेज रूप में प्रदान कइलन । एह श्रेष्ठतम आर्ष बिआह के साक्षी समे सुर–असुर–नाग आ स्वयं भगवान नीलकण्ठ शिव भइलन । भाई ओषधिपति चन्द्रमा अपना शीतल किरण रूपी लावा से एह दम्पत्ति के स्वस्त्ययन कइलन । लक्ष्मी वैकुण्ठ पति विष्णु के सहधर्मिणी भइली । पूरा वातावरण आनन्द के शंखनाद से ऊर्ज स्वित भइल । वैकुण्ठ अइसन धाम जहाँ कवनो प्रकार के दुःख, अवसाद आ कुण्ठा के प्रवेश ना हो सके। दिव्य विमल – विभूति से भरल ई लोक विज्ञानी मुक्त आत्मा के अधिवास हऽ। ओहिजा सभे निर्भय, उत्युक्त, निःशंक आनन्दमय लोक में निवास करेला । वैकुण्ठ के स्वामी विष्णु अपना बुद्धि–कौशल्य, निर्णयात्मक मेधा, समस्त ब्रह्माण्ड के विकास आ पोषण के सर्वांगीण नैपुण्य आ कवनो प्रकार के जटिल समस्या के निस्तारण खातिर सभे देवकुल में प्रख्यात रहलन । अइसन पति के पाइ के भला लक्ष्मी अपना के सौभाग्यशालिनी काहे ना मानसु । पति के निरंतर व्यस्तता आ समादर दूनू उनुका दृष्टि में रहे । ऊ उनुका सुख सुविधा के पूरा ध्यान राखसु, कवनो तरह के त्रुटि ना रहे देसु । ऋषि, महर्षि, सप्तर्षि, देवर्षि, देवगण सभे के आवागमन विष्णु के दर्शन खातिर सदा होखते रहे। लक्ष्मी जी पति परिचर्या के संगे–संगे अतिथिगण के स्वागत सत्कार में लागल रहसु । बाकिर कहल गइल बा कि विधि के विधान केहू टाल ना सके। ऋषि लोगन के मन में प्रश्न उठल कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश में समसे महान के बा? एकर निर्णय करे के बीड़ा भृगु ऋषि उठवलन । ऊ सभसे पहिले ब्रहमा कीहें पहुँचलन, ऊ अपना सृष्टि कार्य में व्यस्त रहलन उचित सम्मान ना कइ पवलन । भृगु ऋषि के अपमान लागल कहलन, 'जा धरती पर केहू तहार पूजा अर्चा ना करी, फेरु शंकर जी कीहें पहुँचलन उहो अपना दल–बल में मगन रहलन । भृगु जी कहलन कि, 'तहरा पूजा के प्रसादी कवनो मनुष्य ना खाई। तहार स्वरूप लिङ्ग रूप में प्रतीकित रही।' दूनू देवता लोगन के व्यवहार से अग्नि सम्भव भृगु जी के क्रोध तऽ उनका ब्रह्माण्ड में समाइल । वैकुण्ठ तक जात–जात ऊ संयम ना राखि पवलन । द्वारपालन के उपेक्षा करत अंतःपुर में जाइ के देखलन कि विष्णु जी शांति से शेषनाग के शय्या पर शयन करतानी। आव देखनी ना ताव जाइ के भगवान जी के छाती पर पद–प्रहार कऽ दिहनी । विष्णु जी अचकचा के उठि गइनी । अबहीं तऽ नीमन से नीनिओ ना आइल रहल आ अचक्के ई क्रोध के प्रहार।, ओने लक्ष्य जी अकबका के पैताने खड़ा हो गइल रहली । पद्मनाम भगवान शांत भाव से शेष शय्या छोड़ि के उठि गइनी आ भृगु ऋषि के प्रणाम कइ के चरण करज माथ से लगावत कहत, 'हे महर्षि! हमरा छाती के कठोर स्पर्श से रउआ चरण के चोट लागि गइल होई । हमरा के क्षमा करीं । राजा के असमय प्रजा आ राज्य के चिंता छोड़ि के अइसे ना सूते के चाही । रउआ हमरा के जगवनी बड़ा कृपा कइनी ऋषिवर। राउर ई पद–प्रहार हमरा के जागृत राखे वाला शंख नाद हऽ।" अब का रहे! भृगु जी तऽ पानी–पानी हो गइनी । आपन अपराध समझि गइनी। मन ग्लानि से भरि गइल । कहनी के तीनों देवन में रउरे सर्वश्रेष्ठ बानी सत् गुण सम्पन्न बानी

। रउआ सर्वत्र पूजित रहब । बाकिर हमरा एह पाप के प्रायश्चित कइसे होई।", विष्णु जी कहनी, "जहाँ राउर मृगचर्म अपने आप गिरी, जानी ऊ पाप मोचक क्षेत्र हऽ, ओहिजे रउआ मुक्त हो जाइब ।" अब ले लक्ष्मी जी संम्हर गइल रहली, बाकिर अपना पति के अकारण अपमान से आहत रहली। कहली, 'हे महर्षि! ईहाँ के त ब्रह्म हईं, हम एह पति के अपमान के ना भुला सकीले । आज से ब्राह्मण कुल में हम निवास ना करब ।"

भृगु जी के क्रोध शांत हो गइल रहे, आत्मविश्वास तबो जागृत रहल; विनम्रता से कहले, 'हम अइसन साधन दे जाइब जेकरा कारण रउआ आवहीं के परी । ब्राह्मण के शक्ति ओकरा ज्ञान, शुचिता आ कल्याण चिंतन में रही ।" ओकर प्रमाण भृगु संहिता भइल । जे देश के पूर्व, उत्तर, दक्षिण भाग में ज्योति जरवले रहल । विष्णु भगवान ऋषि के पद चिह्न के सदैव खातिर अपना छाती पर अलंकार रूप में ग्रहण कइनी। बाकिर पतिव्रता सहध र्मिणी पद्मजा जब ओह चरण चिह्न के देखसु, व्याकुल हो जासु । उनका लागें कि उनका पति नीयर कर्मठ सतत् जागृत, विश्वपोषक अवरु केहू नइखे । अहर्निश प्राणियन के कल्याण में सन्नद्ध ! का अइसन विभुता के कुछ काल विश्राम के ना चाहीं । उनकर पत्नीत्व निरंतर आहत होत रहल । उनुका अपनों दायित्व निर्वाह के दायित्व रहल । सुपात्र के वैभव दीहल। एकरा खातिर उनुका अपना पर लागल विशेषण 'परदारा' प्रायः सुने के पड़ो, विष्णु जी भी कबो कबो 'परदारा' पर परिहास करि लेसु बाकिर उनुका पर कवनो प्रभाव ना पड़ल । उनुकर एकमात्र चिंता रहल कि कइसे अपना प्राणप्रिय के कुछ काल खातिर निश्चितता आ विश्राम दे पावसु ? सोचत – सोचत उनुकर एक ही युक्ति मिलल कि अपना पितृगृह में कुछ मास बितावे के अनुरोध करतु, नइहर अकेले ना जाइ के पति के संगे जासु । जहाँ भगवान श्री हरि जी के समुचित समादर आ विश्राम मिलो । सागर त ई प्रस्ताव सुनते प्रसन्न हो गइले, क्षीर सागर के आपन भाग पुत्री के प्रेम आ स्नेह भाव से वर्षा– मास में समर्पित कऽ दिहलन, जहाँ शेष नाग के भी परम संतुष्टि मिलल । एसे अधिक कवनो पत्नी अपना पति के सम्मान खातिर का करि सकेले। नइहर–ससुरा के ई सामन्जस्ये नारी जीवन के सुखमय बना सकेले। लक्ष्मी के भाई चन्द्रमा अपना बहिन के जीवन भर, सृष्टि संचार तक स्नेह भाव से सिंचित करत चन्दामामा बनले । आजुओ गवाला "चन्दा मामा आरे आवऽ पारे आवऽ

नदिया किनारे आवऽ
सोना के कटोरवा में दूध–भात लेले आवऽ
बबुआ के मुँह में द घुटुक
आवऽ ना उतरि आवऽ हमरी मुँड़ेर
कब से पुकारिले भइल बड़ी देर
भइल बड़ी देर हो बाबू के लागल भूख

ई स्नेहभाव, ई आग्रह कब सामाजिक रीति बनि गइल केहू ना जानल । सागर तनया के भाई अपना विमोहक रूप, मधुर स्वभाव–भाव के चलत नारी सौंदर्य के अप्रतिम उपभान बनि गइले । एही से पूर्ण चन्द्र के देखि के सागर अपना बेटा के हृदय से लगावे खातिर पूर्णिमा के अवसर पर उत्साह से भरि के उत्ताल लहरन से स्वागत– अभिनन्दन करे लागेला । ई ना कि सूर्य पुत्र यम आ शनि नीयर शांति राखे खातिर अनेक पूजा–पाठ करवाओ । लक्ष्मी के अपना अग्रज धन्वन्तरि पर गर्व बा, जे जगत के निरुज करे खातिर संकल्प लेले बाड़न । उनुका अपना नइहर के स्नेह–सौहार्द्र, पारस्परिक गाढ़ आत्मीय भाव आ संस्कृति संस्कार पर अतना स्वाभिमान भइल कि पति के निश्चिंत विश्राम खातिर कुछ काल व्यतीत करे के पितृगृह में आइये जाली।' 'देव शयन' ई काल खण्ड जइसे व्यस्तता के उपक्रम में उनुका खातिर उत्सव हो जाला; तब प्रजाजन भी शांति आ उत्सुकता से 'देवोत्थान' के प्रतीक्षा करेला । नारी धर्म निर्वाह के, जीवन में सुख सामन्जस्य, पति के सम्मान रक्षा खातिर; दू परिवार में संबंध के शुचिता आ आत्मीय भाव के प्रगाढ़ करे के दिशा में ई प्रयोग – विधान अद्भुत भइल । अतने ना पति के प्रति उनुकर आदर निष्ठा कबो क्षण भर के विरत ना भइल । राजा बलि के स्वयं भगवाने के दीहल वरदान जब उनुका सतत् जागरण आ दासत्व भाव के प्रच्छन्न रूप लिहलस तबो लक्ष्मी जी अपने बुद्धि चातुर्य के चलत 'रक्षासूत्र' बाँधि के बलि के ओह प्रणत भाव से मुक्ति दिअवली ।

भारतीय नारी के प्राणतत्व संस्कार के पतिव्रता स्वरूप के जइसन प्रकाशन श्री देवी, लक्ष्मी के चरित्र से होता ऊ आद्यन्त हमरा समाज के पूज्य प्रेरणा स्रोत बा, जेसे नारी कबो मात्र भोग्याः ना बल्कि देवत्व के अधिष्ठातृ प्रतिमा के रूप में जानल जाले । ईहे हमरा देश के मूल संस्कृति हऽ– "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता ।"

142ए बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्
प्रयागराज-211006

दू गो गीत

सौरभ पाण्डेय

(एक)

अगहन के दुपहरिया बीतल
चिनकल दुअरा साँझ !

कवना करनी मनवा हुलसो
कवना करमे भाग
निहतनियन चुड़ियन का मारे
जिभिया बारे आग
ताखे अलता भले धइल बा
भाव भइल बा बाँझ !

ओसरवा में मुँदा रहल मन
ओ'ठङल खटिये घाम
भिनकत माँछी लागल माँगे
बइठारी के दाम
उपटल ऊँघी के झोंका में
उफनल घटना गाँझ !

तन के हारे मन ना हारे
का बतियाईं पीर
नभ के धनुखा रिगा रहल बा
बेध करेजा तीर
जो रे बदरा, देख तनी.. ऊ
कहँवाँ गइले भाँझ !

(दू)

सूरुज से अब ओ'रहन कइसन
मन के दुपहर बीत रहल बा !

माँङे भखरा लिलरे टिकुली
लवँग नाक में, काढ़ल केस
एक जमाना बीत गइल बा
मन से गावल भाव-सनेस
बेरा कवन, कुबेरा कइसन
नेह-हिया में फाँस गड़ल बा !

कबके उतरल चढ़ल रात, भा
कबके फूटल नवका भोर
ओरी-आँङन तिकवत नइखे
अब दुअरा-दरवाजा ओर
का पूछीं अब हे कागा से
बइठ मुँड़ेरे उकिर रहल बा !

सोचल कब होखे के होला
तबहूँ काहें जागल आस
पाकल घाव टभकतो नइखे
नइखे कवनो दरद अभास
का होई तब जीउ जाँत के
सउँसे बउखल बान बढ़ल बा !

एम-२/ ए-17, पी०डी०ए० कॉलोनी, नैनी,
प्रयागराज-211008 ए सम्पर्क - 9919889911

दिनेश पाण्डेय
के कुछ कविता

(एक)

आज काहें आँखि भर आइल सखी
ढेर दिन पर सुधि उभर आइल सखी

पातरी पैड़ी किनारे पाँव दे
चान भुइँएं बा उतर आइल सखी

थिर टिके के साधना में लीन जे
आज कइसे ए, डगर आइल सखी

चौघड़ी के पाहुना से का गिला
बात निकलल भिनसहर आइल सखी

बेअरथ मनुहार इनसे का करीं
गाँव में लँगटा शहर आइल सखी

बान्ह दीं तनिका कलेवा - पोटरी
भोर वाली बस नजर आइल सखी !

(दू)

बात कुछ ना रहे तबो बोलीं
बेवजह कान में जहर घोलीं

ना खलेटी कहीं हवे तर - पर
फेरु काहें जुबाँ अधर तोलीं

लंगई बेपरद त का हरजा
चैन से ऐन मध डहर डोलीं

दे लुकारी जराइ छान्ही के
ओट में छुप रहीं शहर झोलीं

शातिरी में न रावरी समता
धीकले पाट पर चुतर पो लीं

झूठ के पौध के तिजारत में
नीति गेंठे चढ़े कहर मोलीं

ए, प्रबोधन प, ना अमल राखब
जा कहीं डूबि के उफर हो लीं!

(तीन)

जइसे कि बिलगावल होखसि ढोर
चरे बदे जैजात / आन के
खुद चरवाहा ठाढ़ डील पश / ताकत होखे
हरियर खेती के रउँदाइल
इतमीनान से
नइखन ऊ सीधा जेतना कि लउकत बाड़न
कइसे ऊ बेबस , जे अतिना फउकत बाड़न?
देखीं गान्ही के बनरा
अब फुनुगी तक ले छउकत बाड़न!
अउवल त सच ई लागे कि ढोर हँकावे / चरवाहा के
गाफिल, बैकल,निबल जान के ।
कचरत बाड़ें कोने -कोने
एने - ओने।

भकुआइल चउपट चरवाहा
रने-बने, कासे -कुसे/ धावे धूपे
बहकल पड़रू छिटक छान से
आपद से अनजान मूरख
कहियो खुद चारा बनि जइहें/ ढोरतन्त्र के
फिरी पताका !

(चार)

धोख - पुतुल

साधो सगरी धोख -पुतुल बा !
'देखब नाहिं बेजायँ' कठिन ब्रत कबहूँ ठनले रहलन
ऊ कइसे अनगिन कुकांड के सोझे आँखी सहलन?
'कहब न कुछ स्खलदंस' रात-दिन ,करे हक्कर पारल
होते इचि बिपरीत हाल के , सब सिद्वान्त बिसारल।
शाक मिलल मरजाद बात के ,क्को करम न छूटल
मानुस मुख से जहर वमन के कीर्तिमान सब टूटल ।
'सुनी न ऊ सब बात, जवन ना होखी जन हितकारी।
भेद खुलल भीखम- हठ के होखल बात उघारी।
आला पर जे बनरा बइठल अब ले रहल स्खुलाटी।
होखे ना परतीति सहज में सब धोखा के टाटी ।

(पाँच)

?ुप अन्हियारे ,क दरीचा केहू खोल स्खइल
चुटकी भरि इँजोर खाँच भर असरा तोल स्खइल!

अनवट झोंपा चक्कर रहता ,कहईं अन्त न सूझे
छनिको ना बिसराम बरध के छूटत नादे लूझे
पलकन में कुछ नीनि मदालस , पुर वा डोल स्खइल!

चउरंची मकरी अस जाला चारू ओरि तनाइल
मुँह पे हरियर अतई -पतई ओते खंत खनाइल
स्खफलत परल मूढ़ मकुना मन ,सहते मोल स्खइल !

निपजल कतिने ना बबूर बन ,ऊसर जिनिस्त्री माँझे
ओटत बितल कपास दिनों भरि परल उचाटी साँझे
पछिमाही में सूरज के मुँह ओनत स्खोल भइल !

चढ़त रहल अभिलाख बांस भर , बेपतई, बिन सोरी
झरकल देह अलम के सूखे, नयन फुलाइल तोरी
कवन लुकारी निसबदता में सब कुछ झोल स्खइल !

(छह)

कुररे काग भदेस

अब के सगुन कहीं मोरी सखिया
कुररे काग भदेस !

ना अँगनइया गाछि चनन की ,सास-ननद परबीना
कबके मरल आँखि के पानी, लोक-लाज कतहीं ना
ईरिखे गोतिन जरि न बुताली , उलटा सब परिवेस !

बनटेसू के छाँहि कंटीली असबस जिया बुझाला
भुतहा पीपर छाँहि चुरावे, बरगद उमटा जाला
बिरिछ-बिरिछ पर बदुरी झूले, उलटपंथ दरवेस!

बिसर रहल गनगौर महादेश मनता कवन पुजावे
सबहीं ढेल-ढुकुर महँकारे परले पीठ खुजावे
नदियन के अमरित पानी में, माहुर केरि अनेस!

खर-खरिहानी दंड मुसरिया परल बढ़ावन ताने
बिसुनचुटकिया केहु न बूझे पवनी-जन के जाने
भूखे पेटे आल्हा गावे , रगरे मोंछ सरेस !

गब्बर - गुसइंयाँ बात न समझल होत परात पराइल
जीयन मरन रहन रहवासू अबले खबर न आइल
कइली जोग जोगिनी कवनो, किया बनवली भेस !

(सात)

ए हरि !

ए हरि कवन लाभ पग परले !

आँखि अछइते रूप न सूझल , जगत बोध ना निपजल
कवन साँच ई कहाँ बुझाइल , भाफ , तुहिन, अँगरत जल
मति के सब मगरूरी झरलसि आँतरजोत न बरले!

एक नदी अबिरल जलधारा, माँकत चलीं कछारे
ना लँघान , ना नाइ , न माँझी के बिधि जाइबि पारे
अनगिन चान नयन में पवँरल , अमृत बून न झरले!

राखे बदे बजूद आपनो, मरि-मरि जोग जुगाईं
आन जोग हम कइसे साधीं , सोचि -सोचि अझुराईं
ना हम आइब, ना हम जाइब, का फिर पचइ-पचइ मरले!
ए हरि , कवन लाभ पग परले !

❑ दिनेश पाण्डेय, सरकारी आवास 100/400 राजवंशीनगर,
रोड़ नं०2 पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

गजल

अशोक कुमार तिवारी

दुआबा के गंगा, बिना बान्ह तट के।
सुनाइब गजल हम, अलग सबसे हटके।

शबद के समेटल कठिन हो रहल बा,
लउक-सेम जस डारि ठट्टर से लटके।

कहे के जे बा से कहे जे न पाईं,
त लागे हथउड़ी केहू सर पे पटके।

भले शब्द ओहर-इहर जाउ तनिका,
मगर भाव जगहे रहे, नाही भटके।

दरद जे सर्की न कहे आम जन के,
त पाइब भला का अपनकन से हटके?

❑ सूर्यभानपुर, बलिया

साहित्य अकादेमी,नई दिल्ली के साहित्योत्सव (11-16 मार्च , 2023)
'भाषा - सम्मान' समारोह

साहित्य अकादेमी, द्वारा यह सम्मान देश के दक्षिणी, उत्तरी, पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्र के कालजयी एवं मध्यकालीन भारतीय साहित्य एवं गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं के विद्वानों को दिया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान देश के आठ साहित्यकारध्विद्वानों को प्रदान किया गया!

अकादेमी उपाध्यक्ष- कुमुद शर्मा जी द्वारा पुष्प गुच्छ एवं अध्यक्ष- श्री माधव कौशिक द्वारा अंगवस्त्र और सम्मान-ताम्रफलक प्राप्त करते हुए अशोक त्रिवेदी

सम्मान मिलने के बाद 'पाती' सम्पादक अशोक त्रिवेदी के साथ अकादेमी की उपाध्यक्ष-कुमुद शर्मा एवं अध्यक्ष-श्री माधव कौशिक और पूर्व अकादेमी अध्यक्ष आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं प्रो0 चितरंजन मिश्र !

बेटी डा0 सान्त्वना एवं अन्य गणमान्य विद्वज्जनों के साथ संपादक "पाती"

''भाषा-सम्मान से सम्मानित विद्वानों के साथ अकादेमी के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष

Courtesy of Amar Ujala, Hindustan, Jansndesh, Aaj, Dainik S Jagran,Dainik manyavar Anantwarta etc 🙏

रचनाकार डॉ0 अशोक द्विवेद्वी
'भाषा सम्मान' से सम्मानित

बलिया/दिल्ली। हिन्दी और भोजपुरी के दिग्गजों में शुमार कवि, लेखक, समीक्षक एवं सन् भोजपुरी प्रेमियों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। इसी क्रम में, विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया ईकाई उसीस सौ उन्यासी से भोजपुरी की चर्चित पत्रिका 'पाती' का संपादक करने वाले, लगभग डेढ़ दर्जन कृतियों के रचनाकार डॉ अशोक द्विवेद्वी को कल दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में वर्ष 2021-22 के लिए पूर्व में घोषित 'भाषा सम्मान' प्रदान किया गया। कोविड-19 के चलते विलम्ब से आयोजित उक्त कार्यक्रम में कुछ अन्य भाषाओं के नामवर साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि गौसपुर, जिला गाजीपुर के मूल निवासी किन्तु बलिया को अपनी कर्मभूमि मानने वाले सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी श्री द्विवेदी को, साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदान के लिए पूर्व में भी राहुल सांकृत्यायन, लोकपुरुष, लोक कवि सम्मान, सेतु सम्मान आदि जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों–सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। जनपद के साहित्यकारों एवं भोजपुरी प्रेमियों में प्रसन्नता है। पण्डित विजय मिश्र, डॉ शत्रुघ्न पाण्डेय, हीरालाल हीरा, शशि प्रेमदेव, शिवजी पाण्डेय रसराज, डॉ. नवचंद तिवारी, अशोक तिवारी, फतेहचंद बेचैन आदि ने बधाईयां दी है।

साहित्यकार अशोक द्विवेदी से पुरस्कृत,साहित्य जग

बलिया(मान्यवरब्यूरो)। हिन्दी और भोजपुरी के दिग्गजों में शुमार लेखक,समीक्षक एवं वासी से भोजपुरी की ती' का संपादन करने

भाषा सम्मानसे सम्मानित हुए डाक्टर अशोक द्विवेदी

बलिया। हिन्दी और भोजपुरी के दिग्गजों में शुमार कवि, लेखक, समीक्षक एवं सन् 1979 से भोजपुरी की चर्चित पत्रिका 'पाती' का संपादक करने वाले, लगभग डेढ़ दर्जन कृतियों के रचनाकार डॉ अशोक द्विवेद्वी को दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में वर्ष 2021–22 के लिए पूर्व में घोषित 'भाषा सम्मान' प्रदान किया गया। कोविड–19 के चलते विलम्ब से आयोजित उक्त कार्यक्रम में कुछ अन्य भाषाओं के नामवर साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि गौसपुर, जिला गाजीपुर के मूल निवासी किन्तु बलिया को अपनी कर्मभूमि मानने वाले सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी श्री द्विवेद्वी को, साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदान के लिए पूर्व में भी राहुल सांकृत्यायन, लो. कपुरुष, लोक कवि सम्मान, सेतु सम्मान आदि जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों–सम्मानों से अलंकृ किया जा चुका है। जनपद के साहित्यकारों एवं भोजपुरी प्रेमियं में प्रसन्नता है। पण्डित विजय मिश्र, डॉ शत्रुघ्न पाण्डेय, हीरालाल हीरा, शशि प्रेमदेव, शिवजी पाण्डेय रसराज, डॉ. नवचंद तिवारी, अशोक तिवारी, फतेहचंद बेचैन आदि ने बधाईयां दी है।

भाषा सम्मानसे सम्मानित हुए डॉ.अशोक द्विवेद

भाषा सम्मानसे सम्मानित हुए डाक्टर अशोक द्विवेदी

डॉ अशोक द्विवेदी को भाषा सम्मान

majjagran.in पेज १२ मूल्य 05 रुपया

"भाषा सम्मान" से सम्मानित हुए भोजपुरी पत्रिका पाती के संपादक डा. अशोक द्विवेदी

पुस्तक - विमोचन समारोह

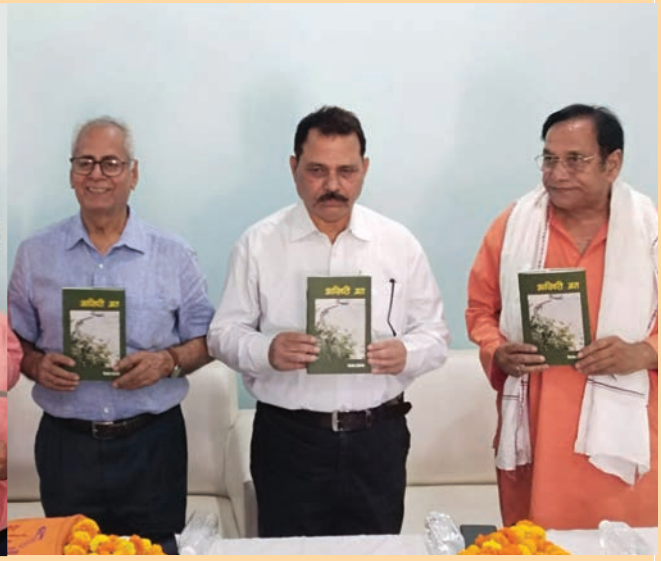

बनारस में श्री विनोद द्विवेदी के लघुकथा संग्रह ''आखिरी व्रत'' के विमोचन में सर्वश्री डा0 प्रकाश उदय, डा0 अशोक द्विवेदी, लेखक, श्री ओम धीरज, प्रो0 अवधेश प्रधान, प्रो0 वशिष्ठ अनूप आ श्री हिमांशु उपाध्याय

साहित्यकार विनोद द्विवेदी का लघु कथा आखरी व्रत का हुआ विमोचन

वाराणसी ।रचना रचनाकार को भी रचती है। विनोद द्विवेदी की लघुकथाओं को पढ़ने पर यह सिद्ध होता है।" यहाँ जानकी नगर स्थित लान के हाल में विनोद द्विवेदी कह के लघुकथा - संकलन आखिरी व्रत का विमोचन करते हुए प्रोठ अवधेश प्रधान, प्रो० वशिष्ठ अनूप ओम धीरज,प्रकाश उदय, प्रो0 कैलाश तिवारी और हिमांशु उपाध्याय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संग्रह की कहानियाँ अपनी लघुता मैं भी क्षित्र, उत्प्रेरक और जलस्पर्शी हैं। प्रदेश प्रधान ने कहा कि आज के समाज में विसंगतियों और विद्रूपताओं को उकेरते हुए लेखक ने मनुष्य की संवेदनशीलता कडे जाग्रत करने के लिए ऐसी नाटकीय लघुकथाएँ लिखी हैं। यह संग्रह पहनीय और संग्रहणीयहै। द्वितीय सत्र में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें भो अब्बल श्रीवास्तव गिरिथचन्द्र फ७० डॉ शम्भूनाथ शतरथी, भी गौरी शंकर तिवारी,भोला नाथ विक डॉ सुनील नारायण उपाध्याय, पूर्ण हिमांस उपाध्याय विजय शंकर पाण्डेय,डॉ अशोक द्विवेदी, भी महेन्द्र अलंकार ए, डॉ प्रकाश उदय के काव्य पाठ किया। कवि सम्मेलन कवि सम्मेलन का संचालन डॉ वेद प्रकाश मान्डेम से किया।

बनारस में श्री विजय शंकर पाण्डेय की कविगोष्ठी

वरिष्ठ कवि ओम धीरज की अध्यक्षता मे श्री अशोक कुमार सिंह, डा0 वशिष्ठ अनूप ,
गौरीशंकर तिवारी, डा0 अशोक द्विवेदी, हिमांशु उपाध्याय, भोलानाथ त्रिपाठी 'विह्वल', मधुकर मिश्र ,
विजय शंकर पाण्डेय, डा0 वेदप्रकाश पाण्डेय आदि

पुस्तक विमोचन

तुलसी भवन, जमशेदपुर (झारखण्ड) में डा0 कमलेश राय की रामदरश मिश्र पर केंद्रित पत्रिका "शब्दिता का विमोचन

डा0 कमलेश राय के दोहा-संग्रह रखिए शब्द सहेज कर' के विमोचन

जाने कब बरिसे

बदरी-बदरी बा नयनवाँ
जाने कब बरिसे

ओरियावऽ हो अँगनवा जाने कब बरिसे
ढाँपि दीहऽ लय धुन
ढाँपि दीहऽ गीतिया
ढाँपि दीहऽ पसरल
पथार के पिरितिया
ढाँपऽ अच्छर-गियनवाँ
ओठे कहनी-कथनवाँ
हाथे दूनो दरपनवाँ जाने कब बरिसे

जिन मेहराये साँस
तोहरो उछहिया
ओरा-बोरा ओढ़ि लीहऽ
जिनगी के रहिया
झार दीहऽ कुण्ठा कनवाँ
कइले मनगर मनवाँ
रखिहऽ अपनो धियनवाँ जाने कब बरिसे

ढहे जिन फूल-पात
सुघर सपनवाँ
फेरि दीहऽ हँसी-खुसी
अपनो भवनवाँ
बइठऽ एक खन कोनवाँ
ध लऽ सोचे के समनवाँ
दू गो लकड़ी-लवनवाँ
जाने कब बरिसे

लकदक पालक बैंक

(सन्दर्भ- बैंक राष्ट्रीकरण)

आनन्द सन्धिदूत

एगो रहली रानी
ऊ आम अइसे खात रहली कि-
भितरे भितर रस लेसु
न बोकला हटे न अँठिली छटके!
पूर सोख के रानी मारल करसु
फुलवना फुलावे वाली एगो फूँक
आ आम फेरू हो जाय जस के तस तइयार
नजर के धोखा देबे खातिर
बजार के ठगे खातिर।

एक बेर के बात ह
ऊहे रानी पवली
धन से मस्त लकदक पाकल एगो बैंक
शहद का छाता नियर टप-टप टपकत
कोसन दूर से मँहकत
खिड़की-जंगला छेद-छेद के गमकत
रानी का मुँह में भर आइल पानी
सोचली लपक के लोढ़ लिहला में कवन बा हानी!
बाकिर, ना मिलत रहे तनिको अकेल
चारु ओर रहे नजर के लागलि नकेल
बगले में बइठल रहे फेंड़ के मालिक
ओकरा पीछे ठाढ़ रहे
खेतिहर-किसान जवन फेंड़ के पानी देले रहे
ओहू का पीछे ठाढ़ रहे अमहा के लइका

जवन टिकोरा से ले के पकला तक अगोरले रहे
होहकार के चिरई उड़वले रहे
घाम सहले रहे, बरखा अड़ले रहे, माघ के ठार थमले रहे!
एतने ना! जरूरत पड़ला पर बाँझी कटले रहे
रोग दूर कइले रहे
लइका नियर जिअवले रहे!

अउरो आदमी देखत रहे जेने तेने
हाथ में खरहर, कपार पर खाँचा धइले बारीबटोर
जवन जंगल के उपवन कइले रहे
झार-बहार के चीकन रखले रहे
दाँत पर दाँत चढ़ाइ के जरूरत दबाइ गइल रहे
बाकिर एकहूँ टिकोरा तोरले ना रहे
सोचले रहे कि ऊ एक दिन पाकी
त गाँव का संगे हमरो अंगना में ओकर सुगन्ध बेयापी!

रानी सबके त समझा रहली
मालिको को, किसानो के, अमहो के आ बारीबटोरो के
बाकिर बड़ा कठिन रहे समुझावल
गाँव का सतजुगिया साधु के
जवन जब-जब रानी बढ़ावसु आपन हाथ
बोल पड़े- ना बच्चा ना!
आन के बगइचा त आन के फर
होला हमेसा हराम!

रानी का राह के सबसे बड़ रोड़ा रहले ऊहे साधू
आ सबसे पहिले हटवली रानी इहे नैतिक प्रतिबन्ध
कहली रानी कि भइया हो
न आन के फर न आन के बगइचा
न हम हईं सरकार न रउरा हईं जनता
हमनी का हईं जा राष्ट्र!

त फरवो राष्ट्रे के आ जिभियो राष्ट्रे के
सवदवो राष्ट्रे के आ बगइचवो राष्ट्रे के
एतना सुनते रानी का हाथ में आइ के गिरल
भद से धन से मस्त
लकदक पाएलक एगो बैंक, चौदह गो बैंक
बीस गो बैंक, हार के हार बैंक!
रानी मुस्किअइली
सेठ के कनखिवली
अमहा के गाल थपथपवली
किसान आ बारीबटोर का हालत पर
आपन आवाज भरभरा के अपनापन झलकवली
सबके गोल गोलिया के बइठवली
अपने बीच में बइठली
बैंक का स्टाफ-प्रबन्ध के लगली गुलगुलावे
घुलावे, गोंपी-चोपी बनावे
ऊपर क पनछा गिरवली किसान का चिरुआ में
बारीबटोर का कटोरा में
दिहली लालच अँठिली चाटे के अमहा के
फेंड़ का मालिक के झाँसा फेंड़ नया लगावे के
आ फेरू चूसे सुरू कइली
एगो बैंक, चउदह गो बैंक, बीस गो बैंक
हार के हार बैंक!

डूब गइली रानी बैंक का रस में
जइसे चीनी में डूब जाले चिउँटी
रोसनी में डूब जाला पतंगा।
मुअला का बादो
रानी के आत्मा मंड़रात बा बैंक पर
आ आज तक बैंक के बगइचा पड़ल बा हलकान में
रानी मुअला का बादो माँगऽतिया
धन से मस्त लकदम पाकल बैंक!

'पाती' अंक-15, दिसम्बर 1995 से

चम्पा परधान

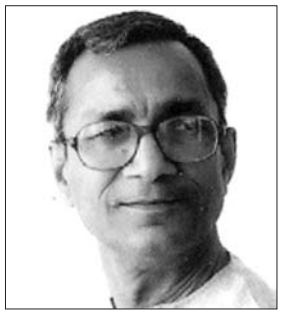

डा0 रामदेव शुक्ल

(हिन्दी भोजपुरी के चर्चित कथाकार साहित्य समीक्षक । शाहपुर, कुशीनगर, पडरौना (उ.प्र.) में जन्म। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य आ अध्यक्षपद से सेवानिवृत्त। गिद्धलोक, मनदर्पन, संकल्पा, अगला कदम, आगामी, कुर्सी पर जूता, विकल्प (हिन्दी) आ ग्रामदेवता (भोजपुरी) आदि उपन्यास प्रकाशित।)

'गजब हो गइल भाई ! अब का होई। का कइल जाव?' अपनही में बुदबुदात परधान जी कहलें । उनका अन्दाज नाहीं रहल कि केहू उनके बात सुनत बा।

'का गजब भइल हो ? कवन उलटनि हो गइल ? कवने फिकिर में परि गइल बाड़ऽ ?' पाछे तकलें परधान जी। उनके भाई पूछत रहलें। भाई के देखि के तनि चिहुंकलें बाकि तुरंते सम्हरि के कहलें– ई उल्टनिए न ह। आजु ले परधानी अपने घर में रहलि ह, अब सुनात बा कि आपन गाँव महिला कोटा में चलि गइल । अब एह गाँव के परधान मरद होइबे ना करिहें। कइसे का होई ?

भाई रहलें त जेठ बाकि परधान के लेहाज एइसन करें कि बुझा ऊहे जेठ हवें। कहलें– 'बहुत फिकिर के बात नइखे। चलऽ अब्बे बीडीओ साहब से पूछि लीहल जाव। ऊ कवनो उपाइ बतइबे करिहें । परधान जी भाई के बात मानि के तुरंते तइयार हो गइलें। जल्दी दू चारि कवर खा–पी के दूनू भाई बलाक कावर चलि दिहलें।

बिडिओ साहब भेंटा गइलें। देखते हँसि के पुछलें, का बात ह परधान जी। दूनू भाई कवने जात्रा पर निकड़ल बानीं जाँ? परधान जी कहलें– जाए दीं साहेब! आप लोग एक से एक झंझट लगावल करीलें । अब बताईं कि हमार गाँव महिला कोटा में चलि जाई त परधानी कइसे रहि जाई हमरी लग्गे ! कुछ करीं जेसे परधानी बचल रहे। कुछ ले–दे के कोटवा कवनो अउरी गाँव में बदलवा देईं।

बिडिओ कहलें– लिहले–दिहले से कोटा त ना बदल पाई, बाकिर आप फिकिर काहें करत बानीं ? परधानी घरही में रहि जाई। 'अरे कइसे रहि जाई ! का हम मरद से मेहरारू बनि जाईं ?' परधान जी झौंझिया के कहलें ।

बिडिओ मुस्कइलें। कहलें– आपके मेहरारू बने के, के कहत बा ? आरे घर में केहू मेहरारू नइखे ? उनहीं के खड़ा करा दीं। ऊहे परधान हो जइहें। परधानी आपे कइल जाई। उनका खाली जहाँ आप बतावल जाई ओइजा दसखत क देवे के रही।

परधान जी फिकिर में परि गइलें। कहलें– मेहरारू त बाड़ी बाकिर दसखत कइसे करिहें। उनके त करिया अच्छर भँइसि बरब्बर। "कौनो बात नइखे। दू चार दिन में दसखत करे भरि के सिखा दीहल जाई । आप जाके अजुए से उनके आपन नाव लिखे भरि के सिखा देई । अबहिन परचा भरले में टाइम बा। तबले उहाँ का दसखत कइले में पक्का हो जाइबि । परधानी आपे के घर में रहि जाई। कवनो नोकसान नाहीं होखी, न कौनो झंझट होई ।"

मिसिराइन के मनवले में परधान जी के बड़ी मेहनत करे के परल। कौनो लेखा दसखत करे के सीखि लिहली । परचा भरा गइल। ओहि दिन पता चलल कि मस्टराइनो खड़ा होत बाड़ी। हरिजन पट्टी के परबतियो परचा भरले बा। अउरियो केहू भरि सकेला। तब का होई ?

विडिओ साहेब कहले– भरे दीं। जे चाहे ओके परचा भरे दीं। चुनाव करावल त हमन के कार बा न! जइसे – जइसे कहल जा, आप करत जाईं। परधानी आपे के घर में रही। रुपया–पइसा त बहुत खरच भइल। अनाज पानी ढेर लागि गइल। दउरत–दउरत गोड़ खिया गइलि बाकिर बिडिओ साहेब के बात साँच भइल। परधानी मिसिर बाबा के घरहीं में रहि गइल । फरक एतने परल कि पहिले फुलेना मिसिर परधान के नाँव चलत रहे, अब चम्पा देवी परधान कहाए लगली। सब कुछ पहिलही जइसे होखे लागल। जब–जब जहाँ–जहाँ मिसिर जी कहें, तब–तब तहाँ–तहाँ मलिकाइनि आपन नाँव लिखि दें। जब कहीं जाए के होखे परधान जी परध ानपति बनि के चलि जां।

कवनो – कवनो कार एइसन होखे जौन जानल चाहें चम्पा देवी। एक बेर पूछि परली हरिजनपट्टी के मकान बनेवाली रहली सँ, का भइल ? मिसिर जी मुसुकी मारे लगलें। प्रधान पुछली–काहें बोलत नइखीं ? बताई न, का भइल? जेकरा घर–दुआर नइखे ओकरे खातिर पक्का घर बनवावे के रुपया आइल रहल। हमसे दसखतियो करावल गइल रहल। सुनात बा कि रुपेयवा निकड़ियो गइल। बाकी घर त केहू के ना बनल!

मिसिर जी सपनो में ना सोचले रहलें कि उनके गऊ एइसन मलिकाइन कबो एह लेखा जबान चलइहें । बड़ा रीसि बरल बाकी कौनो लेखा रीसि नेवारि के एतने कहलें– जाए द, तहरा एहकुलि बात से का लेबे– देवे के बा? चुपचाप देखत रहऽ आ आपन कार करत रहऽ ।

अपने मालिक के आँखि–में–आँखि डारि दिहली चम्पा परधान। कहली– हम त आपन कार करते बानीं। बाकी हमार कार अब ईहो हो गइल बा कि गाँव के नीक–बाउर देखीं। हम त कब्बो रउवां से जबान नाहीं खोलत रहनीं। सुनात बा कि हरिजन पट्टी वाला मकान के सब रुपया हम निकालि के खा लिहले बानीं । अब एइसन अकलंक लागि रहल बा, त आपसे पुछबो नाहीं करीं! जाके पता लगाईं कि गाँव–जवार में एह बात पर केतना थू–थू हो रहल बा हमार आ आपके !

मिसिर जी जामा से बाहर हो गइलें। बुझाइल कि आँखिए से परधान के भसम क दीहें। बाकिर लचार रहलें। बात साँच रहे। बिना खेतीबारी जरजमीन के हरिजनन के मकान बनावे खातिर पहिलका किस्त बाँटे खातिर जवन रुपया निकड़ल रहल ऊ सब खरच हो गइल रहल। बिडिओ साहेब बतवले रहलें कि अगला किस्त वाला जवन धन निकड़ी ओमें से कुछ बाँटि दिहल जाई । बाकिर मेहरारू के जाति! ई त बुझात बा कि बखेड़ा खड़ा करी। एह फिकिर में परि गइलें कि ई कइसे जनलसि ह ? जेतने सोचें ओतने रीसि बरत जा। जब नाहीं खेपाइल त उठि के बहरा चलि गइलें । एहर–ओहर मेलछत रहलें। तब्बो चैन नाहीं परल त बलाके के राहि धइलें। अब बिडियो साहेब से सब बाति बतावे के परी। ऊहे कौनो उपाइ बतइहें।

एहर चम्पा परधान मालिक के लच्छन देखि के बेकल हो गइली। गनीमत एतने रहल कि उनके खाना खिया दिहले रहली तब ई बतकही भइल ना त भुखइले घर छोड़ि दिहले रहते। मलिकार के त खिया दिहले रहली बाकि चम्पा परधान अपने नाहीं खइली। एगो लइका के भेजि के मस्टराइन के बोलववली मस्टराइन अइली त उनके आदर से बइठवली। ओइसे त परध ानी के चुनाव हारि गइले कि बाद से मस्टराइन बहुत रिसियाइल रहली एह घर से, बाकिर उनकर कुलि रीसि मिसिर पर रहल। ई बाति जइसे सभे जानत रहल ओइसे मस्टराइनियो जानत रहली कि चम्पा देवी के कवनो दोस नइखे। ऊ त मिसिर के हाथे के कठपुतरी हई । ऊ जइसे चाहेले, ओइसे नचावेले। अपने मिसराइन भलमनई हई। एही से चम्मा परधान के बोलउवा सुनि के मस्टराइन उनके घरे आ गइली ।

चम्पा परधान पुछली– ए मस्टराइन तू हूँ कुछ सुनलू ह हरिजन पट्टी के मकान के बारे में? हम त बड़ा खराब बात सुननीं हँ। एही से तहके बोलववनीं हँ। तनि हमके कुछ बतावऽ गाँव के रंगढंग।

मस्टराइन कहली– दीदी ! राउर सुभाव त गाँव भरि के लोग जानेला, बाकिर रउवा मालिक के केहू जो निम्मन कहित! आप कहीं त हम एइसन बहुत कुछ बता सकीलें जवने के आप सपनो में ना सोचले होखब! बाकिर जबान देईं कि हमार बात सुनि के आप मलिकार से नाहीं कहल जाई । उहाँ का जानि जाइबि कि सब बात हम आपके बतवनीं हूँ त गाँव में हमार जीयल काल हो जाई ।

चम्पा परधान कहली– देखऽ मस्टराइन, हमके

दीदी कहेलू त भरोसा राखऽ । दीदी तहार कवनो नोकसान नाहीं होखे दीहें। हमसे सब बात साफ–साफ बतावऽ ।

मस्टराइन बहुत दिन से खोजत रहली कि केहू एइसन मिलित जेसे परधनवा के कुलि कुकुरम कहती। आजु मौका मिलल देखि के उनके सुरसती अछोधार होके बरिसे लगली। कहली– दीदी! रउवाँ अभय दे तानीं त सुनीं। जब सुनल नीक ना लागी त हमके टोकि देबि। हम चुपा जाइबि।

चम्पा परधान कहली– तू कहा, हम सब कुछ सुनल चाहत बानीं। हमरो जीउ उप्पर–झाँपर सुनत–सुनत पाकि गइल बा । आजु तू कुलि उदिया–गुदिया हमके निथारि के बतावऽ ।

मस्टराइन गहिर साँस खिंचली आ कहली– लेई जब सुनले चाहत बानीं त सुनीं का का सुनबि ? परसाल जवन हई राउर नवका बँगला बनल तवन जननीं कौने पइसा से बनल?

चम्पा पुछली– कवने पइसा से बनल? हम कइसे जनतीं! अब बतावे ! ईहे कुलि जाने खातिर न बोलवनीं हँ तहके।

'गाँव भरि में कुलि रस्ता भरवावे के, पकिया ईंटा से खड़ंजा करावे के आ बरसात के पानी बहे खातिर जवन नारी बनवावे के पइसा आइल रहल ओसे राउर बँगला बनल । बिना एक्को छेव माटी भरवले सब सड़क भरल देखावल गइल। एक बोरा सिरमिट में सोरह बोरा बालू मिला के सेम ईंटा से नारी बनली कुलि । उवाँ एक बेर गाँव में निकड़ि के अपनी आँखि से देखि लेईं कि एक्के बरसात सब खड़ंजा धँसि गइल। जगहि–जगहि गड़हा बनि गइल आ कुल्ही नारी धँसि के बइठि गइल। जहँवा पानी नाहीं लागत रहे ओहू जा पानी लागे लागल। नारी आ खड़ंजा बनले से गाँव के रस्ता अउर नरक हो गइल। कहत–कहत मस्टराइन हाँफे लगली।

चम्पा परधान के थूक सरकि गइल। उठि के पानी ले अइली आ मस्टराइन के पिए के दिहली । जब मस्टराइन पानी पी भइली तब उनके हाथ पकड़ के कहली– 'कहऽ, आगे कहऽ, हमके सब बात बतावऽ । मस्टराइन बहुत उदास हो गइली। कहली– हम रउवाँ से केतना – केतना कहीं? केकर–केकर बीपत कहीं ? रउवाँ जानत बानी न कि आरती केतना सुखी रहली आ केतना विपत में परि गइल रहली। जबले उनके मरद रहलें तबले आरती केकरा के का नाहीं देत रहली। एक से एक धनी–मानी लोग के कुछ न कुछ देते रहें। गरीब गुरबन के हारी–बेमारी में आरती एक्के गोड़े ठाढ़ रहें। जे जवन माँगे तवन देबे खातिर आरती धधाइल रहें। जइसे भगवान उनके दिहले रहलें ओइसहीं ऊ दूनू हाथे बाँटत रहली बाकिर मरद के एइसन बेरामी धइलसि कि एकहक पइसा ओरा गइल। तब्बो परान नाहीं बाचल । उनके आँखि मुनते दूनू बेटा बहेंगवा होके बाँट–बखरा क लिहलें आ जूआ–सराब में रहल–बचल खेतबारी बिलवा के बिलल्ला हो गइलें । जवन आरती दूध के कुल्ला करत रहली ऊ दाना–दाना के मोहाल हो गइली। लोग कहल कि सरकार से विधवा पिंसिन मिलि जाई त जीए भरि के अलम हो जाई । हमहूँ पता लगवनीं आ आरती से कहनीं कि परधान जी से कहऽ । बहुत दिन ले आरती लाजे कटुआइल रहली। जब नाहीं खेपाइल त परधान जी से कहली । महिन्नन दउरवले के बाद परधान जी कहलें कि दफतर में पाँच सौ रुपया घूस लागी तब विधवा पिनसिन बनी। आरती के लग्गे एगो निसनू पछेला रहल। ओके बेचि के परधान जी के दिहली । ओकरी बाद लगली परधान जी के गोड़धरिया करे। साल भरि बीति गइल। परधान जी देस–दुनिया के बाति बतावत बतावत उनके जीउ नेकुआइन क दिहलें। थाकि के एक दिन दुआरी पर बइठि के रोवत रहली। ओहर से उपपरधान जात रहलें। आरती के अछोधार रोवल देखि के पुछलें कि का भइल ! काहे एह तरे जीउ देत बाड़ी ?

आरती आपन सब बात बतवली। परधान के पाँच सौ रुपया दिहले के बात बतवली । उपपरधान कहलें कि ऊ दफतर में जा के पता लगइहें आ पिनसिन जरूर निकड़वा दीहें। तीन चारि महिना ऊहो आरती के दउरवलें । एक दिन कहलें कि दफतर में तहार दरखास गइले नइखे। जवन रुपया तू दिहले रहलू ऊ परधान का जने के के दिहले बाड़ें। अबसे कवनो जोगाड़ क के पाँच सौ जुटावऽ आ हमके द त हम दफतर में देके तहार पिनसिन निकड़वा देइबि ।'

'तब ? तब का भइल ! निकड़ल आरती के पिनसिन ?' बेहाल होके चम्पा परधान पुछली। मस्टराइन के आँखि छलछला गइल। अँचरा से लोर पोंछत कहली– मिलल रहित विधवा पिनसिन त आरती सलफास खाके जान दिहले रहती ? कहि के मस्टराइन सुसुके लगली। चम्पा परधान की दूनू आँख से आँसु के धार बहि चलल। बहुत देरी ले दूनू जनी चुपचाप टिसुना बहावत बइठल रहली। मस्टराइन कहली– दीदी, अब चले द हमके। कहाँ ले सुनबू अपने मालिक के करतब! बाकिर हम एक्के बात कहबि। भगवान आप लोग के सब कुछ

दिहले बाड़ें। धन, धरम, घर–दुआर लोग–लइका। एतना सुन्नर राउर बेटा बाड़े कि जहाँ खड़ा हो जालें उहाँ उजियार हो जाला। बाकिर हम त मन ही मने डेरात रहीलें कि बाप के पाप बेटा पर परी त बेटा कइसे सही–सलामत रहि पइहें!

चम्पा के करेजा में धक्का लागल। उनका बुझाइल कि सहर में पढ़ेवाला उनके एकलौता बेटा पर बाप के पाप के पहाड़ टूटि के गिरि परल बा । चम्पा परधान का ईहो होस नाहीं रहि गइल कि मस्टराइन उठि के जात बाड़ी त उनके दू टुम बतिया के चौकठे ले बिदा क देती।

मस्टराइन चलि गइली तब्बो चम्पा ओही जगह बइठले रहि गइली। अपने बेटा के कुसल छेम खातिर देवी–देवता मनावे लगली। उनका बुझाइल कि आरती के छपटात परान परधान के बंस नास करे के फाँड़ बान्हि लिहले बाड़ें। जीव साँसत में परि गइल। बुझाइल कि बेटा कौनो आफति में परि गइल बा । एहर–ओहर तकली, केहू एइसन ना लउकल जे उनके बाबू के हालचाल बतावे । रोवाइन परान हो गइल। तब्बे मन परि गइल कि फोन से त तुरन्ते हाल चालि मिलि जाई । भागल दुआर पर गइली । जवने कोठरी में फोन रहल ओमें ताला लागल रहल। खुललो रहित त उनका फोन मिलावे कहाँ आवेला? का करें? तबले पिण्टू लउकि गइलें। बोला के पुछली 'ए बेटा, कहाँ जात बाड़ऽ ? पिन्टू कहलैं– काकी, बजारे जात बानीं । चम्पा कहली–बाबू तनी हमके पीसीओ तक ले ले चलऽ । बाबू के फोन करेके बा।' पिण्टू साथे ले के गाँव के बहरा पीसीओ पर गइलें। आजु चम्पा फोन के महातम बूझि गइली। सोहन पुछलें– कहीं काकी, कइसे आप आ गइनीं। हमहीं के बोलवा लिहले रहितीं। बताईं कवन सेवा करीं।' चम्पा कहली, तनी हमरे बाबू से बात करवा द। हमार जीव बहुत घबड़ात बा। सोहन पुछलें– बाबू के नम्बर ले आइल बानीं? चम्पा त बाबू के नम्बर जनते नाहीं रहली। कहली– ए बचवा, हम त जनते नइखीं उनके नम्बर का हऽ । सोहन कहलें– रहीं हम देखऽतानी। हमरी डयरी में लिखल होखी । जल्दी–जल्दी अपनी डायरी में से अंकुर के फोन नम्बर खोजि के मिला दिहलें। ओहरे से उनके अवाज सुनि के कहलें– अंकुर बाबू! हम गाँवे से सोहन बोलत बानीं। ल अपनी माई से बतिया ल।' चम्पा फोन मुहें लगे ले जाके बोललीं– बाबू? ओहर से बाबू कुछ बोलें ओकरे पहिलहीं पुक्का फारि के रो दिहली । बाबू ओहर से हलो–हलो करें आ महतारी रोवत जासु । सोहन उनकी हाथ से फोन ले के कहलें– तहार माई का जने काहें बहुत घबड़ाइल बाड़ी। तहार हालचाल ठीक बा न?' ओहर से जबाब आइल– हमार हालचाल ठीक बा, पहिले तू हमरी माई से बाति करावऽ । कुछ जानत बाड़ऽ काहें रोवति बा ? हमरे घर सब ठीक बा न?' सोहन कहलें–बाबू अबहिन त काकी से कौनो बातिए ना हो पावल। ल काकी चुपा गइली। उनसे बतियावऽ। चम्पा हाथे में फोन पकड़ि के करेजा दीढ़ कइली आ फोने में बोललीं– बबुवा तू नीके–सुखे बाड़े न? अंकुर घबड़ा के पुछलें हम त ठीके बानीं, पहिले तें ई बताउ कि रोवत काहें बाड़े। घरे सभे ठीक बा न? आ तें पीसीओ पर काहें अइले ह? बाबूजी कहाँ बाड़े? घर के फोन बिगड़ल बा का? चम्पा तबले अपना के सम्हारि लिहले रहली। कहली– सभे ठीक बा बच्चा । घर के फोनो ठीके बा। तहार बाबू जी कहीं गइल बाड़ें। कोठरिया में ताला लागल बा। हमरे जीव बहुत घबड़ात रहल हऽ । बुझाइल हऽ कि हमरी लइकवा के हो कुछु हो गइल बा। एही से अफना के एइजा चलि अइनीं हैं। तू ठीक बाड़े न? अंकुर बिगड़लें कहलें तें एह लेखा घबड़ा जइबे त कइसे काम चली माई? अब त तें गाँव के परधान हो गइल बाड़े।' "आरे बचवा ऊहे त हमरे जीव के काल हो गइल बा । तू आवऽ त हम आपन बिपत कहीं। एइजा त केहू हमार सुने वाला नइखे।" अंकुर कहलें– कौनो बात नइखे। जइसे जइसे बाबूजी कहें ओइसे करत चलु। हम दस बारे दिन बाद आइबि। जो घरे जो। हम साँझि के घरे फोन करबि ।

चम्पा पिण्टू के साथे घरे लवटली। बाबू से बतिया के उनके जीव में तीहा भइल। बाकिर साँझ होत होत गाँव भरि खबर फइलि गइल कि चम्पा परधान बहुत घबड़ाइल सोहन के पीसीओ पर गइली ह आ फोने पर रोवे लगली ह। एतने नाहीं, कहे वाला ईहो बतावे लगलें कि ओकरी पहिले मस्टराइन चम्पा परधान किहाँ गइल रहली आ दूनू जनी में बहुत लमहर बतकही भइल ।

चम्पा बाबू से बतिया के जीव हलुक क लिहले रहली बाकिर आरती के मरले के एकहक बाति उनकी हिरदे में नाचत रहे । बेर–बेर उनका ईहे कचोटे कि ऊ कौनो लेखा जानि पवले रहिती कि आरती के साथे एतना धोखा कइल जात बा, त ऊहे अपने लग से उनके मदत क दिहले रहती। बेचारी दाना–दाना के तरसि के मरलि । एतना सोचते चम्पा की करेजा में हूक उठलि। बुझाइल कि आरती के पाप में उनहू के हिस्सा बरबरे बा।

'ए काकी! बड़का बाबू जी पूछऽतानी कि आजु चाह नाहीं मिली का?' छोटकी के ई बात सुनि के चम्पा होस में अइली । कहली– 'ए बेटी। हमार जीव नीक नइखे। आजु तूहीं चाह बना के बड़का बाबूजी के दे आवऽ। अपनो के बना लीहऽ आ दुआर पर खेदन बाड़े, उनहू खातिर बना लीहऽ ।

छोटकी चाह बना बड़का बाबू जी के देवे गइलि त ऊ पुछलें– 'का रे छोटकी अंकुर की माई के जीव नीक नइखे का?' 'छोटकी बतवलसि– हँ बड़का बाबू जी! काकी के जीव ठीक नइखे। उनके मुँह सुक्खल बा। आँखियो लाल भइल बा। बुझाता कि बहुत रोवल बाड़ी। बड़का बाबूजी घबड़ा गइले । चाह फरके ध के छोटकी से कहलें– तनी जा के पूछि आव कि भइल का बा? कौनो दर–दवाई के जरूरत होखो त अब्बे जा के ले आईं।

छोटकी जाके काकी से कहलसि कि बड़का बाबू जी पुछऽतानीं कि कौनो दवाई ले आवे के होखे त उहाँ का ले आईं। चम्पा कहली– कहि द कौनो दवाई के जरूरत नइखे। जीव नइखे खराब। हमार मन खराब बा । ओकर दवाई कहाँ मिली! छोटकी अचकचाइल खड़ा रहि गइलि। ऊ कइसे बूझो कि मन आ जीव फरके– फरके होला? कुछु सोचि के ऊ बड़का बाबू जी की लग्गे जा के कहलसि– बड़का बाऊजी। काकी के मन बथत बा। छोटकी के बात सुनि के बड़का बाबू जी हँसि परलें। कहलें– ई कवन बेमारी ह रे? बड़का बाबूजी के हँसल सुनि के चम्पा सोचे लगली कि का जने छोटकी उहाँ से जाके का कहलसि ह! बोला के पुछली त छोटकी बता दिहलसि कि कहनीं हँ कि काकी के मन बथत बा। सुनि के चम्पो मुस्काए लगली। छन भरि में चेहरा से मुस्कान बिला गइल। कहली– ए छोटको, चाह पीलऽ आ आजु खैका तुहईं बना द। हमार मन नइखे करत।' छोटकी काकी के एतना माने ले कि उनके कौनो बाति कबो नाहीं टारेले। ओही समे से ऊ चौका चूल्हा सम्हारे लागलि ।

चम्पा परधान अपने मन के केतनो काबू में कइल चाहें ओपर कवनो जोर नाहीं चले। अपनी कोठरी में ओठंगि के लगली अकास–पताल के जरि–पुलुई मेरावे । अपने पति के एकहक बाति मन परे त करेजा में लवरि बरि जा। जहिया से इनकी घरे अइली तहिए से इनके मनबढ़ सुभाव के खोंच उनके मन पर लागल सुरू हो गइल। गौना भइल त पढ़त रहलें। महतारी लइकइए में गुजरि गइल रहली। बाप दूसर बियाह नाहीं कइलें । दूनू भाई के पोसलें । उनकर महतारी लइकन के आजी से अधिक माई बनि के पोसली। बड़का जने तनि जिउगर रहलें त ओही लेखा गम्हीर सुभाव रहल बाकिर छोटका जने रहले बरहो बाट। आजी के एक्को बात नाहीं मानें। कब्बो–कब्बो रिसिया त उनके नटई दाबे लागें। गौने अइले पर ऊ एक दम्मे बूढ़ खुइलन हो गइल रहली। चम्पा के देखि के उनके जियरा जुड़ा गइल। देखते कहली– ल ए बहुरिया, सम्हारऽ आपन राजपाट, आ अपने रामलछुमन के। कबो कबो हँसि हँसि के बतावें कि तहार दुलहा केतना केतना हमके परसान करें। माई की मुवला की बादि के इनकर कुल्हि खिस्सा बूढ़ा बतावें। बड़कू तनि सोझिया रहलें। पढ़ले नाहीं । खेती–बारी में खूब अखड़ि के डटल रहें। बियाहे के उमिर बीति गइल। बाद में जब कामकाज सम्हरल आ धन बढ़िआए लागल त कई जने बेटिहा अइलें। ऊ कहले अब एह उमिर में हम का बियाह करीं । छोटका भाई पढ़त–लिखत बा। अब ओही के बियाह कइल जाई । बंस त चलबे करी ।

सिनेमा की लेखा चम्पा की आँखि के सामने सब बात खुले लागल। जब गवने अइली त पढ़त रहलें उनके दुलहा । बाप–भाई जेतने माने लोग ओतने ऊ मनबढ़ होत गइलें। जब सहर से घरे आवें त जाए के नाव नाहीं लें। चम्पा लाज के मारे गड़ि–गड़ि जाँ कि लोग का कही। ईहे न कही कि मेहरी के मुँह देखि के पढ़लि–लिखल भुलवा दिहले बा । चम्पा बहुत–बहुत समुझावें । चिरौरी–मिनती करें तब पढ़े जाँ। दसे दिन में फेर लवटि आवें । सहर में रहले के जवन खरचा घर के मालिक लोग दें ओके आधे महिन्ना में उड़ा के चम्पा से रुपया माँगें। जबले नइहर से ले आइल रुपया पइसा रहल तबले देत रहली। जब ओरा गइल तऽ गहना–गुरिया बेचि के देबे लगली। जब कहें कि हम कहाँ से ले आईं रुपया–पइसा त मुँह फुला के बइठि जाँ। चम्पा ईहे सोचत रहली कि अच्छा चलेलऽ, पढ़ि–लिखि लीहें कवनो नोकरी–चकरी पा जइहें त गहना–गुरिया फेरु बनि जाई। पढ़ाई के कौनो ओर नाहीं लागत रहे। गौना भइल त बारे में रहलें। ओमे पास भइलें त बीए पढ़लें। ओकरे बाद एमे पढ़लें। ओहू पर नोकरी नाहीं भेंटाइल त मेहरी के दोस लगावें– तेंही एइसन कुलच्छन बाड़े कि नोकरी नइखे मिलत। सब कुछ सहत चलि अइली। आजी मरली ओकरे साल भरि बाद उनके बाप चलि गइलें। बड़कू जने कहलें कि घरे रहऽ दूनू भाई मिलि के खेती सम्हारल जाव। चम्पा काँपि गइली ओह साल के इनके कुलि बात मन परले पर। एक बरिस ले गाँव में खेती करत–करावत में एतना उतपाति कइलें कि जीयल मुहाल हो गइल। बातबात में झगरा झंझट । चम्पा धरती

एइसन धीरज धइले सबकुछ सहत गइली। ओह साल के बीतत बीतत दू गो काम एइसन भइल कि जियल नीक लागे लागल। एक त ई कि अंकुर जनम ले लिहलें । चम्पा के जनम सुफल हो गइल। ओकरे बाद इनके तकदीर एइसन खुलल कि परधानी के चुनाव आइल। इनके खड़ा करा के लोग जिता दीहल। सहर में नोकरी नाहीं पवले के कुलि कसर ई परधान होके निकाड़े लगलें । एक ओर धन बढ़े लागल दूसरे ओर इनके मान बढ़े लागल। चम्पा अपने अंकुर के पालत–पोसत जिनगी के सुख में बूड़े उतिराए लगली।

करवट बदलते जइसे करेजा में काँट करकि गइल। अब जब परधान हो गइल बाड़ी आ आजु एके दिन में मस्टराइन से बाति कइले पर इनके धन आ मान के कुछु कारन जानि पवली ह त पछिली बातिन के अरथ परत–परत उघरि रहल बा ।

'ए काकी, छोटका बाबू जी बोलावत बानें। अंकुर भइया के फोन आइल बा।' छोटकी के बात सुनि के चम्पा एह छन में लवटि अइलीं। कहली, 'जो कहि दे ऊहे बतियावें। हम नाहीं आइबि।' छोटकी बहरा जाके कहलसि– 'काकी कहऽताड़ी कि तुहईं बतिया ल ऊ नाहीं अइहें। सुनते जोर से चिल्ला के कहले– कह कि अंकुर उनही के बोलावत बा। कहत बाड़ें कि माई का जने काहें रोवति रहुए। ओही से बात करावऽ ।'

पति के चिघरल सुनि के चम्पा उठली । कोठरी से बाहर निकड़ि के बेटा के फोन सुने पहुँचली। बोललीं– 'का बाबू! का कहत बाड़ऽ ?' अंकुर कहलें– माई, अब तें ई बताउ कि काहें रोवति रहुए। जबले रोवले के कारन नाहीं बतइबे तबले हमरा चौन ना परी।' माई कनखिए से तकली, अंकुर के बाप कोठरी के बहरा खड़ा रहलें। बेटा से जवन बतियइती कुलि बाति सुन लेतें। फोन में कहली– 'बाबू तू फिकिर जनि करऽ । जब अइबऽ तब कुलि बात बताइबि। एह बेरा कुछ जनि पूछऽ । फोन ध दिहली आ छोटकी से कहली– 'जा बेटी, दूनू जने के परोसि के खिया द। तुहूँ खालऽ आ बहरा खेदनों के खिया दीहऽ ।' कहि के फेरू अपनी कोठरी में चलि गइली ।

तिसरे दिन हरिजनपट्टी के बिना घर दुआर वाली मेहरारू चम्पा परधान की लग्गे आ गइली सँ। पुछली कहऽ लोग का बात ह? फेकनी के माई कहलसि– दुलहिन आप परधान हो गइनीं। अब हमन के भाग फरिया जाई। सुनात बा कि हमन के घर बनवावे खातिर सरकार से मदद मिलत बा। बनवा दीहल जाव त हमनों के जाड़ापाला में लुकइले के अलम हो जाई।' चम्पा समुझि गइली कि मस्टराइन एह बाति के खोलले होइहें। एक लेखा उनका ठीके लागल कि अब उनके मन पर परल पहाड़ एइसन बोझा कम हो जाई। जब बात फइल जाई त चोरी से कुलि धन हजम क लिहले के कोसिस कम हो जाई । ए बेरा चम्पा की निगाह में अपने मरद से बड़हन चोर केहू नाहीं रहल।

हरिजन पट्टी के मकान बनववले के सपना अब चम्पा परधान की जिनगी के आपन सपना बने लागल । फिकिर एही बात के रहल कि उनका पढ़े–लिखे अइबे नाहीं करेला आ जेसे सबसे जियादा मदद के भरोसा रहल उनही से लड़ाई लड़े के बा। आगे सब कुछ अन्हारे लागत रहल कि अन्हरिया में बिजुली एइसन मस्टराइन के खेयाल आइल। आपन बोली मद्धिम क के फेकनी की माई से कहली– एह बेरा तहनपाँच घरे जा। मस्टराइन से कहि दीहऽ कि जब अंकुर के बाबूजी घरे न रहें त ऊ हमसे भेंट करिहें। तहनपाँच के घर त एह बेरी बनबे करी।' सुनि के ऊ लोग अपने अपने घरे गइली आ चम्पा मन में नया जोस महसूस करे लगली। धीरे–धीरे घर के काम–काज में उनके मन लागि गइल। उप्पर से सब काम–काज पहिले की लेखा करे लगली बाकिर चम्पा के मन में जवन किरौना घुसरि गइल रहल ऊ छने छन बढ़े लागल। उनका बुझाए लागल कि आजु ले चम्पा जवन चम्पा रहली ह उनके चोला भरि पुरनका रहि गइल बा। उनके भित्तर के सबकुछ बदलि गइल बा ।

दुपहर में खाय के ओठँगली तले मस्टराइन आ गइली। उनके देखि के चम्पा हुलसि के बोलवली । अपने पलंग पर बइठवली आ कहली– 'मस्टराइन! हम बहुत कुछ ऊँच–नीच सोचत रहनी हँ। जबसे तहसे बात भइल हमार मने बदलि गइल बा। एक बेर त ई सोचत बानीं कि परधानी के चरखा उठा के फेकि देईं बाकिर फेरु सोचत बानीं कि ओही चोरन के हाथ में फेरु सब कुछ चलि जाई। गाँव के बेसहारा हरिजन विधवा ओही लेखा बिना घर–दुआर के बिना खइले–पियले मूवत रहिहें सँ। सबसे गाहिर घाव हमरे मन पर ई लागल बा कि हमार एक्के बेटा बा, ओकर भलाई नाहीं होखी जो पाप के धन के एक्को दाना हमरे घर में आई।'

मस्टराइन कहली– दीदी आप एतना जीउ छोट जनि करीं। महतारी बाप के पाप बेटा–बेटी के खाला बाकिर रउवा एइसन धर्मात्मा महतारी के बेटा हउवें अंकुर बाबू, उनके रोंवा ले टेढ़ नाहीं होखी ।

'लेकिन हम करीं का, ई त बतावऽ हम बेपढ़ल

लिखल आदिमी। कवनो तरे एह बेरी नाव लिखे के सिखनी हँ। पंचाइत के कौनो कैदा–कानून जनते नइखीं। जे कुलि बात समुझा के राहि देखावे वाला मालिक बा ओकरी मरजी से चलले में पापे पाप बा, त तुहईं बतावऽ हम का करीं ।' चम्पा रोआइन परान क के कहली। मस्टराइन कहली– नीपढ़ भइले से जीउ काहें थोर करत बानी। आप कहत बानी न कि भित्तर से मन बदलि गइल बा । एकर कैदा ई होई कि अन्याय अत्याचार से जुझले के ताकत बढ़त जाई। पढ़े–लिखे हम सिखाइबि । दू महित्रा में हम अइसन बना देबि कि हिन्दी के किताब पढ़े लागीं। ओकरे बाद जेतने पढ़बि ओतने उघार होत जाई आगे के दुनिया। रहि गइल पंचाइत के कैदा–कानून जनले के बाति, त ऊहो धीरे धीरे सब समुझत जाइबि। असल बात बा ईमान के। आप अपने ईमान पर कायम रहल जाई त सब कुछ ठीक हो जाई ।

'अब तहरे भरोसा बा।' कहि के चम्पा मस्टराइन के आँख में तकली। मस्टराइन कहली– 'दीदी आप हमरे जिनगी के हालि त जनते बानीं। हमार माई–बाप गरीब नाहीं रहलें। चहतें त लाख दू लाख दे के हमार निम्मन बियाह क दिहले रहतें। बाकिर हमरे पियक्कड़ भाई खातिर धन जुटवले कि फेर में हमार बियाह एगो एइसन जलुवा से क दिहल लोग जवन न मरदे रहल, न मेहररुए रहल। मरद के कपड़ा पहिरि के मरद एइसन लउकत रहल। बेटा के मोह में आन्हर हमार बाप जब नाहीं तब गुनगुनात रहें–

बिन मारे मुदई मरे, ठाढ़े ऊँखि बिकाय ।
बिना ब्याहे बेटी मरे, तीनो टरे बलाय ।।

लइका रहनीं तबे से ई सुनत रहनीं । ओह समे एकर अरथ नाहीं बुझात रहल। जब हम नाहीं मुवनीं त पइसा बचावे खातिर हमार कसाई बाप ओइसन बियाह क दिहलसि । हम ओकर बलाइ रहनी । हमसे छुटकारा पावे खातिर हमार आल्हर जिनगी नरक क दिहलसि ।

कहत–कहत मस्टराइन भोंकार पारि के रोवे लगली। थोरके देर में 'बहरा तोता का कही' एकर खेयाल भइल त मुँह बन्द क लिहली बाकि आँसु के गगरी ढरकल बन्द नाहीं होखे। सगरी देहिं से रोवत सिसुकत मस्टराइन के अँकवारी में लेके चम्पा देरी ले सुहरावत रहली । कवनो तरे मस्टराइन के रोवाई बन भइल, आँसु के गगरी ढरकल बन भइल त चम्पा अपनहीं उठि के पानी ले अइली। कहली– ल पानी पीयऽ । उठि के मुँह धोवऽ। आ पहिला जिनगी के नरक मन पारि के रोवले से का फैदा! चलऽ आगे देखल जाव।

मस्टराइन पानी पियली। उबिछ के मुँह धोवली। अँचरा से हाथ मुँह पोछि के जब पलंग पर अइली त चम्पा का बुझाइल कि मस्टराइन के मुँह बहुते सुन्नर हो गइल बा। जइसे करिया बदली में से बहरिया के चनरमा मुस्काला ओही लेखा मुस्का के मस्टराइन कहली, जाए दीं दीदी! जब मन परेला त करेज्जा में लुक्क बरि जाला। बाकिर हमार सत्त हमरा साथे रहल आ भगवान के भरोसा रहल। ओही समे माई–बाप के मरजी के नकारि के अपनी पढ़ाई पर हमरा भरोसा बढ़ि गइल । हाईस्कूल त हम पास रहबे कइनीं, इंटर के फारम भरनीं। जिनगी में अन्हरिया जेतने बढ़त गइल हमार पढ़ाई के जिद ओतने हमके रोसनी से भरत गइल। आपन मरद कहाए वाला जलुवा से सफ्फा कहि दिहनीं कि गलतियो से हमार नाव कबो लेलऽ त नटई दाबि देबि । ऊ एह लाएक रहबे नाहीं कइल कि मरदवाली जरूरत ओकरा होखे। हम जिद क लिहनीं कि जवन माई–बाप हमके एह नरक में बोरि दिहले बा, ओह लोग के दुआर पर कब्बो झाँकहू ना जाइबि। आ नहिए गइनीं। ससुरारी में रहत, ओइजा के कारधार करत इंटर पास कइनीं। एक बात जरूर कहबि कि हमार सासु कुछ कुछ हमार दुख बूझे लगली। हमरी पढ़ाई–लिखाई में मदद त का करती, बाकिर आवे जाए में रोक नाहीं लगावें आ पइसो–रुपया के मदद करें। ससुर पइसा के गोबरउरा रहलें। हमरे बाप की लेखा उनहू के पइसवे सबसे बड़हन धन बुझा। हमरा त ईहो बुझाला कि अपने बेटउवा के ऊ डाकटरन से देखवले रहतें, कुछ दवाई बीरो करवले रहतें त हो सकेला ऊ जलुवा कुछु आदिमी बनल रहित। पइसा खातिर जे अपने बेटा के नाहीं भइल, ऊ पतोहि के का होई । बाकिर ओह विपत्ति में हमार सासु साथ दिहली। जब हम बीए पास हो गइनीं तब प्रिंसिपल हमार मदद कइलें। हमके बीटीसी के टरेनिंग करवा दिहलें, ओकरे बाद हम मस्टराइन हो गइनीं ।

कहत–कहत मस्टराइन के चेहरा दमके लागल। चम्पा का बुझाइल कि जइसे एह मेहरारू पर छछात दुर्गा माई के किरपा हो गइल होखे। एकरे पहिले चम्पा मस्टराइन के ओही नजर से देखत रहली जवने नजर से उनके गाँव के अवरू कुलि देखें सों आ बतकुचनी मेहरारू कुलि देखें सों। ओकनी लग्गे मस्टराइन के चरित्तर बखाने के पोथी–पतरा हरदम खुलले रहे। चम्पो ओही लेखा उनके जाने । जब ऊ परधानी के चुनाव

खाड़ हो गइली तब उनकी खिलाफ बोले वालन के बहुत मसाला मिले लागल। एक बेर अंकुर के बाबूजी कहलें, 'अंकुर के माई, तहरा कौनो फिकिर नाहीं करे के बा। मस्टरइनिया एइसन छिनार मेहरारू तहके चुनाव में कब्बो नाहीं हरा पाई।'

ओहि दिन चम्पा का बुझाइल कि गाँव भरि के अवर्रा आ छिनरा कुलि मस्टराइन की खिलाफ एसे बोलेलें कि ओह लोग के लासा ओकर देहि छुइयो नाहीं पावेला । चम्पा कहली 'बइठऽ' अब्बे आवत बानीं । मस्टराइन बुझली कि पिछुवारे से लवटल चाहत बाड़ी। थोरके देर में चम्पा दू गिलास चाह ले के आ गइली । एगो मस्टराइन के हाथे में थम्हवली । कहली– चाह पी लऽ । हम तहार बात अगहूँ सुनल चाहत बानी ।

मस्टराइन हँसली। चाह थामत कहली– 'दीदी। आपके हमरी कहानी में रस मिलत बा त हम जरूर जरी से लेके पुलुई ले सब बाति बताइबि । रउवाँ से हिरदे खोलि के कहत बानीं कि जब हम परधानी के चुनाव हारि गइनीं त हमरा बुझाइल कि हमार सबसे बड़का दुसमन रउरहीं बानीं। बाकिर अब राउर सुभाव जब नियरे से देखत बानीं तब कहे के मन करत बा कि रउरे एइसन उज्जर मन के केहू मेहरारू एह गाँव–जवार में नइखे। अब गाँव के गरीब–गुरबा के हक के लड़ाई हम आप मिलि लड़ल जाई ।' कहि के मस्टराइन फेरु एक बेरी जोन्ही एइसन भुकभुकात हँसी हँसे लगली त चम्पा के जीव हरियरा गइल। कहली– हमहूँ के पढ़ावऽ तब न हम तहार साथ देवे लायक हो पाइबि।' मस्टराइन कहली– का दीदी, आपो अनेति कर रहल बानीं । हम चारि अच्छर जियादा पढ़ले से आप से अधिका हो गइल बानी का? बाकिर आप पढ़े के फाँड़ बान्हि लेहीं त हम बिहाने से पढ़ाई सुरू करा देबि ।

अंकुर के बाबू जी जानि–बूझि के मेहरारू से अझुराइल छोड़ि दिहलें। मन में पलान बनावे लगलें कि जब इनके रीसि बुता जाई तब इनके कौनो तीर्थ घुमाइबि आ इनके मन बदलि देबि । आखिर हई त हमार मेहरिये न। जइहें कहाँ ? केतनो चिड़ि उड़ी अकास, दाना बा धरती के पास। कहियो के सुनल कबितई सुमिरि के मुस्काए लगलें। बिडियो से कहि दिहलें– अबहिन घोड़ी भड़कलि बा। कुछ दिन घुमा के सोझ क लेईं, तब आगे विकास के कार करावल जाई । बीडियो मानि गइलें । उनकी समने सगरे बलाक के चरउरी रहल। एह गाँव के नम्बर बादे में सही। एह लेखा बात बेहवार करे लगलें कि जइसे उनका अब परधानी से आ गाँव के कवनो बात से कुछऊ लेबे–देबे के होखबे न करे। केहू कौनो बात कहे त कहि दें जा मरदे पाछे देखल जाई । अबहिन हम दुसरे कार में अझुराइल बानीं। लोग लवटि जाइल करे।

अंकुर अइलें त घर में उजास हो गइल। चम्पा उनके देखते धधा के कोरा में दाबि लिहली। लगली उनके हाथ–मुँह–पीठि सुहुरा–सुहुरा के देखे। चम्पा जब अंकुर के अँकवारी से अलगे क के देखली त खुसी कि मारे चिहा गइली। कहली– अरे हमार बबुनवा एतना बड़हन हो गइल! अब त कुछुए दिन में बापो से बड़ हो जाई ।

माई के हँसत देखि के अंकुर के मन के बोझा उतरि गइल। कहलें– का माई, अबहिन केतना दिन भइल तोरी लग्गे से गइले । एतने दिन में हम केतना बढ़ि गइल बानीं ! बाकिर एक बात बा। ओहि दिन फोने पर तोर रोवल सुनि के हमार जिउ झुरा गइल रहे। इंतहान नाहीं रहित त हम पढ़ाई–लिखाई छोड़ि के ओहि दिनवे तोरी लग्गे आ गइल रहतीं। आजु तोके खुस देखि के हमरा बड़ी खुसी होति बा ।

बेटा के बात सुनि के चम्पा की मुँहे पर पहिली इयादि के छाहीं उतरि आइल, बाकिर तुरन्ते ओके हटा के कहली– 'जब तहके राजी–खुसी देखि लिहनीं त हमार कुलि दुख–बलाइ भागि गइल।

अंकुर के नहइले–खइले ले चम्पा का अउर कौनो बाति नाहीं लउकल। जब खा–पी के किताब ले के अंकुर बँगला में जाए लगलें तब अचक्के जइसे चम्पा के जीउ सका गइल। डेग बढ़ा के बेटा के कुर्ता के छोर पकड़ि लिहली। अंकुर पाछे घूमि के तकलें। पुछले– का माई? कुछ कहत बाड़े? सवाल पुछले कि सथहीं अंकुर खेयाल कइलें कि थोरके देर पहिले माई के दमकत चेहरा अचक्के मुरझाइल काहें लागत बा ? घूमि के माई के दूनू हाथ अपने हाथ में लेके पुछलें– का माई? का कहत बाड़े? आ तोर मुँहवा झुराइल काहें लागत बा ? चम्पा हँसि परली। कहली नाहीं रे, कुछ नाहीं भइल बा। तहसे एकठो बात कहल चाहत बानीं । तू नवका– बँगला में जनि जा। एही घर में अराम करऽ । हमरी कोठरी में चलऽ भा दलानी में रहऽ । 'काहें माई ?' अंकुर भकुवाइल पूछे लगलें । चम्पा सोच में परि गइली। लइकवा से का बताईं कि काहें नवका बँगला में गइले से रोकत बानीं। अंकुर फेरु पुछलें– काहें माई! नौका बँगला में का भइल बा ?

'भइल कुछ नइखे। हमरा पता चलल ह कि गाँव के गरीब लोग के घर बनवावे वाला आ सड़कि बनवावे वाला पइसा से ऊ बँगला बनल बा। तू हमार एकलौता बंस बाड़ऽ। हमार मन गवाही नइखे देत कि हम तहके ओमें जाए देईं। तू सही–सलामत रहऽ। पढ़ि–लिखि लेबऽ कवनो नोकरी–चकरी पा जइबऽ । त कई गो बँगल बनवा लीहऽ ।

अंकुर माई के मोह के बुझलें। कहलें, तें कहत बाड़े त हम ओमें नाहीं जाइबि। बाकिर पहिली बात त ई कि एह बेबुनियाद बात के पता तोरा कइसे चलल कि गाँव के गरीबन की पइसा से बनल बा ? दुसरकी बात ई कि मानि ले एइसन भइलो होखे, त का हमरी जाते बँगलवा भहरा के गिरि जाई। सहर में जा के देखु जौने नेता किहाँ भूँजल भाँगि नाहीं रहे ऊ कुलि एमपी एमेले मंत्री होते करोड़न के कोठी बंगला बनववले बाड़ें सो। ओह कुलि के का बिगड़ि जात बा ? तें कहत बाड़े त हम आजु का, ओह बँगला में कब्बो नाहीं जाइबि

खेदन से कहि के अंकुर दलानी में खटिया बिछवा के ओही पर ओठंगि के हाथे में के किताब बाँचे लगलें ।

पढ़ते–पढ़त तनी एसा आँखि भरमलि तबले माई भित्तर से निकड़ि के बोलवलसि– बाबू... । चिहुंकि के अंकुर उठि गइलें। खड़ा होके पुछलें– का माई! का कहत बाड़े। आ हई तोरी हाथे में किताब कइसन ह? अंकुर किताब माई कि हाथे से लेके देखे लगले। माई के चेहरा फेरू खुशी से दमके लागल। कहली– हम एगो कहानी पढ़ल चाहत बानीं बाकिर एकहक अच्छर मिला के पढ़ले में देरी लागत बा । तू पढ़ि के सुना द।' अंकुर खुशी आ अचरज से भरि गइलें। चहकत पुछलें– माई, ते पढ़े कबसे लगले? का बाबू जी पढ़वले हँ ? कहिया सिखले ह, का का पढ़ले बाड़े? धधाइल बेटा सवाल पर सवाल करे लागल। चम्पा भित्तर जाके मचिया ले अइली। बेटा के खटिया पर बइठा के अपने मचिया पर बइठि के कुलि बाति बता ले गइली। कइसे उनके बाबू जी दसखत करे के सिखवलें, कइसे परचा भराइल, कइसे परधान भइले के बाद हरिजन पट्टी के गरीबन के घर बनवावे वाला धन के निकाड़े के बात भइल, कइसे बाबू जी से झगरा–टंटा भइल, कइसे मस्टराइन से भेंट भइल, कइसे उनसे पढ़े के सिखलीं । सब बात बता के कहली– जहिया तहरी बाप से हमार पहिली लड़ाई भइल ओहि दिने से हमार नया जनम भइल, ईहे बूझि लऽ । ओहि दिने हम पीसीओ पर जाके तहसे बतियावल चहनीं आ तहार बोली सुनि के रोवाई आवे लागल। ईहे बूझि जा कि तीन महिन्ना हो गइल ओही दिन से आजुले तहरी बाबू जी से हमरा भरि मुँह बात नाहीं भइल । अंकुर अपनी माई के बदलल रूप देखि के जेतने चिहइलें, ओतने खुस भइलें । हाथे के किताब प्रेमचंद के लिखल रहे। ओमे से बड़े घर की बेटी कहानी पढ़ि के माई के सुनावे लगलें। कहानी खतम होखही वाली रहलि कि अंकुर के बाबू जी आ गइलें। अंकुर उनके पाँव लगलें। ऊ असिरबाद दिहलें। चम्पा की ओर तिरछे ताकि के टिभोली मरलें– 'आजु काल बड़ा पढ़ाई होत बा हो ?' अंकुर चहकि के कहलें– 'बाबू जी, माई एतना जल्दी पढ़े–लिखे के सीखि गइलि । केतना अचरज के बात बा ? उनके बाबू जी अउरी टेढ़िया के जबाब दिहलें– कवन अचरज बा? आजकाल मस्टरइनिया के चेलिनि हो गइल बाड़ी। ऊ जवन–जवन न करावे! नया–नया परधान भइल बाड़ी आ मसटरइनिया भइलि बा इनके गुरुआइन। देखत चलऽ आगे का का होता?

अंकुर कहलें– 'बाबू जी, विद्या जेही सिखावे ऊहे गुरु होला। आ माई त कहति रहलि कि बाबुए जी सबसे पहिले दसखत करे के सिखवलें । अंकुर के बात पर एक बेर अउर टेढ़ जवाब दिहलें उनके बाबू जी, "ईहे न हमसे बड़हन गलती हो गइल बच्चा। हम त इनके परधान बनवनीं कि परधानी घरही में रहि जाव। एही से दसखत करे के सिखवनी। ई कहाँ जानि पवनी कि परधान हो के हमार बिलारि हमहीं से मेऊँ–मेऊँ करे लागी । ई कुलि परपंच ओही मस्टरइनिया के ह। बाकिर देखि लेबि हम ओहू के। अबहिन त चुपाइल बानीं ।"

कहि के गुरगुरात घर की भित्तर चलि गइलें। माई कहली– "जबसे हरिजन पट्टी के मकान बनावे वाला रुपया कि बारे में पुछनीं, तब से इनके ईहे हालि बा। मस्टराइन से एसे फिरंट बाड़े कि ऊहे हमके बतवली कि गाँव के विकास में लागे खातिर आइल धन के कवने लेखा बंदरबांट होत रहल ह । तू पूछत रहलऽ हमरे उदास भइले के कारन, तूहीं बतावऽ जवन घर गाँव में इज्जतदार मानल जाला ओही घर में एतना अनेति होखे त उदास काहें ना होखीं हम? अब तू सेयान हो गइल बाड़ऽ। पूछऽ अपने बाप से कि गरीब लोग के नून–रोटी आ कपारे पर के छाँह छोरि के ई का करिहें? भगवान कथि के कमी रखले बाड़े?"

अंकुर अबहिन एतना सेयान नाहीं भइल रहलें कि बाप के बात काटें भा उनकी समना खड़ा होके उनसे सफाई माँगें। बीए में पढ़त रहलें। सहर में रहले

से समझदार होत रहले। माई के धरम–ईमान उनका बहुत नीक लागत रहे, बाकिर माई–बाबूजी के बीच चलेवाली तनातनी के लेके झंझट में परि गइलें। कुछ नाहीं बुझाइल त किताब में से जवन कहानी पढ़त रहलें, ओही के आखिरी हिस्सा पढ़ि के माई के सुनावे लगलें । कहानी पढ़ि भइलें त देखलें, माई आँखि पोंछत रहली। कहलें– माई, तहरो हालि त कुछ कुछ ओही बड़े घर की बेटी से मिलत–जुलत बाऽ फरक एतने बा कि तहार लड़ाई अपनिए में बा।

माई का बोलें, बूझि नाहीं पवली त चुप रहि गइली। अंकुर किताब के उलटत–पलटल रहले। उनके निगाह ठहरल, 'पंचमरमेश्वर' कहानी पर, कहलें– माई आउ एगो कहानी हम अपने मन से तोके सुनावत बानीं। कहानी पढ़ि भइलें त चम्पा फफकि परली। चुप करवलें त चुपइली आ बेटा के हाथ पकड़ि के कहली– एह कहानी के अपने बाबू जी के पढ़वा द बेटा। उनके ई बता द कि पंच भइले के आ परधान भइले के का मतलब होला।' माई के बात सुनि के अंकुर का बुझाइल कि बाबू जी से कहानी पढ़े के कहल ठीक रही। पढ़ि लीहें त सचहूँ अनेति से बचि जइहें आ माई की साथे उनके झगरा झंझट ओरा जाई। किताब लिहले बाबू जी कि लग्गे पहुँचि गइलें। किताब देखि के पुछलें– ई का ह?' अंकुर कहलें– प्रेमचंद के किताब ह। हम चाहत बानी कि एहमें एगो कहानी बा 'पंचपरमेश्वर' एके आप पढ़ि लेतीं त बहुते नीक होइत ।' रीसिन मातल मिसिर जी किताब बेटा कि हाथे से ले के घुमा के फेकि दिहलें । कहलें– ई कुलि जा के अपनी माई के पढ़ावऽ । हम पढ़ले बानीं। हम जानत बानी कि जिनगी किताब पढ़ि के नाहीं चलावल जा सकेला, लिखवइया का जाने, जिनगी का ह ?'

अंकुर किताब उठवलें आ चोखा एइसन मुँह बनवले माई की लग्गे चलि गइले । ऊ भित्तर से देखते रहली कि बाप बेटा के बिच्चे का भइल। किताब लेके अँचरा से पोंछे लगली आ कहली– 'जाए द, हमरा आपन लड़ाई अपनहीं लड़े के परी । तू जा के आपन पढ़ाई–लिखाई करऽ ।' अंकुर बाप–माई कि लड़ाई से दुखी जेतना होखें, ओके फरियावे के उपाइ उनके बस में नाहीं रहल। उनका बुझाइल कि बड़का बाबू जी से बतियवले से कुछ रस्ता मिली। बड़का बाबूजी अंकुर बहुत मानें। बाकिर कब्बो दूनो जने में कौनो गम्हीर बातचीत नाहीं भइल रहल। जब अंकुर माई के कुलि बात बड़का बाबूजी से बता भइलें त उनके जीव हल्लुक हो गइल। ओहर बड़का बाबू जी चुप्प लगवलें त लगवलही रहि गइलें। अंकुर कई बेर टोकलें कि बड़का बाबू जी, कुछु कहीं, बाबू जी के समुझाईं। घर में रोज किचाइन ठीक नइखे।' बहुत देर बाद बड़का बाबू जबान खोललें । कहलें– 'बच्चा । ऊ हमार छोट भाई हवें, बाकिर जनते बाड़े कि हमहीं उनके जेठ एइसन मानी लें। ऊ दुनिया जहान के चाल–चलन जाने–बूझेलें । हम हर–कुदार आ बैल–भँइसि से आगे कुछु जनबे ना कइनीं। हम उनके का समुझाईं ? तू पढ़ल–लिखल बाड़ऽ, तुहईं समुझावऽ ।

अंकुर उदास हो गइलें। उनका बुझाइल कि घर के झगरा छोड़वले के कवनो उपाइ नइखे रहि गइल। उनके पढ़ाई–लिखाई एह मामला में कौनो काम के नइखे। माई से कहलें– 'तब हम बिहान चलि जाई ?' माई बेटा के मुँह ताके लगली। आँखि भरि आइल। चुप्पे उठि के भित्तर चलि गइली ।

दूसरे दिने अंकुर फेरु पुछलें– 'कहते माई त हम चलि जइतीं।' माई कहली–'चलि जइहऽ । दू चारि दिन अउरी रहि जा, तनि हमार घाव कुछ भरि जा, त चलि जइहऽ ।' अंकुर का कहें, कुछ समुझि नाहीं पवलें । माई के कहले पर रहि गइलें आ माई के पढ़ावे में जुटि गइलें। जब–जब फुरसत में माई के पावें उनसे कुछ न कुछ पढ़े के भा लिखे के कहें। बेटा बाति महतारी के बहुते नीक लागे। अउरी जोर लगा के चम्पा पढ़े आ लिखे लगली। अंकुर जाए लगलें त कहलें– माई, एहबेर हम तोरा खातिर बहुत निम्मन–निम्मन किताब ले आइबि ।

मस्टराइन अइली त चम्पा लिखत रहली । देखि के मस्टराइन चिहा गइली। कहली– दीदी, आप एतना सुन्नर अच्छर बनावे लगनीं । राउर लिखल देखि के केहू कहिए नाहीं सकेला कि नवकी पढ़वइया हईं।' चम्पा कहली– अंकुर जबले रहले दिन भरि लिखववते न रहलें! अब हमार दू गुरु हो गइलें, एक गुरु तूँ हऊ, एक गुरु हमार बेटा।' मस्टराइन कहली– अब हमके गुरु कहल जाई त हम आइल गइल छोड़ि देबि । हई लेईं पंचाइत के नवका किताब आपे खातिर ले आइल बानीं।' चम्पा कहली– ले आवऽ, पढ़ि लेइबि, बाकिर अपने से पढ़ि के केतना बूझबि । मस्टराइन मुस्का के कहली– जब सचहूँ के परधानी कइल चाहत बानीं, त पढ़हू के परी, समुझहू के परी आ ओही लेखा करहू के परी ।

कहि के मस्टराइन चम्पा के अंकवारी में भरि के दाबि लिहली। चम्पा का बुझाइल कि उनके देहिं दरकि गइल। कहली– का मस्टराइन, तू त एइसन जोर से दबा दिहलू जइसे जवानी की नसा में मातल मरद मेहरारू के पा गइल होखे।' मस्टराइन मुरझाइल मुस्कान

के बिच्चे से कहली– कहाँ दीदी, हमरी जिनगी में एइसन मरद कहाँ भेटाइल कबो ? पापी बाप जवने जलवा से बियहि दिहलसि ओकर हालि आपसे बतइबे कइनीं। मरद लोग त एक से एक ललचावत रहेलें, बाकि पढ़ले–लिखले से हम एतना त बुझिए गइल बानी कि एहतरे के लालच से कइसे बाचल जाव। जब केहू एहतरे के चाल करेला त हम माई से सुनल एगो कहाउति घोखे लागीलें– का तू बकुला लावऽ दीठि, केतने जाल रगरि गइल पीठि ।

चम्पा मस्टराइन के आँखि में तकली। मस्टराइन के आँखि मुस्काए लागल कहली– 'का दीदी! हमरे बात के बिसवास नइखे होत न?'

बिसवास काहे नइखे होत! बाकिर हम जानल चाहत बानीं कि का कवनों मरद तहके एइसन मिलबे नाहीं कइल जेके देखि के तहार जीव ललचा जा ? कहि के चम्पा मस्टराइन की आँख में आपन आँखि डारि दिहली ।

मस्टराइन लजा गइली । कहली– लरिकाईं में एइसन कई बेर भइल। जवने लइका तनि धेयान से देखि ले, ऊहे आपन लागे लागे। बियाह के उमरि भइल त का भइल बतवलही बानीं। ओह जलुवा के देखि के जीउ एइसन घिनाइल कि का बताई। ओह नरक से निकड़ि के जब अपने पैर पर खड़ा होखे के कोसिस करे लगनीं त जहाँ–जहाँ केहू से कवनो काम परे बुझा कि तब्बे होई जब हम मरद लोग के मन के साध पुरवत चलीं। बाकिर विपत्ति अदिमी के बहुत कुछ सिखा देला । हमहूँ कौनो लेखा आपन राहि बनावत चलि अइनीं ।

चम्पा कहली– देखऽ मस्टराइन, हमके रमायन मति सुनावऽ। हम पुछनीं हाँ कि केहू मरद का कब्बो नाहीं लउकल जेके देखि के तहार जीउ ललचा गइल होखे ?

मस्टराइन लजा के कहली– 'लउकल, बाकिर आप से बतावे लायक नइखे।' चम्पा कहली– 'का हमार सवति बनल चाहत बाड़ू?' मस्टराइन कहली– 'का दीदी? अब ईहे रहि गइल बा ?

चम्पा कहली– तब हमसे बतवले में कवन हरज बा?

मस्टराइन उदास हो गइली। कहली– दीदी एह गाँव के केहू एइसनो मरद बा जेकर निगाह हमरी देहिं पर ना होखे ? हम कइसे अपना के बचाई लें, हमहीं जानत बानीं ।

चम्पा घुड़कली– फेरू उहें रमायन! हम जवन पूछत बानीं तवन बतावऽ? अच्छा, का अंकुर के बापो कब्बो कुछ कहेलें? मस्टराइन कहली– 'जाए दीं दीदी ! ऊ कुल छोड़ीं। अंकुर के बाबूजी अब हमके मुदई बूझत बानीं, बाकिर कवनो जबाना रहे कि ऊहों का भँवरा बनल चहनीं ।

मस्टराइन देखली कि चम्पा के मुखड़ा मलिन हो गइल। तुरते झूठ बोल दिहली– 'ना दीदी। एह बात पर तनिको विसवास जनि करीं। ई बात हम मजाक में कहनी हँ । आप एइसन मेहरारू पा के कवन अभागा होखी जे हमरी एइसन की पाछे दउरी ? हम हँसी करे खातिर रवा से झूठ बोलि दिहनीं हँ ।' मस्टराइन कहे के कहि दिहली बाकि मन में आइल कि साँच–साँच बता के इनकी घर में आगि लगा देईं। मिसिर से बदला लिहले के निम्मन मौका मिलि रहल बा। बाकिर चम्पा के मोह–ममता की आगे उनकी मरद से बदला लिहले के भाव दबि गइल। मस्टराइन कहली– बिसवास मानीं दीदी, अंकुर के बाबू जी वाली बात झूठ ह। उहाँ के भला हमरी ओर तकबो काहें करबि ।

चम्पा मरद के सुभाव ना जानें, एतना अबोध नइखी। हँसि के कहली– 'का साँच ह, का झूठ अब तुहईं जनबू, ऊ जनिहैं। हम त तहरा से ई जानल चाहत बानीं कि घर बसावे के मन करेला कि नाहीं ? आखिर कबले अकेल्ले मजा करबू ?

चम्पा के हँसत आँखि मस्टराइन के गुदुरा दिहली। कहली– 'दीदी, जेवानी के आगि त विपत्ति से लड़त में अपने बरलि आ अपने बुता गइलि। अब राखिए बचल बा। अब राखी सहेजे खातिर बियाह का करीं? बाकि कबो–कबो सोचीलें कि बूढ़ हो जाइबि त केहू आगे–पाछे नाहीं रहि जाई। हारी–बेमारी में केहू एक लोटा पानियो देबे वाला नाहीं रही त का होई!

'एही से त कहऽ तानीं कि अबहिन तहार जेवानी बुताइल नइखे। अबहिन बियाह करे के सोचऽ त कई जने तहरी आगे–पाछे झूले लगिहें। कहऽ त हमहीं तहरे खातिर दुलहा खोजीं।' कहि के चम्पा मस्टराइन के गाले पर चिकोटी काटि लिहली।

मस्टराइन लाल भभूका हो गइली। चम्पा का बुझा गयल कि जरूर मस्टराइन कि मन में केहू बसल बा। कुल जुगुति लगा के पूछे लगली। मस्टराइन बाति बदलि दिहली। कहली– हरिजन पट्टी वालन के मकनिया के का होता, बताईं ? चम्पा कहली–ओकर जवन होई तवन होई। एह बेरा जवन पूछत बानी तवन बतावे के कहऽ त हम खोजी तहार बर !

मस्टराइन कहली– अधेड़ उमिरि में बर मिली

? बर बरनाठ आ झरनाठ तीनि गो होला। अब हमके मिलबो करी त झरनाठे न मिली। अब जिनगी में कवन रस रहि गइल बा कि बर खोजल जाव?

चम्पा कहली – जिनगी में रस उमिरि पर आवेला सही ह, बाकिर अबहिन तहार उमिरि चालीस से अधिका त नइखे न? अबहिन रसगर बटले बाडू। जब रस गारे वाला भेटा जाई त कचहिन होखे लागी, कवन फेर में बाडू! अच्छा, अब हम जोगाड़ लगाइबि तहरी बियाहे के ।

'ठीक बा, जइसन राउर मरजी। बाकिर हमसे उबिया के जीव नइखीं न छोड़ावल चाहत कि कवनो लेखा आँखि की अन्हे जाउ !' कहि के मस्टराइन हँसि परली। मस्टराइन का एह गाँव में एक्के मरद एइसन लउकेलें जेकरी आँखि में कबो कवनो पाप नाहीं लउकल। आजु ले कब्बो ऊ मनई उनकी ओर भा कवनो लइकी मेहरी कावर मन मलिन क के नाहीं तकलसि । अचक्के मस्टराइन की मुँहे से निकड़ि गइल– 'अंकुर के बड़का बाबूजी के बियाह काहे नाहीं भइल ?'

सवाल सुनते चम्पा के आँखि चमकि गइल आ मस्टराइन लजा गइली । चम्पा कहली– हमरिए घरे आइल चाहत बाडू? ऊहो हमार जेठानि बनि के ?' मस्टराइन घिघियाए लगली– ना दीदी! एइसन कवनो बात नइखे। कहाँ राउर घर आ कहाँ हम! हम त एइसहीं पूछि परनी हँ ।

चम्पा कहली– हम बहुत नइखीं जानत, बाकिर अंकुर के बाबूजी एकबेर बतवले रहलें कि बियाह के उमिरि बीति गइले के बाद जब एकाध जने बरदेखुवा अइलें त भइया जी कहि दिहनीं कि अब हमार बियाह का होई! छोटकू के बियाह होई। उनहीं से बंस चलि जाई । ओकरी बादि एकर चरचो कबो केहू नाहीं कइल। बिना बियाह के रहि गइनीं उहां के, बाकिर कब्बो उहां के आंखि हम कवनो मेहरारू कावर उठत नाहीं देखले बानीं। मस्टराइन कहली– ईहे हमहूँ कहल चाहत बानीं। आप त भरल–पुरल सोहागवाली बानीं जल्दी केहू के हिम्मति ताके के करबे नाहीं करी। हम त बिना छाँह के बानीं, जेही के देखीं ऊहे आँखी में आँखि घुसेरि के सरबस लूटि लिहल चाहेला। एगो अंकुर के बड़का बाबूजी अइसन मरद बानीं जेकरे निगाह में आजु ले हमरा कौनो खोट कब्बो नाहीं लउकल। उहाँ के निगाह में औरत जात के छोट कइले के कौनो कोसिस नहीं लउकेला ।

चम्पा चुप रहि के सोचे लगली। उनके मन में मस्टराइन अ अंकुर के बड़का बाबूजी के जोड़ी के खेयाल उजियार होखे लागल। ठीक त रही, बाकिर उहाँ का हमार भसुर ठहरनीं। हम कइसे बाति चलाईं। अंकुर के बाप त सुनते जरे–बरे लगिहें। तब के बा, जे बाति उघारो। चम्पा के मन के भाव आँखिन में झलके लागल। मस्टराइन पढ़ि लिहली उनके मन के बाति । तनी एसा लजइली । कहली– का दीदी! का अकास– पताल सोचे लगनीं। चले दीं जइसन चलि रहल बा।

चलते बा। हम कुछु चहबो करीं त का हो जाई! कहि के चम्पा मुस्काए लगली। मस्टराइन से कहली– एइसन करऽ कि अबकी हरिजन अवास वाला मकान सचहूँ बनि जा। मस्टराइन कहली– हमरी चहले का होई? आप बीडिओ से कहि देईं त हो सकेला कुछ बात बने।

मस्टराइन के देखि के बीडिओ साहेब चहकलें– का मस्टराइन का हाल बा ? चुनाव हरले से उदास नइखू न भइल ? अगले बेर फेरू लड़िहऽ । देखल जाई!' मस्टराइन कहली– अगले बेर के बात अगले बेर देखल जाई । अबहिन त चम्पा परधान आपसे भेंट कइल चाहत बाड़ी। बताईं आप चलबि कि उनही के बोलाईं ?' बीडिओ चिहुंकि गइलें। कहले– उनके मलिकार त भेंट करते रहेलें हमसे। ऊ काहें भेंट कइल चाहत बाड़ी ?' मस्टराइन कहली– 'कौनो बाति बा तब्बे न हमके भेजली ह। बताईं, चलबि कि उनही के लिया आईं।' बीडियो डायरी उलट–पलट के कहले– 'परधानजी से कहि दीहऽ बढ़िया दावत के इंतजाम करें, हमहीं चलि आइबि।' मस्टराइन कहली, अरे बड़का घर ह। जब चलबि त बिना दावत के नाहीं न लौटे दीहें। त बताईं कहिया चलबि! बीडियो दू दिन बाद आवे के कहलें । मस्टराइन लवटि के चम्पा से बता दिहली ।

साँझि के मिसिर जी लवटलें । भित्तर से चाह आइल त गिलास उठा के फेंकि दिहलें छी मानुख छी मानुख करत एहर से ओहर डोलत रहलें। राति के खाए के बिज्जे भइल त चिघरि परलें–'हमरा भूखि नइखे।'

अंकुर के बड़का बाबूजी सँझहीं से भाई के हालि देखत रहलें। चाह के गिलास फेकल देखलें, एने–ओने फोंफियात घूमत देखलें। कुछ नाहीं कहलें। जब खाए कि बात पर चिघरल सुनलें त कहलें– 'का ह हो? बउराइल बाड़ऽ? भूखि नइखे त मति खा, चिघरत काहें बाड़ऽ ?'

'देखऽ भइया, अब मस्टरनिया के आवल–जाइल एह घर में एतना बढ़ि गइल बा कि हमसे बरदास नइखे हो पावत।' कहि के रीसि में आपन दूनू हाथ मीसे लगलें।

भइया कहलें– मस्टराइन दुलहिन के पढ़ावत बाड़ी ई त बहुत नीमन बात बा भाई, तहरा काहें बाउर लागत बा ?'

'ऊ पढ़ावति बा कि हमरे घर में जहर बोवति बा, जनलऽ ह? आजु हमसे बीडिओ साहेब कहत रहले हँ कि नौकी परधान जी के सनेसा लेके मस्टरइनिया उनके बोलावे गइल रहलि ह। अब तहार दुलहिन हमसे बात नाहीं करिहें सोझे बीडियो आ कलट्टर से बतियइहें! दू दिन बाद बीडियो परधान जी से मिले अपने घरे अइहें। बतावऽ, कवन इज्जति रहि जाई ? कहत–कहत रीसिके मारे अंकुर के बाबू जी रोवाइन मुँह बना के चुपा गइलें।

उनके भइया समुझवलें– देखऽ, तू त पढ़ल लिखल बाड़ऽ जबाना बदलत बा तेकरे साथ चले के सीखऽ। जब दुलहिन के परधान बनावे चलल तब्बे न ऊँच–नीच सोचल चाहत रहे। अब जब ऊ परधान बनि गइली, पढ़ल–लिखल सुरू क दिहली, गाँव के लोग से उनके दुखसुख के बाति सुने–समुझे लगली, त तुहईं चुपा जा। देखा कि कइसन परधानी करत बाड़ी। आ हम त सुनत बानीं कि गाँव के लोग दुलहिन से बहुत खुश बा। हम त ईहो सुनत बानीं कि हरिजनपट्टी के बेघर बालन के घर बनावे के आइल, खरच हो गइल आ ओकनी के एक्को घर नाहीं बनल । गाँव के लोग मुहाँमुहीं बतियावत बा कि नवकी परधान अब कौनो अनेति नाहीं होखे दीहें। त हम त ईहे कहबि कि जवन हो रहल बा, ओके होखे द। जाके खैका खालऽ। बीडिओ की अइले से तहार इज्जति नाहीं जाई ।

चम्पा परधान भैया जी के एतना बात कब्बो नाहीं सुनले रहली। उनका बुझाइल कि बेपढल लिखल होके भैया जी अपने पढ़ल–लिखल भाई के मोकाबिला में बहुत समझदार बानीं। पढ़ाई–लिखाई भरभट्ट करेला का?

बहुत गुनत–मथत रहली चम्पा परधान। मन में आवे कि नइखन खात त छोड़ि दीं। भुखइहें त अपने खइहें। नहिंयो खइहें त एक दिन में परान नाहीं निकड़ि जाई। एइसन सोचते अपनिए भित्तर से धिरिकार उठे लागल। 'जा, तू कइसन गिहिथिन बाड़ कि मरद रिसिया के भुखाइल सूति जाई आ तू कुछऊ नाहीं करबू ! बहुत सोचा– बिचारी कि बाद चम्पा छोटकी के बोला के कहली– जा के अंकुर के बाबू जी के भित्तर बोला ले आव। छोटकी जाके कहलसि – छोटका बाबूजी, काकी भित्तर बोलावत बाड़ी। छोटकी के डपटि के भगा दिहलें। भइया कुलि बात देखत–सुनत रहलें। कहलें – देख अब तू निपट नंगई पर मति उतरि आवऽ। दुलहिन के बात ध ोयान से सुनऽ। जा खालऽ, आ ठंढा दिमाग से कुलि बात फरियावऽ। हम त अज्ञानी हईं बाकिर गाँव के लोग के मन में का चलि रहल बा, एकर हालि तहरा से ढेर हम जानी लें। गाँव के लोग दुलहिन के नौका परधान मानि लिहले बा। अब उनके परधानी करे के मौका दे द। पहिले चलऽ खाइल जाव।

पहिलका परधान भइया के बात सुनि के फेर में परि गइलें। भइया के एतना बोलल ऊ कब्बो नाहीं सुनले रहलें। सबसे अचरज के बाति ई बुझाइल कि ऊ अपने गाँव के मन आजु ले नाहीं जानि पवलें, आ हरदम चुपाइल रहेवाला भइया गाँव के लोग के मन के बात एतना गहिरे ले जाके बूझि लिहलें। छन भरि खातिर उनका बुझाइल कि चम्पा उनके मेहरारू हई बाकि ऊहो उनसे जियादे गाँव कि लोग से तालमेल बना लिहले बाड़ी। एक ओर उनके मरद के मरदई फुफकारत रहल, त दुसरकी ओर उनके भित्तर के आदिमी सुगबुगात रहल कि असल बाति त ऊहे ह जवन भइया कहत बाड़े। तब ? तब का मेहरारू से हारि मानि लें ? भित्तर के मर्द फोंफिआइल– एइसन नाहीं हो सकेला !

कुछ कहें तबले भइया उनकी कान्हे पर हाथ ध दिहलें। कहलें– उठऽ, चलऽ खा लीहल जाव। चुपचाप उठले आ भाई के साथे जाके ठहरी पर बइठि गइलें । छोटकी दूनू जने कि आगे थरिया सरका दिहलसि।

खा लिहलें त रीसि कुछ कम भइल बाकिर रहि रहि के भित्तर के मर्द फों–फों करे लागे। मन करे कि एह मेहरारू के नटई दाबि देई। ओहू से पहिले ओह मस्टरइनिया के मूड़ी काटल जरूरी बा। मन जेतने फुफकारे ओतने भइया के बाति सोचि के मुरझा जाय। अद्धी राति ले नीनि के पते नाहीं। उठि के टहरे लगलें। देखत का बाड़े कि अंकुर के माई केवाड़ी के पल्ला पकड़ि के खाड़ बाड़ी। एकर मतलब ईहो नाहीं सुतल बाड़ी। तब? चम्पा के नेह–छोह मन परल त कुलि रीसि ओसहीं बुता गइल जइसे जरत भरसाई में पानी परि गइल होखे। ओही मोह के डोरी पकड़ के उनकी भित्तर के चोटाइल मरद आ मानुस दूनो एक्के साथे जागि उठलें। केवाड़ी की लग्गे जाके चम्पा के बांहि धइलें। ऊहो लपटा गइली। दूनू जने भित्तर गइलें। केवाड़ी बन हो गइल ।

ओहर केवाड़ी बन्न भइल, एहर बड़का भइया खटिया पर उठि के बइठलें। बुझाइल कि उनकी छाती पर चढ़ल भारी बोझा उतरि गइल। घर में दुइए परानी बाड़े स, आ जब लड़ाई–झगरा करे लागेले स त उनकर मन फिकिर से भरि जाला। आँखि बन क के परल रहेलें आ भगवान से मनावत रहेलें कि दूनू परानी में मेल–

मिलाप बनल रहो। जब जीउ निचिन्त भइल खेयाल करे लगलें कि एहर एकनी के झगरा के जरि मस्टरइनिया हो गइल बा । दुलहिन के बात मानीं त मस्टराइन उनके पढ़े– लिखे के सिखावत बाड़ी आ पंचाइत के कामकाज में मदद करत बाड़ी। भाई के बात मानीं त मस्टराइन उनके घर बिगाड़त बाड़ी। मस्टराइन उनका एइसन नाहीं बुझाली कि केहू के घर बिगड़िहें। ऊ बेचारी अपनी मेहनत के बलबूता पर अपनी जिनगी के नाव खे रहलि बा। एक से एक अवर्रा अकेल मेहरारू जानि के ओकरे पाछे परल रहेलें बाकिर आजु ले कब्बो नइखे सुनाइल कि मस्टरइनिया केहू के पुट्ठा पर हाथ धरे दिहले होखे। फेरु तुरन्ते राम–राम करे लगलें ई सोचि के कि आन मेहरारू के बारे में नीक–बाउर कुछऊ सोचल ठीक नाहीं हवे ।

घर में दूनू परानी एइसन सुतलें कि कुछ होस नाहीं रहि गइल। मुरगा के बोली सुनि के चम्पा जगली त देहीं के पोर–पोर दुखात रहल। न एइसन सुख बहुत दिन से मिलल रहल, न एइसन उंघाई लागलि रहलि। अंकुर के बाबूजी के गुदगुदा के जगवली जब ऊ जागि गइलें त कहली– अरे भिनसार हो गइल। उठल जाई ? आ रतिया का हो गइल रहे। बुझात रहे जइसे कौनो दुसमन से बदला निकारत होखीं।' कहि के लजा गइली। 'एतनी घरी त तुहईं हमार दुसमन भइल बाडू आ तहसे बड़हन दुसमन हमार भइलि बा तहार मस्टरइनिया।' बिहँस के कहले त जबाब में उनकी आंखि में आंखि डारि के चम्पा कहली– 'बनीं मति। मस्टराइन त रउरी पसन के मेहरारू हँई।' एह बेर तनिएसा लजइलें मिसिर आ कहलें–'तहसे कुछु कहले बा का मस्टरइनिया?' जरूर कहले होई। जब तहार गुरुवाइन बनलि बा त कवनो कसरि काहें छोड़ी?'

चम्पा कहली– मेहरारू एह कुलि बाति के बिना कहलहू जानि जालीं। ओइसे केहू जेवान अदिमी अकेल मेहरारू के देखि के झपटे त एमें अचरज कवन बा? उनकी पाछे त गाँव भरि के छुटहा परल रहेले।' अंकुर के बाबूजी चम्पा के दूनू हाथ अपने हाथ में लेके कहलें– 'एतना दिन से साथे बाडू कबो एइसन सिकाइत पवले बाडू हमरी देहीं से? बाकिर एक बात तहसे कहबि । जब ऊ परधान के सिकाइति करे लागलि त हम सोचनीं कि एक बेर हमरी जांघे कि निच्चे आ जाई त कम से कम हमरी खिलाफ मुँह त नाहीं खोली। ईहे सोचि के एक बेर कोसिस कइनीं बाकिर ऊ छटकि गइलि ।

चम्पा हँसि परली। कहली– नाहीं छटकल रहति तब त ओके हमार सवति बना लेतीं न? ईहे मरद लोग के मरदाइ ह।' कहलें–देखऽ, कारन हम सोझ–सोझ बता दिहनीं। अब जवन चाहऽ अरथ लगावऽ। कहीं एइसन त नइखे कि ओही के बदला मस्टरइनिया हमसे लेति बा।' चम्पा कहली– 'नाहीं एइसन कौनो बाति नइखे। ओह बेचारी के दुर्गति जइसन बा, ओइसन भगवान मुदइयो के न करें। बाप एइसन पापी रहल कि पइसा बचावे खातिर एगो जलुवा से बियहि दिहलसि । ऊ त एकरिए एइसन रहलि के अपनी मेहनत के बलबूता पर ओह नरक के निकड़ि के मस्टराइन बनि गइलि । ऊ केहू के सिकाइति नाहीं करेली। एक दिन बात–बात में उनकी मुँह से निकड़ि गइल कि सगरे गाँव में एगो अंकुर के बड़का बाबूजी एइसन बाड़े जिनकी निगाह में कौनो खोट नइखे। ओही बेरि हम पूछि बइठनीं कि अंकुर के बाबुओ जी कबो कुछ कहलें, हँसि के रहि गइली । अच्छा एक बात बताईं। भइया जी आप से दुइए साल जेठ न हईं। अबहिन त उहाँ का बियाह कइए सकीलें ।'

मिसिर हँसि परलें। कहलें– मस्टराइन से भइया के बियाह करावे के विचार बा का?' चम्पा कहली हमार बिचार होखबो करे त का होई? भइया जी के मन के थाह मिलि जाइत त कुछ सोचलो जाइत।' चम्पा देखली कि उनके मालिक के मन फेरु बिगड़ही वाला बा। तुरन्ते बात बदलि के कहली– 'देखीं। महिन्नन बादित ढंग से भेंटाइल बानीं। मस्टराइन के बात छोड़ीं। आप से कहे के ई बा कि हमके आपन दुसमन जनि समझीं। परधानी कइले के हमरा कौनो सौख नइखे। जइसे आप करत रहनीं ओइसहीं करत रहीं परधानी। जहाँ कहबि तहाँ हम दसखत करबि । खाली एक्के अरदास हमार बा कि गाँव के गरीब लोग के जिनगी जीए लायक बनावे खातिर जवन रुपया–पइसा सरकार से मिलत बा, ओके ओही कार में लगाई। ओमें से एक्को पइसा अपनी घर पर खर्च कइल हराम मानि के चलीं। गरीबन के आह अपनी आ हमरी एकलौता बेटा कि कपारे पर मति परे दीं।' कहत कहत चम्पा बिलखि परली।

मिसिर कहलें – देखा । एइसन बात नइखे कि हमहीं सब पइसा रुपया खा लिहले बानीं । बलाक के छोट से छोट करमचारी से ले के परमुख आ छोट बड़ नेतानेत कुल्ली सबके निगाह पंचाइत में आवे वाला रुपया पर लागल रहेला। सब गिद्ध लेखा नोचल चाहेला । कहाँ ले तू गरीबन के हक दियइबू।'

चम्पा कहली– देखीं। आप हमार बाति मानि के हमार साथ देईं। आपन ईमान–धरम बनल रही त हम गाँव के लोग के साथ सब चोरन से आ गिद्धन से लोहा

ले के गाँव के धन लुटले से बचा लेबि । आ आप से ईहो कहत बानीं कि साल भरि में एइसन नाहीं क पाइबि त आपन जिद छोड़ि देबि । फेरु जइसन आप कहबि ओइसन करे के तेयार हो जाइबि । चाहे परधानी ओह लोग की कपारे पर पटकि देबि । बस साल भर हमार साथ देई ।'

चम्पा की बात में आ कहले के ढंग में एतना जोर रहल कि ओसे इनकार कइले के हिम्मत जनावरो नाहीं करित, ऊ त उनके आपन पति रहलें। कहले– 'अच्छा चला। अब जइसन चहबू ओइसने होई।' चम्पा धधकि के पति के अँकवारी में भरि लिहली। छन भरि बादि बहरा ठेलत कहली– जाईं, दुआर पर जाई । मुसकात मिसिर दुआरे चलि गइलें ।

बिहान भइल। चम्पा सब कामकाज क के छोटकी के भेजि को मस्टराइन के बोलववली । मस्टराइन अइली त कहली– आजु चाह तुहई बनावऽ।' मस्टराइन चाह बना भइली त चम्पा कहली– पहिले 'दुआर पर चाह दे आवऽ।' मस्टराइन चिहा गइली। कहली का कहतानी दीदी। हम चाह लेके जाईं ! अंकुर के बाबू जी हमके देखते जरि बुतइहें। चम्पा कहली 'आ अंकुर के बड़का बाबूजी का करिहें?' मस्टराइन लाल भभुक्का हो गइली। चम्पा की बरिआई कइले पर मस्टराइन चाह लेके दुआरे गइली। खेदन के चाह थमा के ओहर गइली जहाँ दूनू भाई बइठल रहलें । चाह ले के मस्टराइन के आवत देखि के अंकुर के बाबूजी मुसकाए लगलें। सोझे पहिले ऊहे रहलें । मस्टराइन चाह के गिलास उनके थमा के बड़का बाबूजी की लग्गे गइली। बड़का बाबूजी चिहा के देखलें। मस्टराइन की हाथे से चाह के गिलास थामत में छन भरि खातिर उनके निगाह उनकी चेहरा पर ठहरल। ओह में का रहल के जाने? मस्टराइन उनके हाथे में चाह के गिलास थमा के पिछउड़े लवटि परली। अंकुर के बाबूजी कब्बो अपने भइया के चेहरा देखें, कब्बो घर की ओर जात मस्टराइन के चाल देखें । भित्तर केवाड़ी पकड़ि के खाड़ चम्पा सबकी ओर ताकत रहली। उनकी मन में कौनो बिनती चलत रहल, जवने के सुने वाला केहू कहीं होई त भगवाने होइहें।

मस्टराइन भित्तर अइली। उनके साँस उखरल रहल। चम्पा कहली– 'ले आवऽ चाह हमहूँ के दे दऽ आ अपनहू पीयऽ ।' मस्टराइन चाह ढारे लगली त चम्पा का बुझाइल कि एह समे इनकी आँख से आँखि मिलावल ठीक नइखे। तबले दुआरे पर छोटकी लउकलि । चम्पा लपकि के केवाड़ी कि लग्ले गइली आ जोर से बोलावे लगली– 'ए छोटकी एहर आउ ।

कहानी कहते–कहत हमरा बुझाए लागल बा कि कवनो सवदगर कहानी के अंत एक ठो नाहीं होला । कहवइया से सुनवइया ले पहुँचत में कहानी एगो जात्रा पूरा क लेले आ सुनवइया के बाद गुनवइया के मन में अउरी नया नया संवाद लेके कहानी परत–परत उघरत चलेले। रठवाँ कहानी सुनि के ई मति मानि लेई कि चम्पा परधान के कहानी ओरा गइल। ईहो मति मानि लेई कि चम्पा आ मस्टराइन जवन सोचत बा लोग, ऊ सब ओही लेखा पूरा हो जाई। चम्पा परधान ओह समय में लड़ाई लिहले बाड़ी, जवन अपराधी लोग के जबड़ा में जीयले–मुवले के बिच्चे में अधसँस्सू भइल बा। पढ़ल–लिखल मनई अपनी कुल्ही विद्या–बुद्धि के जमापूँजी खरच क के अनपढ़ गँवारन के लूटि रहल बा। जवने समय में परधान मंत्री कहि रहल बा कि सरकार से जेतना रुपया गाँव की जनता के विकास खातिर खरच होत बा ओकर सौ में पचासी पइसा बीच के चोर हजम क जात बाड़ें सँ । रुपया पीछे पनरह पइसा जनता की लग्गे ले पहुँचि पावत बा। देस के उँचकी पंचाइति कहति बा कि मेहरारू लोग के आधा नहीं तिसरका हिस्सा मिले के चाहीं बाकिर कवनो पार्टी सचहूँ मन से नइखे चाहति। मेहररुन के पंचपरधान बनले के संजोग आइल बा बाकिर सभे चाहत बा कि परधानी करे परधानपति । मेहरारू परधान खाली आपन नाँव टीपत रहें।

एइसने अन्हरिया में राहि खोजे चलल बाड़ी चम्पा परधान। उनके साथे चलति बाड़ी जनमदुखिया मस्टराइन। एह लोग के धीरज केतना दूर ले साथे चली? एह लोग के मन में जवन जोति जरति बा ओके बुतावे वाला चारू ओर से डैना फरफरावत बाड़ें। बाकिर रउवाँ सभे जानते बानीं कि अन्हरिया में घात करे वाला चाहे जेतना बलवान होखें सचाई क रोसनी में ओह लोगन के बलबूता कवनो काम के नाहीं रहि जाला। चम्पा परधान के सपना पूरा भइले में देरी चाहे जेतना लागे, उनके सपनवा साँच होई जरूर। कहानी सुनवइया– गुनवइया के हिरदे में आगे बढ़ी।■■

❑ शीतल सुयश, राप्ती चौराहा,गोरखपुर।

कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो

डा0 कमलाकर त्रिपाठी

बाँके बिहारी घर से दुई–तीन कोस चलल होइहँ कि ओनकर माई चिल्लइलिन, "रोका हो गड़िवान, दुलहिन क साँस उल्टा होय गइल।"

बाँके लपक के लढ़िया के धूरा पर गोड़ राखि के ओहार हटाय के तकलन–

"का भइल रे?"

"होई का ए बाबू, अब अस्पताल गइले का फायदा, दुलहिन बचिहें थोरो!"

"बँचल–बे बँचल अपने हाथ में बा! अरे आपन काम करे के चाहीं, बाकी भगवान पर छोड़ा। चला हो बुझावन। बरधन क तनी अउर बढ़ाय के हाँका। बखत थोरै बा।"

बाँके लढ़िया से नीचे उतरि अइलैं। बुझवना पैना लेके खोदलस "ओ–ओ तत्–तत् चल रे...।" चिर्र–चिर्र चोंय–चोंय... लढ़िया फिर उहै चाल। आधी रात क समय। आगे–आगे बाँके बिहारी लालटेन लेके राह देखावत। पीछे बुझावन, बैलगाड़ी हाँकत। कबो–कभार तिवराइन क कँहरब, साँस के घरर–घरर आ बाँके के माई के ओरहन–समुझावल।

"अब बस करतिउ दुलहिन। तोहरे रहले कवन सुख, गइले कवन दुख। बीस बरिस होइ गइल, जोगवत बीतल। कगजै के दोना लेखिन। आज साँस, परसों बोखार। लगबे ना कइल कि हमरहूँ घरे पतोह आइल। सोचलीं कि बुढ़ौती कवनो किनारे लगि जाई। केहू एक लोटा पानी त देई। इहाँ त नाती–पतोह के पिसाब–पखाना में बुढ़ौती तरत बाय।"

बाँके के काने में कुछ सुनाई परल, कुछ नाहीं। लेकिन मेहरारू के एह समय पर महतारी क बोलल नीक नाहीं लगल। पिछउँड़ होइके डपटलैं, "करे माई, तोके एही टाइम भुनभुनाए के मौका मिलल! कहलीं घरहीं कि रहे दे। लेकिन मनले नाहीं। जतनै करबै ओतने बोलबै। एसे त न करते, तबै नीक रहत। अब बइठि के परान निकरल अगोरीं कि दवाई–बिरो करीं।"

"का करब बोलि के बाबू! के सुनी! जेके सुने के रहल ते त कब्बै चलि गइल। अब बइठि के आपन दिन अगोरत रहलीं त पतोहे क समय देखत हईं। तोहरे जइसन पूत जौन न देखावैं बाबू! अरे ई कुल्ह लिखल नाहीं होत त का करेके बइठल रहतीं!"

बाँके चुपाय गइलैं। ढेर बोलतैं त बाति बढ़त। मेहरारू त मेहरारू, माई के कइसै छोड़ैं! दुनिया भ के अकिल, पोथी–पुरान कुलि ई दूनो मेहरारू के सामने दुई कौड़ी के। माई त माई हौ, सत्तर–बहत्तर से बेसीअ होई, के जानै अउरो ज्यादा, बाकिर जांगर हाथी के। न कब्बो सर्दी बुखार छुअलस न कौनो चोट–चपेट। बोली टाँय–टाँय, जवान का बोली! लरिकाई से जबसे बाँके होस सम्हरलै तब से महतारी क ईहै बोली। बाप सुतलै रहैं कि माई कूचा–झाड़ू लेके अँगना बहारत ओसारे पहुँचि जाय। कुछ खुसुर–फुसुर बताउ आवे। कुछ काल्हि के ओरहन, कुछ आज के काम सँउपल। दादा कब्बो–कब्बो घुड़कैं त माई पटाय जाय आ कब्बो माई डपटि के ओनहीं के चुप कराय दे। बाँके सोचैं कि ओके डपटले, जुलाब होइ जाला का कि दादा तुरंते लोटा ले सिवाने चलि देलें! अब जो निपटले के जोर न रहे त गोरू के सानी–पानी करे लगें नाहीं त

लवटले के बादै। कान पर जनेव तउधिक चढ़लै रहै, जब तक दूनो लुलुहा सानी में न बोरि उठै। माई तउधिक नहाय धोय के पाठ करे बइठ जायँ।

सुनि जननी सोइ सुत बड़भागी।
जेहि पितु बचन राम अनुरागी।।

– "बाँके, उठबो करबा कि सुतलै रहबा!"

बाँके गुड़िआइल–मुड़िआइल उठैं। चादर ओढ़िके बइठले–बइठले एकाध झोंका फिर मारि लें, किताब खोलले। आधा पढ़ाई, आधा रामायण में बाझि जायँ। अंग्रेजी साइंस कठिन लागै। अँखिया बंदो रहै त चौपाई पढ़ाय, खुललो रहै त चउपइए पढ़ाय। माई कब्बौ न डँटलस न डपटलस। बाकिर बाँके के नीके–बउरे पर ओकर अहकल बाँके के ऊपर अइसन असर कइलस कि बाँके फुरै बाँके होय गइलन। जेही देखै तेही कहै "अरे ई सुन्नर तिवारी के भाग में कहाँ! ई त कुल्ह बाँके के महतारी क तपस्या ह बाबू, जौन फरत–फूलत बाय।" जेस–जेस बाँके बढ़लै वइसै–वइसै ओनकर त कम, ओनके महतारी के नाव गाँवै–गाँव महकल। गाँवै गाँवै घूमै हाथी जेकर हाथी, तेकर नाँव।

गाँव के कंकड़हिया राहि ओराइल त चाकर बड़की सड़क मिलल। लढ़िया के चुर्र चूँ कम भइल। बरधन के कुछ चालि तेज भइल त बाँके रहि–रहि के पिछड़ जायँ। बाँके के माई से नाहीं रहि गइल। पतोहे के कहँरल छोड़ि के लइका के ओर चिरउरी कइलिन, "बाबू कतना पैदल चलबा, ललटेनिया जुअवा में बान्हि द आ अपने बुझवना लग बइठि जा। हाली–हाली चलबा त गोड़वो पिराई।"

बाँके सोचले कि कहीं कि करे, तोर हमरे गोड़ पिरइला के एतना चिन्ता बाकिर पतोह हाँफत–हाँफत अधामुअलि हो गइल, तब्बो ओके घर से बहरा नाहीं निकरे दिहले! लेकिन सोचते मन दहलि गइल। माई फेरू रोवे–सरापे लगी। दुलहिन बिहोसियो में अगर सिसके लगिहें त अउर जौन जियले क दुइ–चार पइसा भरोसा बाय ऊहो कम होइ जाइ। बाँके लपक के लढ़िया के बाँस पकरि लेहलें। अब ललटेन क कौन जरूरत। पक्की सड़क पर त पहिया अपने आपे ढुरकत चलि जाला। आ स्टेशनों त दुइए कोस रहि गइल। ललटेन पटिया में लटकाय के बाँके लम्मा–लम्मा परग डारे लगलै। दुलहिन क कहँरलो कम हो गइल। हचका–गड़हा क जब कुछ आराम बुझाइल त माइयो के आँखि लग गइल।

आधी रात क समय। दू बजे रात वाली गाड़ी पकड़े के रहल, जवन बिहाने गोरखपुर पहुँचि जाय। बाकिर अबहीं बैलगाड़ी के कम–से–कम दुइ घंटा के राहि। एक एक मिनट पहाड़े जस बीतै। दुलहिन क साँस जोर से चलै त डर लगै कि अबै खतम न हो जायँ आ पटाय जायँ त डर लगै कि जान बाय कि नाहीं। बाँके के लगल कि दुलहिन कुछ कहति बाटिन। पटिया पकरि के कमरा फाँफर कइलैं, "का हो, कुछ कहति हऊ का?"

"ऊपर चलि आईं महराज, केतना पैदल चलब, आ कौन अब जियले के लच्छन बाय कि ई लहासि ढोअत हईं! अरे अब गइले के समय त गोड़ हमरे लगे रहे दीं!"

बाँके बूझि गइलैं कि माई करेरे सूति गइल बाय, नाहीं त दुलहिन क हिम्मत नाहीं परत कि एतना बोलि पउतिन। कुछ थकल, कुछ मोह, कुछ अमरख। बाँके रोकि ना पउलैं, "अच्छा चला। कहति हऊ त बइठि जात हईं। बुझवना, तनी आगे दब त। कहा, का कहत हऊ?"

आगे जूआ पर बुझावन, बीचे में बाँके, बाँसे के खपाची पर ढकल ओहार, ओमें दुलहिन, दुलहिन के अउर पीछे थकल–हकसल महतारी। बाँके तिरपाल हटाय के दुलहिन क हाथ पकरि के पुछलैं, "कइसन बा तबियत?"

का बोलैं दुलहिन? जेतना दम बचल रहल ओतना लगाइ के त बोलय लेहलिन। बाकी बचल–खुचल साँस आँखि में उतरि आइल। बड़हन आँखि अउर निथरि गइल। एक त अन्हियार, दुसरे चकवा लेखा फइललि पुतरी। कुलि लोनाई–सुकुअरई गलि के अँखिए तक रहि गइल रहल। कुछ लालटेन के अँजोर जब आँखि पर चमकल तब बाँके के लगल कि लोर ढरकल बा। गाले पर से पानी पोंछि के बाँके पुछलै, "का हो रोअत हऊ! कहूँ दुखात–पिरात बा?"

कइसो जोर लगा के गटईं हिलवलिन, बाकिर ऊ हिलल नाहीं। खाली अँखिए नाचि के रहि गइल। मुँह से कुछ कहतिन लेकिन ऊ एस फइलल कि बुझाय ढेर दिन पर भेट भइले वाली हँसी होय। महतारी क डर आ लाज छोड़ि के बाँके मूड़ी उठाय के जाँघे पर धइ लेहलैं। दुलहिन क साँस जेतने जोर से आगे भागत रहल, बाँके क मन ओतने पीछे खसक गइल। बीसन साल पीछे। अइसहीं बाँके लौटत रहलैं घरे, गवन कराइ के, इहै बुझवना तब्बो गाड़ी हाँकत रहल, अइसनै हँसत–रोअत–लजात दुलहिन, अइसैं डरात– लजात बाँके। तब पीछे नउनिया रहलि, आज ओंही माई सूतलि बा। तब बाँके पढ़े देस–दुनिया, दुलहिन पढ़ै चउका अँगना। तिवराइन करैं पूजा–पाठ, महीनन चन्द्रायण व्रत। कौर–कौर बढ़ावै, कौर–कौर घटावैं। जइसे चन्द्रमा बढ़ैं, जइसे चन्द्रमा घटैं। सुनि के गाँव–जवार

आहि–आहि करै। अइसन तपस्विनी के होई! तिवारी बाँचे कथा–भागवत, लेकिन घर में अस दरिद्रै के बास कि कब्बो डेउढ़ी न लाँघै। जेस–जेस तिवराइन क पूजा–पाठ बढ़ै, तिवारी क चेलाही कमजोर परत गइल। चेलन के लड़िका सब पढ़िलिखि के शहर गइलैं, बूढ़–ठूँढ़ मरि–हरि के छुट्टी। के सुनै पोथी–पुरान, के चढ़ावै भागवत पर रुपया–पइसा। टूका–टटका जोरि–जोरि के कुर्ता–ब्लाउज के जुगाड़ होय इहै बहुत रहै। कभी–कभार सालि भर में केहू बड़का घर के मरनी करनी पड़ै तब सज्जा–छूअल पर काम बढ़ै, नाहीं त उहै पितरपख कै कमाई, बीस आना घर, अब चाहैं एक तिथि पर चार घर निपटै चाहे एक्को नाहीं। तिउराइन चउकठे पर अगोरतै रहि जायँ कि तिवारी क पुरनकी बगली कान्हे पर से लदल उतारीं, बाकिर तिवारी मुँह लटकउले पसीने पोंछें–

"यस्यामि अहं अनुग्रहणामि हरिष्यामि तद् धनै शनैः"

हर बाति के जबाब पंडित लगे रहै। दुखो में मगन। सुखो में मगन। न तिउराइन सुदामा के मेहरारू लेखा रटिके जजमान किहाँ दउरावै, न तिवारी हहक के दुर्वासा क्रोध पुजावैं। दरिद्रई आ संतोष, जइसे गोड़ तूरि के दुआरे बइठ गइल होय। अइसने में सासुओ से बढ़ि के बीस गुना संतोषी पतोह। एकै पतोह, उहो एस सोहावन कि डेउढ़ी में गोड़ परतै बाँके के नोकरी लागि गइल। तिउराइन जवन पवलिन तवन लुटवलिन, न आगा देखलिन न पाछा। अपनो गइल बिटउओ क गइल आ पतोह से का पूछैं कि कवन चीज रखीं कवन चीज बाँटी। झाँपी बँटल, गहना बँटल, खेलवना बँटल, धोती बँटल–अइसन बँटल जइसन कि पार्वती जी कुरमिन–खटकिन के सोहाग बाँटै। बाँके कइसों एके राति रह पउलैं। छोट घर, ढेर नाता–रिस्ता वाले, न उठे क जगह न बइठे क जगह। कइसों–कइसों पूजा के कोठरी अलगिआवल गइल। आधा में सामान, आधा में भगवान। कोने अँतरे सकपकाइल–डेराइल दुलहिन आ ओसे चौगुना चिहुँकल बाँके। कब अइलैं, कब भोर भइल, जानिउ नाईं पउलैं। कुल्हि मान–मनउअल मने में रहि गइल। इनके बोली के ऊ तरसैं ओनके बोली के ई। गाँव भर में मेहरारू हल्ला कइलिन, का ए बहिनी, दुलहिन त अइसन ठस्स कि मुँहे ना खुलल। जब धान–पान कुटलैं में गइबे–बजइबे ना कइलिन तब का जानीं कि गाँव टोला में पतोह आइल बाय।

तिउराइन छेंके लगलिन। "भागि नाहीं देखतू ओकर। अउते बाबू क नोकरी लगि गइल। गउले–बजउलै से पेट चली! जनम त बीति गइल दुसरे के दुआरे ओर ताकत, अब जा के भगवान सुनलै। अबहिन तक बनवास भोगलीं, अब त दिन फिरल।"

बाकिर तिउराइन क सपना सपने रहि गइल। बाँके आधा गुन माई के त आधा गुन बापे के पउलैं। जौन बिगड़े तौन अपना चलते जौन बनै दुसरे के। न महतारी के सुख पउलैं न बापे के। बाप क जाँगर खसकल, आँखि गइल, अब पोथियो–भागवत बाँचे लायक ना रहि गइले। अधिया–बटइया खेती, पेट भरे के हो जाय उहै बहुत। तिवारी–तिउराइन लइके के भजत दिन बितावैं, कब हमार सरवन अइहैं, कब हमार दिन फिरी। दुलहिन क कुल आस मनहीं में रहि गइल। दुइ चार महीना पर बाँके आवैं, एक दुई दिन खातिर। न माई निहारत अघाय न बाप बतिआवत। बचलिन दुलहिन, त टुकुर–टुकुर ताकैं, चउका–बरतन सम्हारैं आ अगोरत–अगोरत खटिया पर ढुरुक जायँ आ फेर तिउराइन के खोंखलहीं प जागैं। बाँके रातिभर कबों बापे के गोड़ दबाइ के मन जीतैं त कबौ माई के मूड़ दबाई के तरैं। जबतक दुलहिन क सुख–दुख जाने क फुर्सत मिलै तबतक गइलै क दिन आइ जाय। साल क साल बीतल। मुँहदुब्बर बाँके तिउराइन के दुख आ बापे के उमिर देखि के कबौं ना कहि पउलन कि माई, दुलहिन के शहर भेजि द। कुछ जनलैं, कुछ नाहीं। दुइ–दुइ लइका नुकसान भइल। दुलहिन क मान घर में न कम रहल न बेसी, लेकिन तिवारी–तिउराइन नाती क मुँह देखे के तरसि गइलैं। किरिया खाए के शहर में जो दुलहिन गइबो कइलिन त माई के डरे आ बाप के लिहाजे बाँके महीने बीस दिन में वापस पहुँचाय दें। नौकरी के कमाई पढ़ाई के करजे भरे में रहि गइल। जौन बचल–खुचल ऊ कच्चा मकान क पक्का बनावै में लगल। तिवराइन मोहायँ त बहुत, बाकिर दुलहिन क बेमारी पर पइसा फूँकब उनके हरदमे अखरे। "का बताईं भागि के! भगवान के लइका के दुइ पइसा कमइयो नाहिं देखि जात बाय। एतना उमिर होय गइल। केतना बार मरि के जियलीं बाकिर अस्पताले क मुँह ना देखलीं। एकठे पतोहो आइल त उहो रोगे क घर। लइका त लइका गइल देंह दसा अलगे। रहे द दुलहिन, अपनै देखा। बुढ़वा–बुढ़िया भ के हम कइ लेब। का कहीं बाबू क भागि! देखा कब भगवान लिलारे चन्नन लगावैलैं।"

दुइ तीन लइका के नुकसान भइले के बाद कइसों एक ठो बेटी बँचल। तिवराइन क कुलि हौसला पस्त। तिवराइन आपन करिहाँव सोझ करैं, कि तिवारी क

मूड़ दबावै! आपन लइका सम्हारि नाहीं पवली, ई चिरई क बच्चा कहाँ पोसैं? टोला जवारे के मेहरारू तिउराइन के परवचन सुनैं, तिवारी दुअरे पर कथा बाचैं, लगे–लगे गाँव क जजमानी संभारै आ बाँके बाप–महतारी के अज्ञा अगोरैं। दुलहिन क देह जौन गिरल तौन उठल नाहीं। तिवारी पतोहे कै कँहरब सुनैं त पंडिताइन के ऊपर कोहराम मचाय डारैं। तिवारीइन करैं त बहुत, लेकिन बोलैं ओतनै। कुछ खर–बिरैया दवाई भइल, कुछ गाँव के वैद क काढ़ा चूरन, बाकिर दुलहिन जौन गिरलिन तौन उठलिन नाहीं। बाँके कबो मौका ताकि के पूछैं, "कहतिउ त सहर चलि चलतीं, कब तक इहैं खर–बिरैया दवाई के सहारे परल रहबू?"

"अब कहाँ ले चलब महराज। अगोरत–अगोरत त उमिर बीति गइल। केतना करवा चौथ आइलि चलि गइलि। बरिस–बरिस क बट–सावित्री बरत बीतल, नया पंखा से हम कब्बो आपकै देहि नाहीं हाँकि पउलीं। दुनिया तीरथ धाम कइलस, हमरे करम में काशी परयागो नाही लिखल बाय। भगवान चुनरी पहिरले एही घरे ले अइलैं, अब चुनरियै ओढ़ाय के आपके कान्हें पर घाटे भेजि दें, अउर का चाहीं।"

बाँके बोलें का? आँखि क कमजोर बाप। करिहांइ के निहुरल, गटई थमले कहँरत महतारी। केकरे सहारे केके छोड़ैं। बियहले के बाद नौकरी लगल। सोचलैं दुई–चार पइसा जुटि जात, कहे सुने लायक दुई क घर किराया पर ले पउँतैं तब दुलहिन के ले जातैं, बाकिर बापे के पुरनके कर्जा से उबरैं तब न। गाँव जवार क खातिर। नात–रिस्तेदार क आइब–जाब। कुल सोचल जइसै क तइसै धइलै रहि गइल। इहो जीअब कौनो जीअब ह। कौने काम क मरदई, कौने क अकिल। बिआहे में गाँठि जोरि के केहूँ के आसरे कहू क बिटिया ले के चलि दे आ ओकरे मरले जिअले क खोजो–खबर न ले पावै! सबसे नीकै बनी के का होई जब अपनै कुलि बिगड़ जाई। बापे–महतारी क सरवन कुमार, गाँव–जवार क दुलरुआ अपने मेहरारू खातिर एक ठे लुगरिओ न जुटाय पावैं, अइसन पढ़ल–लिखल कौने काम कै!

राहि ओराय गइल त सोचिओ ओराय गइल। बैल गाड़ी स्टेशन के राहि पर घूमि गइल। बुझावन पगहा तनलैं त दहिनवारी बरध पीछे गोड़ धरे लागल। शायद चक्का के आगे कौनो बड़ा ईंटा पड़ि गइल। बुझावन चिल्लइलैं "बाबू तनि उतरल जाय चक्का कहूँ बाझि गइल बा। तनि पीछे से धक्का लगाय देईं।"

बाँके हाथ खींचि के उतरल चहलैं बाकिर हाथ दुलहिन के गाले तरे दबाइल रहल। दहिने जाँघि पर दुलहिन क माथ, उठैं कइसे!

"दुलहिन तनि माथ उठावा। चक्का फँसल बा। धक्का देबे के खातिर उतरल चाहत हई। दुलहिन के दम रहै तब न सुनै।" अबहिन तक कुलि सुनतै रहलिन, मनतै रहलिन, बाकिर अबकी जइसै कुल मान, कुल रूप अँखियै में उतरि आइल। अइसन रूप बाँके जनम भर न देखलैं। लगल कि 'नाहीं' कहत बाटिन। चिल्लइलैं "बुझवना, लालटेन त ले आव। माई के जगाव त तनीं।"

लढ़िया खड़ी होय गइल। बुझावन "काकी उठल जाय" कहि के पीछे से लपक के पीढ़ई पर खड़ा होय गइलैं। दुलहिन क साँस जतने खिंचाय, जेतने लम्बा होय मुँह पर वइसै–वइसै हँसी बढ़त जाय। बिना आवाजै कै हँसी। दूनो कोना धीरे–धीरे फइलल, उभरल आँखि, अब का दुलहिन हाथ छोड़ें! जइसै हाथ पकरि के सबके सामने मड़वे में किरिया खाय के पंडित बिआह करउलै वइसन संजोग आजै मिलल। तब आवेके रहल, आज जाय के बाय। अइसन केकर भागि होई! सत्यवान सावित्री के जाँघी पर माथ धई के चलि देहलैं, सावित्री आपन परताप–तपस्या से सत्यवान के जमराज के हाथे से छोरि लेहलिन, इहाँ त उल्टा होय गइल। सावित्री के खातिर अब कौन बरत सत्यवान करैं! कौंनो अइसन बरत न पोथी पुरान में न गाँव के कहाउत में। बाँके क कुल देंह कनमनाय गइल। करेजा में हूक उठलि, बुझाइल कि चिल्लाय के रौइतैं छाती पिटतैं कपार फोरि देतैं तबो हूक न मिटत। लेकिन जे खुलि के हँसलस नाहीं ओकर रोअब कस!

साँस रुकि गइल। आसो रुकि गइल। तिउराइन चिल्लइलिन "कहत रहली बाबू, एह हालत में न घर से चला। कौनो बचे क उम्मीद थौंरे रहल, बाकिर तू मनबा काहें! अब त राहि में परल निकरल न।"

सीवाने में गाड़ी क घरघराइल सुनाइल। गाड़ी टीसन से खुलि गइल, एह जनम से दुलहिनो के छुट्टी मिलल। तिउराइन कुछ रोअत रहलिन, कुछ कोसत रहलिन, कुछ आपन भागि कुछ बेटवा क भागि। बाँके कान में कुछु न सुनाई परै। करेजा के हूक करेजा में रहि गइल। भगवान एतने के साथ लिखले रहले पूरा भइल। के जानो कबो कवनो सत्यावानों सावित्री कऽ परान यमराज से छोड़ाय पावैं। तब कउनो दूसर बरत होई, कौनो दूसर पुरान बनी आ गाँव–गाँव कथा कहल जाई। ■■

कहानी-3

मन के अंकगणित

मीनाधर पाठक

का जाने काहें रतिया देर से नींद पड़ल। ऊहो पतोहा, माने सिद्धि की पुकार पर। हम आपन दूनू हथेली रगड़ि के आँखि पर लगवनीं आ तकिया लग से आपन मोबाइल उठा के देखनीं त आठ बजत रहे। जँगला से आवत अंजोर से कमरा भरल रहे। धरती माई के गोड़ लागि के हम बिछौना से उतर के लिहाफ चौपति के चादर ठीक कइनी आ कमरा के दरवाजा खोल दिहनीं। सुरुज नारायण हमरी सामने देखा गइलें। हम हाथ जोड़ि के प्रणाम कइनीं त ऊ मुस्किया दिहलें।

"अब उठलू हा ? हमके त बुझाइल ह कि तू हमरा खातिर जल ले के आवत होखबू ? कबसे हम तोहके जोहतानीं।"

"धीर धरीं। आजु रउवा के तनी देरी से जल मिली।" कहि के हमहूँ आँख मलका दिहनीं आ अपनी कमरा की साफ–सफाई में जुट गइनीं।

कई दिन हो गइल रहे, मनअछइत हम किताब वाली आलमारी के साफ–सफाई ना क पावत रहनीं। हम सीसा सरका के सब किताब बहरिया लिहनीं आ झारि पोंछि के लगावे लगनीं। बीच–बीच में किताब के पन्ना उलट–पलट के देखतो जात रहनीं। नीचे से रहि–रहि के सिद्धि के पुकार आवत रहे। बेर–बेर देर भइला के सिकाइत करत लहली बाकिर आजु हम आलमारी साफ कइले बिना सीढ़ी पर गोड़ ना ध सकत रहनीं।

आखिर हम सब किताब लगा दिहनीं। साफ आलमारी में बेवस्थित किताब देखि के मन खुश हो गइल। एहिमें से सब किताब हम पढ़ि भइल रहनीं, हँ कुच्छु बँचल रहे जवना के बाद में पढ़ब, ई सोचत हम कमरा के फर्स साफ क के सब कूड़ा बटोर के एक बेर कमरा में निगाह घुमवनीं। मेहनत सवरथ भइल, सोचते रहनीं कि सिद्धि के आवाज आ गइल। हम संतोष के साँस लिहनीं आ सीढ़ी की ओर बढ़ि गइनीं।

"पापा जी गइनीं?"

भगवान् जी के जल चढ़ा के आ के हम सोफा पर बइठनीं आ रोमोट उठा के टीबी ऑन करत घरी सिद्धि से पुछनीं।

"तनी घड़ी की ओर देखीं।" नास्ता हमरी आगे धरत ऊ कहली। हमार निगाह टीवी से हटि के देवाल घड़ी पर चलि गइल।

साढ़े दस बजत रहे। आजु काम में लागले–लागल समय के पते ना चलल। सोचते–सोचत हम उपमा के प्लेट उठा लिहनीं आ खात–खात टीवी देखे लगनीं। गाइड फिलिम चलत रहे। एकर गीत मन मोहेला, ए से हम चैनल ना बदलनीं।

प्लेट खाली हो गइल त ओकरा के ध के हम चाय के कप उठा के जइसहीं मुँहे लगवनीं, सिद्धि वाशिंग मशीन में कपड़ा हूरत देखा गइली। ई मलेछही मशीन चालू होते टंकी के पूरा पानी सोखि लेले। आ तनिए देर में उगिलियो देले। पानी हहरात नाली में दहि जाला। जवन देखि के हमार जियरा में का जाने कइसन होखे लागेला।

"ए बाबू, हई तोहार मशीन बड़ा पानी पिएले।" आखिर रहि ना गइल त मूँहे से निकलिए गइल।

"आम्मा जी ! अब त चादर आ परदा भर धोवे खातिर मशीन लगावेनीं। बाकी सब कपड़ा त हथवे से ध ोवेनीं। अब चादर पटक–पटक के फींची, ना त हमरी लगे एतना जाँगर बा ना समय। टाइम सेट करत पतोहा टन्न दे बोल दिहली।

"देखा बाबू, हमार बाति तोहरा बड़ा बउर लागेला बाकिर तू का जान...! हमरी समय में सब कार हाथे से होत रहे। आ तनिसा बाल्टी से पानी छलकि जा चाहे भरल लोटा–गिलास गीरि जा त हमार सासु केतना बाति सुना दें। कहें कि 'पानी परता ले लेला। ए से जेतना गरज होखे ओतने ल लोग।' जब कि ओ समय इनार, पोखरा, ताल, नदी, नहर सब पानी से भरल रहत रहे। राही–बटोही इनारे पर रूकि के पानी पियत रहें। सतुआ सानि के खात रहें आ बगयिचा में बिसराम क के फेरु आपन राहि धरत रहें। आ आजु पानी के जवन दसा बा, ऊ सभे जनता। नदी, पोखरा, इनार सब झुरा गइल बा आ पेड़ पालो रहि ना गइल बा। आगे के भबिस्य का होई, के जनता! भगवान जी ना करीं कि कबो ऊ दिन आवे कि लइकन के पानी छिछ्कारि के नहाए के भेद भर मेटावे के पड़े। आ पिआसि बुझावे खातिर पानी के दवाई आवे लागे। के जनता! हे टीबी पर समाचार सुनि–सुनि के दिमाग घूमल करेला हमार। आ तू त जनबे करेलू कि घर में तीसरी बेर मोटर के पाइप बढ़ावल गइल बा। पलम्बर मना क दिहले बा कि अब ना बढ़ि पाई पाइप अब जो मोटर पानी छोड़लस त सीधे बड़का बोरिंग करावे के पड़ी। एही से कहीलें कि पानी के संगिरहा क के चला।"

"मम्मी जी ! केतना चिंता करेनीं रउरा। एतना चिंता मति कलइ करीं। खाली आपन ध्यान राखल करीं। हमरो के स्कूल जाए के पड़ेला। एगो रविवारे के दिन मिलेला, ओहू में सौ गो काम आ ऊपर से राउर पानी के चिंता के मारे जिउ डेराइल रहेला। हमहूँ चाहीलें कि बेफजूल पानी ना गीरे बाकिर थूके पिसान ना सनाला। ई त रउरो जानीलें न!" कहि के झनक के चलि गइली पतोहा।

हमेशा ईहे होला, ई मशीन लागते पानी खातिर बतकही आ रूसा–रूसी। सोचि के हम चुपचाप टीवी पर निगाह गड़ा दिहनीं। तब्बे सिद्धि दवाई के बक्सा ले आ के हमरी आगे मेज पर ध दिहली। हमहूँ दवाई निकाल के खइनीं आ फिलिम देखे लगनीं।

धरती सूखि के फाटि गइल रहे। पेड़ पालो सब झुरा के ठूँठ भइल रहे। गाइ गोरु, चिरई चुरगुन, आदमी, सब पानी खातिर बेकल रहे। चारू ओर से लोग मन्दिर में पानी खातिर उपास पर बइठल स्वामी जी के दरसन खातिर जात रहे। हम फिलिम में अझुराइल रहनीं कि गेट के कुंडा जोर से बाजल। बुझाइल कि टन्न दे केहू मूड़ी पर मार दीहल। ऊठे के भइनीं कि पतोहा दनदनात लगे से चल गइली। जेतना तेज कुंडा बाजल रहे ओतने तेजी से खुलबो कइल।

"हमार रीसि ई मेहरारू बेजान चीज पर उतारेले। जवन मन करे तवन करे। हमके का करे के बा। अब ना बोलब कुछु।" सोचत रहनीं कि लछमिनिया कमरा में गोड़ ध दिहलस।

"अच्छा..! त अब अइली ह महारानी जी। राति के बरतन दुपहिता में धोवाला। बाकिर हमके का करे के बा। आपन मूड़ी झींट के हम फेरू से फिलिम देखे लगनीं। वहिदा रहमान आपन बीखो उतारत भीड़ के हिस्सा बनत देखात रहली। बाकिर अब रसोई से आवत खड़खड़ के आवाज से मन ना लागत रहे।

"केतना हाला कइले बाड़े रे ! पटक–पटक के सब बर्तन हेवान क देलेबाड़े। एंगा धोवल जला बर्तन!"

"अरे आंटी जी ! तनी आके देखिये तो कि कितना बर्तन है। अब इतना बर्तन धोआएगा तो खड़कने की आवाज तो आएगी ही न।" लछमिनिया खिसिआहे बोललस।

"अब ते हमरा के ढेर ज्ञान मत दे। आ तनी टोंटी के धार कम क ले। हर हर हर हर पानी गिरावेले तें। जेतना पानी के गरज बा ओतने नल खोलू।" बाकिर ओकरी ऊपर हमरी कहला के कवनों असर ना भइल। पतोहा सुनत रहली बाकिर बोललीं ना कुछु।

"एकरो दिमाग आसमान पर चढ़वले बिया ई मेहरारू। जबले एहिजा रहब, तबले देखि सुनि के हमार जीउ जरत रही।" भुनभुनात हम टीबी बंद क के सीढ़ी की ओर बढ़ि गइनीं।

अपनी कमरा में आ के मन हल्लुक करे खातिर एगो पत्रिका उठा लिहनीं आ देवाल से पीठि टिका के बइठ के देखे लगनीं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर एगो आदमी कपारे पर हाथ धइले बइठल बेवाइ नीयर फाटल आपन खेत देखत रहे आ ऊपर आसमान में सूरज देवता आँख गुड़ेरत रहलें। बादर के कहीं नामें निशान ना रहे। पढ़े खातिर जइसहीं पन्ना पलटनीं कि छत पर धब्ब की आवाज से हम चिहूकि गइनीं। ई आवाज टंकी से गिरत पानी के रहे।

"अरे तनी मोटर बंद क द लोग। पानी गिरता।" जोर से बोलनीं हम। बाकिर ना त नीचे कवनों सगबग भइल ना ऊपर भद्द भद्द के आवाज बंद भइल। हम फेरू से आवाज दिहनीं बाकिर उहे निल बटा सन्नाटा !

झंखि के हमहीं उठनीं आ नीचे आ के मोटर के स्विच बंद क दिहनीं। देखनीं त कमरा में पंखा चलत रहे। ऊपर गइला से पहिले हमहीं पंखा बंद ना कइले रहनीं। भीतर अइनीं त पतोहा फोन पर अपनी माई से बतिआवे में लागल रहली। हम पंखा बंद कइनीं आ ई सोचत ऊपर आ गइनीं कि हो सकेला कि लछमिनिया मोटर चला के पतोहा के बतवले बिना चलि गइल होखे। ऊपर आ के देखनी त छत से पानी गिरल सुरु हो गइल रहे। झट दे हम गमला की लगे से बाल्टी उठा के गिरत धार के नीचे ध दिहनीं।

पानी के छींटा कमरा के भीतर ले आवत रहे। का जानें काहें जब–जब ए तरे पानी गिरेला, हमरी मन में उद्बेग हो जाला। हम दरवाजा बंद कइनीं आ पत्रिका एक ओर सरका के ओठंग गइनीं।

एकदम से फोन के घंटी बाजि गइल। हउहा के उठनीं आ फोन देखनीं त उपरे पड़ोस वाली बरमाइन के नाँव देखात रहे।

"नमस्ते जी कैसी हैं आप?" नींन में खलल के खीस दबा के बोलनीं हम।

"ठीक हूँ जी आप कैसे हो ? लगता है मैंने नींद से जगा दिया।"

"अच्छा किया जी जो उठा दिया नहीं तो का जाने कबले सोये रहते हम।"

"एक काम था आपसे।"

"अरे तो कहिए न।"

"जी मेरे यहाँ नई बोरिंग हो रही है। पुरानी बोरिंग बैठ गयी। अब पानी के बिना तो बोरिंग हो नहीं सकती न! आपसे पानी चाहिए था।"

सुनिए के हमार बोलती बंद हो गइल। अब का करीं? पानी दीं कि ना दीं ? हमरियो घरे पानी के कम खरचा बा? कहीं हमरो बोरिंगवा...! राम राम ! ई कुल का बेफालतू के बाति सोचे लगनीं हम ? बाकिर पानी त ढेर लागी, ऊपर से बिजली के खरचा !"

"क्या सोचने लगीं जी!!" एने से हमार चुप्पी सुनि के ओने से आवाज आइल।

"पाइप तो नहीं है हमारे घर। पानी कइसे जाएगा...।"

"जी उसकी चिंता न करें आप, पाइप है मेरे पास।"

"अब कइसे मना करीं!" सोचते सोचत हम नीचे आ गइनीं। फोन ओनिए से कटा गइल रहे।

"सिद्धी! ए सिद्धी...!"

"जी मम्मी जी !"

"बगल वाली बर्मा आंटी की घरे बोरिंग होता। ऊ पानी मांगताड़ी।" सुनिए के उनके आँखि बड़हन हो गइल।

"रउरा हँ कहि दिहनीं का?"

"अब पानी से पातर का होला? कइसे मना करीं?"

"अब त राउर पानी खर्च ना होई नू?" पतोहि के चढ़ल आँखि देखि के फेरु से हमार बोलती बंद हो गइल।

"राउर कंठ खाली हमरे से फूटेला! प्लम्बर के कहल बतिया उनका से काहें ना कहनीं हँ रउवा !" रिसिया के बोलत ऊ जइसे रसोई की ओर गइली, फाटक खटकि गइल।

जा के खोलनीं त बर्माइन के छोटका बेटा सिरीस रबर पाइप के भारी लच्छा लिहले ठाड़ रहे। अब त मन मारि के मोटर खोलहीं के पड़ल।

पड़ोस में बोरिंग हो गइल रहे। दू दिन से रात–दिन मोटर चला के पानी के सफाई होत रहे। जेसे बालू से नाली चोक हो गइल रहे आ पानी सड़क पर पसरल रहे। हम छत पर किनारे आ के देखनीं त सिरीस देखा गइलन।

"सिरीस बेटा, पानी साफ नहीं हुआ का अभी तक?"

"अभी बालू आ रहा आंटी जी, आज भर और मोटर चलेगा।"

पानी की सफाई के नाँव पर का जाने केतना पानी बहि गइल रहे बाकिर अबहिन ले पानी ना साफ भइल रहे।

"हे भगवान् जी, पानिए से पानियों साफ होला!" सोचत–सोचत हम गमलन में पानी देबे लगनीं। पानी पा के मुरझाइल पौधन में जान आ गइल रहे।

चिरइन के बर्तन में पानी डालते का जाने कहाँ से ऊड़ि ऊड़ि आ के पानी की बर्तन लगे इकट्ठा हो गइली आ नान्ह–नान्ह ठोर से पीए लगली कुलि। का जाने ए मन के कवन अंकगणित ह कि ई अबोलन के पानी पीयत देखि के जुड़ा जला आ अकारथ पानी गिरत देखि के बिहवल हो जाला। जवन कुछ होखे बाकिर बहरे के पानी आ हमरी भीतर के पानी में

कवनो बहुत गहिर नेह–नाता ह। सोचते रहनीं कि तब्बे फोन के घंटी बाजि गइल आ हमरी भीतर चलत दर्शन के सास्त्रार्थ पर बिराम लागि गइल। धन्यबाद देबे खातिर बरमाइन के फोन रहे। ईहो शब्द मन पर जादू क देला। सोचत हम फोन एक ओर ध के फेरू से गमलन में पानी देबे लगनीं।

तबे एकदम से तड़ तड़ तड़ तड़ के आवाज से मन में उठत विचार पर लगाम लागि गइ। हम अकबका के देखनीं त ऊपर टंकी से गिरत पानी कमरा के दरवाजे पर गिरे लागल रहे। हम भागि के खाली बाल्टी उठा के गिरत जलधार के नीचे ध दिहनीं। आ मोटर बंद करे खातिर सीढ़ी की ओर चल दिहनीं। ■■

कनक किशोर के कविता

(एक)

लूट के ले आइब, कहवाँ छुपाइब
चोरवन के गुणगान, कबले गाइब।

करिया धन राउर,मनवो बा करिया
उजर खादी पहिर,कबले छुपाइब।

कंबल ओढ़ि रउवा,घी पियत बानीं
चढ़ल आँखि चरबी,कबले लुकाइब।

बानी संत के बा, करनी बा चोरी
धरम के नाम लूट,कबले चलाइब।

चोला पर गेरूआ,सेज प पतुरिया
साधु के नाम आप,कबले डुबाइब।

(दू)

कट गइल दरख्त गाँव बधार के
हो गइल बधार बे श्रृंगार के।

पावस विचित्र देश में तू देखि लऽ
प्रेम कहाँ भाग गइल परिवार के।

लाज उनका ना रहल अब आँखि में
काज बदलल देखि लऽ सरकार के।

नाम कनक, साँच ऊ सोना ना हऽ
सांचि कहीं ऊ फूल ह कचनार के।

नाक बड़हन जनि करऽ किशोर तू
कटि जाई ढोवे में बेकार के।

घाव मन के देखा के का करब
ना मिली मरहम इहां उधार के।

प्यार त सउा भइल एह देश में
जनि करीं इकरार झूठा प्यार के।

चुप बइठल ह किशोर मुँह दाबि के
का कहीं हम बहिर, एह सरकार के।

गजल

✍ शशि प्रेमदेव

(एक)

नसा भिसकी के होखे चाहे रम के
मुकबिला का करी हमरा सनम के

नयन भरिके उ, जबसे देखि लिहलस
सराबी कहि रहल बा लोग हमके

करे जिन् थोर आपन मन, ए गुइयाँ
हमेसा ना रही ई दौ, र गम के

अमन कायम कइल चाहत बा, देखे
जमाना जोर पर बारूद-बम के

पिआसल ताल बा सोचत जे कहँवाँ
भइल बा रात भर बरसात जम के

बड़ा मुस्किल से हम बानीं भेंटाइल
पुरा ले साध तूँ ... पिछला जनम के

पड़ी जब साँच के पाथर से पाला
चटकि जाई 'शशी', सीसा भरम के

(दू)

जुड़ल उनुका से अइसन नेह-नाता, ए फलाने !
कि अँखियन से भइल निदिया नापाता, ए फलाने !

नसीला हो गइल पनरोह के बदनाम पानी
गुसलखाना में आखिर के नहाता, ए फलाने !

पुरनका के भरे खातिर बगल में ठीक ओकरा
सुनत बानीं नया गड़हा खनाता, ए फलाने !

कि अब ते चाटिके दू-चार गो पोथी के पन्ना
सभै अपना के समुझत बा बिधाता, ए फलाने !

तिजोरी - कार - कोठी के भरोसे लोग इहँवाँ
बने खातिर 'बड़कवा' छटपटाता, ए फलाने !

कि उनुकर आँख केतना बा खुलल,केतना मुनाइल
अन्हारे में कहाँ एतना बुझाता, ए फलाने !

बरजिहें ना 'शशी' हमरा के एकहू बेर बाकिर
हिया उनुका के छूये से डेराता, ए फलाने !

चंद्रेश्वर के तीन गो भोजपुरी कविता

(एक)

ना पड़े पाला घटाव से

हम पियार कइनी त घिरिना के सही
हम चुननी फूल त केकर गमछा में
कांट में फंसी

हम बनवनी हीत त बैरी कहँवा जइहें

सुख हमरा के सींचले बा
त दुख बराबरे तुड़ले बा

हमरा जिनगी में सोहर त मरनी गीतो जुड़ल रहल

अइसन कइसे होई कि जोड़ते जाईं
आ घटाव से कबहीं पाला ना पड़े

जनम ले ले बानी त मरनी से कइसन डर ।

(तीन)

धरम का नाँव पर जारी रही उत्पात कहिया ले
डेराई आदमी से आदमी के जात कहिया ले !

कबो घाटी, कबो जंगल से आई गाँव में हमरा
तिरंगा में लपेटल लाश के सौगात कहिया ले !

हटा के वाम-दक्खिन के मुखौटा मूँह से अपना
कहे के लूर सीखी लोग सौतुक बात कहिया ले !

कि आतँकवाद के करिहाँइ कबहूँ सोझ ना होखे
पड़ी जेहादियन का पीठ पर ऊ लात कहिया ले !

दुलरला से कबो आदत ना छूटे काँट-कूसन के
नकरबऽ तूँ भला एह् बात के, हे तात, कहिया ले !

सभै चाहत बा अब उनुका के चंडीरूप में देखल
रही बन के भला माँ-भारती मुस्मात कहिया ले !

पुजाई पाँव कबले ए 'शशी'! अलगाववदियन के
दिया के सामने सूरुज चिआरी दाँत कहिया ले !

❑ – प्रवक्ता (अंग्रेजी) कुँवर सिंह
इन्टर कॉलेज, बलिया

(दू) पियार

ओइसे त हमरा जिनगी में
पियार कबींह ना दिखलस
जइसे पानी के ऊपरे
तैरेला तीसी के तेल

पियार हम ओइसनो ना कइनी
जइसन हिंदी के बम्बइया फिलिम
में करेलन हीरो-हीरोइन

पियार से दनाइल रहत रहीं हम
हर बखत, हर मोहड़ा पर जिनगी
के बनावत कुछो अउरी खबसूरत
बे हो हल्ला के

पियार हमरा खातिर
गुलामी ना रहे
आउर जरूरत से जादे आजादियो ना रहे

पियार करते करते हम बनवले
रहीं तिनिका तिनिका जोड़ के खोंता
आ दूर देस से ले अइनी ओकरा भीतर दाना

हर मउसम के कइनी मुकाबिला
साथे लड़नी
साथे हँसनी रोअनी जा
हर मोरचन पर

केतना बार सोचनी
अलगा होखे के बारे में
लेकिन हरदम ना होखे पावल
जइसन लागल
मछली से पानी लेखा

(तीन)

बबुआ के लोरी

एकदमे हलुवा जनि बनऽ
बबुआ कि
सराह- सराह के
झूठ्ठो
बिना दाँतो वाला
घोंट जाय तोहरा के
छन भर में
चुभला -चुभला के

नरम चारा
जनि बनऽ
कि दलदल में ठाढ़
कंगन वाला बूढ़ शेर के
तराना कि फसाना
जनि सुनऽ

मारे केहू चटकन
तोहार
एगो गाल प
त दोसरका गाल सामने
जनि करऽ

ई परदेस ह बबुआ
देखि के केवनो सूरत
भोला-भाला
जनि करे भरोसा
तुरन्ते

कहे कोई अपना के
सँघतिया त
समझऽ ओकरा के घाती

नदियने में नइखे भरल
खलिसा गाद
इंसानी दिलो में
भरि गइल बा ऊ

किंचराइल आँखिन के
तनिक ठीक से
धो लऽ बबुआ
फरिछ पानी से
ना त फजीरहीं
खोजे लगबऽ
आसमान में
साँझवाला चंदा

माई-बाप
गाँव-जवार के
रखिहऽ इयाद
जरूर बबुआ
ना त बनि जाई शहर
तोहरा खातिर
गला के फंदा

केतना गो बात बा बाकिर
अंत में एगो बात अवरू
रखिहऽ काबू में हरमेस
जीभ आ ...के
मोर बबुआ
ना त केहू ना
बचा पाई
तोहरा के उजड़े से
हे ! हो !! मोर बबुआ !!!

❑ 631/58, ज्ञान बिहार कॉलोनी,
कमता, लखनऊ- 226028

खेतिहर के जिनिगी

☑ हीरालाल 'हीरा'

कबों न सोचले खेतिहर काका
का बा एह जिनगानी में !

बरखा होखे , चाहे घाम
फुरसत कहवाँ , हरदम काम
लिहले लाठी अउरी टारच, चलि दिहले निगरानी में!
खेत अगोरत राति कटेले पाझा अउरि पलानी में!!

पूख -माघ के पाला - ठार
खेती के पटवनि के मार
भय से भागे जाड़ो - पाला , जब ढुकि जालें पानी में!

अनगिन सपना बिघिन हजार
सबकर चिन्ता लदल कपार
रहि- रहि सूखा - बाढ़ सतावे , जिउ हाँफे हलकानी में!

कतनो नाच नचा ले भाग
घटे न खेती से अनुराग
माटी सँग मनवाँ के डोरी , जा अँटके खरिहानी में!

खेत अगोरत राति कटेले पाझा अउर पलानी में !
का बा एह जिनगानी में!!

❑ बुलापुर पो0 शिवरामपुर, बलिया

मनोज भावुक के दू गो प्रेम-गजल

(एक)

रूप के धाह में जरा गइलू
बाप रे बाप ! तू मुआ गइलू

अनसोहातो तू मुस्कुरा गइलू
मन के छुअलू आ मन के भा गइलू

हम त सुख-चैन से रहीं जीयत
राह में तू कहाँ से आ गइलू

हम जमाना से दूर हो गइनी
जब से हियरा में तू समा गइलू

आज मन बा उदास भावुक के
अच्छा कइलू कि पास आ गइलू

(दू)

आज हमके मुआ देले बाड़ी
रुख से पर्दा हटा देले बाड़ी

आज अच्छा कटी दिन बुझाता
भोरहीं मुस्कुरा देले बाड़ी

मैकदा आज जाए के नइखे
आंख ही से पिया देले बाड़ी

मन शरारत करे के करत बा
ऊहो त कनखिया देले बाड़ी

कुछ त सुलगत बा, पिघलत बा अंदर
आग अइसन लगा देले बाड़ी

अब बुझाता कि जीये ना दीहें
हमके पागल बना देले बाड़ी

लब सियल बाटे लब से ए 'भावुक'
लब से लब के सटा देले बाड़ी ●●

अशोक कुमार तिवारी के एगो कविता

लोट न थारी दाल-भात खाब।
गोड़ में बाई टहरे जाब।

अपने मारऽ चाभ-चभक्का,
हमरा मूँहे डारऽ जाब।

रद्द उड़ान हमार रही सब,
तहरे पाँख लगल सुर्खाब ।

हम्म रहीं बस ढोंढ़ा-मंगरू,
तू रहऽ अक्षय-अमिताब।

तहरे तऽ मानत गइलीं,
अब केतना ले मानीं साब।

सुभाष पाण्डेय 'संगीत' के तीन गीत

(एक)

बेंड़ल बजर किंवाड़ , यार अइले, चलि गइले!
ना सुनि परल पुकार, यार अइले,चलि गइले!!

सूरज - चन्दा की जोती से , तरइन का झिलमिल से
शान्त गगन का मौन सुरन से ,पर्वत विश्व अखिल से
हँसि - हँसि करत गुहार, यार अइले ,चलि गइले !

पवन बसन्ती उनके चिट्ठी लेके आइल दुअरा
उपवन गन्ध उड़वलस पहुँचल प्रान रंध्र का नियरा
सब कुछ देल बिसार , यार अइले , चलि गइले !

चहकत चिरइन की बोली में राग मिला के गवले
बालक बनि हँसले , एने से कुछ ना आहट पव
खुलल न भुज - अँकवार , यार अइले ,चलि गइले!

खिड़की ऊपर इन्द्रधनुहिया परदा रोजे तननी
के आइल , के हाँक लगावल भर जिनिगी ना जननी
तकनी ना आँखि पसार , यार अइले ,चलि गइले !

(दू)

तोर नइहर से आइल हई बदरी
भिंजावे मोरि पगरी धनी !

होके पुरुआ सवार ,घेरे अँगना दुआर
घूमे गाँव , खरिहान, सारी नगरी
भिंजावे मोरि पगरी धनी!

सँगे बिजुरी सहेली, घूघ काढ़ि बिहँसेली
मारि कनखी लुकाइ जाली कगरी
भिंजावे मोरि पगरी धनी !

चढ़ि रहेली कपारे ,भोरे,साँझि भिनुसारे
ना बिचारे घेरि रोकि देली डगरी
भिंजावे मोरि पगरी धनी !

आजुआ महुअरि बनावऽ खुद हाथ से खियावऽ
ना त आइ रोज - रोज इहो झगरी !
भिंजावे मोरि पगरी धनी !

(तीन)

नीक लागे शहरी मसाला
ना इनका गँउंवाँ सोहाला हो !

देखि कुदार कँहरनी घेरे, हँसुआ देखि मियादी
खुरुपी खून सुखावे जइसे, माटी लगी ,मुआ दी
तब कइसे भेंटाई निवाला,न इनका गँउंवाँ सोहाला हो !

टेक्टर देखि सरेन्डर बोले, हर ना पकड़े हाथे
सुनते सोहनी नाक सिकोरे, बोझ न ढोवे माथे
बिन दीया मनावे उजाला,न इनका गँउवाँ सोहाला हो !

रेक्सा खींचे पटना जाके ,बम्बे में दरबानी
नाला कगरी भइल बिछौना,पन्नी बनलि पलानी
इहाँ घर में लगल बड़ ताला, न इनका गँउवाँ सोहाला हो!

खेते उपजल मोथा दूबा, दिल्ली में बगवानी
सोना त्यागे , लोहा खोजे,खुद से करि बेइमानी
भुंइँ पुरुखा के जोगवल बिकाला, न इनका गँउवाँ सोहाला हो !

चल-चित्र

राकेश कुमार पाण्डेय

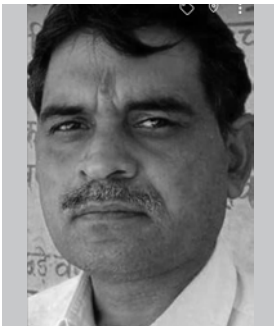

जेठ के खरात देखा-सावन के भभात देखा-
धान के सुखात देखा-खेती सिसकात देखा-
भादों के लजात देखा-सूरुज क घात देखा-
चढ़ते कुआर घाम-सगरो लुकात देखा ।

आवा बरसात देखा-नद्दी उत्पात देखा-
बरखा छछात देखा-खेतिया बिलात देखा-
आवा आवा गाँव देखा-दउ क गुमान देखा-
बढ़िये में डूबि गइल-सगरो सीवान देखा-

झुन्डे-झुण्ड साँड़ देखा-गऊ अपमान देखा-
लाठिये पीटात हाँकत-सबही किसान देखा-
जीविका क नाश देखा-पशुधन विनाश देखा-
दूध दही घीव बिना-मंठा उदास देखा-

पशु बिना गांव देखा-बकरिन क भाव देखा-
तास खेलत खलिहर के-बतिये में ताव देखा-
ईंटा के मकान देखा-थपुआ निशान देखा-
झिंगुरी के दुअरा पर-कुकुरा क शान देखा-

कोटा क दुकान देखा-लूट परधान देखा-
मुफुतखोर बढ़ि गइल-जेकर नुकसान देखा-
मनरेगा लीक देखा-भ्रष्टाचारी सीख देखा-
कवनो काम नीक देखा-सेतिहे में भीख देखा-

गांव क सड़क देखा-गन्दगी नरक देखा-
शौच क धड़क देखा-हया क सटक देखा-
गाँव क पनारा देखा-रस्ता किनारा देखा-
बड़-बड़ नारा देखा-दिनहीं में तारा देखा-

इहो बदलाव देखा-मुर्गा दारू-भाव देखा-
घरे-घरे पिये वाले-नइखे दुराव देखा-
गांव ना गँवारू देखा-लुग्गा मेहरारू देखा-
डागी-कैट कहत बाड़ीं-बड़हर जुझारू देखा-

भोज-भात भारू देखा-डीजे कान फारू देखा-
बफर खियावत खात-इहें कतवारू देखा-
नाउ नउवान देखा-धोबी-धोबियान देखा-
गदहा ना लउके कहीं-सगरो सीवान देखा-

घरे-घरे मोटर देखा-जतिये में वोटर देखा-
भर-भरसांय कहां-सपने में ओखर देखा-
केतना बखान करीं-चिंता में त हाम मरीं-
लेकिन भइया देखि-सुनि-खाली राम-राम करीं-

केकर बिसास करीं-देखि के विनाश डरीं-
पोखरी ना पोखरा बा-इनरो उड़ास मरीं।
कतहूँ न भाव बा सगरो त ताव बा।
का हम करीं पन्चो मोर अइसन सुभाव बा।

गांव-हुरमुजपुर, पोस्ट-हुरमुजपुर, वाया-सादात,
जनपद-गाजीपुर,उत्तर प्रदेश, पिनकोड-२७५२०४
मोबाइल नंबर-9621279965

अरामी हिन्दू

☑ डा0 ओमप्रकाश सिंह

(एक) अरामी हिन्दू .....

भउजी हो !

का बबुआ ?

तू सनातनी हिन्दू हऊ कि अरामी हिन्दू ?

हम बूझनी ना ? का पूछल चाहत बानी ?

इहे कि तू सनातनी हिन्दू हऊ कि अरामी हिन्दू ?

सनातनी त बुझनी, बाकिर ई अरामी का होला ? हरामी कहल चाहत बानी का ?

ना भउजी, गरियाइब काहें तोहरा के हरामी कहि के ? गाली गलौज के भासा सभ्य समाज में इस्तेमाल ना होखे के चाहीं। हम त अरामी कहनी ह, अरामी माने जेकरा राम में विश्वास ना होखे, जेकरा अपना सनातन संस्कृति से प्यार ना होखे। हँ, अब बतावऽ कि तू सनातनी हिन्दू हऊ कि अरामी हिन्दू ?

ए बबुआ हमरा सोच से त सगरी हिन्दू सनातनी होलें। जे सनातनी ना हवे से हिन्दुओ ना हो सके. बाकिर एह सवाल के जरुरत काहें पड़ गइल ?

एहसे कि आजु ई सवाल सभका के सभका से पूछे के चाहीं ?

फेरु पूछब, काहें ?

एहसे कि आजुकाल्हु हिन्दुस्तान में एगो विपक्षी गिरोहबन्दी हो रहल बा आ ओकरे एगो बरियार गुरगा काल्हु आवाज उठवले बा कि सनातनियन के जड़मूल से उन्मूलन कइल जरुरी हो गइल बा. आ एकरा खिलाफ ओह गिरोह में से केहू का मुँह से बकार नइखे निकलल.

अइसन काहें बबुआ ? हिन्दुस्तान में रहि के हिन्दूवन के विनाश करे के केहू कहल त दूर सोचिओ कइसे सकेला ?

एहसे भउजी कि हिन्दुवन में अरामी हिन्दुवन के तादाद सनातनी हिन्दुवन से कई गुना बा आ ओह इण्डि गिरोह के पूरा भरोसा बा कि अरामी हिन्दुवन के अपना साथे मिला के सनातनियन के विनाश आराम से कइल जा सकेला।

ए बबुआ, ऊ जमाना चलि गइल जब खलील मियाँ फाख्ता उड़ावल करसु आ भर गाँव टकटकी लगा के देखत रहुवे. अब हिन्दुओ अपना सनातन खातिर जागे लागल बाड़ें।

ना भउजी, अइसन नइखे. हिन्दू अइसन नींद सूतल बाड़न कि ओहनी के जगावल आसान नइखे। भा इहो कहि सकेलू कि सुतलका के जगावल जा सकेला बाकिर सूते के बहाना कइले के जगावल असंभव होला. अगर हिन्दू जागल रहतन त आजु पूरा देश में, हर टीवी चैनल पर, हर अखबार में, हर गोल में सनातनियन के उन्मूलन के बाति करेवाला का खिलाफ जम के हल्ला भइल रहित।

ई त गंभीर चिन्ता के बाति बा.

हँ भउजी, उमीद कइल जाव कि जल्दिए एकर खण्डन–मण्डन आवल शुरु हो जाई।

(दू) चरचा साहित्य, समोसा आ शेयर के

साँच कहीं त एकर जरुरत ना होखे के चाहीं कि भोजपुरी में लिखल कवनो लाइन के अंगरेजिओ में बतावे के पड़े. बाकिर हमनी के नयका पीढ़ी भोजपुरी से गँवे–गँवे अतना दूर होत गइल बा कि ठेंठ भोजपुरी ओकरा पल्ले ना पड़े. हमरे जान–पहिचान के निकहा लिखल–पढ़ल लोगो जब–तब हमरा के टोकत रहेला कि अतना ठेंठ भोजपुरी लिख दिहींलें कि कई बेर बुझइबे ना करे आ दिक्कत ऊपर से ई कि इकर माने देखेला हमनी का लगे कवनो शब्दकोशो ना रहे। एही बाति के नजर में राखत एक त कोशिश करीलें कि भरसक सहजे शब्द लिखल करीं आ अगर जरुरिए हो जाव कि कवनो ठेंठ दृ शुद्ध दृ शब्द लिखहीं के पड़े त ओकर माने बतावत शब्दो लिख दीहल करीं. एकरा के दोहराव का नजरिए से ना देखि के अइसे देखीं कि एही बहाने कुछ ठेंठो भोजपुरी प्रचलन में बनल रही.

एने कुछ दिन से हम कवनो ना कवनो लेख में शेयर बाजार के चरचा करत रहीलें. अब रउरा कह सकीलें कि बड़–बड़ जने दहाइल जासु, गदहा थाहे कतना पानी ! जानत बानी आ मानत बानी कि शेयर बाजार के चरचा बड़का–बड़का चतुर–सुजान (Well versed) लोग चैनलन पर, टीवी चैनल होखे भा यू ट्यूब, परोसत रहेलें. कई बेर ओह लोग के सुझाव सही साबित होले आ कई बेर गलतो. एकर मतलब ई ना कि ओह लोग के जानकारी भा विद्वता में कवनो कमी बा, भा ऊ लोग रउरा के नुकसान चहुँपा के आपन गोटी सोझ करावत रहेलें. कई बेर एकरा के एह तरह से देखीं कि रसोईया आपन बनावल–पकावल चीख के देख लेला आ नीमन लागल तबे रउरा के परोसेला. बाकिर बनावे आ परोसे का बीच अगर समय लाग गइल त हो सकेला ओकर सवाद रउरा नीक ना लागो.

एगो समोसा के दोकान पर गाहक शिकायत कइलसि कि समोसा महक गइल बा. काल्हु वाला त बहुते सवदगर रहुवे. दोकानदार जबाब दिहलसि मालिक काल्हुवे वाल नू हऽ, अब आजु रउरा नीक नइखे लागत त का कहीं !

त अकसरहां ऊ चतुर–सुजान लोग शोध करत रहेला, देखत रहेला कि कवन शेयर कवना दिसाईं बढ़ रहल बा. जब कन्फर्म हो जाला कि ओह लोग के अनुमान सही बा तब ऊ लोग एह जानकारी के परोस देला. अब उनुका का मालूम कि एही बीच कुछ अउर लोग के लागल कि अब मुनाफा काटे के समय हो गइल बा आ ऊ लोग कटनी में लाग जाला. आ तब चढ़ती के शेयर गिरती के शेयर बन गइल रहेला आ रउरा लाग सकेला कि ससुरा फँसा दिहलसि !

बाकिर तनी इहो सोचीं कि अगर आए दिन ओह चतुर–सुजान के सलाह गलत साबित होखे लागी त ऊ कतना दिन ले चैनल पर बनल रह पइहें ?

बीच बतकही एगो अउरी क्षेपक–

रउरा देखत–पढ़त होखब कि कबो हम जान के जानि, सोच के सोचि, आज के आजु, बात के बाति, बोल के बोली वगैरह लिखत रहीलें. त बतावल जरूरी बा कि ई टाइपिंग के गलती ना होखे. साँच दृ साँचि, कहीं त इहे सही होखे के चाहीं. भोजपुरी में अर्ध–ह्रस्व आ दीर्घ–दीर्घो होखल करेला जवन हिन्दी में नइखे. आ हमनी के सगरी शिक्षा–दीक्षा हिन्दी में भइला का चलते एह हलुका अन्तर के ना समझि पाईं सँ.

अब फेरु मूल–चरचा पर लवटल जाव. अगर चतुर–सुजान आएदिन गलत पड़े लगीहें त ऊ कतना दिन ले बाजार में रहि पइहें ? लवटति के टिकट बिना कटवलहीं लवटि जाए के पड़ी. असल में चतुर–सुजान सलाहकारो लोग चार्ट पर लगावल संकेतकन दृ पदकपबंजवते दृ का तरह होलें. अधिका बेर सही बाकिर बीच–बीच में गलतो होखहीं के बा उनुका. बाकिर संकेतक आ चतुर–सुजान के सफलता एही में बा कि उनुका अधिका बेर सही साबित होखहीं के पड़ी.

रउरो लागत होखी कि आजु के बतकही तनिका लमहर हो गइल. हमरो इहे लागत बा. एहसे ढुका मत लगीं आ तिकवले रहीं कि अगिला बेर कब आएब. भोजपुरी के कथा–कहानी, खेत–खरिहान, बरखा–बूनी से ऊपर ला जाए के बा त भोजपुरी में कुछ सामयिको चरचा होखत रहें के चाहीं. सामयिक चरचा में एक त राजनीति आई आ दोसरका शेयर चरचा. राजनीति कुछ देके ना बलुक लेइए के जाई बाकिर शेयर चरचा हो सकेला कि रउरा के कुछ देके जाव.

आ पंडित जी पूजा–पाठ करावे आवत रहसु एकरा ला इहो जरुरी बा कि कुछ–कुछ दक्षिणो देहत रहीं. ना त कहिया ले आवत रहिहें ? कुछ दक्षिणा हमरो बनेला ! देबे के मन करो त दान–पात्र में डलले जाईं ! अँजोरिया, डाट, कम

(एक) सहज साँच अनुभूति करावत 'धरती-राग'

(सन्दर्भ- "कुछ आग कुछ राग", अशोक द्विवेदी, 2014ए विजया पब्लिकेशन, दिल्ली, मूल्य-200). प्राप्ति स्थल- 17 डीएसआईडीसी, स्कीम-3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020)

डा0 रामदेव शुक्ल

भोजपुरी में लिखाई के बाढ़ि, आ गइल बा । जवन लोग पढ़ि लिखि के बुधिआगर होके सहरी हो गइल रहलें आ भोजपुरी बोलले में लजात रहलें, ऊहो लोग अपने समाज में भोजपुरी बोलल आ भोजपुरी में लिखल सुरू कइले बा। सबसे ढेर लिखात बा कविता । कविता एतना लिखा रहल बा आ एइसन लिखा रहल बा कि कवनो भाषा के पछाड़ि दे। कसरि एतने बा कि भोजपुरी कविता लिखे आ गावे (बजावे) वालन के गँउवों बंबइया फिलिम वाला 'बहुते नीक लागे वाला गाँव' बा । नवका चालचलन वाला गाँवन के हालि जे लिखि रहल बा, ऊ अखबारन में छपल लूट खसोट, मारलमुवावल, जेलकुल्ली के चोरी छिनारी आ अधरम के कुकुरकथा लिख रहल बा । कवन गाँव एइसन रहि गइल बा जवने में शराब, ताड़ी, गाँजा, स्मैक, गुटका, गुल, मुर्गा, अंडा नाहीं विकात होखे। मोबाइल पर अदिमियो नाहीं जनावर जो के कुलि करतब देखल जा रहल बा, दुर्गापूजा में आ फगुवा में ट्राली पर लइकी नाचि रहलि बाड़ी। जवन–जवन कुकरम कऽ के सहरी लोग थाकि गइल बा, ऊ सब, अब गाँव में हो रहल बा। तब ? जेकरा गाँव से आ गाँव की बोली बानी से नेहछोह के नाता नइखे, टूटि पावत ओकरा का करे के चाही?

चलीं, तनि इतिहास कावर ताकल जाव। आजु से एक सौ छव बरिस पहिले, महात्मा भइले से पहिले, गाँधीजी एगो किताब लिखलें 'हिंदस्वराज' ओमें उनकर ई सोचान परगट भइल कि भारत के आजादी तब्बे मिली आ टिकल रही, जब गाँव के रहवइयेन के जिनगी के रहनी ठीक से पहचानि के पढ़ल लिखल लोग ई समुझे लगिहें कि अन्नदाता किसाने हवें आ किसान गँउवें में रहि सकेलें। एसे गाँव के मनमिजाज समुझे के जरूरत बा। किसान प्रेम करेलें– घरती से, बैलबछिया से, पेड़पालो से, हर कुदार से, घरपरिवार से, नातहीत से, अरोस परोस से आ ओह सवकुछ से, जे एह धरती पर जीव के सिरजना में मददगार होला। प्रेम ऊ अमिरित हवे, जवन मुवलो के जिया देला। जरूरत, ओके देहि से देहि लेके एक्के रूप तक ले छोटहन ना कइके, ओह सिवान– सरेह तक ले गइले के बा, जहाँ कबीर लेके गइल रहलें। देहि के परेम घिनाए वाला नाहीं होला, ओही से कढ़ावल जाला ऊ राग जवन पहुँचेला अनहद के देस तक ले ।

हम बहुत दिन बाद भोजपुरी के एगो (कविता–संग्रह पढ़ि रहल बानी "कुछ आग, कुछ राग", लिखवइया हवें अशोक द्विवेदी । आपन गाँव छोड़ि के परदेस में रहला पर उनका बुझात बा कि– "जइसे सुर गूँजेला अकास में धुन लहरेला बतास में। जइसे गरमी आग में बा हम, तहरा में रचल बानी.... हम तहरा ओठन प' अचके आ जाए वाला गीत हईं/ थिरक उठे जवना पर/ तहार देह ऊ आदिम संगीत हईं/ मीता, जइसे पानी के चाहेला बहाव हमार प्रेरना ह, तहार लगाव ।"

महानगर में रहि के कवि आपन चिन्हार (चिन्हासी) बता रहल बा–

"जइसे गुड़ में रहेला मिठास/ आ मरिचा अपना तिताई से जनाला/ जइसे धान के देस पुअरा से चिन्हाला/ हमार पहिचान तोहसे बा।" ई परेम केतना खदिगर उपजाऊ खेल बा, जवने के सिरजना से के नइखे अघात ?

"तहसे से पूर होला हमार सिरजन। तोहरे से सजेले हमार कल्पना/ आ रचेले अइसन संसार– जवनें में खुश रहे जिया जंतु, चिरई–च्युंटी सब/ केहू ना रहे छछाइल। सबके मिले दाना पानी/ सभे लउके अघाइल ।"

ई प्रेम हऽ जवने में सबके जुड़वा दिहले, सबके अघा दिहले के समाई टोला। लोहासीमेंट के जंगल में, अफनाइल परान के पुकार सुनल जाव–

"तोहसे दूर इहाँ परदेस में/अपना चिन्हारी खातिर हम न जाने कबसे घुमड़त बानी/ बन्हले अँकवार में समुंदर उमड़त बानी। हवा के कवनो तेज झोंका आइत आ उड़ा के पहुँचा देइत अपना देस। अपना माटी पर। 'मीता' एगो देहि नाहीं हई, गाँव के रूप–रस–गंध–स्पर्श–भरल आत्मा हई। ई अनगिनत रूप में ओके जुड़वावेली, जेकर जियरा इनसे जुड़ल रहेला। एक रूप सुघर धरनी के हऽ।

"जब कबो चिन्ता के रेघारी । उभरेले हमरा माथे
कहेली हमार घरनी । 'थिर राखी मन/ लौना अस मत जराईं देह! जीव आ जिसका जोगवला के हऽ। जरवला के ना ।" जे गाँव से जुड़ल बा ऊ, जानत बाकि दू चीज एक्के, लेखा जोगाके, सहेजि के, सँहारि के राखल जाला–एगो जीव आ दुसरका जियका । जीव परान् हऽ आ जियका हऽ परान के राखे वाला। लवना कहल जाला ओह सब कुछ के, जेके जरा के चूल्हा जरावल जाला। इहाँ कहल जात बा कि जीव आ जियका जोगा के राखल जाला, जरावल नाहीं जाला। किसान लोग के बीच कहाउति कहल जाले– 'जीव आ जियका एक्के हऽ।' उपनिषद की भाषा में अन्न के ब्रहन कहल जाला । अन्न उपजावे वाला जानेलें कि जियका जीव से अलगे नइखे ।– रीसि बरले पर– बरिजेली "थिर रहीं, तनि सेरवाईं। अगिन के भितरे। घेर दीं विवेक (काजल) से । चढ़े मत दीं कपार पर आँकुस में राखीं मन.... ईहे रउरा के, आग का उपदरों से बचाई।"

ई तऽ आग, राग आ बिबेक के आपसी नाता। मन में राग अउर आग सथहीं रहेला। बिबेक के जल से सेरवावल जाके आग सृष्टि के चलावे वाला ऊर्जा बनेले आ अविवेक से लहकि के सब कुछ के–रागो के –विधंस क देले। रिसिया नेवरले के बाद बुझाला कि – "घरनी हमार/ उमगत जल के सीतल सोत हई। जेकरा निगिचा आमि से निकलत लवर/ आ लवर से निकलत आँच दूनो अपरूपी सेराई जाला। हमरा अगिन के जइसे ऊ जोगवत होखसु/ बेर बेर जताई के नेह/ जइसे सिद्ध करत होखस कि जतना पिपासल रहेले हमार पियास ।

ओतने पिपासल रहेला। उनका भीतर से उमगत जल !

ई बिबेक के जल हऽ जेवन 'राग' आ 'आग' दूनू के सीतल करेला । पियासल पिपास के विरोधाभास कवनो उलटबांसी नाहीं हऽ कबीर के आपा खोइ के बोलल बानी हइ जवन आन के सीतल करेले आ अपनहूँ सीतल होले।

जब हियरा प्रेम में रसलाबसल रहेला तब कइसन अजगुत बिंब से सिजन होला ।

''सुधि का सुगंध से । गमक उठेला जब बतास । छान्ही पर एकदम ओलरि आवेला अकास.....तहार सुधि अवते लहरे लागेला ताल/ फूल, टूसा– कोंढ़ी से लेके रंग/ सँवरेले कल्पना बन के तितली दउरेले/ पँखुरी पँखुरी.....

तहार सुधि/ फुनुगी से लटकल लालमुनि चिरई
झूलि झूलि उड़ि जाले/ हिलत छोड़ कंछी डाढ़ि के!''

एह कविता में सुधि के जेतना अजगुत बिम्ब बनल बा, ऊ पढ़वइया सुनवइया के भितर की आँखि के आगे नाचि रहल बा। फुनुगी से लटकल ललमुनिया के झूलत रहल आ कंछी हिलत छोड़ि के उड़ि गइल, पढ़वइया सुनवइया के ईहो बता रहल बा कि उमड़त घुमड़त भाव आ कल्पना कविता में कइसे रस भरेले । अशोक द्विवेदी भोजपुरी भाषा के सुकुवार सुभाव आ रचान के पुरहर उपयोग कइले में समरथ बानें, एकर परमान उनकी कविता में जवने लेखा मिलेला, ओइसन बहुत कम कवि लोग में लउकेला । एगो भाषा होला जइसे भोजपुरी आ एगो काव्य–भाषा होला जवने के कवि लोग रचेलें । भाषा विरासत में मिलेले आ काव्य–भाषा कवि रचेलें। एही से हर समरथ कविके आपन काव्य–भाषा होले। 'प्रेम कहानी' कविता में देखल जा सकेला कि अशोक द्विवेदी कइसे, आपन काव्य–भाषा रचेलें।

"सबद सबद हम साधत बानी/ भीतर अगिन नयन भरिपानी ।
अरथ उरेहत, रचि ना पवलीं/ अबले आपन प्रेम कहानी।"

सबद सधले रहलें कबीर । उनके कहाव रहल–

'सबद सहारे राखिए, सबद के हाथ न पाँव ।
एक सबद औषद बने, एक सबद बने घाव ।।'

जे सबद के सम्हारि लेला, ओके सबद सम्हरले रहेला । ईहे हालि 'प्रेम' के हवे । जे प्रेम के सम्हरले रहेला, ओके प्रेम सम्हारत रहेला । ईहे कहानी धरम के ह । जे धरम के सम्हरले रहेला, ओके धरम सम्हरले रहेला। एक लेखा तीनों एक्के हवें।

'भीतर अगिन, नयन भरि पानी' पढ़ते महाकवि जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' के छंद मन में उतरि आइल ।

शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन रोता दृग–जल का।
यह व्यर्थ साँस चल चल कर करती है काम अनिल का ।।

कइसे भाषा से काव्य–भाषा बनेले!

''बून कि जस गिरि ताल सरोवर/ नदिया सागर मिलि जाले
अछरे– अछर सबद बनि भाखा । अकथ उचारत खिलि जाले।"

प्रेम में बूड़ल रचना में ऊ लिखा जाला, जवने के न कहल जा सकेला, न उचारल जा सकेला । कबीर एही से कहि गइलें – अकथ कहानी प्रेम के।

काहें, कवि के ई बुझात बा कि आपन प्रेम अबहिन रचि नाहीं पवलें? अपरूप सुनरता पर काम के रीझन से अनुराग भरल सिरजना त हो जाए के चाहीं, तब कसरी का रहि गइल?

''रति अपरूप काम के रीझन/ सिरिजन में अनुराग समाइल''

पर नेवछावर हो दुसरा पर/ तवने भाव–सुभाव न आइल ।
जवन करे कहनी संपूरन/ भइल न ओह शिव के अगवानी ।।

(कहनी) प्रेम–कहानी तब संपूरन होई जब सबके मंगल करे वाला शिव–भाव आ जाय । प्रेम अलगावत रहे, तबले, ओकर कहानी पूरन होईबे नाहीं करी। आन आपन के फरक मेटा के प्रेम पूरन होला आ सब के खलिहर भरि देला। सबके मंगल करेला।

''खुशी भा प्रेम/ मुट्ठी में ना बन्हाय
ओनहल बादर अँजुरी में ना समाय

खाली ओके रोपल जा सकेला/ दीठि का अँगना में हिया का अँजुरी में/ फेरू ओके उलीचि के दोसरा पर पावल जा सकेला सुख/ खुशी आ प्रेम !

बान्हे के ना, लुटावे के चीज हऽ।''

मक्खीचूस लोग जवन धन पाबेलें, गठरी बान्हि के घऽलेलें। इहाँ कहल जा रहन बा कि खुशी आ प्रेम जेतने लुटावल जाई ओतने बढ़त रही। जेतने छिपावल जाई ओतने घटत रही।

मानुस प्रेम बैकुंठी तब हो जाला जब ओकरे अँकवार में जीव जंतु चिरई चुरुंङ सभे समा जाला। एह मामला में अशोक द्विवेदी हजारन पीढ़ी से गावल जाए वाली गीतिन के नवका संदर्भ देके रचि रहल बानें। गाँव अब सहर बनत जात बा। चिरई कहाँ बास लेव ? गौरेया के रहे के जगह कहाँ बा? घर के पुरनिया के फिकिंर हो गइल बा कि चिरइया काहें पहिले की लेखा घर–अँगना में खोंता नइखे बनावति? सोझे ओही से पूछि रहल बाड़ी।

"उड़ि उड़ि फुदुकेली छन्हियाँ/ न उचरे अँगनवा नु हो चिरई, काहे दूनी भभतेली जइसे कि/ हमनी का आन भइलीं हो।

उहे हउवे गँउँवा–गिरउवाँ/ ओसरवा दुअरवा नु हो
कवने अमनख चिरई न उचरेली। मइया हरान भइली हो ।

अपने आप चिरई के दुख अमरख के कारण समुझि के कहऽतारी–

कटि गइली दुअरा के निमिया। इनरवा भठाइ गइलें हो
बुझला एही दुखे चिरई दुखइली/ निपट अनजान भइली हो
जब कारन बुझि गइली तब उपाइ सोचि लिहली !
धइ के कटोरवा भरल जल/ मइया अरज करें हो
चिरई होइ जाला भूल चूक सबसे/ न हमहूँ घेयान धइलीं हो ।

जइसे रूसल बेटी के पोल्हावत होखें, कहत बाड़ी–

"फेरू नया गछिया लगाइब/ पनिसरा चलाइब हो
धिया करीं का, जँगरवो बा थाकल कि
हमहूँ पुरान भइली हो ।"

एह गीत से कवि के नाँव न जुड़ल रहित 'निबिया के पेड़ जनि कटइह कि निबिया चिरइया बसेर' जइसन पुरनका लोकगीत मानल जा सकेला । केहू कवि के एसे बड़हन लालसा ना हो सकेला कि, ओकर रचना लोकगीत बनि जाव । अशोक द्विवेदी के कई गीत एह लेखा लोक में गावल जाई।

लोकगीत जहाँ बा जवने बोलीबानी में, ओकर पहिलका नाता श्रम से बा । जँतसार सोहनी, रोपनी, कटिया,

दँवरी, सिकार कवनो न कवनो कठोर श्रम से ओकर नाता बा । अशोक द्विवेदी के 'कर्म–गीत' परंपरा के सुमिरन बनि गइल बा ।

''सरधा सनेह सरस रही जेतने/ ओतने हँसी बखरी
देहियां से ढरी जहाँ स्रम के पसेनवा/ उहंवें सरग उतरी ।
तीन पीढ़ी एक्के साथ कइसे मड़ई के 'राम मड़इया' बना देले– मटिया के पयवा धइल घरनियाँ/ बाबा अस रोके बलाय/ दूनोपाटे बबुरे क थुन्हिया लगावल/ बाबू जी के कन्हिया बुझाय/ ताहि तर ओरमल राम मड़इया/ नेहिया के घर बनि जाय । माई अस मयगर निमियाँ क छँहियाँ/ काहें नाहीं चैन परी ?
चढ़ते किरिन लागी तीखर घमवाँ/ अगिया में देहियाँ जरी
याद आई निमिया के छोहगर छँहिया/ माई नयन–बदरी ।
करमे के धरम बनावत जिनिगी/ रुकी नाहीं एको घरी
अगिया में जेतने तपत जाई सोनवा/ ओतने अउर निखरी ।
दहियाँ से ढरी जहाँ स्रम के पसेनवाँ । तहवें सरग उत्तरी ।''

मध्यकाल के कविता में मुअला के बाद सरग मिलले के बड़ा लालच दीहल गइल बा । आधुनिक कविता में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त 'साकेत' महाकाव्य में 'राम' से कहवा रहल बाड़ें–

मैं नहीं सँदेसा यहाँ स्वर्ण का लाया ।
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया ।।

धरती सरग कइसे बनी? पसेना बहवले से। अशोक द्विवेदी एह रूप में 'करम के धरम बनवले' के महिमा गावत बानें। भोजपुरी इलाका में सदईं से परदेस जाके कमाए वाला जवान आ गाँव में आपने जवानी अकेले बितावे खातिर मजबूर घरनी के बिथा कहल सुनल आ गावल–रचल जाला । अशोक द्विवेदी विरहिन के दुख रचत रहेलें, एह रूप में कि जे नइखे ओकरे बिना केकर केकर कवन हालि हो रहल बा।

"तूं जल्दी लबटि आवऽ/ बहुत उदास बा घरदुआर
बहुत उदास का मुनवाँ/ साँझि होते डँकरेले तहार चितकबरी ।
कान उठा के आपेले तहार आहट/ रहेले आकुल व्याकुल ।
दूध त कम देइए रहल बिया/ अब बछरूओ के नइखे पिये देत ।

घर परिवार गाइबछरू सबके दुख बतवले कि बाद अपने तन–मन के दरद उगिल रहल बाड़ी ।–

हमरो मन बहुत उदास बा एघरी/ काटे धावत बा घर दुआर तहरा बिना/ जून–कुजून कुछू नइखे बुझात । कब खाए पिए के चाही एकर होसे नइखे रहत । न समयपर भूखि लागत बा, न पियास/ नतीजा ई बा कि–

'खर–सेवर हो गइल बा ।'

ईहो बता रहल बाड़ी कि 'तुँ लवटि आवऽ, त सबकुछ लवटि आई।

जइसे साँझि होते । फेड़ का ओर लूझेली स चिरई
तहार बोली सुनते सब बटुरा जाई
तूँ जल्दी लवटि ना आवऽ।'

ई कातर पुकार बहरा नइखे आवत, मन ही में उठि के सेरा जाति बा, बकिर एकर असर पहुँचि रहल बा ओह हियरा तक ले ।

ऊहो चिठ्ठी नइखन लिखत। बिना लिखल चिट्ठी मन ही मन
में लिखि आ भेजि रहल बानें।–

''हम तोहके चिट्ठी कइसे लिखीं ?/ कइसे लिखीं कि बहुत खुश बानीं इहाँ हम/ होके विलग तोहन लोग से.....!
हर घड़ी छेदत–बीन्हत रेहला/ इहँवा हमके 'गाँव'
इयाद परावत रहेला– हर घड़ी
ओइजा के बेबस छछनत जिनगी ।
कल कहाँ बा बेकल मन के एहूजा ?

हम ई सब लिखि के। नइखीं चाहत मन दुखावल तोहार !... साँच मानऽ हमार परतीत करऽ/ भुलाइल नइखीं हम कुछऊ ना त, होत फजीरे तहरा पातर ओठन पर/ थिरकेवाली किरिनिन के लाली नाघर दुआर/ ना खेत ना बधार/ हमके इयाद बा आजो ऊ कटहरी चंपा के/ बरबस खींचे वाली गंध जवन पछिला साल हुलसि के खिल गइल रहे
आ तनिको भर बोल दिहला पर मिलल रहे
अधरसा अमरूद अस न्योतत । तहार मीठ झिड़की
ऊ बनावटी खीसि में आँखि तरेरल तोहार/ भला कइसे भोर परी ?''– एतना सुख, एतना सिंगार जिनगी में भरल रहे, तब गाँव छोड़िके परदेस गइले के जरूरत का रहे? मन की पाती में ईहो लिखात बा । 'बाकिर का करीं? जवना खातिर घर छूटल/ऊ गरीबी, ऊ बेबसी ऊ तहार पुरान खाँखर होत साड़ी से झाँकत/मसकल कुर्ती हम के भर नीन सूते ना देलस आजु लें!

नवकी पीढ़ी के ई जवान बिना उछाह के जिनगी जीये

खातिर अनजान शहर के दहकत भरसाई में अपना के झोंकि दिहलस? ''ना, ना, हम माई आ बाबू जी लेखा नइखीं जीयल चाहत मार के मन/ एही से
झोंकि दिहनी हम अपना के ....एह दहकत भरसाईं में।
अब कम से कम एगो भरोस आ/ एगो सपना त बा ढंग से जिनिगी जिये के/ हम लड़त त बानी ओकरा खातिर/इहाँ ।''
एतना कठिन लड़ाई के बाद उनके रहने के ठहर ठेकाना हो पवले बा । चहतें त कुछ रूपेया मनीआउर से भेजि देतें। न मनीआडर भेजत बाड़ें, न चिट्ठी, न कपड़ा लत्ता, न सनेस/ एतना कठकरेज काहे हो गइल बाड़ें ?
''.....हम त देखल चाहत बानी/ तोहन लोगन के एतना खुशहाल
जेमे ना होखे अइसन कुछ के कमी/ कि मन मार के जिये के परे...
एही इंतजाम में बानी/ मत होखिहऽ तनिको उदास तूँ मन के थिर रखिहऽ/ माईबाबू के दीहऽ ढाढस आ विश्वास,
हम जल्दिये लौटब गाँव।"
एही जा एगो फरक लउकत बा। जे लोग चारि अच्छर पढ़िके शहर में नोकरी चकरी करत बा ओह लोगन के सपना बा, कौनो लेखा गरीबी कम कऽ के गाँवे लवटि गइले के । ई गाँव के नमक रोटी पर पलल पोसल नमकहराम लोग ना हवे । गँउवा के पुरान दिन एही लोगन के लवटवले से लौटि के आई।
माई बाबू के परदेस से कमासुत बेटा के लवटले पर कवन गति होला? –
''सिकुरल आँखियन से/ उभरल किरिनियाँ
चिन्हले त बाबू धवरले धधाइ के ।
बबुवा लवटलें शहर से कमाइ के ।
मइया त रहली भइल कउवा हँकनी/ बहुरल जइसे बेयरिया
सुलछनी/ बबुवा क रूप रंग देखली चिहाइ के ।
– माई, बाबू एह रूप में देखत रहलन। घरइतिन कइसे देख रहल बाड़ी? हीरो के मात करसु किसुन कन्हइया/ मुसुकी से ठनके सोनहुला रूपइया/ खिरकी से निरखेली बहुअरि लुकाइ के ।
भोजपुरी के पुरान कहाउति हऽ– 'माई देखें पेट, मेहरी देखें चेट/
चेट माने थइली (जेब) होला। माई का कहतिया?
'झट से खियावऽ बहू गदरा के घुघुनी।
चाह बइठावऽ फिरू पोइ दीहऽ मकुनी
हाथ मुँह धोवऽ बेटा अँगना में जाइके।
माई के इशारा पाके भित्तर गइलें। हाथ मुँह धोवले कि बाद पोंछे खातिर गमछी देत में बहुरिया का करत बाड़ी ?
देत खानी गमछी नयन मटकवली
रूसला नियर तनि ओठ बिजुकवली
कहली 'रहबि नाहीं हमहुँ बन्हाई के।'
अब 'पति' आ 'पूत' कवने रूप के छोड़ें, आ कवने के सम्हारें? पहिलका गीत में 'लवटे के सपना देखत बबुवा' माईबाबू के भरोस आ विश्वास दियावत बाड़ें कि ऊ लवटि के गाँवे में रहिहें। एह गीत के बबुवा' ? –''मेहरि क मीठ–छतनार लागे छाया
ओम्मे हेराइ गइल माई के माया । नोकरी प जाई मेहरारू जिदियाइ के ।'
अशोक द्विवेदी बेटा पतोह के शहर चलि गइले का बादि माई के हाल सोझे नाहीं कहि पावत बाड़ें, एगो बहुत समरथ बिम्ब बना के सबकुछ कहि दिहले बानें । जवने गाई के बछरू ओकर साथ छोड़ि 'देला ओकर कवन गति होले–
बछरू के मोह, मुवल भुखिया पियसिया
छूवे नाहीं सानी पानी, लखे नाहीं घसिया।
रहि रहि टेरेले गइया रम्हाइ के। –
माई सब कुछ भितरे अंगेजी! गाँव के तीन पीढ़ी के मानस रचले में एह कवि के कवितई सिद्ध हो गइल बा । एह कविताई के विविधता देखे के होखे त अशोक द्विवेदी के 'कुछ आग; कुछ राग' पढ़े के चाही ।

शीतल सुयश, राप्तीनगर, गोरखपुर

(दू) 'इमरीतिया काकी': उपन्यासकार के निजी आइना में गाँव के बदलत मिजाज आ संघर्ष के कहानी

☑ तैयब हुसैन पीड़ित

श्री रामनाथ पाण्डेय के नाम भोजपुरी जगत खातिर अनचिन्हार नइखे । भोजपुरी कथा–साहित्य त एह नाम के बिना अधूरा पर जाई । अइसन पाण्डेय जी के लगभग एक दर्जन उपन्यास हिन्दी में आ चुकल बा, बाकी ऊ सब आम पाठकन आ व्यावसायिक बिन्दुअन के सामने राख के लिखल गइल बा, एह से ओकर साहित्यिक महत्व ना के बराबर मानल जाई। हँ, जब इहाँ के भोजपुरी उपन्यास 'बिन्दिया' 195५ ई0 में छप के आइल त ना खाली एह पर पं0 राहुल सांकृत्यामन, आचार्य शिवपूजन सहाय आ प्रिं0 मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के अनुकूल टिप्पणी मिलल बलुक ई भोजपुरी के पहिलका उपन्यास भइला से सहजे ऐतिहासिक महत्व के उपन्यास सकार लेल गइल। तब से 'जिनगी के राह' (1982)' 'महेन्दर मिसिर' (1994) भा आलोच्य उपन्यास 'इमरीतिया काकी' इनकर चार गो उपन्यास प्रकाश में आ चुकल बा। एगो कहानी–संग्रह 'सतवन्ती' (1977) का अलावे पत्र–पत्रिकन में छिटपुट छपेवाला भोजपुरी साहित्य इहाँ के लगभग 75 बरिस के उमिरो में सक्रियता क परिचय देता। सर्वाधिक भोजपुरी उपन्यास लेखक के ई प्रकाशित फिलहाल आखरी कृति लेखक के धर्मपत्नी श्रीमती उमा पाण्डेय के समर्पित बा, जेकर निधन लम्बा बेमारी के बाद हाले भइल ह। कहे के ना होई कि ई सब संयोग एकर महत्व बढ़ा देता ।

'इमरीतिया काकी' के कथानक अठारह परिच्छेद में बँटाइल बा, जवन थोड़ा में ई बा कि एके गाँव के ठाकुर खेलावन सिंह से अछूत इमरितिया के जवानी में प्रेम हो गइल भा ऊ ठाकुर द्वारा फाँस लेल गइल आ ठाकुर के बून से इमरीतिया के एगो लइको 'मनभरन' पैदा भइले बाकी बियाहल खेलावन सिंह के ऊ मेहर ना बन सकल । रखैल नियर बन के रह गइल। ओहींगा चुप्पा–चोरी मिलत रहल । खेलावन सिंह के अपना पत्नी से जनमल लड़का धरीछन उनकर एकलौता बेटा कहात रहलन। अकेले में कब–कबो इमरीतिया खेलावन सिंह से एह बात के धमकी देवे जरूर कि ऊ जो ओकर कहना ना करिहन त ऊ उनका जमीन–जायदाद पर हिस्सा के दावा करी। सबके सामने मुँह खोल दी। वोइसे गाँव के कुछ लोग एह बात के जानतो रहे ।

एने खेलावन सिंह के भाई धनराज सिंह के सन्तान का नाम पर एगो बेटिए रहे– 'भगमनिया' जवन बिआह जोग होते ओकरा बाप के जायदाद हड़पे का लालच में खेलावन सिंह आ उनकर जवान बेटा धरीछना के मिलीभगत से गुंडन के हाथे खूब पिटवा देहल गइल । बाकी दोसरा गाँव के दू–गो जवानन का मदद से ऊ बचा लेल गइल । मोहन, जे भगमनिया के छोड़ावे में घवाहिल हो गइल रहस, भगमनिया के इच्छा से ओकर पति बन गइलन । भगमनिया के गाँव लवटला पर ओकरा सतीत्व के लेके बवाल खड़ा करावल गइल जेह में गाँव के पुरोहित पं0 जोगावन पाँड़े के लगाव बझाव जादे रहे। असल में नीयत रहे बाप के जमीन जायदाद से ओकरा के बेदखल कइल । धनराज सिंह के त एह तनाव में स्वर्गवास हो गइल बाकी भगमनिया आ मोहन

के पीठ पर खड़ा हो गइल धनराजसिंह के विश्वासी बूढ़ नोकर रग्घू आ गाँव के चलबिद्धर औरत इमरीतिया । दूनो अछूत । बढ़ते–बढ़ते बात एतना बढ़ल कि गाँव दू दल के टकराव के कगार पर पहुँच गइल। एह गाँव में पाँड़े के नारदी चरित्र आग में घीव के काम कइलक। बाद में ई संघर्ष छोटका – बड़का के प्रतिष्ठा आ खेत में मजूरी करे के सवालन के इर्द–गिर्द घूमे लागल आखिर में योजना बनल अछूतन के बस्ती फूँक देवे आ नेता बनल रग्घू आ इमरीतिया के नेस्तनाबूद कर देवे के। एगो पड़ोसी गाँव नारायणपुर एह संघर्ष के शुरुआत करे के पहल कइलस, जहवाँ पिछड़ा वर्ग के नवका धनिक मनबोध सरीखा लोग अछूतन से राजपूत मतिन बेवहार करे लागल रहे। केन्द्र में भगमनिया आ ओकर मरद मोहनो के राहता से हटावल उदेस रहे। गाँव के थाना में हरिजन दरोगा के घूस देके अत्याचारी लोग अपना पछ में मिलइलक आ एक रात अछूतन के गाँव के साथै धनराजो सिंह के घर पर हमला बोल दिआइल । बाकी पहिलहीं पता लाग गइला से इमरीतिया आ रग्घू क काट सफल रहल। अतियाचारियन के मुँह के खाये के पड़ल । नारायणपुर जरि छार हो गइल बाकी औरतन का साथ बदसलूकी ना भइल ।

तबो एह उन्माद में रग्घू, खेलावन सिंह, मनबोध के भाई सकलसिंह मारल गइलन आ मनबोध, इमरीतिया घवाहिल भइल। एह में इमरीतिया के बेटा मनभरन के भूमिका अपना जात के एकजुट करे आ लड़े में नेतृत्व देत नक्सलवादियन लेखा रहल आ पाँड़े के बाद में, पुजारी के पहिलही हृदय परिवर्तन हो गइल ।

उपन्यास भगमनिया के बच्चा, धरीछन आ मनभरन के बच गइला के खुशी से समाप्त होता कि अच्छा बुरा के संघर्ष चलत रहेला, चलत रही जवना से अब ई बाँचल नइकी पीढ़ी निपटी ।

उपन्यास शुरू कइला पर सहजे बुझा जाता कि ई कवनो अनुभवी लेखक के कलम के अवदान ह जेकरा प्रेमचंद के किस्सागोई के कला नियर उपन्यास लिखे के हुनर मालूम बा । उपन्यास के कथानक दू गाँवन ले फइलल बा आ निखालिस गँवई पृष्ठभूमि लेले बा । ठाकुरन के गाँव जहाँ दू घर ग्वाला, एक तरफ अछूतन के बस्ती, गाँव के सिवाना पर मंदिर, मंदिर में पुजेरी, गाँव में उपरोहित आ धंधा मुख्यतः खेती–बारी । एह सब चीज के उपयोग बड़ा मनोयोग से बार–बार लेखक कइले बा । शुरुआते में "गेहूँ के खेत पछुआ के झकझोरा में समुन्दर के हलफा नियर हिलकोरा भारत रहे। गोटाइल मटर– केराव के पाकल – पाकल छेमी संगे सरसों आ तिसी के पकठाइल ढेर रुनझुन रुनझुन बाजत रहे। सन–सन बहत पछुआ जइसे केहू दारू घोर देते होखे' के वातावरण अनायासे उद्दीपन के काम करे लागऽता। जब बहुत दिन के बाद खेलावन सिंह से इमरीतिया के मिलन होता । ओह पर– ' सूतल सनेहिया जगावे हो रामा...। आज कोइलर काहे बोले अधिरतिया हो रामा..." के चहता – स्वर नायक–नायिका के मुँह से बारी–बारी से फूटत आज से बहुत पहिले के ओह गावन में पाठकन के पहुँचा देता जहाँ ठाकुरो खेती के काम अपना हाथे करत रहस आऊ किसुन – कन्हैया लेखा विशिष्ट होइयो के राधा खातिर आम मनई रहस ।

गुंडन के चंगुल से छूट के आ मोहन से शादी क के गाँव में लवटत भगमनियों के खेती से लगाव – 'इआद रख, धरती ओकरे होले, जे अपना करेजा के ध ाार से ओकर पटवन करत होखे । अपना देह के पसेना से ओकर माटी सानत होखे । ओकरा धूर के भगवान के भभूत मान के अपना माथा पर सरधा से लगावत होखे ।' (पृ0 25) अइसने कुछ कहता बाकी उपन्यास में ई गाँव जल्दिए बदले लागल । ओही गाँव के भरोसा सिंह हर–फार छुअल राजपूत जाति के अपमान समुझऽ ताड़न। पड़ोसी नारायनपुर में, हालांकि ऊ पिछड़ा वर्ग के बस्ती ह अछूतन के मजूरी कइल छोड़ देहला से फसल खेते में तँवाता।

अइसहीं पुरोहित पाँड़े जी पुजारी जी के अपना जाल में फाँसत बेयान दे ताड़न– 'बरामन त भगवानो से ऊपर मानल गइल बा । ना त भिरगूजी भगवान के छाती पर लात ना मरले रहतन।" (पृ0 40) । एकरा पहिले मंदिर पर छुआछूत के पक्ष में पाँड़े के प्रवचन हो चुकल रहे जेकर प्रतिक्रिया में इमरीतिया चमारिन तक फूट पड़ल जब पाँड़े अकेले में ओकर बाँह बुरा नीयत से ध लेलन ।

रग्घुओ कहता– "पाँड़े बाबा, तीन जुग त अपने हमनी के मूड़ी पर चढ़ के नचनी। एको जुग में त हमनी के नाचे दीं। (पृ0 51)"

बाकी उपन्यासकार एह चेतना भा वैचारिक बदलाव के वर्गगत ना मान के व्यक्तिगत मानऽता । एही से गाँव में जवन दू दल तइयार होता, ओह दूनों में बड़का–छोटका दूनों बाड़न । धनराज सिंह धन हड़पे के फेर में रहत बाड़े खेलावन सिंह आ बेटा धरीछना के साथे भरोसासिंह बाड़न त नारायणपुर के पिछड़ा वर्ग के प्रतिनिधि मनबोधो, जवना के नवधनाढ्य वर्ग–चरित्र अछूतन के दबवले राखे में आपन शान बूझता। हद त

ई बा कि थाना के दारोगा हरिजन धनेसो राम घूस खा के एही दल में शामिल बाड़न ।

ओने दबावल गइल पार्टी में धनराज सिंह के बेटी–दामाद के साथे बाड़न गाँव के हरखसिंह, बुझावन सिंह त पिछड़ा वर्ग के गमलू राउत आ हरिजन रग्घू, इमरीतिया, ओकर बेटा मनभरन आ दोसर अछूत ।

पुजेरी त जल्दिए चेत के तटस्थ हो जा ताड़न बाकी पुरोहित लालचवश कबो हेने कबो होने होत आखिर में घवाहिल इमरीतिया के अपना घरे राख के मेहर से हरदी – गुड़ पिसवा के आपन आकबद सुधारऽ ताड़न । पुजेरी जी संघर्ष के रात हरिजन औरतन के मंदिर में शरण देके ना खाली अपना ब्राह्मणत्व के व्यापक बनावऽ ताड़न बलुक गाँधी के आन्दोलन में हरिजन के मंदिर प्रवेशो के इतिहास दोहरावत बाड़न ।

अइसहीं दरोगा के भोज–भात में सुग्रिमा के दूगो पाठी के गुम भइल, घूस के पइसा के बन्दर बाँट आ पुल पर तैनात सिपाहियन के सुरती खिया के आसानी से मनभरना आ साथियन के राइफल छीन लेल जइसन छोट–छोट प्रसंग छल–छद्म से भरल आज के गाँव के कहानी कहे लागता । भरोसा सिंह के कहनाम कि आज के राजनीतिक तस्वीर ह कि पिछड़ा जब कुछ सजग भइल ह, त अब सुनऽतानी देश पर राज करे खातिर अछूत आ मुसलमान के गोल बन्हा रहल बा। साम्प्रदायिकता के जाप क क के मुसलमान के डेरवा के एकवटल जा रहल बा । कहल जाता – जेकर आबादी जादा बा, उहे राज करी।" भा–'एगो जमाना रहे पुलिस के गंध अदमी के सुरक्षा कवच बन जात रहे। अदमी निडर हो जात रहे, बाकिर आज त उल्टे आदमी के आपन सुरक्षा कवच ओकरा गंध से तार–तार हो जा रहल बा ।"

बाकी सबके बाद लेखक के विचार भगमनिया के एह कहनाम में निहित बा कि– 'ई लड़ाई अतियाचारियन के मेटावेवाला जन–जन के लड़ाई होई। छोट–बड़ के लड़ाई ना अदमी के कमजोर आ गरीब बना के दबावे वाला लोग के विरोध में लड़ेवाली लड़ाई होखी' भा मनभरना के एह कहनाम में कि "–भाई, हमरा जानते ई लड़ाई जात–जात के लड़ाई ना ह । जात–जात के रहित, त खेलावन सिंह भगमनिया के बिनास के बीड़ा ना उठवतन। मनबोध सिंह पिछड़ा वर्ग के होके अछूतन के मटियामेट करे के लड़ाई के नायक ना बनतन। असल में ई लड़ाई अबर आ जबर के बीच में बा । चतुर लोग अपना पइसा आ पद के बँचावे खातिर एकरा क जातीय जामा पहिरा रहल बा ।

उपन्यास में कुछ फिलिम नियन दृश्यो आइल बा । जवन बा त बड़ा गति आ उत्सुकता लेले, मार–पीट के चित्रो खींचे में सफल बा बाकी यथार्थवादी साहित्य में अस्वभाविक लागता । जइसे गाय रग्धू का आगे आके ठाढ़ भ गइल रहे। गोली ओकरा लागल आ ऊ जमीन पर गिर के तड़पे लागल। खून के धार बह चलल । गाय के गिरते दूनो बैल पल–भर एक– दोसरा के देखलन सन पल–भर फों–फों करत मूड़ी झाँट के कुछ बतिअवलन सन फिर पगहा तूड़ के धवरा रग्घू के चारों ओर चउगेटे लागल आ कइली कूद के भीड़ में सभा गइल आ लागल अपना सींध आ खूर से लोगन के मारे – कचड़े। मनबोध सिंह फेरू ललकरलन। कइला के लागल– इहे एकनी के नेता ह। ऊ पीछे से आइल आ उनका के अपना सींधे पर उठाके कसके पटक देलक । पृ0 152

अइसहीं इमरीतिया काकी, जइसन शीर्षक नायिका (उपन्यास के एह दृष्टि से नारी प्रधानो कहल जा सकेला) के चेतनाशील चरित्र एह बात लेके काहे अन्हार में बा कि ओकर विवाहित पति रहे कि ना आ जब ना रहे त खेलावन सिंह के जनमल मनभरना के समाज कइसे मान्यता देलक ? ऊ खेलावन सिंह के जाल में आइयो के अन्त अन्त तक काहे ना निकल सकल ? उल्टे ऊ उनका भावुकतापूर्ण कहनाम पर कि 'हमरे बेटा के तें ही दूध पिअवले बाड़े इमरीतिया, ओके छोड़ दें' काहें बहल गइल अत्याचारी बाप आ अपना प्रेमी के अपने हाथ से भाला मरलक आ बेटा धरीछना के अत्याचार करे खातिर छोड़ देलक । खेलावन त मरे के बेरा सरेन्डरो करत बुझा ताड़न धरीछना में ई परिवर्तन कतहीं नइखे।

सुतरां प्रकृति–वर्णन, मौसम, खेती–बारी, मवेशी, देहाती कहावत, लोकगीत, आ रामायन महाभारत के मिथकन के प्रयोग, परिवेश, मूड आ कथ्य खातिर खूब भइल बा उपन्यास में, जवन भोजपुरिया लोक–तत्व हटे आ सफलता के चिन्हासी । उपन्यास के कहीं–कहीं संवाद के दुमानिया तेवर आ कटाक्ष का दिसाईं प्रयोग देखते बनता । चरित्र–चित्रण के स्वभाविक विकास परिस्थितियन आ मनोविज्ञान पर आधारित बा जेकर निचोड़ बा हर जात में अदमी अच्छा बाड़न त हर जात में बुरा । झलक जाता कि पान्डेय जी मध्य बिहार के रणवीर सेना आ नक्सलवादियन के टकराव के भूमि, आर्थिक आ सामाजिक समस्या ना मान के एके जादे व्यक्तिगत मानत आपुस में भरसक समन्वय के प्रयास कइले बाड़न । सवाल रह जाता कि आज के गाँवन के यथार्थ का ईहे बा ?

(तीन) गहन–गम्हीर लोक–संपृक्ति के कविताई

(संन्दर्भ- 'सुनगुन' (काव्य-संग्रह), दिनेश पाण्डेय, प्रथम सं0 2021 पृ0 190, प्रकाशन- सर्वभाश ट्रस्ट, नई दिल्ली, मूल्य-250/-)

डा0 अशोक द्विवेदी

लोकजीवन का ओकरा शब्द–सम्पदा के सहेजत, ओमे नया अरथ भरे वाला कवि दिनेश पाण्डेय अपना कविता–संसार में लोकभाव के सहज–सोभाविक आ व्यंजक स्वर देत लउकत बाड़न। लोकभाषा अपना जीवन–संस्कृति आ कर्म–क्षेत्र से सम्पृक्त होले– ओकर आपन जियतार 'टोन' आ तेवर होला। जरूरी नइखे कि कवि भाषा के जवना रंग–रूप आ लहजा में आपन अभिव्यक्ति देत होखे, ऊ हू–ब–हू ओही तरे, ओह भाषा के दोसरो क्षेत्र (इलाका) में ओइसहीं प्रयोग कइल जात होखे। निपुन कवि भाव–अभिव्यक्ति के अरथवान उरेह से, काव्य–भाषा का ताना–बाना में बृहत्तर क्षेत्र के अनुभूति आ भाव के समेट लेला। एही से ओकरा रचना में लोकमन के भाव–सुभाव वाला जीवन–जगत अपरूपी प्रगट आ साधारनीकृत हो जाला।

'सुनगुन' पाँच खण्ड में बँटल अभिनव–प्रयोग वाला काव्य–संकलन बा। 'संशय नदी बहे' 'रीत रहल दिन–रैन', 'अदन के बाग', 'आहेरी दँव लाइ' आ 'हरदी के झाँस' में बन्हाइल–बिस्तार पावत काव्य–विविधा, कविता के सच्चा ग्राहक आ सुधी पाठक के पढ़े–गुने खातिर न्यौतत बा। डा0 प्रकाश उदय एह काव्य–सरिता में पँवरे आ बिचरे–बिचारे के सुघर आत्मीय कोसिस कइले बाड़न। 'सुनगुन' आ ओकरा कवि का बारे में पीढ़ा (पीठिका) धरे के शुभ काम उदय जी जइसन लोक व्यवहार पारंगत पण्डित का जरिये भइल मंगलसूचक बा। जवन पाठक उनका पीठिका के नीक से पढ़ि लेई, ओकरा खातिर 'सुनगुन' में अवगाहन आ ओकरा भितरी के सुघराई देखल–समुझल तनिक आसान हो जाई।

कवि दिनेश पाण्डेय के भाव–सुभाव में, जवन गहन–गम्हीरो के, महीनी से कहे वाला कौशल बा, ऊ भावानुभूति का ताप–तेवर आ संवेदन–स्फुरन–प्रतिफलन का साथ बा– आ सोचल–समझल, जानल–बूझल परिचिताह जीवन–लोक लेखा 'सुनगुन' का कविताई में जहाँ–तहाँ दीपित होत लउकत बा। जइसे कवि अपना कविता–रचाव में, ठहरि के, डूबि के सोच–बिचार का साथ भीतर आकार लेत संवेदन–अनुभूति भा बिचार के अपना कल्पनाप्रवणता से बिम्बित–प्रतिबिम्बित करत बा– ओही तरे कविता पढ़े वाला पढ़वइयो के तनी ठहरि के, डूबि के, कविता से निसरत भावानुभूति आ अरथ के अरथवत्ता ग्रहन करे के पड़ी। कविता के मजा आ मरम तबे बुझाई।

ई त आदिमी के सामरथ जे आवाज के बूझे लें,
डाँगर सिरिफ सुने लें, बूझस ना ठीक से
भीतर के सुने से ज्ञानी
बहरी के सुने आ बूझे सेहू ज्ञानी
आ बहिरा? ना सुने, ना बूझे।
ऊ अपने हद का हिसाब से

आउँ–आउँ कइले जाला,
आन के बुद्धि प' तरस खात।

दिनेश जी का कवि के आपन एगो अलगे अन्दाज आ शैली बा। बिनय, अरदास, मिन्ती–प्राथना सबमें। ऊ 'अदिख' के देखे आ 'अबूझ' के बूझे के अपना ढंग ढर्रा से कोसिस करत, लम्मे भइल चिन्हा जात बाड़े–

हे ईस्सर/ सुभ–मंगल बरिसे,
सत् नियाव के/ परख रहे!
XX XX XX XX
ए हरि कवन लाभ पग भरले।
आँखि अछइते रूप न सूझल, जगतबोध ना निपजल
कवन साँच ई कहाँ बुझाइल, भाफ–तुहिन, अँगरत जल
मति के सब मगरूरी झरलसि, आँतरजोत न बरले।
XX XX XX XX
चढ़त रहल अभिलाख बाँस भर, बेपतई–,बिन सोरी
झरकल देह अलम के सूखे, नयन फुलाइल तोरी
कवन लुकारी निसबदता में, सब कुछ झोल गइल।
XX XX XX XX
के कहल हऽ/कि हगुअहट बरदास कइल जाव
निरपेक्षता का संगे/सहे के हद होला भाई!

हरेक रचनाकार अपना दीठि, समझ आ बेंवत भर दुनिया–जहान के देखे आ ओमे अपनो के देखे–समुझे के कोसिस एहसे करत रहेला काहेंकि ओकरा रचनाकर्म आ सिरिजन में बिस्तार आ गहिराई आवे। ऊ जवन कहे भा लिखे, ओमे प्रामाणिकता आ अरथवत्ता आवे। लिखवइया भा कहवइया के ईहो जानल जरूरी होला कि पहिले के दीठि–संपन्न आ ग्यानी–अनुभवी रचनाकार लोग कइसे कहले आ लिखले बा। माने काव्य–परम्परा भा रचना–परम्परा का सही जानकारी का साथ, ओम्में अपनो कहला–लिखला के परोसल। एह कोसिस में सायास आ अनायासो के भेद आ महत्व के समझल, निपुन–प्रवीन रचनाकार के पोढ़ बनावेला। अनायास ओकरे से कहाई–लिखाई, जे पढ़लका–सुनलका के नीक से पचा लिहले बा आ ओकरा में पुरनको में नया अरथ छवि उरेहे के भाषा–सिद्धि आ बेंवत बा। ए काम में समय आ स्रम लागेला, बाकि एही के मोल–महातम होला। दिनेश पाण्डेय के कवि में ई बेंवत बा आ कहे के एगो अलगे लूर–ढंग बा–

अब के सगुन कही मोरि सखिया
कुररे काग भदेस।
ना अँगनइया गाछि चनन की, सास–ननद परबीना
कबके भरल आँखि के पानी, लोक लाज कतहीं ना
इरिखे गोतिन जरि न बुताली
उलटा सब परिवेस। (पृ0–162)

ताड़ के चटइया में फुलवा–डासन लखीं
घइला मटाही मोरा सोने के गेंडुअवा।
इनरा के पानी माँझे गंगजल छलवेला
भोग छप्पनहूँ भेंटे मकई मडुअवा।....
ऊधव में लेबे के ना, देबे के ना माधव के
भाड़ में झोंकाय हई लबरा भँडुअवा। (पृ0–157)

'सुनगुन' में, काव्य–परम्परा के अपना कवि–प्रतिभा आ सिरिजनात्मक प्रयोग से निखारत–निबाहत कवि के अइसन बहुरंगी रचना–संसार बा–जवना में भोर, साँझ आ रात के कतने रूप–रंग लउकी। ओमे लोकमन आ लोक भाव के मनहर, मनगर आ सवदगर चित्रकारी बा। ओमे कबित–कला के नूतन प्रयोग बा तऽ आधा कहि के, पढ़वइया पर छोड़ देबे के कलात्मक स्टाइलो बा। पढ़े–गुने वाला समुझे–बूझे। कहे क मतलब ई कि "सुनगुन" के सरस, सुरंग आ सुब्यवस्थित रचना–संसार में अइसन बहुत कुछ बा, जवना के देखि–जानि के पढ़वइया के तृप्ति मिली। ●●

कुछ 'अ' कुछ 'आ'

डा0 प्रकाश उदय

ई त हम जानत रहीं कि कवनो भाषा के साहित्य–संसार में केहुए–केहू होला आनंद संधिदूत, कबहिंए–कबहीं, बाकिर ऊ अँइसे चल देला, अचक्के, सब कुछ झटक के, ई ना जानत रहीं, ना चाहत बानीं, अबहिंयो, कि जानीं। जब से उनुका के जनलीं, चाहे मिल–भेंट के, चाहे बोल–बतियाऽ के, चाहे उनुका के पढ़ के, सुन के, गुन के भा गुनगुनाऽ के, तब से चाहे जवना संदर्भ में, जब–जब 'कविर्मनीषी' शब्द सोझा आइल, अनभावते ओकरा अर्थ के साथे हमरा मन में उनुके छवि–छाप उपजल। जवना के उन्नत चेतना कहल जाला तवन उनुका कविताइए से ना, उनुकर बात–बर्ताव, रूप–रहन सबकुछ से झलकत रहे, अँइसे, कि 'झलकत रहे' से जादे जाँय बुझाता ई कहल कि 'खनकल करे'। बड़–बड़ आँख, हमेशा कुछ उपराहुत निरेखत जनाय।बोलस कम, सुनस जादे। बाकिर, कहल कठिन कि जवन सुनस तवन सुनबे करत होखस। बहुत संभव बा कि जे सुनावत बा ओकर ऊ सुनते ना होखस, सुनत होखस ओकर, जे पिनिक के ओहर उत्तर–ओर बइठल बा, दक्खिन–ओर मुँह कइले। ओह गोरू के, बछरू के। जेकरा–ओर बरबस तकाऽ जाय, टकटकी बन्हाऽ जाय, ओह सरिहार के उगावल गेंदा के, गुलाब के, आ जे आर–मेंड़ प से टुकुर–टुकुर तहरे ओर तिकवत जनाय, ओह अपने से उग आइल धतुरवो के। असहीं त ना, कि सुनले–समझले आ अपना सुनला–समझला के सुनइबो कइले अतना लहक के, कि ष्ओरुओ गोड़वा रोकेला बछरुओ गोड़वा रोकेला/कइसे जाईं जात खानी गोड़वो गोड़वा रोकेला/गेंदा आ गुलाब गोड़ रोकेला त रोकेला/गाँवे गइले गाँव के धतुरवो गोड़वा रोकेला...'। खलिसा एह रोकलके के ऊ सुनले होखस त कह सकेला केहू कि जवन सुनले बाड़े तवन उनुका अपने भीतर के बात ह, जवन चहले बाड़े तवने सुनले बाड़े, बाकिर कवनो भरम में मत रहे केहू, जतने अखेयान से सुनले ऊ गाँव के पुकार, ओतने अखेयान से सुनले ओकर दुत्कार, आ जतना जरूरी जान के, जवना जतन से आपन 'ऊ' सुनलका सुनवले, ततने जरूरी जान के, तवने जतन से आपन 'ईहो' सुनलका सुनवले, 'ई चनन बन गँउआ सरप लटके, केहू काटे केहू फूँके केहू फन पटके/लोग केतना जरत बा चनन जुड़ छाँह/सुख सुविधा के उपरा बदन फदके...'।

हमरा गुमान कि हम अनेकन बे अपना सुनवला के रोक के उनुकर एह एहर–ओहर के सुनलका के सुनले बानीं। हमरा गुमान कि कुछ कहत–बतावत अचक्के जब अनते कहीं खो गइल बाड़े ऊ, हम उहाँ से उनके जबरी उतार ले आवे के कवनो कोशिश, कठकोशिश, कबो नइखीं कइले। गुमान कि जब–जब उनसे कुछ बोले–बतियावे के सुजनी जुटल, उनुका खातिर भरखर जगहा छोड़ के बतियवलीं। त बहुत बतियवलीं, आ बहुत बे, भोजपुरी के अपना एह प्रिय, बलुक प्रियतम कवि से, मुँहामुँही से लेके फोनाफोनी ले, बाकिर आज जवना बात के अफसोस सबका से बढ़ के तवन ईहे कि बतियावे ना पवलीं, हूब भ, भर हींक, अपना एह भाई, बड़भाई से ! अफसोस कि हम अतना अपसवार्थी निकललीं कि अपने रिटायरी के इन्तजार करत रह गइलीं, उनुका रिटायरी के फैदा ना उठावे पवलीं।

अफसोस कि हम 'अफसोस' कहलीं, बलु दू–दू बेर, आ टोक के ई कहे खातिर कि 'काहे हो, काहे 'अफसोस', श्फसोसश काहे नाष संधिदूत जी नइखन अब आसपास, कतहीं ! ई जवन 'फसोस' बा, तवना के निकहा एगो किस्सा बा। ओह किस्सा के एगो हिस्सा के एगो लघुकथा में गाँथ के संधिदूत जी लिखले रहले आ ऊ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' में छपलो रहल। जवन बकियवा हिस्सा रहे तवने में रहे ई फसोसवा। ऊ पढ़ लीं आ ई सुन लीं त चुहल के जवन अंदाज रहे एह कविर्मनीषी के, ओकर कुछ–कुछ अंदाज त लागिए जाई। बक्सर के एगो आयोजन से संगे–संगे बनारस आवत रहीं जा। गाड़ी में बइठावे खातिर आयोजक लोग अपना जवना स्वयम्सेवक लोग के हवाले हमन दूनो जन के कइले रहले, तवन लोग जरूरत से तनी जादहीं उत्साही जीव रहे। जेनरल के टिकट रहे, ठेल–ठाल के स्लीपर में चढ़ा देल लोग, ना हमार सुनल, ना संधि ादूत जी के, कि अरे आप लोग एतना बड्डा कब्बी, हिम्मत है कि कौनो टीटी ठेंक जाय ! आप लोग त टिकठवो अनेरिए लिए ! आ टीटी साहेब जब अइले, त ठेंके के के कहे, हमन के चलती गाड़ी में से फेंके प आमादा। उनुकर कहनाम कि आपलोग पढ़ल–लिखल बुझाते हैं, आ पढ़ल–लिखल होके जब केहू अइसा गल्त काम करता है तो उस्को तो चल्ती गाड़ी से ढकेल देना चाहिए...। कहले कि आपलोगन को भलहीं बाउर बुझाय, बाकिर हमारा 'निज का', 'आपन', 'परस्नल' बिचार त ईहे है। आ संधिदूत जी के देखीं, कि परम आराम से लगले बतावे कि भाई जी, हम त तनी कमे पढ़ले बानीं, हई जवन बबुआ जी बाड़े, ऊ पीएचडी कइले बाड़े। त तय करीं कि हमरा के त भले रउरा 40 किलोमीटर फी घंटा के रफ्तार से धउरत गाड़ी से ढकेलीं, बाकिर इनिका के गाड़ी जले 80 किलोमीटर के रफ्तार ना धरे, तले भले दुआरी प लटकवले राखीं, ढकेलाय मत दीं...। बात बढ़े, एकरा से पहिले जब हम अपना पाकिट से कुछ हरियर–हरियर निकाल के, मुट्ठी में बान्ह के, टीटी साहेब के मुट्ठी में खोल दिहलीं, आ ऊ अपना ओह मुट्ठी के बान्ह के अपना पाकिट में खोल लिहले, खोल के आपन चढ़ल आँख के उतार के पाकिट में झाँक लिहले, झाँक के तजबीज लिहले कि नरमाय भर बा, तब जाके टीटी साहेब बुझिए ना गइले, कहियो के बतवले, बड़ा मद्धिम सुर में, कि आप सचहूँ कुछ जास्ती पढ़ल–लिखल बुझाते हैं, बाकिर ई बताइए कि ई जे आपके साथे हैं, कुछ घसकल टाइप के हैं का ? हम कहनीं कि भाई जी, इनिकर बनारस के टकटकपुर में इलाज चलत बा। टीटी साहेब बुला टकटकपुर के जानत रहन, हड़बड़ाइले टकस गइले। ई त भइल, बाकिर एकरा साथे ईहो भइल कि एकरा पहिले हमन के जवन उत्फुल्ल चर्चा चलत रहे, तवनो थोरे देर खातिर थथम गइल। त कहलीं कि कविवर, श्फसोसश करे के काम नइखे, ओमें से एगो नोटवा कहिए से पाकिट में परल रहे, चलत ना रहे, भला मनाईं कि एह चलती गाड़ी में ऊहो चल गइल...। कविवर तब, सबकुछ तज के एह श्फसोसश प रीझ गइले। कहले कि भोजपुरी के ई जवन सुभाव बा, 'अफसोस' के झार–झूर के 'फसोस' क लेबे वाला, 'फालतू' में कुछ सटा–सुटा के 'बेफालतू' क लेबे वाला, तवना के कबो–कबो हिंदियो में अजमावे के चाहीं। कहले कि जइसे कि 'संघर्ष'। मुँह दुखा गइल बा 'संघर्ष' उचारत–उचारत। एहू से कि करे के त बा ना कवनो संघर्ष, बाकिर कहे के त बड़ले बा संघर्ष–संघर्ष–संघर्ष। कविलोग के त कुछ जादहीं। एने सब–सब जोर–जुलुम, जाने कतने तरह के, जाने कतने तरह से, आ ओने, एह कुल्हि के जबाब में एगुड़े बेचारा 'संघर्ष'। बिधुना गइल बा बेचारा एकदम–से। त काहे ना, जहाँ मोनासिब बुझाय, एह संघर्षवो के छाँट–छूँट के 'घर्ष' क लिहल जाय ! अउरू कुछ नाहिंयो, त कुछ त नयापन हाथे लागी ! कवन ठेकाना कि कहियो केहू ईहो बतावे लागे कि ई जवन संघर्षवा बा तवन कवनो–ना–कवनो सचहूँ के संघर्षवे में दरेरा खा के संघर्ष से घर्ष हो गइल बा !

पहिलके भेंट रहे बुला संधिदूत जी से, जवन उनुका घरे भइल, मिर्जापुर में, उनुकर प्रिय कवि, जेकर प्रिय कवि रहन ऊ, अशोक द्विवेदी के सौजन्य से। अकेले रहत रहन, अपना हाथे बना के खियवले। हमरा जाने में जतने सवदगर, अशोक जी भइया के हिसाब से ओतने स्वास्थ्यकर। जवन भुलइले ना भुलाइल, तवन रहे जामुन के, किदो ऊख के सिरका के तड़का। दाल किदो तरकारी किदो दुन्नो में सिरका–समन्वय –– हमरा खातिर एकदम–से अभूतपूर्व, अश्रुतपूर्व, नितांत अनास्वादित अनुभव रहे ई। कविद्वय मिल–जुल के बतवले कि एकरा से स्वाद में जवन इजाफा होला, तवन त होइबे करेला, एकर जवन असल कमाल तवन ई कि एने खात जाईं, ओने हाथ–के–हाथ पचावत जाईं। अतना दमदार रहे उहन लोग के ई मिलजुल बतावन, कि उदय जी के त जनाइल कि अँचवे खातिर लोटा उठइहें त फेरु ऊ लोटाराम धरती प ना धरइहें, मर–मैदान से घुमाइए–फिराइए के फिरिहें ! ओह यात्रा के जवन बात अशोक भइया के इयाद रह गइल तवन रहे एक्का प बइठ के संधिदूत जी के कविता–पाठ के साथे माई विंध्यवासिनी के दर्शन, उदय जी के जवन बात इयाद रह गइल, तवन रहे सिरका के एगो सोगहग शीशी। उदय जी जवन 'कहाँ बनेला', 'कइसे बनेला', 'कहाँ मिली', 'कइसे मिली' टाइप के सवाल कइले, एक बे, दू बे, चार–पाँच बे, तवने के जबाब के तौर प मिलल उनुका ई शीशी। अलबत्ता उदय जी के संधिदूत जी के एगो दोसर काव्यपाठ,

अइसनके, माई विंध्यवासिनी के दर्शन–यात्रा के इयाद बा। 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के संपादक अरुणेश नीरन जी के साथे सहसंपादक उदय जी दुचार दिन खातिर कवि–कथाकार आईपीएस अधिकारी आ ओह समय मिर्जेपुर में पदस्थापित आर. पी. पांडेय किहाँ पहुँचल रहन। एक दिन, बलुक एक रात, भइल कि विंध्यवासिनी मइया के दर्शन क लियाय। ईहो भइल कि एहिजे बाड़े संधिदूत जी, उनुको संग–साथ मिल जाय त दर्शन ई जादे पुण्यप्रद हो जाई। संधिदूत जी हाले में अपना गहमर गाँव के कमइछा माई खातिर भोजपुरी में बड़ा मार्मिक छंद लिखले रहन आ नीरन जी के पक्का भरोसा कि अइसन लायक सपूत के साथे लेके जाइब जा, त विंध्यवासिनी माई तनी जादे मयगर होके मिलिहें। संधिदूत जी पहुँचले, बाकिर जब चले के बेरा भइल त एक त दऊ लगले बेतरह बरखे, आ दुसरे, पांडेय जी किहाँ सरकारी पैगाम पहुँच गइल कि आज रउरे कलक्टर के चार्ज में बानीं, दु–कहाँ दो दु–कवन दो वारदात हो गइल बा, जाईं, फरज निभाईं।

भइल कि मइया से मिले के बात काल्ह प टार दिआय, बाकिर नीरन जी के रहे कि आज त आजे। मइया जी आज के असरा लगा के बइठल होइहें, काल्ह गइले मुँह फेर के बइठ जइहें तब ! शहर में बिजली गायब, घुप्प अन्हरिया, दऊ जतने गरजत ओतने बरखत, सरकारी जीप चलल, सड़क प पानी के चीरत आ पीछे के एहर के सीट प नीरन जी आ उदय जी, आ सामने संधिदूत जी, कमइछा माई के सुमिरत छंद–प–छंद...। संधिदूत जी के हम पहिलहूँ सुनले रहीं, आ बादो में सुनलीं, बाकिर ओह रात त जइसे सरसत्ती उतर आइल होखस उनुका कंठ में, धरती प जीप के हड़हड़–खड़खड़, आकाश से बादर के तड़कल–बरिसल –– सबकुछ से ऊपर रहे ऊ स्वर। जतना अलौकिक रहे ऊ, ओतना अलौकिक कवनो दोसर 'अलौकिक' हमरा आज ले ना भेंटाइल। अब एही से समझीं कि आज के दिन हमरा ओह दिन के मंदिर पहुँचला के, जीप से उतरला के, भींजत–भागत सीढ़ी–ओढ़ी चढ़ला के –– कुछुओ के कुच्छो नइखे इयाद। ईहे इयाद बा कि आँख खुलल त सामने रही माई विंध्यवासिनी –– बड़–बड़ आँख, बड़हन नाक ! माई के अलावा कुछ पुजारी जी लोग आ हमन तीन जन के अलावा अउरू केहू ना। ओइसन दिव्य दर्शन दोसर कवनो देवी–देवता के आज ले ना भइल। जिनिगी में एक्के बेर बुला अइबे करेला अइसन दृश्य, अइसन दृष्टि, अइसन दर्शन ! कलक्टर साहेब किहाँ से पहुँचल दर्शनार्थी रहे ई लोग, विधि–विधान से सबकुछ सँपरावे खातिर पुजारी जी लोग ओह झमाझम बरिसत बिरत रात में सब–सब ताम–झाम के साथे तत्पर–तइयार, बाकिर ओह तारिख के कुल्हि बिध–बिधान भइल, एकदम सामने से विंध्यवासिनी माई के समर्पित कमइछा माई के संधिदूतीय स्तवन से, आनंद–सिंधु में बूड़त–उतरात।

उदयो जी से पहिला परिचय के एगो कथा संधिदूत जी सुनवले रहन। बनारस के पराड़कर भवन में भोजपुरी के कवनो आयोजन रहे, चर्चा–परिचर्चा के बाद आयोजन के समापन रहे आगत कविलोग के काव्यपाठ से। कहले कि हम भाषण–भूषण सुनत–सुनत उबियाइल रहीं, सोचलीं कि चलऽ, कविता–छविता से कुछ त फरक परी ! एहू से कि हमार पसंदीदा कुछ कविलोग आइल रहे। बाकिर, संचालक जी जब शुरू कइले त बुझाइल कि ओ लोग के ऊ सँच के रखले बाड़े, अंत में पढ़वइहें। शुरुआती दुचार नवहन के सुनलीं त लागल कि ईहे मोका बा, मनफेरवन खातिर बहरी से कुछ घूम–फिर आवे के चाहीं। जब गेट प पहुँचलीं त संचालक जी एगो नाम बोलले, नमवा त ना सुनाइल बाकिर ई बुझाऽ गइल कि ई कवनो जानल कवि के नाम ना ह, संतोष भइल। ईहो बुझाइल कि संचालको जी बुला एह कवि के ठीक से नइखन जानत, नमवा उलट–पुलट के बोलत बाड़े, कुछ अउरू संतोष भइल। बाकिर का, कि अभी दुचारे सीढ़ी उतरल रहीं, कि बुझाऽ गइल कि ई समय भितरे से बहरी जाय वाला ना ह, बहरी से भितरे आवे वाला ह। आ लवटि अइलीं। त जवना रचना के पवलीं तवन रहे कि 'लोहे के गाड़ी, लोहे के पटरी, लोहे के जाय के बा नगरी हो जमशेदपुर टाटा' आ जवना उलट–पुलट नाम वाला रचनाकार के पवलीं तवन रहन प्रकाश उदय। प्रकाश उदय जेकरा के पवले, ऊहो कहे कि हम प्रकाश उदय के पवलीं, प्रकाश उदय अपना साहित्यिक जीवन में एकरा से बढ़ के कुछ पइहें त भला का पइहें ! ओंइसे, मनबढ़ त ना हवे उदय जी, बाकिर जतना भर कवि ऊ 'हवे', भा 'समझल जाले', ओकरा से कुछ जादे मनबढ़ त ऊ बुझइबे करेले। बाकिर, हमरा हिसाब से एकर दोष उनुका माथे त नाहिंए मढ़ाय के चाहीं। उनुका ओह मनबढ़पन के पीछे ईहे आ अइसनके कुछ कथा–प्रसंग बाड़े स। असहीं एक बेरा के बात कि भोजपुरी के हमार एगो अपर प्रिय कवि, अशोक द्विवेदी, जिनिका के पहिला बे सुनवलीं आपन गीत 'रोपनी के रँउदल देहिया...' सुन के कह दिहले कि अब आगे कुछ तू नाहिंयो रच पावऽ त काम चल जाई। अशोक द्विवेदी कह देस कुछ अइसन, आनंद संधिदूत कह देस, त जेकरा से अइसन कुछ कहाई, भला कइसे ना ओकर मन बढ़ियाई ! बाकिर ईहो बा कि अइसन लोग के अइसनके कबो–कबो कुछ–कुछ कह दिहलका के चलते, आ हमरा, मन लगा के ओह कहलका बतिया के सुन लिहलका के चलते, केहू जाँय कहे भा बेजाँय, बाकिर, साँच त ईहे बा कि 'का–कहे–के–चाहीं' ई हमरा ओतना ना आइल, जतना ई आइल कि 'का–ना–कहे–के–चाहीं', बोले वाला ठाँव ओतना ना चिन्हाइल, जतना चुप लगा जाय वाला ठाँव चिन्हाइल।

संधिदूत जी त खैर, खलिसा रचे में रहले, आ बहुत सोच–समझ के कहत बानीं हम, कि बहुत कुछ से बँचे में रहले, बाकिर अशोक द्विवेदी, पता ना 'पाती' के संपादके भइला के नाते, कि अपना सहज स्वभाववेश, जतना रचले, ओह से जादे रचववले, जतना आपन रचले ओह से जादे दोसरा–दोसरा के रचत रहले। दूनो जन लगभग समुरिया। अइसन त नइखे कि समान भावभूमि प दूनो जन के कविताई, बहुत कुछ अलग–अलग बा, बाकिर भोजपुरी कविता के पुरानतम से लेके आधुनिकतम रूप तक दूनो जन के एक्के जइसन अबाध पहुँच। दूनो जन तर्ज के सिद्ध कवि, दूनो जन अर्ज के सतत साधक कवि। एक–दूसरा के पसंद करे वाला, एक–दूसरा के रचना–कर्म प बराबर नजर

रखे वाला एह दूनो कवि–मित्र से हमरा जतने साथे–साथे, ओतने अलगहूँ–अलगे जुड़ल रहला के गुमान। संधिदूत जी के चुनल गइल विद्याश्री न्यास के तरफ से आचार्य विद्यानिवास मिश्र के स्मृति में हर साल दिहल जाय वाला लोककवि सम्मान खातिर। एकर घोषणा के पहिले, हमरे के सहेजल गइल संधिदूत जी से अनुमति लेबे खातिर। सहमति देबे से पहिले उनुकर एक्के सवाल रहे, द्विवेदी जी के ई सम्मान मिल चुकल बा कि ना ? पुछलीं कि मान लीं कि ना मिलल होखे तब ? कहले कि तब हमरा से सहमति मत माँगी, बलुक माफी दे दीं। सुन के, भाग मनवलीं कि भला कि द्विवेदी जी के ई सम्मान पछिला के पछिले साल समर्पित हो गइल रहे, ना त संधिदूत जी के ई जवन टका–सा जबाब रहे तवन त निकहा फेरा में डाल दिहित ! भेंटइले त बलु बहसबो कइलीं कि ई कवन बात भइल कि पहिले फलनवा के मिलल बा कि ना, जे सम्मान देता ऊ रउआ हिसाब से चली ? कहले कि देखऽ भाई, तू बतवलऽ कि सम्मान ई हर साल दियाला, आ ई खास कवनो रचना के सम्मान ना ह, रचना–कर्म के सम्मान ह, त आवऽ आ बइठ के जोड़ लऽकि एह ममिला में के आगे बा, केकर रचना–कर्म बहुआयामी बा, के भोजपुरी खातिर कतना कइले बा। कहले कि हम अपने के नइखीं कहत, तहरो के समेट के कहत बानीं, आ हमरा–तहरा लेखा अउरियो कुछ समर्थ किसिम के रचनिहार लोग के समेट के कहत बानीं कि हमनी के मिलाइयो के भोजपुरी खातिर ओतना कइले बानीं जा का, जतना अशोक द्विवेदी अकेले कइले बाड़े, घरफूँक कइले बाड़े ? कहले कि ई जवन सम्मान–ओम्मान के ममिला बा ओमें भरसक त क्रमभंग के अपराध मत होखे, एकर चिंता त चहबे करी ! कम से कम हमरा। आ कुछ थथम के कहले कि तहरो। हमरा गुमान कि जहाँ हमार चलल, हमहूँ, संधिदूत जी के बतवला–मुताबिक क्रमभंग के कुछेक अपराध के होखे से बचवलीं। चलत–चलत एगो बात जवन कहले संधिदूत जी, बिहँस के, तवने से एह आलेख के मथेला मिलल बा। कहले कि असहूँ, अशोक जी आ आनंद जी के बारे में एक साथे केहू सोचे, त एकर खयाल त रखबे करे कि 'अ' पहिले आवेला, 'आ' ओकरा बादे में आवेला। हम कहलीं कि भला कि 'उ' बहुत बाद में आवेला ! कहे के जरूरत नइखे कि जवन मथेला बा एह आलेख के –– कुछ 'अ' कुछ 'आ' –– तवन संधिदूत जी के 'आपन, निज के, परस्नल' मन–मुताबिक। इयाद रखल जाय कि एह 'आपन, निज के, परस्नल' के हमन के बक्सर से बनारस के सफर में एगो टीटी भाईसाहेब से कमाइल रहीं जा, आ बाद में जब–जब मिललीं जा, की त एकर इयाद संधिदूत जी दियवले, प्रकाश उदय के, ना त प्रकाश उदय दियवले, संधिदूत जी के।

बाते–बाते एक बे के बात, कि बात आइल कि संधिदूत जी, रउआ मानीं चाहे मत मानीं, बाकिर अपना सबसे भीरी के भाषा हिंदी में केहू के कविताई पर बतियावे के जवन सबसे आसान तरीका रहल बा, आ बा, एगो कवनो 'बनाम' के जुगाड़ जुटा लिहल, आ सके भर लड़ा लिहल –– कबीर बनाम तुलसी, देव बनाम बिहारी, पंत बनाम निराला, मुक्तिबोध बनाम अज्ञेय, अलान बनाम फलान –– तवना के असर से, मुश्किल बा कि भोजपुरी बहुत दिन ले बाँचे पाई। कवन ठेकान कि कहियो केहू भोजपुरियो में 'अ' बनाम 'आ' ना जोह लिही ! त कहले कि भाई, जवन होई कहियो, तवना के आजुए से हाथ लफाऽ के भला के रोके पाई, बाकिर तू बतावऽ कि तहिया ओह 'केहू' के ई बताई कि ना केहू कि एह 'आ' के हाथे जवन रचाइल बा, नीक भा जबून, तवना में से बहुत कुछ ओही 'अ' के प्रेरणा से रचाइल बा, आ बहुत कुछ त 'अ' के नीकेतरी चउर के 'पेरला' से रचाइल बा !

ओंइसे, आनंद संधिदूत के बाद के कुछ रचना हमरो पेरला से भइल बा। कविता त ना, बाकिर गद्य में जवन ऊ रचले, बाद के दिन में, तवना खातिर हमहूँ उनुकर कवनो कम आरजू–मिन्नत ना कइलीं, कम ना उबियवलीं। एमें हमरो कवनो खास दोष ना रहे। एगो भइले मैनेजर पांडेय जी, दुचारे बे के उनसे भेंट, दुचारे गाल बतकही। उनुकर बड़ा जोर कि भोजपुरी के काव्य–बल त बड़ले बा प्रबल, ओकरा गद्य–बल अभी गहे के बा। हम तड़फड़ाइले उनुका के कुछ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आ कुछ वगैरह–वगैरह के नाम गिना गइलीं। बड़ा धीरज से कहले ऊ कि ठीक बा, एमें से कुछ त हमरो जानल बा, कुछ के बारे में सुनलहूँ बानीं, आ मानत बानीं कि बहुत कुछ से अपरिचित बानीं, हमरे कमी कहाई ई, बाकिर तब्बो, नमूना के गद्य कुछ अउरी चाहीं, कुछ ना, बहुत–बहुत अउरू चाहीं, तरह–तरह के, आ ठकच के...! ओह नमूना के गद्य के असरा–अस लागि गइल रहे हमरा, आनंद संधिदूत से, तहिए से जहिया से 'एक कड़ी गीत के' के 'संकलन सँउपत खानी' के उनुकर बतकही पढ़ले रहीं। बाद में, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य के एगो अंतरंग गोष्ठी में जब ऊ सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषणसब के संग्रह के प्रनस्ताव रखलन, आ ओकरा खातिर वित्त–प्रबंधन के जिम्मेदारियो अपने माथे ले लिहलन, आ 'अस्मिता चिंतन' नाम से छप के ऊ आइयो गइल, तब त हमरा लेखे तय हो गइल एक तरह से, कि भोजपुरी गद्य के लेके हम जतना गंभीर भइल चाहत बानीं, ओह से कहीं जादे गंभीर एगो मनई एह धरा–धाम प बहुत पहिले से मौजूद बा। 'अस्मिता चिंतन' से जे एक बे गुजर के आई, भोजपुरी के गद्य–बल के बारे में ओकरा के बहुत बतावे के ना परी। हमरा गुमान कि अइसन अपना आनंद संधिदूत से अतना गद्य–रचना त उपराइए लिहलीं कि एगो संग्रह भर हो जाय। बाकिर हमरा ओह आरजू–मिन्नत के एक नतीजा ईहो निकलल कि उनुकर विविधविध गद्य के संग्रह जवन आइल, 'सतमेझरा', तवन ऊ अदबद के हमरे के सँउपि दिहले। अब हम ईहो कहे लायक नइखीं कि ओह लायक हम ना रहीं, नइखीं। रहिते त कहबो करितीं। नइखन त अतनवे कहे के बा, कि जवना लायक हमरा के मनले हमार बड़भाई, तवना लायक हम नाहिंयो होखीं, तब्बो, तवना लायक हम बानीं, हमहीं बानीं !

'ई जवन 'उ' बाड़े, उनुकर अपना 'अ' आ अपना 'आ' के बारे में के ई बतकही अभी ओराइल नइखे, जारी बा, आ जारी रही।

■■

श्री बलदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बड़ागाँव, वाराणसी – 221204, मो. नं. 9415290286

दू गो गीत

- डा० कमलेश राय

(एक)

समाज आज कऽ

जाने कइसे रही निरोग
बढ़ल जात बाटे दिन पर दिन
अब अखबारी लोग ।

झूठ,फरेब,जाल, तिकड़म
के बा गोरखधंधा
निपट सुवारथ में हो-होके
आँखि अछत अंधा
घर के भीतर घात करे
अबके घरबारी लोग ।

समझ न आवे सही गलत में
के अब फरक करी
दूध -दूध , पानी क पानी
के अब बिलग करी
हंस क चोला पहिन के
बइठल बा दरबारी लोग ।

सस्ता दर सस्ता देखीं
ईमान भइल बाटे
मुश्किल आज आदमी क
पहिचान भइल बाटे
रोज करत बा
आन्हर ऐना क रखवारी लोग ।

टूट गइल बा कच्चा धागा
रिश्ता नाता कऽ
दांव चढ़ल बाटे पांचाली
अब मरजादा कऽ
चुप्पी साधि परल बा
बोले कऽ अधिकारी लोग ।

(दू)

एतना बा पानी अंखियन में

ढरि ढरि पीर हरे
बजर भइल छाती अब
केहू केतनों मूंग दरे!

हूम करत में हाथ
आगि से एतना बेर जरल
अब ना दाह-ताप क तनिको
मन में फिकिर रहल
दहत-तपत ई जिनगी
चाहे जेतना बेर जरे!

जेकर ना आकाश,पांखि
नाहीं परवाज बचल
नाहीं कवनों आस, चाह
नाहीं आवाज बचल
केतना धीर धरे जिनगी में
केतना आह भरे !

जेकर सेज काँट पर बाटे
गतर- गतर पीरा
जहर पिये बनिके कबहूँ
सुकरात कबों मीरा
साँच कहे में ऊ केहू से
काहें भला डरे!

■ खण्डेलवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊ (उ०प्र०)

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 102–103 दिसम्बर 2023

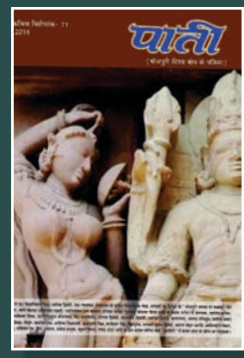

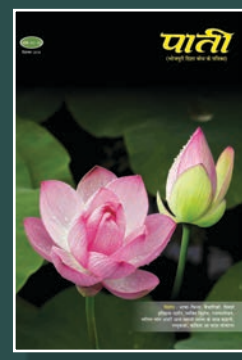

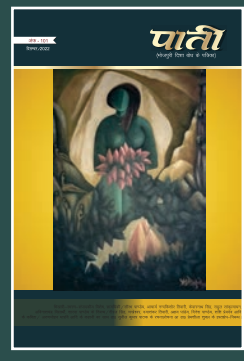

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।